

अथ स्वामी संतक्षरजी की दया आस म
दया कबीर साहिब की दया सब संत नका
अथ ऐकादस जागो अथ ऐकादस की जा
चौ पई ॥ संतदास सत गुर के चरण ॥ तिन व
ठ करि सरण ॥ जाते नुप जे गण न बिचारा
म भरम बिहारा ॥ बौहो स्यो जगत जनम
तिन को निजानंद पद पावो ॥ १ ॥ तिन व
र देधरो ॥ लोक हि धारय नावा करो ॥
बिचयुं जाव्यो ॥ सो द्विचन द्विसं ग्राये
व्यास हि समजाव्यो ॥ व्यास व्यास करि
यो ॥ २ ॥ सो सुषक ह्यो परीषत आगे ॥
पन सी जागे ॥ सो ईसुत अजहं बिम
अथवा सीरिष मन धरे ॥ ३ ॥ श्री नग
ह जाव्यो ॥ तातेनां मचाग व म राव्यो ॥
कोयं पवतायो ॥ यामागे बौहतन
॥ ७ ॥ व्यास देव जो चाग वंत ॥ न
कंध ॥ तिन मै ऐकादस कह्यो ॥ नैन

तोपाप॥२०॥राजाउवाच॥चौपई॥तेतोबिप्रनग
तेसारे॥यमदानश्रुसेवगभारे॥बिप्रको
कीयोक्कंपूरन॥तातेनासनेयैसबतूरन॥२१॥
तेननमतप्रापसोक्तन॥कोहोक्रपाकरिकर
गानवन॥एकमनाजादवेतेसारे॥आपहाअ
पकनविधिभारे॥२२॥श्रीसुषुवाच॥भूकोभार
नतारनकाजा॥भूओतारलीयोबिजराजा॥ब
हुविधिभूकोभारनतास्यो॥तबमनमगोपाल
बिचार्यो॥२३॥जोलगहजादवकुलसारो॥तो
लगनहीभुभारनतारो॥ममआदीनरहेऐसारे
तातेनजकरिवननभारे॥२४॥हजोकोईसके
नहीभार॥तातेकाजेजतनविचार॥जुंबहु
बासबडेवनमादी॥यवननमतपायधरषादी॥
२५॥आपआपमैअगननुयावे॥तासंलागि
सकलजलजावे॥तोहीयेहापवनदिजप्राप
क्रोधअगनताहाअपुहीआया॥२६॥करिवि
सतारहोहिसंहार॥एवहरायेक्रसनविचार

मोक्षदा॥१॥द्विपदी॥श्रीगुरुउवाच॥कारावतीञ्ज
यताहायातक॥ताहानदयश्चापकोतातक॥
नादेताहानरंतरावे॥करुदेवकोदरसनप
दे॥१॥जीवनमुक्तनजेनेतजाक॥बंधोजीवत
जेकुंताक॥जाकोसकललोकमेंकाल॥जाहं
ताहानेसहेनबेहाल॥२॥मानवतनईनेसोराज
इतनहरिसेवाकीसाजा॥बंभेताहिबुद्धसुरराज
करुदेवसेवाकेकाजा॥३॥ऐसीदेहनागा
तेपावे॥हरिकासेवाकुंबटकावे॥पलमेंकटे
कालकापास॥हरकंपावेहरिकोदास॥४॥ऐ
कबेरबसुंदेवकभोना॥नारदकायोक्रियाकर
गोवन॥तिनबरुनातयुजाबिसतरी॥तापीबबा
नीउचरी॥॥॥बसुदेवउवाच॥हेप्रभूजीतुमारोत्र
गमना॥सबदेहूनकोसुषकोनवना॥ओपमा
तुमहकंनकादाजे॥जिनकदरसंकलनवछी
जे॥६॥ओरदेवदेवसुषडयको॥तुमसेसाधय
गदय॥सुषको॥जिनकेहिरदेबिराजेरांमतिन

तैं होइ सकन नहैं काम ॥ औ से फल दाइक सब देखा
ते तो लहे जती करि सेवा ॥ ७ ॥ जुं कर ले दरसन कं
कोइ ॥ आप करे अन्धा से सोइ ॥ तुम से साधु
सदा सुख दाइ ॥ जिनकी महमा कहान जाइ ॥
॥ ८ ॥ जध्य पदर सम नये कितारण ॥ पूछो देव
पिह तारण ॥ जे नागवत धरम सुन्य जीव जनम म
रनत जिया दैयीव ॥ ९ ॥ जिन आचरन न तुम कंदे
व ॥ हरि परसन सो नाथो नेव ॥ पूरव जनम मै से
वा कर ॥ माया मोह सम जन ही परी ॥ १० ॥ तब मै
हरी पुत्र करि बर्यो ॥ ताही तेह नही उधर्यो ॥ ता
तैं अब मै तु मरी सरना ॥ ज्यो कबू करो मिटे जूम
रना ॥ ११ ॥ काहा लोक हूँ जगत के दुष ॥ जामें सुपन
हू नही सुष ॥ जाहां जाहां जाइ ताहाही काल ॥ ह
रि बिन जीव सदा बेकाल ॥ १२ ॥ औ से बचन सुने ज
ब नारद ॥ तब ते बोले परम बिसारद ॥ १३ ॥ नारद उब
च ॥ धन बसु देव धन तुम बां नी ॥ जा करि पूबे सार
पौनी ॥ कोइ होइ सकल जग घात कर ॥ बिसनु ध

रमते रहन यातक ॥ १५ ॥ अवनकी रतन आदरध
न ॥ अनुमोदन उकरे सद्यान ॥ सो पुन होवत तका
ल ॥ बहुरियरे नही जमकै जाल ॥ १६ ॥ तुम ये हकी
यो वनो उयगार ॥ मोहि सुमरा वो सरजनहार ॥
जाको सरवन की रतन औ सो ॥ अंधकार को सर
ज जे सो ॥ १७ ॥ तुम संकलंक थाइतीयास ॥ जाते
छूटे नव के पास ॥ रिष बदेव सुतनो जोगेस ॥ ति
न त सुनी यो जन कनरेस ॥ १८ ॥ मुन्य कै बल पयाइ
न न यो ॥ जनम मरन संसो सब गयो ॥ अब उत
पत करत हंती नकी ॥ पूरन प्रीतरांम संजिन
की ॥ १९ ॥ सूनू मुन्य नृप सरताजा ॥ ताको तन न
व बतराजा ॥ ताको अंग न धू सुत न यो ॥ ना न
जन मता हाते लयो ॥ २० ॥ ताके रिष बदेव औ तार
जिन प्रगटायो बल बिचार ॥ ताके पुत्र ऐक सं
त न यो ॥ सकल बेद के पारहाणये ॥ २१ ॥ तिन में
बनो भरथ सेनाम ॥ ताके हिरद बसने तरांम ॥ जाते
भरथ बंरो हक दो ॥ तब अजना नना मते लखे ॥

॥१॥ प्रथमही बहूत नोग ऐह नोग ॥ समज त्यागे
पुन लीनो जोग ॥ मन क्रम बचन करी हर नगत
ती जे जनम लही जन मुक्त ॥१॥ तिन में नवन वष
न नरेस ॥ ऐकर असी करम उपदेस ॥ नव तै माहा
नाग अधिकारी ॥ सब तजि सेवे सदा मुरारी ॥
॥२॥ तजे अनर्थ अर्थ बिसतारै ॥ या विधि बो
हूत जीवन सतारै ॥ देह अतीत दिगंबर नेस ॥
सदा हिरद में ऐक अलेख ॥ कबाहर अंतरि वयर
बुध ॥ पियला इन आबर होत्र सुध ॥ हर्म लचम सक
र ना जन नाम ॥ इन नव कायौ ब्रह्म में ध्याम ॥३॥
आप आद संसार य सारा ॥ सब कौं जाने सरज
न हारा ॥ दैत नाव को को न्हो वर ॥ या विधि बि
चरे सब ब्रह्म मं ॥४॥ सुर अ सुर साध गदर बा
कि नर जषि निग नर बर बा ॥ सकल लोक में अ
ब्याचारी ॥ आन रहत सब में अधिकारी ॥५॥
निम सेनाम जनक के सुजा ॥ ऐक बार तन का न्हो
जत्रा ॥ रिब सी सोन ताजिन की देहा ॥ आवत दे

धेनरपतबदेहा॥२८॥ राजाविषअगनउति
 ध्याइ॥ आगेकैलेवेकंआगे॥ कमकमआप
 धरेसगासन॥ कमहीकमतैवेवेआसन॥२९॥
 तबताहीकमपूजाकान्ही॥ करिकंमोतपुदिब
 नादीन्ही॥ प्र० कआभरनबसबबहुरंगा॥ ते
 सबसोभततनकैसंगा॥३०॥ ग्यानविचारबुद्ध
 मयअैसे॥ बुद्धपूवसनकादिकजैसे॥ तबकर
 जोरिनयोनुपठावै॥ बोलेबचनप्रेमअतिबा
 डै॥३१॥ इहा॥ तबनुपकआनदबढेयो॥ कबनर
 हीसनारप्रेममगनकैइबोलीयो॥ बांनप्रेमरेम
 ल॥३२॥ बदेहउवाच॥ चौपई॥ तुमपारषद्वयमह
 रजीके॥ मेंजानेसबहिनमैनीके॥ जावनकेउधा
 रबेकारज॥ सकललोकमैंबिचरोआरज॥३३॥
 धन्यमैंधन्यमैरोअवतारा॥ जातैपायोदरस
 तुमारा॥ नानाजुन्यजीवरेहआवै॥ मानवतन
 कबहुइकपावै॥३४॥ याविधिनरदेहबहुगदे
 डलनसाधुसंगनलहे॥ जिनसंगमिटैनवफं

धा॥ नैन अमंत लहे नर अंधा॥ ध्या॥ पान ना पहरि ह
र द बि रा जौ॥ बूढे कम नम नय ना जौ॥ आधो ब न
हो वै स त संग॥ तो नु कर ज ग त न य न ग॥ ३६॥
ता ते म म सं दे ह मि टा वै॥ प्र म ठे म सो मो हि सु ना वै
न ग व त ध र म हो क हो बि स तारी॥ जो मे ह सु न वै
अ धि कारी॥ ३७॥ जि न ते मि टै ज ग त न य नारी॥ ब
रू ब आ प कं दे त मुरारी॥ ऐ सु न व च न स व न सु प
पा रे॥ त ब ही मा न दे वैन सु ना रे॥ ३८॥ क बी उ वा
त्र॥ रा जा प्र स न करी तुं म औ सी॥ ब न ना गी पू ब त
दे जे सी॥ नि र नै य द रे क हे दे वा॥ हरि के च र के
ब ल की से वा॥ ३९॥ ता कं बो दि करे न जो ई दु ष को
मु ल हो त हे सो ई॥ जां हां ता हां जां जा हां दु ष ना
री॥ का ल पा स क रुं ट र न टारी॥ ४०॥ ता ते क से
ना ग व त ध र मा॥ मि तै रा म बू टे न य न मां श्री
मु ष श्री न ग वां न सु ना यो॥ आ य मि ल न को यं य
ब ता यो॥ ४१॥ मूर ष रु जो हो वै को ई॥ इ न यं य न ह
रि या व सो ई॥ अ म न ही हो ब ल म न ला गे॥ न र म

न सा सुता जीव जागे ॥ ७२ ॥ आषि मूद रुध्या दे
कोशिया हरियं पन कब न यहोश ॥ हरी का न
गति सब न तै न्यारी ॥ कोटे बिष न न ठर न ठारी ॥
७३ ॥ हरि मिलन को मारा ऐही ॥ हरि न जि मु क
ति होइ हे देही ॥ मन क म ब च न बु ध अ रु चित ॥
होइ सु ना व रू त जो न ता ॥ ७४ ॥ सो सब हर हा सम
र प न करै ॥ यों ना ग व त ध र म बिस तरै ॥ जब
ऐह जा व हरि ही बिस र्यो ॥ तब हर की मा या आ
व र्यो ॥ ७५ ॥ तब अ प नो स रू प नु ला यो ॥ आप
मान त न मै मन ला यो ॥ इ त ना व त ब तै ता उ प
न्यो ॥ ता हा तै ऐ ह म रि म रि ज न म्यो ॥ ७६ ॥ ता तै बु
धि से व हरि च र नां ॥ जा तै मि टे ज न म अ रु म र नां
॥ सो धि ले उ त्म गुर दे वा ॥ हरि को जान करै ता से
वा ॥ ७७ ॥ सो ज्युं ज्युं आ च र न ब ता वै ॥ त्यो ही तुं
हरि संहित ला व ॥ क य ट न भ ज त जै सब कां मां
बू टै ज ग त मिल त ब रा मां ॥ ७८ ॥ इ त क बू है इ न रा
रां जा ॥ अ न्या स्यो सो मन को र्जा जा ॥ जै स म्प्र या ॥ १२२१

मनोरथसुपना॥मनहूकरितेदोन्योउपना॥७॥
हेनहीकबुपरहैंसोसोहैं॥ताकैसंगलागसो
बमोहैं॥तोसैंबिकलनहीकीजे॥मनदहिसक
षरामरसयांजे॥५०॥हरिकेजनमक्रमगुननामं
सुनैकहैंसुरअवजानां॥तजैलाजहोवैनहसंगा
मगनरहनेतहरीकरंगा॥असेभजतयेमअधि
कावै॥सबतनरोमाचैतआवै॥गदगदयेमअ
टबटेवैना॥द्वचितजलवरयैनेना॥५१॥रोवै
हैसुंचपुरगावै॥कबहूमुनगहरहजावै॥लोक
बेदकुलजाजनजानै॥जुंजुनमतविचत्सयुं
वांनै॥५२॥दसुंदिससुरतसिंधुनंगनंगा॥रिबसि
सतारहंसअरकागा॥धितनलपावकपवन
अकासा॥जुंकबूदेधैजोहरिदासा॥५३॥हरि
करूपसकलभैंजानै॥जाहाताहांपरनामहि
गनै॥कबहूनुलनन्यासैआनां॥नयौअ
ननभजैभगवानां॥५४॥जुंजुबटेकसनअ
नुरागा॥त्योत्योऔरसकलकोत्यागा॥त्यो

नीरा॥१॥ अंधकार जबरूय ही हरै॥ तेज तय यव
नहि संचरै॥ बहुर्युं सपरसाहि हरै॥ आकासा
पवन करत बन नमय वासा॥१६॥ काल की
यो तब सब दहिषीनां॥ तामस अहंकार न भली
नां॥ तामस अहंकार मन मिले॥ राजस अहंका
र दोउ मिले॥१७॥ इंद्रिय रुराजस अहंकार हि
संतक अहंकीन्हो आहार हि॥ बुधि देव सांत अ
हंकारा॥ मंत तव कीन्हो आहारा॥१८॥ महंत त
सो प्रकृत हि मिले॥ या विधिकाल सकल कं
गिले॥ ऐसी ही विधि बारं बार॥ उत पत प्रल
अनत अपारा॥१९॥ रोह सब हर की माया क
रे॥ उपजा दे प्रत पाल हरै॥ भेंटु मकं सवेय सु
नाई॥ बहुर्यो करो प्रसन मन नाई॥२०॥ उर
ऐसी सुन माया अपर बल॥ उपज्यो नृप कै
नित॥ तब पूछी आधी नकै॥ ता तरवे केरीत॥
२१॥ राजा उवाच॥ चौपई॥ ऐसी अप्रबल ईस
की माया॥ जिन रेह सकल लोक नर माया॥

ताकं तु मसे ग्गो नीतरे ॥ दमसे देहा कुं न सत
 रो ॥ १२ ॥ ताकं सुषही तरये देवा ॥ सो कं क्रि पा बा
 तावौ नेवा ॥ रे सु सु व च न न प के सु धा ॥ त ब वे
 ले चो धे यं बु धा ॥ १३ ॥ पु बु धि उ वा च ॥ सं क ल
 म न य सु ष न के का जा ॥ क र क र म आ र न ही
 राजा ॥ ति न के व ल ड ष अ धि कारा ॥ अ ब रू ॥
 अ रु आ र्ग ॥ वि स तारा ॥ १४ ॥ पा इ रू ध न ड ष अ
 पारा नि स दि न ॥ चे ता को अ ध कारा ॥ सो न
 अ ति ड ल न न ही आ वे ॥ जो आ व तो ध र न र
 हा वे ॥ १५ ॥ तुं ही कु टू ब गि ह सु त दारा ॥ प ल क
 मा हि ट ह जा इ य सारा ॥ जो प य मा हि मि लानां
 हो इ ॥ ध रा क मा हि बि ब रै स ब को इ ॥ १६ ॥ जे क
 बू या हां क म क मा वे ॥ ति न तें जु न्य अ न त ड
 ष या वे ॥ इ न म को इ न ही ब ना वे ॥ आ पु आ
 पु कं स ब को इ जा वे ॥ या ही वि धि न ॥ सु र प्र ले
 का ॥ ध र न र हा वि धि को अ का ॥ बो टे व के नी
 च ब रू नां ती ॥ ति न के म न का मि टी न कां ती ॥ १७ ॥

६६ मधमवर अरु चाह मानो ॥ काम क्रोध अरु
लोभ समा ना ॥ विसना बंधे कबू नही जाने ॥
आपु आपु में रुध हावने ॥ २० ॥ काल ही पाइ
वाहा ते परे ॥ बहुरि आयया हा अवतरे ॥ युं वि
चार बैराग उपावे ॥ तब ही सोधि गुर सरन ही
आवे ॥ २० ॥ सब दबल सब न सो जाये ॥ पारब
हन त हिरदै राये ॥ ऐसे गुर विन ग्यान न पावे
ता ते सोधि गुरु रूपे आवे ॥ बल जान ता सेवांग
ने ॥ आत सकयट काम ना जाने ॥ ता त सीधे २
न गतिके अंगा ॥ जिन ते हर जात जन संग
॥ २१ ॥ सब ते मन को संग मिटावे ॥ नुलट साध
संगति मन लावे ॥ अरु दीन न परिकरना आ
ने ॥ सम मित्रता उत्तम बहो माने ॥ २२ ॥ सो चयाव
तय मुन त तया ॥ बहू विधिले वै गुर सें सिषा
बल चरज अरु को मल रहना ॥ हि स्यात्पा
गि डुद सब सहना ॥ २५ ॥ ऐ का ऐ की आश्र
म नही बाधे ॥ बस त्रट् के के बल कल साधे ॥

जहां तहा चेतन आत्म देवे ॥ समाधाय भव भोग ॥
वैश्यां ग्रंथ न गत का सरधा नरे ॥ मर्यादा नारी
मयर हरे ॥ देह बचन अरु गन नंत ॥ मोक्ष र
दम सत संतोष न बंभै ॥ ३० ॥ जगत् मय मंगल ॥
गुन हर जी के ॥ सदा सुम प्रसाद ॥ ३१ ॥
हा कह न रंतर ध्यावे ॥ गोदा तरंग ॥ पानी
भावे ॥ ३२ ॥ जय तय जोग जगत् मय मंगल ॥
न धन सुत दारा प्रप्राणा ॥ श्री कृष्ण ॥
हर नखे दाया विधि सकल ॥ श्री गुरु ॥
३० ॥ या वर जंगम हर मंगल ॥ श्री गुरु ॥
धुन का वीने ॥ मित यम मय मंगल ॥ श्री गुरु ॥
जिस दन कहत सुनत सुय मंगल ॥ श्री गुरु ॥
तुष्टि वंदे हरि मंगल ॥ श्री गुरु ॥
कंसुदे ॥ हरि मंगल ॥ श्री गुरु ॥
नका ॥ श्री गुरु ॥
कंपा ॥ श्री गुरु ॥
दस ॥ श्री गुरु ॥

राजा सुनो कर्मगत गहना ॥ आते जहंत हं बेन
 न कहं ना ॥ ये ह ज्यो ह त्यो वेद बधाने ॥ ताते
 याही न को ई जानै ॥ ६८ ॥ वेद प्रगट कता
 हिर देवा ॥ रिष अरु पुरय ल है क्यो ने वा ने
 बल ह्मा बिना मिट न मरना ॥ ल है ने व या व ह
 रिसरना ॥ ६९ ॥ ताते तुम होते तब बा ला ॥ ता
 ते क ह्यो न कर्म बिसाला ॥ अब मैं कहूं सु
 नौ चित लाई जानै जाहि न अ धिका ई ॥ ७० ॥
 कर्म जो गहिती न प्रकारा ॥ कर्म अ कर्म कर्म वि
 पसारा हर न मति सो कही ऐ कर्म ॥ हर बिना
 सी सकल बि कर्म ॥ ७१ ॥ सो अ कर्म जो दो
 उत्पार्जे ॥ ग्या न बिना सु ब या हान आ गे ॥ क
 म कृत बू टे सब कर्मा ॥ उ य जे ग्या न मिटे न व
 मरमा ॥ ७२ ॥ कर्म त जन कं कर्म ग हा वै ता
 ते वेद न सम ज्यो आ वे ॥ यह ते सुर गा दि फ
 ल ना वै ॥ आ गे सकल हरि करि ना वै ॥ ७३ ॥
 जो को ई बाल करो गा हो वै ॥ ओषद क

टूकनाम सुनरोवै ॥ ताकंला मुंयिता दिषा ॥
वै ॥ ओषदका जलो ननु यजावै ॥ ८० ॥ ओ
षदको फलला मुं नाही ॥ ओषदयि ये रोग
सब जाही ॥ जुं सुरगा दिक् लो न दिषावै ॥
करमनासको क्रम करावै ॥ ८५ ॥ सुरगा
दिक् फल पुहयत बां नी ॥ तो रे पोहय होइ
फल हां नी ॥ तातें करै बेदके क्रमां ॥ हरि के हि
त बमो यद्वधरमा ॥ ८६ ॥ ओर कब फल नु
लन जां नें ॥ हरि कै हेत क्रम सब ठा नें ॥ भंकरा
तायुं कदे न नाथें ॥ ओ कबू है सो हर को क
रि राखें ॥ ८७ ॥ या बिधि ये म न गत उ य जाव ॥
तब सब क्रम आपु ही जावै ॥ तब ही प्रगटै
ग्यान प्रकासा ॥ मिले रां म बूटै न वयासा
॥ ८८ ॥ बेद कयं थ कलौ मै तुं म सां ॥ अब सु
न्यतुं यं त्यधुन मो सूं ॥ हिरदै गा ठिका टी जो
चाहै ॥ सो बिधि सूं पूजा आवगावै ॥ ८९ ॥
बेद मिलत नाथ तरुं पूजा ॥ जातें मिट सल

नुमह जा॥ श्रीगुरतें परसाद हि पावै॥ ज्यो
ज्यो सब विधि हि बत आवै॥ ७०॥ जामुरत परि
इ ब्याहोई॥ हरही जान के पूजो सोई अत
पवत्र होइ करे सनाना॥ मन को तजै बासन
नाना॥ ७१॥ बासे अपान ठीक जमुहाई
ओर यवन गुन उठे न काई॥ सन मुख वै ठे करे
तन रया॥ अंग न्यास कर पटि अंघा॥ ७२॥
आसन सो धिसुंज सेवा की॥ सब ले बै बैठ
जन वाकी॥ बिसन रूप यता माम जाने॥ अ
रघ्याव अरु बिसदर ठाने॥ ७३॥ मूल मंत्र
करि पूजा करे॥ ओर न कबु उचरे॥ सकल अ
हर जी कंध्यावे॥ संघ चंक्र गेदा पद मनी ल्या
वे॥ ७४॥ नुषन वसन पारषद सहिता ह
सत बदन देषत दुषद हता॥ बिबुध तांत सना
न करावे॥ करितिल कैंदू वसत्र पहारावे॥ ७५॥
बहु सुगंध माला पहारावे॥ बहूत नांति
करि नोग लग आवै॥ गंध धूप आरती उत्सता

शै॥॥॥ घटाश्रयतीसबदबिसतारै॥ ऐ६॥ या
 विधिमंत्रनसं सबकरै॥ तायीबअसतुत
 बिसतरै॥ बहोरिकरैरुमोतप्रणामा॥ पढेमें
 तलेवहरनामा॥ बाहरबसतमितेतेआ
 नै॥ ओरनिमतसपूजाठानै॥ तनमयनये
 नरंतरसेवै॥ साह्यसादमाथकरितेवै॥ ऐ७
 बरूरिदेवकंहिरदैधरै॥ मूरतनपिठारकरै
 याविधिहरिकेआतमजानै॥ जथासकत
 सबपूजाठाठे॥ ऐ८॥ ओसेसेवतउपजैगुं
 न॥ वेगहीआनमितेनगवांन॥ ॥ बुद्धा॥ ऐ९
 सुनबचनबदेहके॥ बाढेयोमनमेंप्यार॥ त
 वगुनअरुक्रमसहत॥ पूढेहरिअवतार
 ॥॥ इतीश्रीनागवंतमाहापुराणऐकादसकंधे
 वसुदैवनाशदसमाधेजायते॥ त्रीतीयाध्याय॥
 ॥ राजाउवाच॥ चौपई॥ अबओतारकथा
 बिसतारै॥ गुनअरुक्रमसहतउच्चारै॥ जे
 जेलायेतहैजेआगै॥ अबरुसबनाथेअ

नसबहरिकों कियों प्रनामा ॥ लान्हीरे कउरबसा
 नामा ॥ करि प्रनाम सब बारं बारा ॥ पढ़ूं चै स
 कल इंद्र दर बारा ॥ १७ ॥ तिन इंद्र हा प्रसंग सु
 नायों ॥ बिसमय त्रास इंद्र मन आयों ॥ बड़
 रिलायों हंसा अवतारा ॥ चारि नरे सान
 का दि कुवारा ॥ १८ ॥ दत कपल अरपीता ह
 मारा ॥ आठों रूप ब्रह्म बिस्तारा ॥ हय ग्रीव
 मधुपानानि वारै ॥ ता करि हंरि बिंदु छारै
 ॥ १९ ॥ सत्य ब्रतराजा हरि नक्ति ॥ ता कंदर जी
 कायों बिर कक्ति ॥ बिन ही प्रलय दिखलायों
 मंढरूप गंगानहि समजायों ॥ २० ॥ बहुरि वा
 रा रूप हरि ध्यास्यो ॥ हिरणाक्ष अति उष्ट
 हा मास्यो ॥ बोरी रूती मही जल मांही ॥ सो उ
 परिघायी पल तांही ॥ २१ ॥ कुरम कर्म मंदा गिर
 धस्यो ॥ अमृत काटि सुरकारज कस्यो ॥ या
 ह गहो गजराज पुकास्यो ॥ तब हर जी तत
 को लउ बास्यो ॥ २२ ॥ बाल विष्णु दिक्क जेरिष

राजा॥ अगुष्टसमान अर्पकार विराजा॥ क
स्ययकैकाजेऐकबारा॥ इधनकोतेवन
हियधारा॥ ३३॥ तहागाइकेपगजलनरी
या॥ तिनमैआपआपसबपरीया॥ हांस
करेइंद्रतहाधरो॥ तबतिनहिरदेहरिसं
भरो॥ ३४॥ जबआत्मकोकोईनांदी॥ तबतु
मनाधउधारनमांदी॥ तातैहमअबनऐ
अनाथा॥ करुनासीधुंगहोकरिहाया॥
॥ ३५॥ इतनीसुनआरतकीबीना॥ तांहाउ
विधाइसारंगयांनी॥ तबहरकरगहसब
उधारा॥ बालबिल्याउधरनअवतारा॥ ३६॥
बल्लहिया नयइंद्रसंभार्यो॥ तबतबहरज
पगठउधार्यो॥ सुरबनिताजबअसुरनह
री॥ तबतेहरसरनहिअनुसरी॥ ३७॥ तब
हरजातैसकलउधारी॥ असुरमारिसब
विवयंतनिवारी॥ पुननरसद्यरूपहरधा
र्यो॥ अरुसुरहरनाकिस्पजिनमार्यो॥

३८॥ जनप्रहदलादहिलीन्हौराथी॥ जाकाप्र
गठकहसबसाथी॥ जबजबअसुरअपर
बलअत्यनरे॥ देवनकैअसतलहरित
मरे॥ ३९॥ तबतबसबैनेतरमाही॥ बिसुक
लाअवतारधराही॥ मारिअसुरसबड
षमिटाए॥ सरनागतसुरवरसुषपाए॥ ४०॥
॥ बावनरूपईदकैकाजा॥ नैब्याबलि
बलायोबलराजा॥ तीनलोकतेईदहिद
ए॥ बलकाभक्तिआयबसिनरे॥ ४१॥ ब
रुरिअधरमीडयजेराजा॥ परसरामपुग
टेतिनकाजा॥ इकीसबारकरीनिबजीती
ननवनमैकहूनबजी॥ ४२॥ बरुरिनएद
स्थसुतरामा॥ जेहेपुगटलोकअनिराम
साइरनुयरसलातिसतारे॥ रावनआदिड
ष्टसंहारे॥ ४३॥ आगेरामकिस्मअवतारा
भूकोप्रबलहरजेनारा॥ जडकुलजनम
क्रमतेकरिहै॥ जिनसलागीजीवनसतर

है॥७७॥ असुरदेवि जगन के करता॥ जीवन
मारि उदर ते भरता॥ बुधिरूप हर जीत बध
र है॥ जगिनि दया धर्म बि सतरि है॥७५॥
बहुर धर गे कल कै रूपा॥ अति अथरा
ध कर है जब भूपा॥ कल के अंत सकल
संघरि है॥ बहुर प्रबुत सत जुग कर है॥७६॥
ऐसे बिस्व कम अवतारा॥ कोइ कहत न
यावयारा॥ कब एक भें तुम संकहे॥ ज्यो
रं नल कोटि ज्यो नति नर है॥७७॥ इन कंक
हे सुन जी गावे॥ येम सदत न सबा सुर ध्या
वे॥ सो नो सागर मन रीर है॥ पाव ग्यां न प्रम
य दल है॥७८॥ ऐबे ना सुन डमल म के का
नो प्रसन्निरंद॥ प्रभु जी तन का को न गत॥
तेन न जे गो बिद॥७९॥ इती श्री जगवते माह
पुराणे ऐका दस कंधे बस देव नारद समा धे ज
स्ते जीवा एतन्निने च युधौ ध्याय॥८॥ बदेह उ
द्वाचा॥ चौपई॥ जेम कर हर जी का सेवा॥ ति

पन आवे॥ नि सदि न वि सना अगन जल
वै॥ १॥ पर जो बरु बिधि कम उपावे॥ तो
मोहिक हो कब सुषयावे॥ एक ही बच
न जन कर रहे॥ अष्टम चम सना मत ब कहें
चम स उवाच॥ हर जी विप्र बदन ते करे
न बालू ते बचा बिसतरे॥ जंगल ते बैस उप
जाये॥ सुदति मै चरन न ते आराधे॥ या
ही नातिका यो आसमी॥ ताते न जन सा
बन को धर्मो॥ ते आ पही कृपति या ला
॥ आप ही पोषे दीन दया ला॥ ५॥ जो से पु
नुकं जे बीसरे॥ ते अपराध आप ते करे
ते ही गुर दोहा पित्र दोहा॥ न ब्रह्म स्वामि
दोह कत धन वोही॥ ६॥ तिन अपराध न य
धि गत्य जावे॥ कबरु भुल सुष न ही पावे सु
इ जो यता अंत ज आद॥ तिन कद हरिकथा
प्रवनादि॥ ७॥ ते मन म अ निमान न धरे॥

तातेतुमसेक्रियाकरौ॥ यातेइनकोहोइनु
 धारा॥ परउंचनकोचारनधारा॥ ७॥ विप्ररू
 षत्रीबेस्मरवरणा॥ उपजनादेबेदविधि
 करणा॥ इनसबहिनकेतेअधिकारी॥ ता
 तेहोइहैबोहोतअहंकारी॥ ८॥ तातेपर
 जनकजानैनाही॥ योहपतिबानीमन
 रमाही॥ बिस्वभगतउत्तअधिकारा॥ या
 योताहिनलयेगिवारा॥ ९॥ क्रमअक्रम
 विक्रमनजानै॥ अतिकठोरआपहिबडु
 मानै॥ हमपमंतजगनकेकारक॥ ओरब
 हूतक्रमनबिसतारक॥ १०॥ आपनमीवो
 रनभमीवो॥ श्रीरेवानीबहुभातसुनावै॥ क
 र्मअरूअर्थअर्थकरमानै॥ पटिपटिबे
 दसाबिबहुआने॥ ११॥ बहूसंकलंकरम
 नमाही॥ बहूतबहूतआरंभकराही॥ त्यों
 हीत्योंराजसअधिकारा॥ कामक्रोधलो
 भअधिकारा॥ १२॥ देनकयटचुतुराईअ

न॥ हरिगतनकीहासीवाने॥ आपआप
मिलबैवे जबहा॥ गिहकेसुयनसहै॥ नब
हा॥ १०॥ जनमआनदिवन नाही॥ दनमां
नसोजगकरांही॥ बरूपसुनमारअग्गा
नी॥ तिनअपराधनअधगतिजानी॥ ११॥
इतनौधनआयोयहसुहै॥ ऐतोमिलइतो
तबकैहै॥ १२॥ कुलसंपतिबिद्याकुबकुरा
ई॥ त्यागरूपबलगर्वबमाई॥ १३॥ इनको
मदबढयोअधिकाई॥ तातैहिरदसमरु
नआई॥ हरिगतकीवांनैहासी॥ मगहर
मरैवाक्यलकासी॥ १४॥ घावरजंगमसब
घटमांही॥ हरिपूरणघालीकहंनोहो॥ जुं
आकासलयतनहोही॥ जुंहरिबैदक
हतहैसोही॥ १५॥ परवैमुठनकबहुजानै
तातैहरिगतननहीमानै॥ बरूतमनो
रथनिसदैनकरै॥ विस्मातायजलनही
टरै॥ मदपानअरुमासआहारा॥ नारी

नेहसहतजगसाश॥ तासकलत्याशनिम
ता॥ विधिसैवेदलगावैचिता॥ १२॥ संगकरै
तौनारिविवाही॥ ताहूमैबरूततघनाही
बरूकककूदेवरतीदाना॥ पुजानमतचि
तनहीआना॥ १३॥ याविधिक्रमक्रमबरूत
बुनावै॥ बरूरवेदसबत्यागकरावै॥ ओ
सेहीआमषअरूमदधाना॥ जगमाहि
कहं॥ नहीआना॥ १४॥ बरूरुंडहाडु
तेबुनावै॥ ओसोतातपरजकोपावै॥ हरि
सरनहिआवैकोई॥ सारीविधिसमजैगा
सोई॥ १५॥ केतोतिनकासरनहीआवै॥ अ
नप्रायसारोसोपावै॥ वैहरिजनअरूहर
हिनजानै॥ आपहिकंपमतकरमानै॥ १६॥
ताततातपरजनहीजानै॥ यटिपटिवेदअ
नघिहाठानै॥ धनओसोजोकरैउधारासो
धनषोवबियागवारा॥ १७॥ जोधनहरिकैका
जलगावै॥ सोतबंपेमनगतकंयावै॥

तातैहोइग्यानप्रकासा॥ तबहरे मिलै लमिटे
नवपासा॥ १८॥ औसोधनते मुढअद्याना॥ दे
हकाजबोव भरमाना॥ कालनिरंतर हरतन
देवै॥ बरूतमदमत हरिकरिलेवै॥ १९॥ मद्यम
साजिगमअनाजे॥ औरचुलकहूनावन
लाजे॥ तईकुआपलेइअष्टाना॥ धानपानतै
अधगतजाना॥ २०॥ तपोबिनतारतदानहिदे
वै॥ औरमुलकहूनावनलेवै॥ सोउजोल
गऐकसुतहोई॥ सुतकेनऐत्यागाएसोई
२१॥ औसोसकलचरणकोधरमा॥ ताकोचु
लनपावमरमा॥ मरमहीनसुरतमंतबषा
नै॥ मुखंआपहीपदतमानै॥ २२॥ तातैवरू
तकरमआनै॥ ईश्रीयमनहिकहेनयनै॥
द्रोहोकरवरूजावनमारै॥ तेवरूजनमतेन
हीसंहारै॥ २३॥ पावरजंगमसबघटमाही
ऐकहरेइजोकहूनाही॥ तिनकोद्रोहकरै
तिनयोवै॥ दारासुतनआनसंतोवै॥ २४॥

नही मुरख नही तत्व ग्यानी ॥ पटिय टिग्य एहो
इअनिमानि ॥ तेअसा धरीगी सब जांनी
तीन संग्या नन मै ग्यानी ॥ ३५ ॥ ते सब करे
आयनी घाता ॥ सुयन रुन लह कुसलाता
कर्म पंधम सुषक चोहै ॥ इम तदे कर बिषे
बिसाव है ॥ ३६ ॥ नाना ताप तप तैर है ॥ करे
मनोर्थ फल नही लहै ॥ बरुत नात कश्म
कर उपजाए ॥ सुता बित दारा सकल मन
नाए ॥ ३७ ॥ तन सब दिन कंबो फियाही ॥
बंधे आय जम धारै जाही ॥ जम के हत नरक
भुगतावै ॥ ताहा के दुषक दे नही जावै ॥ ३८
तिन कंकु नही राय न हारा ॥ हरि रब कसो
नाहि संनारा ॥ काहा कलंक बूक ही न जा
ही ॥ हर बिन कलु यल क सुध नोही ॥ ३९ ॥
॥ चम सब चन सुन चुपको ॥ चढ्यो आस
अरु प्यार ॥ तब जुग जुग को पूबीयो ॥ ह
रि को न जन प्रकार ॥ ४० ॥ राजा उवाच ॥

कौन समक सौ अद्वतारा ॥ कै सो बर एनां म
आकारा ॥ कहि विधि न जै बर एनां प्रमा
को हो ग्यान के साधन धर्मो ॥ जिन ते गण
न लह सव त्यागे ॥ नित हरि चरन कमल अ
नुरागे ॥ सुन नय बैन भ अत के भाजन ॥ त
ब बोले नव मकर भाजन ॥ १॥ कर न जे
द्वि ॥ सत चेता हरि कलिकाला ॥ बा
रुत नात न जी ए गोपाला ॥ बरु विधि बर
न बरुत आकारा ॥ बरुत नाम बरु न ज
न प्रकारा ॥ २॥ सत जुग सुकल बरन नुज
चारी ॥ सी सज गत न बल कल धारी ॥ कं
ठ जन उकर जय माला ॥ दंभ कमल अ
रु सख बाला ॥ ३॥ तब मुन ख हो व सब सु
धा ॥ सब नखें हिरदै प्रबुद्धा ॥ अस्य क
र इडी यमन प्राना ॥ करे सब ते हरि को ध्या
ना ॥ ४॥ हंस रूप धर्म जोगे सर निरमल
परमात्म अरु ईश्वर ॥ पुरषोत्तम बैकुंठ

अबिक्ता॥ तिनकै नाम हो श्रेष्ठिक्ता॥ ७६॥ र
क्त बरिजे ता जुग मांही॥ त्रिगुंन मेख लाजल
पहरांही॥ पीत के सौ सुबोध क हाया॥ रिद्धि
जुग स्या मत्री ए मै नाया॥ ७७॥ तबति न हित
ज ग्या दिक् करै॥ बेद बेदित कमन बिसतरे
सर्व देव मै हरि कं जानै॥ तब सब युं हरि से
वातानै॥ ७८॥ सिगर्भ अरगाय क हाजे॥
बिंन ब्रह्मा क पि जग्य भनीजे॥ सर्व देव उ
र क मी बिज अंत॥ औं सेना म कहै सब सं
ता॥ ७९॥ कायर प्रीत बिंनु घन स्या मो॥ संघा
दिक आपुधि अनिरामा॥ चारि बाह न
गुल ता धरि ला लख मी चहं न बहूत आन
रना॥ चवर बज्र आदि बहू सेना॥ महा
राज लखन सुष देना॥ बेद पुं पंथ सेवा
करै॥ सब अरप न युजा बिसतरी॥ ५०॥
वास देव संकर्षण देवा॥ प्रद्युम्न अ
नुद अनेवा॥ नारायण नग वां न अनं॥

तां॥ जिनको कोइलहनअंता॥ ५॥ बिस्
रूपबिस्वसुरस्वामी॥ सबआतमसबअं
सरजामी॥ बहूतनांतअसतुतबिसतरै
विधसंपूजाकापुरकरै॥ १॥ कलिजुगप्री
तपीतंबरधारी॥ क्रमदेवधनस्याममु
रारी॥ सहतपारषतबहुआ॥ नरना
अवनकारतनपूजाकरना॥ २॥ श्रीम
नबोहोचरेबिकारा॥ तिनतैरायेंचरनतु
मारा॥ सबबिधिसबतीरथकोबासा॥ सु
मरतहीपुरवेसबआसा॥ ३॥ शिवबिरे
चसुरनरमुनीध्यावै॥ जाकोनेदबेदन
हीयावै॥ राषलेतसरनजोआवै॥ जनमर ४
नसबदुषमिदावै॥ ४॥ केवलदीबनहो
तउद्धारहि॥ नवसागरकैपारउतारहि
ऐसोचरनतुमारोगायो॥ ताकासरन
दीनमेंआयो॥ ५॥ अतिदुस्करसुरब
ठकजाको॥ ऐसोराजबोमिकरिताको॥

दस धि न गति बचन सत्य करन ॥ बन क
गवन की योति न चरन ॥ ५९ ॥ हे म म य दे
ता मन ना यो ॥ जो ता कै पी बे उ ब ध्या यो
॥ जो न गत कै यु आ धी ना ॥ ओ सें चर
न सरन मै ली ना ॥ ५७ ॥ ओ सी बि धि क
लि अ स त क रै ॥ बं हू बि धि ना म हरी
उ च रै ॥ सु नै क हे सु म रै अ रू ध्या वै ॥ ते त
त काल त त कं या वै ॥ ५९ ॥ या बि धि ने जे
हरि से वै ॥ तिन तिन कं हूर ग्या न ही दे वै
ग्या न या इ न ज त त स मां वै ॥ ज हं जा इ ब
रु र न ही आं वै ॥ ६० ॥ जे कं लि जु ग के गु न
कं जान त ॥ ते बं हू बि धि स तु त कं वा न त
॥ जे सो पर म सार क ल मां ही ॥ ओ सो ओ
र जु ग न म नां ही ॥ स त जु ग ध्या न ज ग त्र
ता मां ही ॥ द्वा युर प ता मा पू जा आ ही ॥ क
लि जु ग के व ल ना मा दि व क गा वै ॥ सो से
फ ल त त काल ही या वै ॥ ६१ ॥ न व सा ग

रमाहिनि रंतरा। दुष्यत जीव परे नही अंतर
तामै हर गुन नाम उचारन॥ एक जिहा ज
कल को त्पारन॥ ६३॥ पाप अपार धोर क
लि मांही॥ जामे पुन्य ले सक हूं नाहीं॥ तामै
जै हर गुन न चार॥ ते तरै आय और क
त्पारै॥ ६४॥ ते कै त क त ते ई बर भागा॥ जे
कुल कार त हरि अनुरागा॥ आय सुम
रि और न सुम रावै॥ ते जु ग जन म बरूर
नही औ वै॥ ६५॥ सत वेता हा पुर अवतर ही
ते कल जुग की बं बा करि हा॥ कलिक ब
साधन अर श्रम नांहीं॥ हरि गुन गावत ही
रि हा समा ही॥ ६६॥ और क हूं क हूं कोई
देस बि सुवा॥ इवा ड दि मान व ता हा बुद्धा
जे उ य ज ते जगत ही करै॥ ता ते ता हा बरूर
त उ ध रै॥ ६७॥ और जां हां ता मर परणी कृत
मा ला॥ कावेरी पथ सब नी बि सा ला॥ औ
र खुरसती पं ब म बी ह नां॥ गंगा आदि हर त

हृदहनी॥६८॥जेमानवपीवजलइनको॥
हरहोइहिरवयमलतिनको॥तेसर्वता
होइहरनक्ता॥साधुसंगहोवेंआसक्ता
॥६९॥नुतकठूबपित्ररिषदेवा॥इनकेरिना
करेंसबसेवा॥सोनरीनीलनहीसोवें॥
करेंजोसबतजिहरकोश्रेनो॥७०॥जिबिधि
तजिहरचरननआवें॥तिनकेमलहरिह
रिवुहावें॥बहुरिमलउपजनकोई॥उ
पजनकदेहरैहरसोई॥७१॥तातैसबाबिधि
कोफलएँका॥गहीऐहरयदबादिअने
का॥सबकेप्रनुसबहीसुखदाता॥सरना
गतयालनबिष्याता॥७२॥जबजबजोजो
सरनहीआयें॥तबहातबतिनतिनहरि
पायें॥तातैओरसकलपरहरीऐ॥श्रीन
गवानचरनचितधरीते॥७३॥ओसेसुनन
बहूकेवेना॥जनकेहिरदेअतउपज्यो
चैना॥संसोमिट्योसकलनुमजाज्यो॥ब

रिविसतार॥७॥ इती श्रीनागवंतैमाहापुराणे
ऐकादस्कंधेबसुसेवनारदसमादजायतेजो
पाष्यानेपंचमौध्याय॥५॥ श्रीसुषुब्बाय॥
पक्षीबहूरिसुनोनयआत्मविद्याजाकजा
नमिटअविद्या॥मिटअविद्याबुल्लहिपावे
बुल्लयाइफेरनहीआवो॥५॥ बबबुल्ला
सिनकादिकसंगा॥ नारदआदिरजेहरि
रंगा॥ सकलपूजायतिचुंगुरेचादिकमा
हादेवलाहेनूतादिक॥१॥ सुरसमुद्रसं
गलेसुरपत॥ पवनअखनीसुतग्रहपत
बसुग्रंगेरारुद्रतुदेवा॥ साधादिकअरु
बिखदेवा॥३॥ रिषगदरवपित्रअरुनाग
चारनसिवाभरैअनुरागा॥ अयसरअरु
गुज्यादिकविद्याधर॥ किंनरजष्यादिक
मायाधर॥४॥ कसनदेववेकारिजसारेअ
नंदतवारकायधारे॥ केईनाचैकेईगावे
केईबाजइबरुतबजावे॥५॥ केईजयजंय

सबदउचारे॥ केईकिस्नजसबिसतारै या
विधिकरैबरुतउबाहा॥ मगननएहारिये
मप्रवाह॥६॥ श्रीमगवानमनजुतनधा
री॥ दरसनसबमनहरनमुरारी॥ लोकन
मेंजसहिबिस्तारै॥ श्रवनादिकनसकल
अघजारै॥७॥ धन्यारिकपूरनकारावंती॥
जाकीसमनहीअमरावंती॥ तामैबुलादि
कचलिआरे॥ अकिस्नदेवकेदरसनपा
ले॥८॥ सुरगबुबफुलनकीमाला॥ बादत
कीन्हीनदयाला॥ पावतदरसतरयतन
हाहोवै॥ चित्रलयेसेसनमुखजोवै॥९॥ चि
त्रबदनबरुअसतुरतीकरै॥ उत्तमअधि
नजसबिसतारै॥ सहतबीनतीअरूपर
नामां दरसनऐसबपूरनकामां॥१०॥ ब्रदेह
॥ हेपुनुचरनसरोजतुमूरा॥ मनक्रमब
चनचितअहंकारा॥ ईदीयबाबुधियान
अरुदेहा॥ बदतहैहमपगटऐहा॥११॥ जा

कौयानवचनमनसाधो॥ सावधाननीसादि
नआराधो॥ नावसहतअनअवधावें
तेउयाविधिपुगटनयावें॥१२॥ धन्यधन
हमधनभागहमारे॥ पुगटदेवेचरनतु
मारे॥ जीनकेध्यानकारतनअवना॥ ब
रुनहोवआवागवना॥१३॥ तुमअवेत
देतयहकरो॥ अयनीमायासबबिसत
रो॥ तुमीमैउयजेसंसारा॥ सदारहनुमरे
व आधारा॥१४॥ तुमहीमाहिकीनसोहोई॥
कोउतुमैकेपरसिसके॥ नोनाहो॥ रागरहत
आनंदसरूपा॥ अजितअमितचिदुय
अनूया॥१५॥ बरुधेयनअवनअरु
दांनो॥ कियाउयासनतयअसनानो
त्यागंजोगमोपादिकजेते॥ आत्मसुख
करनहीसेते॥१६॥ तुवगुनअवन
परतअधनासे॥ जुंतुममाहिसुरयकासे
जातेजनमकमतुमधारे॥ दीनबंधदी॥

न न उधारै ॥ १७ ॥ जौ तुम चरन कवल मुनी
ध्यावै ॥ नव भैय चीतन पल ठिठकावै ॥ ओ
र नै ज भगति न रंतर सैवै ॥ नयन ही समझै
न ही कबूलेवै ॥ १८ ॥ असुरै के बैठै निमता
हिरदै धर तो चरन द्विषता ॥ बरु र ऐक से
व सह कां मां ॥ ऐक न ए चाह न हं कां मां ॥ १९
॥ जीवन मुक्त न ए ऐक सेवै ॥ प्रेम नाव
सो अत सुख लेवै ॥ ऐक जग्यां दिन सं न जै
॥ सुख देव मंतुं मकं ज जै ॥ २० ॥ ऐक बली आ
दि आश्रमो ॥ तुम रहेत कर सब धर्मो ॥ ऐ
क ऐक रूप करि ध्यावै ॥ दैत नाव करुन ब
ही ल्यावै ॥ २१ ॥ ऐक तुम्ह पत माको सैवै ॥ ऐ
क नाम निरंतर लेवै ॥ ऐक श्रवण करत न
धानां ॥ काही लग कहि ए विधि नानां ॥ ज
२२ ॥ युजे जे तुव चरन न सैव ॥ ते ते सब बा
बत फल लेवै ॥ सो तुव चरन प्रगट हं मया पो
ता तैं अब दी जै मन ना पौ २३ ॥ ये हं हं म बां

मेवा॥३५॥ सोलसहस्र एक सत आवा॥ जे
न के हिरदैये म अ बिकावा॥ हाव भाव सु
प्रीत बलावै॥ मदन दान बान बरु नाति च
लावै॥३६॥ तुम तो हो बस हो दो नाही॥ निहं
चलन जान दय दमांही॥ ओर छो मे हं वै
वे को ई॥ काम बासना बंधै सो ई॥३७॥
ऐवै नदी पुगट तुम की न्ही॥ जिन काम हं
मा पर न चीनी॥ ऐक गंग चरन न की नीरा
पर सत न मेल कर सरारा॥३८॥ इजी तुन
की रत की सलता॥ विन वन जहा तहा बि
सतरता॥ श्रव न कृत अंतर मलना से॥ नि
मल हिरदै ब्रह्म प्रकासे॥३९॥ ब्रह्म प्रकास
भव भये ना ही॥ धैरै ऐक मे कामिल मांही
इवै नदी भजते पंरुत॥ तेन कूकल करै न
ही घंडंत॥४०॥ ताते नाथ कपो अब का जै
साधु संग हं म क नित दा जै॥ जिन मे कथा
नदी हम पावै॥ जाते तुम चरन न चित

लावे॥७२॥ सुषु उवाच॥ युंते सिव संक्रादिक
संगा॥ असंतत करी बरुत परसंगा॥ व
रुस्यु विधि रोब च न मुना रो॥ ता के काज
संकल मिल आ रो॥७३॥ बुद्धा उवाच॥ हे
प्रनु ह म त ब बी न ती कानी॥ धरनी नार न
री ज ब च्ची न्दी॥ ता त तु म ली नो अवतारा
सकल उता स्यो नु को नी रा॥७४॥ मे टि अध
र्म ध म वि स ता स्यो॥ सब संत न को कार ज
सा स्यो॥ अरु की र त वो हो वि धि वि स ता
री॥ न व सां ग र त र वे कुं सारी॥७५॥ ले ओ
व तार नु यं ज ह वं सा॥ सकल ज न म को
मे ट्यो सं सा॥ ब ह वि धि का ने रु म अ
पारा॥ जिन स ला गे ज ह न वं पारा॥७६॥
अरु ज ह कु ल अ दि श्या य वि ना स्यो॥ न ही
र ह है दि न दै ही ना स्यो॥ ता ते दे व का ज
सब क स्यो॥ कर वो क बू ना हि न ब स्यो॥
७७॥ ग रे बु य सं त अध क य चा सा॥ ता ते

तिनपरसाधदुषपरहरये॥ जुंनावनसैंसा॥
इरतिरीऐ॥५॥ असीसुनहरजीकाबा॥
नी॥ सबजादवननलीकरिमानि॥ तब
चलवेकुंसकलबिचारेहि॥ अयनअ
पनरघनसमारैहि॥६॥ तबउकैहरि
कोनजदासा देषसकलविदिन्योउ
दासा॥ चालिऐकांतहरजीपेआयो॥
चरनपरसकरबैंनसुनायो॥७॥ उधवउ
वाच॥ देवदेवईस्वरजोगेस॥ प्रवनकार
तनहरनकलेस॥ जदुकुलकोसहारही
करहो॥ अबतुममृतलोकपरहरहो॥८॥
बिप्रसरायामिटनसमर्था॥ नहीमेढोसो
ऐहअर्था॥ मेरीजीवनचरनतुमारा॥ जे
सैमीनउदकआधारा॥९॥ पाननाथ
अबऐसीकाजे॥ संगआपनैमोकूला
जे॥ तुमरैसबआचरनअनूपा॥ सबकु
अतकल्पानसरूपा॥१०॥ जिनकूपाइ

ज्यो रसबत्यागे ॥ त्रिभवनके सुखदुःखसे ला
गे ॥ आसन गवन असन असनाना ॥ जाग
त अरु सो वत विधि नाना ॥ ६५ ॥ सदा निरंत
र को मदासा ॥ कुं पलत जु तमारो साधा
इमाया भय ते हन ही कहें ॥ तुमू बिन अर
धन मय न रहें ॥ ६६ ॥ गंध बसन माला
आनरना ॥ तो वउ तीरन कें में धरना मा
हा प्रसाद निरंतर योष्यो ॥ दर सपर सब दु
विधिसंतोष्यो ॥ ६७ ॥ असे में नीज दास तु
मारो ॥ माया करि है का दाहमारो ॥ माया
ने अरु तुमू रेहे ता ॥ दोहि दिगंबर उर नि
ज धरे ता ॥ ६८ ॥ इंद्रीय देह प्रा न मन साधा
हि ॥ सावधान तुमू के आराधहि ॥ बुद्ध वि
चार सदा मन लावै ॥ ते नीजरूप तुमारो प
वै ॥ ६९ ॥ हम कब क्रम अक्रम न जानै ॥ हिर
दै ग्यान बैरागन आनै ॥ तुमारे नगत न
के मिल संग ॥ नवति रह सुन तुय संग

॥७७॥ तुमरे बचन कम परदासा ॥ आसन गव
न रूप परकासा ॥ कहत सुनत सुमरत सुख
मांही ॥ नव सागर हम रहि नाही ॥७८॥ तातें
माया भय नही आनौ ॥ आपही सदा मु
कति कर मानौ ॥ परतु ऊ बिना या न त जि
जाही ॥ तातें मोहि बोधि ऐ नाही ॥७९॥ इहा ॥ ऐह
उधव निज भगत के ॥ सुने बचन गोपात्र
तब करू नाम यक क्रिया ॥ बोले बचन
रिसाल ॥८०॥ इती श्री जगवतै माहापुराणो
कादर कंधे श्री जगवान उधव समाध बहमो
ध्याय ॥१॥ श्री जगवान बुवाच ॥ माहा जग
उधव ईह योंही ॥ जुं ते कहि बात हतौ ही ॥
सिवा बिच संक्रादि देवेसा ॥ बाव मम बा
कुव पवेसा ॥ नुं मैं नारवट्यो जब नारी
तब नू बुझाया सपुकारी ॥ बुझादिक न
बीनती करी ॥ तात मनष देह मै धरी ॥२॥ अ
ब नू को सब नार उतार्यो ॥ सकल सुरन

कौकारजसारथ्यो॥ अरकीनोजसकोवि
सतारा॥ तातैंजीवजाहिनवपारा॥ ३॥ जडुकु
लप्रायलह्यौदिजपासा॥ आपहीआप
मेंहोइनासा॥ आजहीतैंसतयतदिनमां
ही॥ सिधिवारकारायेनाही॥ ४॥ जबहीमें
तांजिरुऐहलोका॥ तबपावगेड्यनवसो
का॥ कालिजुगआनिअदिष्टतहोई॥ ता
तअघकरहेसबकोई॥ ५॥ तातैंसुनउ
धवबननागा॥ अबतुंकरसबहनको
त्यागा॥ मोमसदाचितथरकरो॥ समद
रसीहोइनुमेंविचरो॥ ६॥ जोकबूकहन
सुननमेंआवै॥ अरुमनबुधिजहोत
गिजावै॥ सोऐहसबमनकोकृतजानै
वनजंगमांयाकरमानै॥ ७॥ जिनऐहस
कलसत्यकरिजानां॥ तिनकैनेदभयो
हनानां॥ तानेदहिनुमकरनहेजानै॥ वि
धनषेदताहामेंगानै॥ ८॥ विधनषेदना

ष जो वेदा॥ सो तां को जाकै है नेदा॥ नेदा मिट
बिन करन त्यागा॥ तातैं ऐहें काय बिनागा
॥ जु जुं त जै सुषा त्यो होई॥ तातैं वेद बत्ता
बदोई॥ आ ग जाइ व मा व सारे॥ जे आप
ही हों ते बिसतारे॥ तातैं ऐह सब मिथ्या
जानौ॥ उचनी च गुन रैय मानौ॥ इदय म
न अरु नीह चल करो॥ अहंकार ममता य
रहरो॥ सुषय ल सकल बिसतारा॥ ऐक
ही आत्म को आधार॥ सो आधार बुझा
को जानौ॥ असी विधि भव के नय जानौ॥
या विधि वेद अर्घ्य कं जानौ॥ बहुर नीह
चल हरै दे करि जानौ॥ दहलोक की आ
सावं मो॥ या विधि अतराइ सब धं मो॥
जितनी या कै आस होई॥ तितनी बिघन
करै सब कोई॥ जु जुं त जता जाव आसा
तुं तुं मिट बिघन के पासा॥ जब येह
होइ आत्मा रामो॥ जब येह नही आसा

सा साकौ धामां ॥ तब बिघन न के करता देव ।
ते उलट कर नित सेवा ॥ १५ ॥ ताँतै बिधन धे
द सब नाथो ॥ असा बोहि हिरदै हर राथो ॥
ऐक बुझ कर सब कंदे यो ॥ हजो क बह
मुख न लेयो ॥ १६ ॥ अरु जिन या यो बि
स्मरि यानां ॥ तिन के बिधन वेदन हीनां
नां ॥ परितिन के नित हि बिध हो शी क देन
वेदन पर सै को ई ॥ १७ ॥ वैद्य सुष गुन दो
ष न जानै ॥ वात क सम आचार न ठानै ॥ प
रि बिधिसारी सेवा करै ॥ और न वेद अ
प पर हरे ॥ १८ ॥ जस बय रि सं सदा हि हर दे
अति सा ॥ तां ग्या न बि ग्या न सहत वेदा
त ॥ सब जगु बल जान थर हो ई ॥ बह
खुं न मन मया व सो ई ॥ १९ ॥ अैसे सुन
हर जी के बेनां ॥ अत इ कर अत सुष देन ।
॥ तत्व सुनन का बादी ॥ तब बोले उधव
निज दासा ॥ २० ॥ उधव वाचं जे न सरुं

जोगउपजावन॥ जोगदानजोगेसुरमा
वन॥ तुमयेहत्यागकहोमेरेहत॥ मोह
करिनहीआवचित॥ ११॥ क्योंहोवविषी
इनकोत्यागा॥ पुत्रकलित्वादिकअनुरा
गमा॥ यहतनयहधनएहसुतमेरे॥ एह
बिनताऐगिहचेरे॥ १२॥ याविधिममअ
हंकारसमुद्र॥ बुझिरहोमेमुक्तिकापु
द्र॥ तुमरीमायाअतिभरमाया॥ तातैग्या
नहिरदेनहीआया॥ १३॥ अबमोहि
षिउपदेसो॥ मेरेनुरकबूग्यानप्रदे
सो॥ तातैअबबरुविधिसमजावो॥ मम
उरपूरनग्यानबढावो॥ १४॥ जातैसबत
जितुमकंध्याउ॥ बहुरुजगतजनमनहीट
आउ॥ अरुदूजोऔसोनहीकोईजातै
लानग्यानकोहोई॥ १५॥ बुझादिकतनधा
रीजेते॥ तुममायाबसिकानेतेते॥ तातै
मायाहीकंदेधे॥ कमेअरुनोगन॥ लि

करि ले धै॥२६॥ ताते मजन तुमारी सरना॥२७॥
सो का जे याउ तुम चरना॥ तुमारी अदिन अ
त न पाशा॥ ग्यान रूप सब हाते न्यारा॥२८॥
सो ईतर गहो कर जाको॥ माया कबुन सके
कर ताको॥ तुम ही ते उपजे यह जीवा॥ जे
से अगन रुतै बहू दीवा॥२९॥ सदा रहे तुम
रे आधारा॥ नित उठियो सो सरजन हारा॥ अ
से पुनु कंसे वनाही॥ ताते पर परम दुषमा
हो॥३०॥ या भव के दुष कहै न जाहा॥ पयोनि
रंतर मीन माही॥ अब मोके सरना गति
जानी॥ देकर ग्यान सकल भय नानो॥३१॥
मेरे तन धन मन तुम घरना॥ मन कर्म बचन
आयो मसरना॥ ओसे सुन उधव के बैना॥
हंस करि बोले अबु जुनेना॥३२॥ आन गवा
न उवाच॥ उधव म कह देह ज्योना॥ स
त कहत रुनाही आना॥ या जग साधन
ऐह जेतो॥ आप आप उधरे ते तो॥३३॥ आ

पद्मभक्तो बरो पचा नै॥ बोरुबुरो नला कंछं
नै॥ गुरु आयनो आयही होई॥ यस्य यषी॥
भावजी कोई॥ १३॥ परनरतन असोहनी को
बुद्धा आदिसबन को टीकौ॥ जात बुद्धा वि
चार दिया वै॥ बहुरूपु जगत जन्म नही अ
वै॥ १४॥ एक पद वै॥ पद वीइ पद एका॥ चोप
दादि बहुरूपाद अनेका॥ मै बहुरूपाति सि
ष्ट विमतारी॥ तीन मयि वनर देह हमारी॥ १५॥
मोहिया वै सो या करिया वै॥ ओर सबन
सुषडुष भोगा वै॥ याम मेरो कर बिचारा॥
सावधान होइ बो होत प्रकारा॥ १६॥ ना
इया तो जमह देहा॥ इया दारस कल
सनेहा॥ अपन अपन अर्थ न गहै॥ सो
सक्त को न कीलहै॥ १७॥ अरु सो वत
बसुपनो आवै॥ तब तो इतीतन बिट
कावै॥ सुपन माहि सुषडुष कलह॥ ना
गवात सकल कंकह॥ १८॥ ताते मै तो

इह तननाही॥ में तो बासकी यो यामांही सो
बिन ता सुत बित पिर वारा॥ मेरो तो नही स
कल य सारा॥३॥ ए तो सकल देह संग
जाही॥ सो इह देह क देह मनाही॥ जा
तै सुयन माहि नही कोई॥ उहा सकल
ओर ही होई॥७०॥ अरु नाई म तो इह त
न नाही॥ सो तन दी से सुयना मांही॥ तो ते
इह घर न रहावे॥ वाकं ताजियां मे फरि
आवे॥७१॥ वां तै रोह या तै वद जु वी॥ ये
दद द ग्यान गदो मैं मूवी॥ जो एह दहं दे
ह कं लहे॥ इ प्रीय न के सब अर्थ न गहे
॥७२॥ इ प्रीय बुधियां दिक् बानी॥ जा कं के
इस के न जाना॥ सो म नित्य निरंतर एका
उप जै विन स देह अने का॥७३॥ नाई
सो मैं काहा तै आयै॥ किन तन दी नो कि
न उप जायो॥ अब तो मैं देह आधार
पल करहन सकं न र धारा॥७४॥ ए दो उ

तजिका मैरहू॥ सोइ सत ताहि दटिग ह्यो॥
औं से बिरु विधिकर विचारा॥ त्यागे देहा
दिक पिरवारा॥ ७६॥ सो जाहा ताहा तै ले
वग्याना॥ कबहु कब न जान आना॥ या
विधि आय अय कं त्यो रे॥ लह बुल न
वडुषनी दारे॥ ७७॥ इह विचार मानव
त न होई इ जो नुल न पावे कोई॥ ता तें
म तुं मान नूत न पायो॥ अरु में तो कब तो हिल
पायो॥ ७८॥ ता तें त जो सकल को सेगा॥ म
न क्रम बचन होइ न हं संग॥ सब तें पर अ
य कं जानो॥ सो आधार बुल को मानो॥ ७९
॥ जाहा ताहा देषो उपदेसा॥ या विधिक
रो बुल पर देसा॥ औं से जाहा तहां त ले
वग्याना॥ वहु तक न ऐ बुल परवाना॥
४०॥ तिन में कहू ऐक का बाता॥ जो इत ह
सक था बिधाता॥ दत दिग बर अरु ज
द भुया॥ तिन को हे समाद अनूया॥ ४१॥

॥५०॥ बुद्धा ॥ सुनउधवइतीहासअब ॥ नाष्ट
परमअनूप ॥ बकतादतात्रीइताहा अ
रूपबतजहनुय ॥५१॥ ऐकसमनुयत
जयुनामा ॥ ऐगएसिकारबोदिनजधा
मा ॥ तबतेनगुनकटेहेसता ॥ देखोऐक
परमअबधुता ॥५२॥ नरननेहचल
इंब्याचारी ॥ तेजनधानतरएतनधारी
करयनामबलतपकारा ॥ जहनुयत
बबचनउचारा ॥५३॥ जहउवाचा ॥ हेप
नुपूरनधुमदयाला ॥ कहोक्रयाकरि
होक्रया ॥ ज्येसीबुधिकाहांतुंयाई ॥ जा
तैबिचरोसहजसुनाई ॥५४॥ नऐअक्त
ताइवाचारी ॥ बालकसमसवाचिता
टारी ॥ सबजुगनिसदनऐहबिचारे ॥ ध
र्मअथैकामबिसतारो ॥५५॥ सोउनही
उयजडुषयावै ॥ तिनसंलागिसबआ
वगुमावै ॥ तुमसमरप्यसबहीबिधिजा

नौ॥ किय न पुन पीबै न बधाने॥ ५६॥ सब धिसु
 रस तरुन तन सुदर॥ तुष्ट पुष्ट को लिय न डुं
 र॥ नाक बूबा छो नाक बूकरो॥ जटु न मंत के
 धनु म बिचै रौ॥ ५७॥ तिस ना काम लो नई ला
 गी॥ सकल लोक दाजै तू आगी॥ तुम आद
 न मई दाजो नाहा॥ जुग यद ग गो दिक् माही
 ५८॥ दिह अर्घ्य सब हा को त्यागो॥ रहो आनंद
 । तै सो कहि लागो॥ संजन को ईराषो देवा को
 इतहन सक तुम नैदा॥ ५९॥ ताते कहो कृपा
 करि नाथा॥ जु जल बूझत पकरो हाथा॥ जु ज
 हनु पबीन ती करी॥ तब अबधत गिरा उचरी
 ६०॥ अबधु उबाचै॥ सुन जहनु प परम ब
 र भागी॥ जा काम त हर सं अरु नुरागी॥ बहू
 त कहै मेरे गुरु देवा॥ जिन तम सब जान्यो नै
 वा॥ ६१॥ परम मतो आ पत लानौ॥ तिन में सो
 कि न हन ही चीन्हौ॥ ते गुरु सकल मुनो तु
 म मोसू॥ हर जन जान कहत रूतोसू॥ ६२॥

धरनीयवनगगनअरूयानी॥ अनलचंदर
रिवकपोतहीजानी॥ अजगरसिधुपतंगअ
रूचंगा॥ कुजरमधुहरतारूकुरंगा॥ ६३॥ मी
नापिंगलाकुररबाला॥ कन्यासरकरताअ
रूबाला॥ मकरीनगीइचोबीसा॥ इनसुसी
षोसुनोमहंसा॥ ६४॥ पृथमधरनीमैगुनदेख्ये
सोमैपरमतत्वकरलेष्यो॥ सबहीरेहैधरनी
आधारा॥ तापरमुठकरैअयकारा॥ ६५॥ वो
रवोरअतउतमअंगा॥ तिनकंकरबहुत
बिधिनंगा॥ तापरन्यरबतबुबअनंता॥ प
रउपगारसबबरतता॥ ६६॥ परअयराधक
बूनहीजानै॥ ६७॥ लटआयउपगारहिठानै॥
अैसीसीषधरनकीलेवै॥ सोनरहरचरनन
कंसेवै॥ ६८॥ पानबाइजुलेआहारा॥ स्वा
दकुसुवादकोइपारा॥ योहरजनआहार
हिलेवै॥ स्वादकुसुवादनहीचितदेवै॥ ६९॥
बिनआहारबिचारनआवै॥ सुवादकुवा

सवादनमनवहरावै॥ तातै ऐतो ले आहारा॥
जेतो होव्यान आधार॥ ६॥ अरु जु पत्र
न फिरै जग माहीं॥ सुध अ सुधा लिय कहूं
नाहीं॥ नाना भेद नै मै संचरै॥ पिय अपिय गु
न दोष न धरै॥ ७॥ यु विषी शन शिहतै जोगी॥
मन क्रम बचन न होव जोगी॥ भेद अ नेक
नम अनुसरै॥ पर कब भेद हिरदै न ही धरै
॥ ८॥ अरु जु पवन गंध संजोगा॥ लयत
न यौ जानै सब लो गा॥ पर सो पवन सदा
करुपा॥ लिय न कब हूँ सो अ नृपा॥
१॥ पच नुत न रमत जु देहा॥ सकल विकार
न ही को गेहा॥ ताम जोगी लयत न होई
ओर लियत जान सब कोई॥ १३॥ जु स
ब शन म एक आकासा॥ अरु सब दिन को
ता मै बासा॥ सब उपजै बिन सब रताई गि
गन लिय काल तिहूं मांहीं॥ १४॥ तुं बहू
बिधि सब जगत य सारा॥ मुनी दैय आत्म

आधारा॥ जो कबूदी से जट है सो शीजा कैसे
गतचेत न होई॥ १५॥ जुं आत्मदेह न में दे
बै॥ तुं परमात्मजा हाता हां ले बै॥ एक अ
नत कहूं आनरना॥ लियन बिय जन मन
ही मरना॥ १६॥ सो परमात्म एका॥ कदे
न दे बै नुल अनेका॥ जुगगन घटन में हो
हुई॥ बरु रियु न जहा ता हा र्हेई॥ १७॥ क
हवे कं र्हेइ ना तर एका॥ यु आत्म अरु ब
सब बेका॥ जुं बरु मे हय वन दामनी॥ बर
बै बरु बास जा मनी॥ १८॥ परन लिन लि
पत कदे न होई॥ ओर लपत जान सब
कोई॥ त्यों आत्म मदेह अनंता॥ उय जै बर
तैया व अनंता॥ १९॥ पर आत्म लिपत
कहूं नाहीं॥ साधा विचार यों मन मां ही॥ इ
ह अबरगुन तो हि सु नायों॥ अब नां पु
जो जल तया यों॥ २०॥ नित नर मल और न
मल रहै॥ ताप मे ट सीतल ता करे॥ सब

सुषदाऽक्वदितरसवंत॥ एगुनजलकेसी
षसंत॥ ८१॥ ज्तेजवंतअतदायतजुक्ता
षोभरदतजाहांतहांनरमुक्ता॥ स्वादरह
तसबभषएकरे॥ अगनहालयसंचनध
रे॥ ८२॥ त्योहीगणनतेजमयहोईईदीया
दिसबदीयतेसोई॥ जद्ययवरूबिधि
भोजनकरे॥ स्वादरहतगुनदोषनधरे॥
८३॥ कारूकृतषोभनहीहोई॥ कारूके
गुनलियनसोई॥ उदयवानलेइआहा
रा॥ कठनजानसंचइसारा॥ ८४॥ गुपत
रहनहीजुलजनावे॥ कान्होपगटपु
गटकेआवे॥ परइबाआउतकंले
ई॥ तेनकेपांयरहनहीदेई॥ ८५॥ सु
मुनीगुपतआपतरह॥ षोजिलेइता
कोभुमदहे॥ उत्तमभोजनादिउहोई॥ प
रइबापातैलेवसोई॥ ८६॥ बरूकृअग
नएकरसएका॥ बरूबिधिदीसकाव

यो मुनिकहेयुनें अरु येथे ॥ सकल अर्थ ईडिनी क
लेवे ॥ नित आत्मा अकर्ता जांने ॥ सब तजि वल्ल विवा
अनेका ॥ तुं आत्मा एक सब माही ॥ नेद ॥ १
देह कृत संचे नाही ॥ ८१ ॥ दीवाम सा लप
गठ जो होई ॥ ज्वाला जात तथे सब कोई
पर ते दीसे तो के तो ही ॥ प्रत दिन देह जा
त हयु ही ॥ ८२ ॥ जे सै सस के बाटे कला तु
तो दिन दिन दी सै नला ॥ पुरन के क दिन
दिन ना सै ॥ सकल मिटत नही प्रकासे ॥
॥ ८३ ॥ तो बालाद अवसता आवे के
करि नै क्रम ही क्रम जावे ॥ जब आत्मा त
देखी नाही ॥ पर है सदा काल तिहना
ही ॥ ८४ ॥ अुरि वाकिर न न सै जल लेवे ॥ स
मय पाइ बहुर्यु फेर देवे ॥ परिक बह
अनमान आने ॥ लाये दीयो आपऊ न
ही मांने ॥ ८५ ॥ जु घट जल पत निबत सु
रा ॥ लपत देखी ए पर हहरा ॥ तो आत्म दे
ह समंधा ॥ स्थल दृष्ट जानत हवधा ॥ ८६
॥ अब कयोत की कथा सुनाउं ॥ तेरे म

कोमलवचनसुनैमुखादसे ॥ अयेनैअगाअमगासोअसे ॥ हरिकीभायाबुडा ॥

उच्चारकं ल्याये ॥ तनग्रिहमाहिनबालक
पाए ॥ १०० ॥ तब देखमातातेबाला ॥ बंधेजा
लमाहिबेहाला ॥ तबसोताहपुंकारत
धाई ॥ बालदेतजालमाहिबंधाई ॥ १०० ॥
तबकपोतदेखेदोसबबंधेहरिमायाकी
नेसबअंधे ॥ तबसोबहुविधिकरैबि
लाया ॥ देखेबहुतआपनैपापा ॥ १०१ ॥ हाहा
पापकूनमेंकान्दें ॥ ओसोइषदईमोहि
दीन्दें ॥ जाकीऐहपतबरतानारी ॥ पुत्रलेनि
सुरलोकसिधारी ॥ १०२ ॥ मोहिबोहिसुनगि
हमांही ॥ सबमिलआपईपुंजाही ॥ नामें
सुखनोगऐहलोका ॥ नाहिसाधनपायोपर
लोका ॥ १०३ ॥ धर्मअर्थकामसबजामें ॥ क
बूदेनहीरहोग्रहतामें ॥ अबप्राननराषें
कबूनाही ॥ घरीघरीमेंइषअधिकाई ॥ १०४ ॥
याविधिअप्योबहुतबेहाला ॥ बंधेदेखबि
नताअरुबाता ॥ ब्याकुलबुधि

हरजीकेसंगा॥ सदारमोंजुअरधगा॥ ६६
काहाओरसुरनरपियकरहजेबापरेआ
यहीमरिहै॥ अरुतेसुषकोईधरनाही॥ दे
षतसकलयलकमजाही॥ ६७॥ मेरीदिष्टइषा
सबआवे॥ कालआधीनकाहासुषयावे
तातैमयहतेहचलजांनी॥ क्रियाकरहसां
रंगप्रणा॥ ६८॥ जिनमेंबैरागउपायो॥ अ
पनचरनकवलचितलायो॥ ऐहहरक्रियाबि
नानहीहोईजोबैरागलहनरकोई॥ ६९॥ जा
तेसबप्रवबंधननासे॥ हिरदैमोत्पतआप
कासे॥ मेंतोमदनागनीओसी॥ विभवनमाहि
नहीकोईतैसी॥ ७०॥ ताकोकसोहरकोभज
नो॥ केसोकालजालकोतजने॥ परितेदीनब
धुगोपाला॥ यततउधारनदीनदयाला॥ ७१॥
तिनरुआयाक्रियादेकरा॥ जिनमेंरउरिओस
धरी॥ अबलेयापरसादहिसीसा॥ नसदिन
भजेचरनजगदीसा॥ ७२॥ जितनयादेहनि

रवाहं॥ सो न नंदी आरंभोइ॥ सहज माहि जो
हरजी त्यावे॥ ता करिया देह बरतावे॥ ५३॥ या
भवकुं य पर्यो न तथाणी॥ विषय आवरण
दिष्ट बियानी॥ ता पर अजर काल गरा स्यो
युं न बरूत या स स्या स्यो॥ ५४॥ ता कूहर
बिन कूं न बूनावे॥ आप ही ते न ही बूटणा
पावे॥ अरू आप ही आप कं राधे॥ जब स
ब खुस्त हिर है ते नाधे॥ ५५॥ जब ही हर का स
र न हि आवे॥ तब ही आप ही आप बूनावे
वे प्रभु न जानें दमय देवा॥ काहा कर गोति
न का सेवा॥ ५६॥ पर सब जगत काल बिट
कावे॥ हर का सरन आप सुष पावे॥ ता ते
दोर सकल को त जो॥ प्रेम ना वहर चरण न
न जो॥ ५७॥ या विधि आप ही आप उधारे॥ अ
ब न ही नव सागर में नारो॥ युं पिगुं ला परम
गत याई॥ दहं लोक की आस मिठाई॥ ५८॥
सीतल है सज्जाम गई॥

हाथ में धारे॥ बहुर लगी जब चावर खरने॥ तो
हल गे सब दते करने॥ १०॥ तब तन रो क एक
ही राख्यो॥ चुर्य रिर ह बहुर नही नाख्यो॥ मो बि
चरयो ईवा चारी॥ ताते देष हिर द में धारी॥ ११॥
॥ बहुर तन संग बढे ब क वादा॥ इ जै ह त हो
इ संवादा॥ ताते र हरे काला जोगी॥ सदा बि
चारे बहुर स नोगी॥ १२॥ आसन पान देह
मन बंधे॥ दिह बैराग हिर दै में संघे निहं च
ल हो इ नित बहुर बिचारे॥ युं कम कम रजत
म कंठारे॥ १३॥ तुं तु नै ह चल वढे समाद॥
तज तो जाव सकल नुयाध॥ जब तुं पाव
कही धन हीन॥ त्यो हो वन ज पद मलान॥
१४॥ तव क बहुर क बढे त नही जाने॥ सि
ला समान देह दै जाने॥ तुं आग हो इ न
पत गयो॥ सेना सब द बहुर त बिधि नयो
१५॥ पर सिर कर ने द नही पायो॥ या बिधि
सर में चित ल गायो॥ ऐसी सी घल ई मता॥

ते॥ नहचलबुधिनईममजाते॥१५॥ जेलोग
 नतेमरनुवेगा॥ बसगुहामैरहअसंगा॥ साव
 धानअतिथोरोबोलै॥ गतादिकअंननहीवे
 ले॥१६॥ ग्रिहआरनडुषकोमूला॥ तेआरभे
 जेनरनूला॥ सरपपराइगुहनमरहै॥ याबि
 धिमुनयहसषाहहै॥१७॥ ऐकईआपनिरं
 बनदेवा॥ जाकोकोईलहनभेवा॥ आपहीत
 मायाबिसतारै॥ सतरजतमबरुभेदयसारै
 ॥१८॥ बहुरआपहीसबसंगहै॥ निजानंद
 मयऐकैरहै॥ तातेऐसबमिथ्याजानो॥ या
 कोकरतासोसतजानो॥१९॥ इहसषामक
 रितलेवै॥ सबतैपरबलकसेवै॥ जाहाताहप्रह
 मनकोधारै॥ भिसषासुरकबरुनतारै॥
 २०॥ रागदोषअयकूहीदे॥ होतरूपताही
 कोसोई॥ अगीकोटहृतऐहलीनो॥ तोम
 नहैचरननथरकान्हो॥२१॥ यहचोबीसगु
 रनकासिषा॥ तोसंमचावीदिदृष्ट्या॥ अ

बतिनेतेंसीधौ सो कहैं तेरो ~~स~~ सक अंगो
नहि देखैं ~~रा~~ मेरी देह मोहि समझावैं ॥ हिरदैया
न बैराग उपावैं ॥ जुवालाप नग यो बिलाई
तुही अब ~~जो~~ बन जाई ॥ आव जुरास
तु तें आगे ॥ बहू विधि दुष देह संलागे
स्नान स्था लन कोय रह न पा ॥ जात प्रीति न
जोरै देखा ॥ १२३ ॥ पुत्र कलत्र अथे पसु गेहा
कुल कटू बसव सेव गजेहा ॥ तिन समि
ल जा देहा सोई अंत माहा दुष देवे ॥ १२४ ॥
आगे कंब हू कम उपावैं ॥ जब जंम कै
दरबार पवावैं ॥ रसन मत धै चैतर साया
ए सदा चाह जल असना ॥ १२५ ॥ ने न रूप
सबुही शुद्धा ॥ १२६ ॥ चह नारकोर मना ॥ ब
चा सपर सना साब हू गंधा ॥ चरन गवन
कर करै धंधा ॥ १२७ ॥ या विधि सब मिलि
जुटै ताकें बंधो देह संदे पै ताकें ॥ ताते
रहै देह कंत जीए ॥ सदा निरतर हरि कं

भजीलो॥ शहरिजवमायागुनविमर्त्तिरो॥ तव
नानाविधितेहसवारे॥ तिनमनसतुष्टन॥ ति
नयो॥ बहस्योमानतुनैरमयो॥ १७॥ ता
कंदेखवाहोतसुखपायो॥ तामअपनोध
मवनायो॥ तबहरीजीबोलेऐहवानी
जोपरगटदेवेदबधानी॥ १८॥ मोहित
हसोयाकरिलहे॥ याकरिसबभवब
धनदहे॥ जबमेरहेतकरउपाया॥ तब
मयाकोकरोसहाया॥ १९॥ तोतेंयेहअ
तडुलनदेहा॥ श्रीभगवानरच्योनिजगेद
अतडुलभकरुजतनपावे॥ जोपाव
तोघरनरहावे॥ २०॥ प्रतदनमृत्युनैरतर
गासै॥ एकदिनाततकाबबिनास॥ ज
रारोगभवसोकनधाना॥ जामेंयलकसु
यनहीपाना॥ २१॥ तोतेंताहियाइकरिरा
जा॥ करलीजेअपनोकाजा॥ तातेंयह
बूटेसंसारा॥ जाकेडुषकोवारनपारा॥

उपाइ॥ अब ताको साधन कहूं बहूत मात
समजाइ॥ ७६॥ इती श्री-नागवंत महापुत्र
ऐरेका हरक ध श्री उधव नलवान उधव स
माधेया प्याने नाम नवमौ ध्याय॥ ७७॥ अमु
धुत इती दास पाया श्री स पूरण श्री नग
वान उवाच॥ सुन उधव अब साधन क
हूं॥ तेरे सब सदेह दहूं जाते उपबुद्ध
गाना बढे और सकल भुमनां॥ ७८॥
मम नगत न मारग जाये ते सब हिरदै
बेठे म आये॥ ते कहा ऐ आतम के धर
मां॥ और सब बंधन के क मां॥ ७९॥ तिन कूं
सावधान के जान॥ बर श्री राम कुल
मंथ्या मानै॥ जे जे बहू आरंभ नी करे॥ ८०॥
॥ आगे कूं बंधन नुप जाव॥ जे न के सग
जम कर जावै॥ जो बिचार आरंभ नत जे
दो इन्ह को म चरन मम न जे॥ ८१॥ जाहं
लगद नाना बुध ताहा लग उधव जान

कुबधा दैत भाव सो चरम कर जानै ॥ सुप
न मनोर्थ सम कर मानै ॥ ५ ॥ तातैं ओर क
रम सब तजे ॥ जित नै मृतक बूझक न जे ॥ ते उ
सत्य कब नही जानै ॥ करै तो कर नही तो ॥
जानै ॥ ६ ॥ न गत माहि जो अंतर परै ॥ ते
ते नुल न कब हू करै ॥ जो जा समन अत्र
जानै ॥ तो ता सम सहज मैवा नै ॥ ७ ॥ जे मन
माहि न ह चलै धरै ॥ नै मन क भाव त्यों क
रे ॥ ब्रह्म बिग गुर सर नही जावै ॥ तातैं नेद
सकल को पावै ॥ ८ ॥ जम अरु नेम कब
नही सेवै ॥ सत गुर कह सीष सो लेवै ॥
मान रहत मवर नही जानै ॥ तन मन अ
रप्यीत कंवा नै ॥ ९ ॥ जाहा ताहा तै मम
ता पर हरै ॥ सावधान अल सनही करै
तज अ सुया बंधान हि बोले ॥ तन मन न
ह चल क दे न मोले ॥ १० ॥ अधा सहत अ
सक्त न होई ॥ गुर चरन न सेव सिष सो

६॥ दारा सुत बित गह कटू बा ॥ सकल सुत
आत्म पत अंबा ॥ ११ ॥ तिन सँ हि न सम क
रि लेखै ॥ म मेरो करि कहे न लेखै रहउ दा
स आस पर हरे ॥ निस दिन बुझ माहि मन
धरै ॥ १२ ॥ सुख मयुल देह वै जे सै ॥ नर्म रूप
माया के ते है ॥ इन दोनु त आत्म हर ॥ स्वप्न
का सचेत न नर पूरि ॥ १३ ॥ युल सरीर प्र
गट जड ऐहा ॥ चेतन करै तोह बरू देहा
सो बरू तन जड ह अंग ॥ चेतन दोइ आ
तमा संग ॥ १४ ॥ सो आत्मा दो होत न्यारा
दरूप का सकदरू आधारा ॥ जुरक का
व अंग न पर जरे ॥ सोइ जे प्रकासत करै
॥ १५ ॥ पर सो अनल दरूत न्यारा ॥ स्वप्न
का स आत्म आधारा ॥ बहधा सेवका
कावन संग ॥ पावउत पत अरु संग
॥ १६ ॥ जुं दोउ तन हरे माया का एते आ
तमा आय करि लीए ॥ तिन संग जनम

मरनऽप्यपावै॥ लहन्ना नंदत बही बिट
कावै॥ १७॥ तातें बहू बिधिकरै बिचारा
आतम जान सवतें न्यारा॥ एक अजन
मा और अब नासी॥ चेतन धन पूरन सुख
रासी॥ १८॥ तब उयज बिन सब रताई
परम आसुध सुधन काई॥ सकल बि
कारन को संघाता॥ परगट दीस आ
वत जाता॥ १९॥ मो संया संक सो सं
या॥ मिं चेतन यह जड बहुरंगा॥ युं बी
चार त्यागत नम मता॥ आत्म दस टस
कलम समता॥ २०॥ या बिधि होइ रह्य
रग्यानां॥ मिलै बुल्ल बट सब नाना॥ प्र
पम और अस थर गुर देवा॥ हजी सि
ष करै नित्य सेवा॥ २१॥ गुर के बचन स
रवन मधानां॥ या बिधि उयज या वग्पा
नां॥ उयज कावतन के गुन दहैं॥ करम
बीज कोइ न रहै॥ २२॥ तब जुं पावक

तेज समावै॥ इधन बिना न फल करावै॥
 आत्मा बुझ मय होई॥ इधन कम न सम
 कर सोई॥ १३॥ अरु जे मूढ न श्रव विजानै
 ते बरु विधि कर मन कंठानै॥ तेन कम
 न के फल नुगतावै॥ जनम मरन की अं
 त न पावै॥ १४॥ जाहा जाहा जाइ ताहां ताहं
 कात निस दिन रह सदा बेहाल॥ ऐह ज
 ग दीस त्यों को त्यों ही॥ परे को यत रह
 न युंही॥ १५॥ और और होइ आकारा
 ॥ तीन संगत मन बरुत प्रकारा॥ कब
 रूपान्तरि रह नही आवै॥ जनम जनम
 मर मरि डुष पावै॥ १६॥ कर मन जो क
 र्म न आवै॥ सुषरु जो सुष नोग न क
 रै॥ ऐच्या रूदी स परत जा॥ तात सवत
 जी ऐह मंजा॥ १७॥ जे पंडित सुरत प्रमत्ती
 जानै॥ तत लह विन कम न ठानै॥ ते मु
 ख देह अन्न मानी॥ आयही आयक

हावग्यानी॥१॥ पाहरजनसेजनकबहुकरे॥
 तत्त्वनसुनकरमबिसतरौ॥ तिनतैन
 लेजेकबूनहीजानै॥ तत्त्वबचनहरदेआ
 ने॥१॥ जयमअतसुषनकजानअ
 रछनअगुरदेहनमानै॥ परसोतसनस
 मरुतेऊजातेलहनगतकोमेऊ॥२॥
 कालसत्युनैततनकंगसेताकोको
 होकाहासुषयसे॥ जुकोईमारणकल
 जे॥ सलीनकटघरैलेकाजे॥३॥ अरु
 ताकोभोगननुगावै॥ सोधुकोहोका
 हासुषायावै॥ अरुतुहापुरनसुरलो
 का॥ मदमंवरनघानयसोका॥४॥
 तिनकेहेतजतनबहुकरे॥ सिक्किन
 होइबिषनअतपरै॥ जुयेतीमबिघने
 का॥ जुंसुरगादिकलहेकोइतेका॥
 ॥५॥ अरुनोलहोतोठधरनाही॥ देष
 तबिनसजाइपलमाही॥ याहाजगक

मुने

पर

रसबकोई॥ अरु जो अतराई नही कोई
॥२०॥ तब जो सुरग लोक कं जावै॥ केव
देव देव सुषयावै॥ अपन पुन्य को उ
पजायो॥ उत्तम जाई बिमान ही पायो॥२१॥
॥ बरु गध बरु गधः कों करै॥ बरु सुद
र नारी मन धरै॥ ईब या होइ तहां चलि जा
वै॥ सहत बिमान बिलंब न लावै॥२२॥
इमृत पात ताहानत करै॥ बसत्रादिक
न एी देह बरु धरै॥ तिगुनी तहत मगन
बरुत सुषयावै॥ परवै का कबू सुधि न
आवै॥२३॥ जे तो पुन या हा को होइ ते
तो रह सुरग में होइ॥ पुन्य पीण हो वह
जब ही॥ काल ताहा तटावत बहा॥
॥ सो सुष को होत जु कुं जावै॥ ता
उष का कबू कहत न आवै॥ रहो च
ह पण पुन्य कर रहै॥ काल आधीन का
हा उष लहै॥२४॥ कोइ सुषयाव कह जे

तो॥ बान लेहे दुष तेतो॥ सोत जि सुरग नुमम
आवे॥ पीबु न अनत चेपावे॥ ७० इहान
षी विधि की गत तोस॥ अवन षध की मुनी
यो मोस॥ जो कुसंग में पाणी प्ररे॥ तो बरु
नात अघ मही करे॥ ७१॥ बाब काम इदी
सयाधीन॥ अस्थील पटलो नीदी ना वरु
जीवन काह स्प करे॥ प्रेसत नुत गण क अ
नुसरे॥ ७२॥ मही ऐक बसु सब मोही॥ तिन
के दोह नरक में जाही॥ बरु र अ सुधा वा
ति नरुह॥ जनम जनम बल्ल सकट सहै॥ ७३
तो तं विधन ये जे करे॥ ते सब जनम मरन
मयरे॥ कम करत न तन धरे॥ तन धर ध
र बरु दुष समरे॥ तात प्रवत म सुव नाही
जाव बुल लोक पुन जाही॥ लोक पात स
ब लोक समेता॥ इत न रहे बुल दन जेता
॥ सो बुलाह अत न रहे तीतर बाज का
तं जुगहे॥ अग्रह मेरे नव मोही॥ ७४॥

अरु जो बह बिधि ज्ञान कं तहे बोधि
उपाध देह मरहे ॥ सो बह सुं कुल यत्न
होई ॥ अरु पुं कर जानी जे साई ॥ १०० ॥
कैसे विचर कसरहे ॥ दे सैं जो व कैसे
कहे ॥ क सैं यह कैसे स सेवे ॥ के सं सुने कुं
न बिधि जो वै ॥ १०१ ॥ अरु ज्ञात म ऐ क वै
नाही ॥ ऐक मुन ॥ ऐक बंधाही ॥ ऐ
उक्ता ऐक ॥ ऐतो बह त ऐक कुं उक्ता ॥
१०२ ॥ गुन अदान द ज्ञात मा अनाद ता तै
तो बंध न ज्ञा ॥ नित मुक्ति कुं कही देवा
॥ या को मोहि बंता यो नेवा ॥ १०३ ॥ यह
उध व न ज न गत के ॥ सुन कर न र म ल व
न ॥ ता को प्र त उ त र क हौ ॥ हर जी क रू
ना अ न ॥ १०४ ॥ इ ती श्री न ग वं त मा हा पु रा
णे ऐ क द रू क थे श्री न ग वान उ ध व स मा दे
ना या वी का य द स मो ध्या य ॥ १०५ ॥ श्री न ग
वान उ धा व ॥ चो व ई सु न उ व अ व य

रमगयाना॥ जाते भेद मिटे तु वनाना॥ बंधु
 मुक्ति तोहि समझाउ॥ तेरो सब अग्यान मि
 टांउ॥ १॥ बंधु मुजो कही एको ई॥ सो तो स
 कल गुन न तही ई॥ ते सब गुन माया के
 जानो॥ इन तै हर आत्मा मानो॥ सो करु मो
 ह जनम अरु सुख॥ भय अरु मरना दि
 के बह दुख॥ ए सारे माया कृत केवल॥
 सदा एक आत्मा नह केवल॥ ३॥ जो सुप
 न सुख दुख अनेका॥ तिन मै आत्मा को न
 ही एका॥ ते सब बुधिरु मन को होवै॥ ई
 ई देह प्रगट ते सोवै॥ ४॥ पुन बुद्ध्यादिक
 कब नही रहै॥ जाको प्रगट सुषोपत
 कहै॥ तब आत्मा न रतर होई॥ परता
 को दुख सुषन ही कोई॥ जो सुषयतम
 आत्मा रह॥ तो बिहार पीब लो गहे॥ प
 रता को कोई नही बिकारा॥ ए सब मा
 या के विहारा॥ पर आत्मा आपन माने

दि

५

बाह्य॥ सब पर्व ए सब विधि निरबाह॥ मधु
रात्रादिक हर धाम न जाव॥ बहूत भ्रात क
रि प्रेम बटावे॥ ६॥ और न कं अर्चहि सि
धावे॥ ठे ॥ तत्तमा पधरावे॥ बहू विधि
कर बाग फुल वाई॥ क्रीड़ा गाय॥ सहत
चतुराई॥ ७०॥ पुर मंदर बहू भ्रात करावे॥
जुंही सक्ति न भावे॥ आप माहि जो सक्ति
न होई तो॥ हनु धूम ठानै सोई॥ ७१॥ बहू
विधि मह मा कहं कदावे॥ औ ॥ कहं क
ह करावावे॥ मंदरादि बहू भ्राति बुहारै॥ व
हू विधि सी च धुल निवारै॥ ७२॥ चित्र विच
त्र चो क विस्तरे॥ कै कर दास आप ही करै
मन हित क बंद न नही जानै॥ जो क हूं करै
सु नही बषानै॥ ७३॥ मो चं करै आरती जा
सु॥ और क हूं नही दिखे ता सु॥ मम प्रसाद
धीत संखेवे॥ धीत हीन जीवन नही देवे॥ पुं
ही ज्युं ज्युं उपजे प्रेम॥ तुं तुं अथ क बटाव

नेम॥ मम भगतन के रह आधीन॥ तन मन ध
 सुनित लवलीन॥ ७५॥ अरु एकादस वोर।
 ही नद। मम पूजा कर रह अंद। सुरज अगन
 विष अरु गाई॥ भगत भेष आकासरु।
 बाई॥ ७६॥ जल अरु धरन आय में तो ही॥
 सब नमाहि पूजा मम यूँ ही॥ बिद्या त्रि सु
 रन का पूजा॥ मो कं बो डिन जान दूजा॥ ७७॥
 बषी राज सकर बुय जावै॥ सात क सीत स
 बन बरतवै॥ ताम स ग्रीषम स ल बिना से
 सक ल जगत कूँ आय पका से॥ ७८॥ ताँ ते
 मेरी पुम बिभुती॥ अस जान करै अस्तुती
 ॥ पावक माहि होम कर जै॥ बिष न अत
 ति भाव संभ जै॥ ७९॥ त्रि ए जला दगा इ
 न का पूजा॥ भक्ति भेष में ओर न दूजा॥
 भक्ति भेष निज बंधु जानै॥ अति पुन कै पू
 जा ठानै॥ ८०॥ जुं अयन बंध सु बंधी॥ तिन
 संधी त सब न के बंधी॥ तिन क बहूत ना

गते जानौ॥ इजी और उपाइन मानौ॥
षगम घजातु ध्यान अमुरादक चारनसिं
धनागगुहादिक॥ असुर विद्याधर गध
वी॥ जिन जिन पायो ते ते सबी॥ १०॥ बेमसु
दर अंत जनारी॥ बहुराजतामस अधि
कारी॥ जुग जुग ते सत संगत आए॥ तिनह
तिन मेरे पद पाए॥ ११॥ ब्रतासुर वष परबाना
बत पहला दन श्रीषण्ण जाना॥ गण्डः ॥
री बहन वेता॥ गज अरुणी घव्याधि अघव
ता॥ १२॥ तुलाधार कुच जाबुज गोपी॥ धर्मेन
कीसी माजन लोपी॥ जगवंत विपुन का
बनता॥ पुरषन का काने अब मनता॥ १३॥
ओर अनेक काहां लो कहि रा॥ कहत कह
त कहूं इं॥ तन लही रा॥ तिन कबु विद्यावे
दन जानै॥ सांष अस जोग नही पहचानै॥
१४॥ जयत पजग बुला॥ कन कीन्दे॥ ओ
र धरमन को इच्छा नै॥ परजो साध संग जि

नया ॥ तो सब मेरे चरन नञाए ॥ १५ ॥ अ
 रुतुं उधवयुं मत जानौ ॥ तिन कं संगति मे
 री मानौ ॥ उधव संतरु मे वै इनां ही में ही ऊं
 संतन नुरमा ही ॥ १६ ॥ कि नरु मिलुं धार के
 तन कं ॥ मिलि कर सोयु तिन के मन कं ॥
 औ सी विधि एक न क ता रूं ॥ एक न साध रु
 प उधारूं ॥ १७ ॥ साधन होइ मन के मल हरूं
 सो मन अ पन चरन न धरूं ॥ असी विधि तिन
 कं ल द्यारूं ॥ जाहा ता रूं ताहा मही ता रूं ॥ १८
 साधु संग सो मेरो संग ॥ साध सकल हमेरो अं
 ग ॥ तो ते दोउ साध संग जानौ ॥ के तो दोऊ
 मेरे जानौ ॥ १९ ॥ गोपी गाय बुख गं न गना गा
 ओर मुढ बुधि बड भागा ॥ मम संतनै पे मजिने संग
 बंधो ॥ भाव भगत मो क अराधो ॥ २० ॥ ओ
 स्क ल साधन नही जानौ ॥ अरु नही बुझ स
 प कर जानौ ॥ पर तिन को हित मो सं न यो
 तो ते सब मन को मलग यो ॥ २१ ॥ अमही वि

वबड भागा ॥ लोक वेद सब को कर त्यागा
जोर सुनो सुनन कं जोरी ॥ प्रबुत निरबुत जे
कबही शी ॥ ३४ ॥ सब तजि एक चरन मम आ
वे ॥ हेत भाव मन ते बिसरावे ॥ जहां तहां मम
रूप ही देखे ॥ आ पापर कबू और न लें ॥
असे कै करि मो कं प हौ ॥ जात जगत जनम
नही अहो ॥ युहर जीवाणी बिसतरी ॥ तब उ
धव अ संका करी ॥ ३५ ॥ उधव उवाचा ॥ हे प्र
भु तुम त्याग वेद को क हौ ॥ सो मेरे स
र हौ ॥ तुम्हारी अगण वेद कहौ ॥ ताहि
बोडि कै सें सु ॥ ३६ ॥ तुम्हें श्रुत मै कर
ने भाषौ ॥ तुम ही एह हर कर नावौ ॥ तो ते मन
संकेह नु म त हे मेरो ॥ थर का जे अपन जन
केरो ॥ ३७ ॥ किधु बे सत्य किधु ए देवा ॥ या
को मोहि ब तावे ॥ देवा ॥ तव गा पा ल ब च न
उ चारै ॥ गुरि व उद म धा अंधारै ॥ ३८ ॥ श्री
भगवान उवाच ॥ उधव अ ब सुन उत म ग ॥

ना॥ तो ते तु व बूटै भूमनां॥ पृथमही त्रा
पतिरंजणेका॥ त्रिरक बूनही हतो त्रने
का॥ ७०॥ बहुरकायो माया विस्तारा॥ र
चो देह बहुरंग प्रकारा॥ तामें आप
पुनः कायो॥ प्राणरु सबद संग करि
लीयो॥ ७१॥ सोता सबद चक्राधारा॥ प
रनामका नो आगारा॥ मणि पूरक य सं
तीनामा॥ चक्र बिसरु मध्यामधामा॥ ७२
बाहर पृष्ठ बेधरी बांणी॥ जो यह लोक रु
बेद बंधांनी॥ खरुं युमात्र त्ररु त्रवरजे
ते॥ नाना प्राति विसतरे तेते॥ ७३॥ लोक
मादि थोरे विसतारे॥ वेद माहि त्र सबद सा
रे॥ परतिन को बहुर विध विसतारा॥ ताको
कोई लह न पारा॥ ७४॥ जे सें अनल का व
मध काढ्यो॥ इध नय वन संग बहुर बाढ्यो
युं मम बानि को विसतारा॥ जातें पुगढ्यो
सकल पसारा॥ ७५॥ यह विसतार सबद

सुबत नही के जानौं तिन तें पर आत्मा मां
नौ॥ २॥ तातें सातगुरु के गहे सातगुरु
रि रजतम के दहे॥ ५॥ १॥ समाहित
होवैसी सातगुरु तब त्याग सोई॥ ३॥ २॥
सी बिधि तीनु गुन रहै तब होव बुद्धि
म रहै ज्यो ज्यो यह सत्य अधिकारा त्यों
तुपे म सातगुरु अधिकारा॥ ४॥ सकल
लवस्तु खात क जब भजे तब ही सातगुरु
गुन उयजे॥ सातगुरु ज्यो ज्यो त्यों त्यों भग
ती त्यों त्यों अनंतै बिकती॥ ५॥ तब रजत
म दोउ भेट जात तातें तिन के गुन नही
आवे॥ ६॥ रस रस साक मान अपमान नि
डा आत सगर बगु माना॥ ६॥ १॥ ७॥
आदि कहैं है तब सकल रजतम के तें
ते तातें जब एहर जतम जां तब तिन
के गुन उयजे नाहीं॥ ७॥ तातें सातगुरु संग
ति करे रजतम का संगत परहरे॥ मुहस

कलकोसंगतकैरु॥संगतबोरसंगत॥
त्पारु॥८॥देसरुकाहपुत्रजलधानां
गुथरुकाभजनमत्ररुमेधानां॥गर॥
भाधानात्राहसंसकारा॥मंत्रजापा
दसपकारा॥९॥एदसजाकहोवजैसै॥
गुनबिसतारताकहैतैसै॥सातगतीस॥
तकउयजावै॥राजसतोराजउयधिकावै
१०॥तामसतोतामसचिसतरै॥जैसैरा
सतैसैकरै॥जारीजामजोगुनहोशीसो
सोउतमजानसोई॥११॥परजोउतमस
धबषानै॥सोउतवैसातिकउतमजाहि
नै॥जोग्रतिनिदतमोगुनसोहै॥सोरा
जसकुलमधमजोहै॥१२॥तातैएदस
सातकसेवै॥राजसतामसनामनहैवै
राजसतामसजोदितहोई॥तोहूसठ
ठटकावसोई॥१३॥सातकसंगतरु
जैसत्ता॥तुंत्पुंलहैनग

गदितुपजैबिगान॥ देष एक सकल प्र
गवान॥ १४॥ असुदो न देहन प्रमजानै॥
सब बिसतार सुयन संममाँ ॥ तब येह
बुझमा ॥ स्थान वै ॥ सात गहका और न
जो वै ॥ १५॥ जुं वासन ते उपज अनल ॥ ज
न रुहो वमा रुत ॥ बल ॥ सब वासन कंदर
सोई ॥ आपुही बहुर उपस मत होई ॥
१६॥ तु साधन यातन के हो वै ॥ होव पुचं
ड यातन कंषो वै ॥ बहुर पुं आपु उपस म
ति होई ॥ साधन ले सरहन ही कोई ॥ १७॥
गुण तीत सो कहि एजोगी ॥ तीनु का
न ॥ हर सजोगी ॥ सो वहर सुप्रव मन
ही आवै ॥ मोहि मिरोमाहि समावै ॥
१८॥ तातैं सब साधन बटकावै ॥ ऐक नि
रंजन मो कंधावै ॥ तब हरजी का मुन
अदर तबाना ॥ जन उधवत बपस न ध
षानी ॥ १९॥ उध उवाच ॥ हे प्रभु ॥ द्वात्र

सो कहि रो॥ ग्यानादिक कृत ज सुख ल॥
 हारे॥ परते विष सुषन कं चाहे॥ तातैं ब
 हू आरं न स न्नाह॥ २० ते बा पुरे सदा दुष
 रहे॥ कब भुलें सुष क लहे॥ परते तो विष
 थन दुष जाने॥ जान बूज कुन दिमवाने॥
 २१ जुं छंकरा मारण कं लायो ले बेरी य
 न मे वाटा कायो॥ वहन रल ज क बून ही
 जाने॥ जिन सां मिलि विषीयादिक वाने॥
 २२ अरु जे सै ग र्व व अरु कुता॥ तिर स
 कार ते सह बरुता॥ सुष के हेत सब न
 आषीनां॥ सदा हरदय दुख ल अत दीनां
 २३ वे तो मुढ क बून ही जाने॥ तातैं वि
 षीया दुष मवाने॥ ए तो नर जाने सब बा
 ता देष जगत चलो सब जाता॥ २४॥ प्र
 थमतो सुष आवना ही॥ जि आवतो
 घर नर हा ही॥ अरु जो दिन चार न ही
 आवे॥ किल लखत ५॥

पकहं नांही ॥ ६९ ॥ तातें तिहं गुन न ते
मारो ॥ निजानंद मय रूप हमारो ॥ ता
मैं धैत कै करै बिचारा ॥ सहज ही ब
टै त्रिगुन य सारा ॥ ७० ॥ देह बिष-बं
धो ग्रभि मानी ॥ तातें भेद उ वपो रह
नाना ॥ तातें नै जानंद ॥ विसरायो ॥ का
ल सषा माहा दुषयायो ॥ ७१ ॥ जै सैं जा
न ते ज ग्र न माना ॥ कदे न करै सुषन
को धाना ॥ तिहं गुन न ते कर बुक्त
॥ चो थप दबा ध ग्र स ॥ ७२ ॥
जब सहज मो माह स मा वै ॥ बह रूप
देह कदे न ही पा वै ॥ ग्र जो सकल
गुण बि स तरै ॥ बेद धर्म नाना बिधि
करै ॥ ७३ ॥ प्रवत माहि ब हत बिधि
जागै ॥ पर जो जानै त न ही त्यागै ॥ सो
न ते सो वत जाग त जानै ॥ ता को मैं द्रष्ट
त बधानै ॥ ७४ ॥ जै सैं सैं न कर न कोइ

सोवतसुपनलहपुनसोई॥बहुतभ
तकरविहारा॥लेनदेनजलयानअ
हारा॥७५॥बहुरसुरैनमातैसोवे॥
दिवसमात्युहीअवजोव॥असीबि
धिकेपुदिनबीते॥जाग्रतसोवतसक
लबदाते॥७६॥बहुरसुबहअसीमन
आने॥रातिरुदिनकीनिदाभाने॥कदे
नसोवतजागतरहे॥सावधानआल
सनहीगहे॥७७॥असैकाजआपनो
करै॥चोरादेकधनकंनहीहरे॥एरज
बयाहाजागकरदेखै॥तबयहसक
लबुधाकरलेखै॥७८॥सोवनजागन
सबबोहारा॥जाकैहितजागसोसा
रा॥आपहीसबमिथाकरजाने॥क
बरुमुलसत्यनहीमाने॥७९॥त्युही
बेदधरम॥आचरना॥अरुजेसुख
जिनकैहेतकरना॥तेसब

हा

पवर्बरा पडित छौडे सकल पसारा ॥ ८२ ॥
अमते धरो देह अमिमांनो ताते ब्रह्म अ
अमयेनांनो ताते करै बहत विधिकर्मा ॥ ८३ ॥
सुष निमित्त बिसारे धरमा प्रते सकल
ब्रह्मा करि जांनै सुपन जागरण सम क
रिमांनो जो देहादिक सकल पसारा चे
तन करि बरतावन हारा ॥ ८४ ॥ सुष दृष
भोग करै अरु जांनै आपहा सुषी दृषी
करिमांनै बहुरो ज बही सुपन को पा
वे बहु बावहारन सो मन लावे ॥ ८५ ॥
तबहु जांनै सकल पसारा आपा परि
सुष दृष विवहारा बहोरि सुषोपतिमा
हि सब जाई मन बुधि छिन्न अहंकार न
काई ॥ ८६ ॥ तब आत्मा निरंतर रहे जा
गेवात सकल जो कहै त्रियोक्ष्यो अ
रु आपो गयो जहां लगपी छै अनुभयो
॥ ८७ ॥ सो आत्मा येकर सरहे तिहुं काव

धारो मैं है बिस्मसकल को ईस ॥ मोबिनु औ
 रसकस अनीस ॥ १८ ॥ साधारु सत्यजेज
 तपजोग ॥ पिप्रसमदम श्री कीरति भोग
 श्रीखस्तु जहां दोसार ॥ तेसमसमेरे
 आधार ॥ १९ ॥ ताते जो मम सरणी आवे
 ॥ उत्तम बिरु सकल सो पावे ॥ मोबिनु ब
 हसाधन ॥ कहै ॥ तोह कदे न सुष को ल
 हे ॥ ११ ॥ मै निरगुण पारि सब गुण से वी ॥ मे
 निरपेक्ष सकल दित देवो ॥ कहु न चह
 करौ उपकारा ॥ सब को हित सब को आ
 धारा ॥ १२ ॥ सब उपजावो सब प्रतिपावो
 सब पोषो सब संकट टालो ॥ ताते मोहि
 त जै दूष पावे ॥ तब ही सुषी सरणि ज
 ब आवे ॥ १३ ॥ सरणागत को वी ॥ अधा
 रो ॥ आपमिला ॥ नव भपटारो ॥ ताते
 सब तजि मो को भजो ॥ पावो मोहि जग
 त भपेट जौ ॥ १४ ॥ इद्व मैं पेह ॥ ग्या
 न सुनायो ॥ मन कादिक न परम सुपा
 यो ॥ हृदय रह्यो संदेह न काई ॥ मोहि मि
 लकी वधि सब पाई ॥ बहुत जाति असतु
 ति बिसतरी मेरो भजन हि देखा स्यो ॥
 १५ ॥

न
 मे

आपु कतारथ कंरितिन मानौ॥ द्वैत भाव
जिबु मय्य छांनौ॥ तब तिन के स्तुति करि
ब्रह्म के देषत अगेही॥ ११४॥ सब हीन के
नद बटा पौ॥ तब मै आपने धाम सिधौ पौ
ताते उद्वव हतु मजांनौ॥ आपनो परम
ग करि मानौ॥ ११५॥ सन कादिक न समा
म कीये॥ तेही बचन तुम्हे मै दिपे॥ ताते पर
गणन उधारौ॥ ब्रह्म जांन सब द्वैत निवा
रो॥ ११६॥ मम आधीन सदा ही रहौ॥ द्विजी सब
सबा सना रहौ॥ त्रैसेही निज पद कौ पै हो॥
जाते जगत बहोरि नही त्रै हो॥ ११७॥ दोहा॥ ये
ह उद्वव तो सौ कहौ॥ परम गणन सारा पाके
ग है निज पद रहै॥ कूटै सकल संसार॥ ११८॥
इती श्री भगवते महा पुराने पै कादस स्वधो श्री
भवत उद्वव सबा देह संगीताया भाषाया त्रियो
दसो ध्याय १३॥ श्री भगवान उवाच॥ चौपड॥
त्रैसो सुनि हरि जी को गणन॥ भक्ति उधार क
भरम सब भाना॥ येह उद्वव दट करि उर धरी
परै कछु प्रसन्न मन सो करी॥ १॥ ११९॥ उद्वव
वाच॥ परम दयाल दमानि धि देवा मो कौ ब
डौ बतायो त्रैवा॥ भक्ति हतै पपे तु ब चरना॥
कूटै जगत जनम अरु मरना॥ २॥ पर अब पै क
प्रसन्न कौ कहौ॥ मेरे पास देह ही रहौ॥ जे ब

राज्यापसहितसबउद्यमकरे। अतिमधर्म
जानिउरधरे। दोनभोगनूतिमकरिभांधे
इहीमुक्तिसाधनकरिराधे। २१। येकइजगण
दानतपगहै। येकेइजमनिपमैसंगहै। येक
हीतीरपबरतमनधरे। कहेकहातंबहंबि
धिकरे। २२। तिनतैसुग्रादिकसुषपावे। क
निभयेइहांफिरिआवे। बहंरुनीचिजोनि
बहंलहै। नरकनमैकेइजगरहै। २३। अरु
प्रवरहैसुग्रीदमाही। तबहंसुषककृपावेन
ही। कामक्रोधनिदांअभिमाना। राषदोषइ
चाअभिमाना। २४। इत्यादिकनसंग्रनित
रहै। तातैकोनभांतिसुषलहै। भक्तिबिना
विधिवोकहीजावे। कलतहांहैंतेढहवि
२५। तातैउहोभरमहै। सारा। सुषममच
रननिकीआधारा। जिनमैरैचरननिचित
धरौ। साधनसाध्यासकलपरिहसो। २६।
तिनकेउद्वसोसुषहोइ। सोसुषकहंन
पावेकोइ। सोसुषकहोसुनोनहीआवे। सो
इधैजानैसोपावे। २७। सोभावेसोमोसंभागे
औरसकलआसाकृत्यांगे। ममआधीना
निरंतररहै। दूजीसकलकामनादहै। २८।

सकल बसु, वने की जो तपांग ॥ अंतर्द्वक
धरो बैराग ॥ सम दरसी नित सीतल ची
॥ मम चित बीन हृद दे दिठ बित ॥ १७ ॥ ता
दसं दिसा सुष रूप ॥ हो सुष जो अति प्र
म ॥ अनूप ॥ जो जन मेरा सुष कूं जाने ॥ त
के मन कित हन ही माने ॥ ३॥ ता के सब
आधीन ही रहे ॥ पर सो मो विन कहू न ग
हे ॥ ब्रह्म लोक कूं क देन लेवे ॥ ६ ॥ लोक प
ल चित न देवे ॥ ११ ॥ सब भूरा जने न नही
देखें ॥ स प्रप ताल सुष न त ए लेवे ॥ जो ग सि
द अ नु मा दि क अष्ट ॥ जो गी जन हित साधे
कष्ट ॥ ३२ ॥ तिन ह कूं क ब ह न ही ले ॥ आ
प हं ते नित से वै ते ॥ मुक्ति निकट ही रहे स
दा शि पर मेरो जन हू वै न का शि ॥ ३३ ॥ में ही ये
क सदा प्रिये तां कौ ॥ मम चरन न चित रा तो
जा कौ ॥ ता ही ते मेरे प्रिये सो शि ता विन आर
न ही प्रिये को शि ॥ ३४ ॥ तूं मेरो सुत बित न ही
पारो ॥ न ही संकर सो कर ॥ पह पारो
न ही प्रिये तूं सव ॥ सा सा ॥ श्री अरधं
गी तों ना हिस हा शि ॥ ३५ ॥ न ही प्रिये मेरी
नम देह ॥ जै सो तुम सो परम
- तुम

प्रति संगी बधन करै होत पर संगी १२ ताते
तिन को संगी ही तजै साधन मम चरन न
जै निरन्तर करै अस्थानों मो बिन संग
तजै सब आना १३ मेरी ध्यान निरंतर करै
प्रेम सहित हिंदै मेधरै कसब चन सुनिहि
देरायै उद्धव और प्रस को भायै १४ उद्धव
बाच ॥ हे प्रभू तुमै कौन बिधि ध्यावै कौन रु
प मै चित लगावै मै तो मुक्ति से ईतु चरना
पुजौ चहै मिटायो मरना १५ क्रिपा सिंधु तु
म करनां करो ध्यान जोग बांनी बिसतरो सु
नि उद्धव निज जन की बाणी ॥ तब श्री हरि ज
आप बधाणी १६ श्री गुरु नो बाच ॥ उद्धव
तो कंधान सुनां उ जोग सहित सब अंग व
ता उ जोग सहित सुतो ध्यान ही करै तो मन
बोहरन परिहरै १७ सम आसु मै अशिर
होइ जंघनि परि रायै कर दोइ देह समां न च
है न ही डोले ना सां दृष्टि ककु न ही बोले १
८ उद्धव पूर ककुं भक्ति धारै पुनि रेच कपि
गलानि सारै १९ बहू स्थापु रिपि गला द्वा
र उद्धव नि सारै बारं बार २० इहिये अर्थ स
कल परिहरै मेरो हेत हिंदै मेधरै उद्धव द्वै
बिधि जो कहावै ता नै दहि सत गुरु ते पा

वै॥ ८॥ त्रिसहितसोनामसगर्भमंत्रिविना
सोकहियेअगर्भतातैजोगसगर्भसेनाम
सोउतमहैप्राणामा॥ ८॥ पूरेगवैरेचक
करै॥ उकारमंत्र॥ २॥ धरे॥ घंटानादतुल्य॥ ३॥
२॥ धावै॥ तासेमिलिकरिप्राणचलावै॥ ८॥
मंत्रिकालअभासेकोशप्राणमासमहिधि
रिहो॥ बहसगोहृदैकमलकंधमवै॥ अष्टपा
थरीसुनिविगसावै॥ ८॥ ३॥ औंधेमुषते॥ २॥
धकरै॥ ताकेमध्यांस॥ रजहीधरे॥ सूरजमैपू
रनसीसत्रानै॥ सिसमैअनलतेजमयेमा
नै॥ अनलमध्याममरूपहीध्यावै॥ प्रेमप्रात
संजनहीलगावै॥ अगिसमानचत्रभूजरु
पअतिसीतलसुषदांनअनप॥ ८॥ नूतन
सज॥ लमेघतनस्याम॥ ताउततल्याअव
रुंविधाम॥ मंदहाससोनानिधिअनन
मक्राकृतकुंडलसुभकानन॥ ८॥ कठको
स्तुम॥ २॥ बनमाया॥ २॥ भृगलतालहिबि
साया॥ संघरुचक्रगदाअरूपद्या॥ हस्तचा
रिहंसोनास॥ ८॥ ९॥ हेममुकटहारामनज
रु॥ अतिसोभायमानसिखरु॥ मालति
लकअमुजवरनैन॥ भक्तिप्रसादसधाकौ
अैन॥ ८॥ कंकणअंगमुद्रिकापगन

परकटिमैकुटिका अंकुसवजरधजात्र
 रुं वंद चीकृत चरणदूषद्वहृदिदृष्ट
 नममणिगणित्रतिभा प्रकास नरअण
 नअधतमनास ओरसकलअगनबहु
 घण जिनकैध्यानमिटेसबदूषण २० बेस
 किसोरपरमसुकमार नषसषधावेवा
 रेवार चरननितैप्रीतअगहीधावे येक
 गहैप्रकैहिक्रिटिकावे २१ पंलेनयों
 सिषपरजंत निसदिनहिदेधावेसंत ओ
 रबासनासबपरिहरे मेरेरूपअडिगमन
 धरे २२ याविधिजबमननिप्रवतहोई त
 वफिरअगनधावेकोई अतिसुदुमूषमन
 धारे ओरसकलचितवननिवारे २३ या
 विधिमनअपनैबसहोई तवाबिराटमेधा
 रैसोई सकलबिराटरूपममजाने मोलेनि
 नककुनहीमाने निहचलमयोभेदकुना
 ने तवताहतेमनहीनिवारे सुखनिस्त्रब्रम
 विचारै २४ ब्रह्मविचारिनिस्त्रकरै सबअ
 कारदूरिपरिहरे आत्मब्रह्मयेककरिदेये च
 तनरूपअघउत लेये २५ निजानंदनिश्च
 लनिरधारि सत्यसरूपवास्निहीपारि येक
 आतमा आपै आप दूषदूषरहितपुन्यपाप

॥१॥ कोलनक्रमजीवनही माया प्रापे
पनिरंजनराया ॥ त्रैलोक्ये अग्निं प्रवृत्तहो
॥ तातैः पतंगसोई ॥ १॥ चवहंरिअग्नि
हीमाहिसमावैतबहीपतंगानामगमा
वै ॥ त्रैलोक्ये आत्मब्रह्मविचारे ॥ प्रेकजोनिव
रिद्धतनिवारे ॥ १॥ चवहंरिसीभातिविचारही
करतै ॥ निसदिमब्रह्ममाहिमनधरतै ॥ त्रि
गुणकारसकलभ्रमभागे ॥ होईब्रह्मसो
वतजो जागै ॥ १॥ होयेकरिब्रह्मब्रह्ममि
तिजादे ॥ जहांहंतैबहंरुनहीआवै ॥ त्रै
सीविधभवदूषनिदहै ॥ मेरोनिजानंदप
दलहै ॥ १॥ १॥ दाहो ॥ येहयेडोतोसोकहो जा
तैहरिपुंरजाये ॥ परपामैकहंविघनहै
तेभाषंसमजाये ॥ १॥ १॥ इतीश्रीभागवत
महापुराणमेकादसस्कंधेश्रीभगवानंघ
दसवादेवतुदसोधाये १॥ १॥ श्रीभगवन्नु
वाचोवाच ॥ नृद्वज्रजोगपंथसमजाईतामे
बहंतैविघनबताओ ॥ जोहुदृष्टमनप्रान
श्रवाधैसावधावनहोयेजोगहीसाधै ॥
मोमैधरेआपनोचित ॥ ताकौंसिद्धवि
घनहैनिता ॥ जोतिनसिद्धनकूपरिहरे ॥
ममचरननकूंअनसरे ॥ १॥ १॥ तिनसक

नहरे तो भाई तो प्रमस कल बृषा ही जा
धुं जैसे व न ह समन धारी ॥ उद्वकी
ही प्रसन विचारी ॥ ३ ॥ उद्ववाचा ॥ के प्रका
र धारण देवा ॥ अरु सिधन को के विधि मे
वपतिन के नाम कृपा करि कहो जोग भि
के विधन न न कुंद हो ॥ भ तु व आधान सि
दि हे सवाहा तु मुरा क्रिया हो पे जिन आ क
ल ॥ उद्व प्रस हि दे मे धारी ॥ त ब बो ले गो
पाल मुरा श ॥ ४ ॥ श्री गवा ना वाचा ॥ उद्व
सि धि अ ठारा कहिये ॥ म म धारण करे
जै व ही मे ॥ तिन मे अष्ट सि धि प्रधान ॥ द स
म ध्या म ते करु ब धा न ॥ ६ ॥ जा ते दे ह रूप
अ ण हो पे ॥ कि त रु न ही अ व र ण को पे ॥
अ ण मा दि क सि धि पे ह जा नो ॥ म हा मो ह
जी मा या मा नो ॥ ७ ॥ जो त न म हा वि स्तार
॥ ज हा त हा क कृ वार न पार ॥ मि ह मा ना म सि
धि सो क हि पे ॥ क ब ह नृ लि न ता कृ ग हि
पे ॥ ८ ॥ ओ प ह दे ह ही अ ति त धु करे ॥ मु ष्ठ न
आ वे द्र ष न परे ॥ सो पे ह ल घ मा सि ध क
हा वे ॥ म म ज न मा के नि क र न आ वे ॥ ९ ॥ जे
जे इ दि पे भो ग न करे ॥ ज हा त हा वि ष पे न
वि स त रे ॥ तिन सब भो ग न जा क रि त हि पे

प्रापतिनामसिधिसोकहिपे॥१॥ ये कहि
डोरबैठे रहे॥ देखे सुने सकल की कहें॥ ताहि
ओगोचर रहे न काँही॥ सो प्रकासक सिद्ध क
हो॥ १॥ ईदोये देह बुद्धिमन प्रान॥ तिहे लो
कतिन को अस्थान॥ तिन कृत्य परे जु जा
ने॥ तिहे ईसता सिद्ध ब्रह्मने॥ १२॥ विषये सु
षन कृक दे न गहें॥ जाते अति आनंदित रहे
॥ नाम अवि सित सिद्ध कहावे॥ मेरे भक्ति
निकट ही जावे॥ १३॥ जो ईका मन मे सो
लावे॥ सो सो सकल पलक मे आवे॥ बसि
ताना मसिद्ध है सो ई॥ मेरे जन आदरे न को
१४॥ अष्ट सिद्धये अति परधान॥ इन ते म
धम जायो आन॥ तन के गुन व्यापे न क
क्षमा मत्र नूमी कहीये सो ई॥ १५॥ दूर श्रव
न सुनें जब बेना॥ दूर दूर सदेखे सब नेना॥ म
न के बेग मनो जब धावे॥ काम संपब हरे
पब नावे॥ १६॥ पुकेतन मे करे प्रवेश॥ सिद्ध
कृती परका ई प्रवेश॥ निज ईका तैत जे सरी
रा सो खरे॥ म न्य है बीरा॥ १७॥ मिले अस रन
विचरे देवा॥ देखे तिल है सब मेवा॥ सो स
र॥ कीडा दरसन कहाये॥ मिथ्या फल है क
देन गहिये॥ १८॥ जो सकल पकरे सो हो ई॥
ध

जो सावक ह्यप कहोये सोई जहंगमो चाहै त
हो जावै॥ अ प्रतिहंत गति सिद्ध कहवै॥ १०॥ ये
दस मिलि अष्टदस कहोये श्रीरूप चतुष्टन
हिमहिमै बरत पांन असु भूत भविष्य स
वक कूजानै लिखो अलिष्य॥ २॥ पहे सिद्ध त्रि
का लोपांन॥ आगे सिद्ध बयांनो आंन सी
तउ सम आदिक जे दूद॥ तिनही निवारै सो अ
धंध॥ २१॥ विष असु अग्नि सूरज लपंभा॥
जो तै होवै सो अत्र च भा॥ प्रष्टन सो सिद्ध कह
वै॥ २२॥ हर जन ताकै निकट न आवै॥ २३॥ वै
अष्टादस असुर ये पंच॥ मिलिते ईस संकलप
र पंच॥ ये मै मूल रूप उचारी साधाव होत
नहा विस्तारी॥ २४॥ मम धारनां करै तै आवै
॥ जोति निकुं बहै विध विचलावै जोति न
तै विचलै न कबहो॥ तो मम चरन निपावै त
वहो॥ २५॥ जाधारना तै जो आवै॥ जै सै जोगी कूं
विचलावै॥ सो सब उधवतौ सो कहें जोग
पंथ कौं विन न दह॥ २६॥ सगुरु रूप जो ककु बि
स्तारा॥ सो नाना विधिरूप हं मारा ता होत
हिमा हिमन लावै॥ तै सी तै सी सिद्ध ही पावै॥
२७॥ सबद स्पर्श रूप रस गंध पंच भूत कैं
सुक्ष्म बंध॥ तिन मै जा जा मै मन लावै॥ ताही

ताकेरुपही मिलिजावै॥२९॥ महाततमैमन
ही लगवै॥ पंचभूतसाधक रिधावै॥ जाजा
साधामाहिमनधारै॥ ताहीतासमिंदहबधारै
२८॥ पंचभूतकेजेपरमानु॥ तिनमैजोगीधा
रै॥ धानु॥ तातासमीलघुदेहरीकरै॥ काहतै
कहंगहोनपरै॥ २९॥ सातिकअहंकारमनधा
रै॥ ताकोमेरोरूपविचारै॥ तबजेक्षुपेभोगन
करै॥ बहोतनातिबिषयेविसतरै॥ ३०॥ जेोक
रदीवालेचरदेधै॥ प्रीतिमवनग्राचरननिदे
धै॥ मेरोकाबरूपमनधारै॥ सबबापकसबई
सबिचारै॥ ३१॥ तातैसिद्धिसतापावै॥ त्रिभुव
नजानैत्योबरतावै॥ जाहीसोजोइकरबावै॥ ता
कैअंत्रतुंउपजावै॥ ३२॥ आदिपुरुषजोमेरो
रुपातातैधारै॥ चितअनुपातातैसिद्धिअवस
तापावै॥ विषयेनिदिनग्रानंदददावै॥ ३३॥
निरगुनब्रह्ममाहिमनधारै॥ सबकृतासबई
सबिचारै॥ तातैबसतासिधहीलहै॥ सोहीसो
पावै॥ सोचहै॥ ३४॥ सासुद्धसत्यमपमोहिविचारै॥
तामैजोगीमनुकेधारै॥ तातैसुद्धआपुहैहोई
षट्ठरमीबापैकोई॥ ३५॥ ग्यानधारप्यानम
नधारै॥ सबदरूपठरमाहिबिचारै॥ तबजहां
लगीपवनकाआसासुनेततालोवचननिपा
स॥ ३६॥ नैनमैसखजकोधारै॥ अरुसखजमैने

देवि नो प्रहसुनिदृक्करणेन पूछी विस्म
 विनृति तव उद्भव परमसुजीन पद्विती
 श्री भगवते महाकृपा एयं का दस स्वैर्दे श्री भ
 गवते उद्भव समादे भाषा पां पंचदस मोक्ष
 पै १५॥ उद्भव वाचा ॥ तुम हो पारध्रु अविना
 स विजित नंद बिपां न प्रकासी आदि न अं
 तिम ध्यान ही जा को कौ ई ने दल हे न ही ता को
 १॥ तुम प्रक्षिपा लो तुम विन सा को तुम सब
 बाहरि अरु मां ही सदा अलिपंति लिपो क
 हे ना ही ॥ २॥ जहां तहां तुम ही हो पे क प्रहसं अम
 जो दिष्टि अने का हे प्रभु प्रहजग अति बिस्ता
 रा उचनी च बिबेध प्रकारा ॥ ३॥ अरु प्रा जीव
 सत्य करि मां नौ ॥ बिषये न संब हो भाति ब
 धां नौ पे कै पक दृष्टि का आवे के से सकल
 ब्रह्म करि धावें ॥ ४॥ पां न वत तु व जन हे जे ते
 ॥ ब्रह्म दृष्टि देखत हे ते ते ॥ ता ते तुम अब करना
 करो ॥ निज भ भूत मी सौ बिसतरो ॥ ५॥ तिन में
 देषि सर्व नि में देष ॥ तब अ देत ब्रह्म करि ले
 षे ॥ सुनि उद्भव के अति मवेन बो लै हरि जी क
 रुना अनेन ॥ ६॥ श्री भगवानो वाचा ॥ उद्भव पूछ
 भली तुम की ही जातें ब्रह्म गति चीन्ही प्रहस
 स अरु नही करी ॥ ता सौ मै जा विधि उचरी
 ७॥ ता ही विधि अब तो हि सुना ॥ ८॥ अं सै ब्रह्म

दिष्टिपजाओ कैंरुं अरुं पांउ वक्रुं रूधेत त
बही जरे भार पकै हेता तब अर्जुन कैंरुं
सब देखै सकल आपा नै बंध करि लेयै
इन सब हीन कुंजै मै मांस आपही आपन
रकतो डारुं ॥ १० ॥ जैसी विधि आपा अहंका
रा आपही मान्यो धारन हाहा तब मै ताहि
गणन समजायो ताको सब अगणन मि
टायो ॥ ११ ॥ प्रसन्न करी अर्जुन तब सीतु ममो
संकीर्ति हे जैसी तातें उत्तर कुं ॥ १२ ॥ पा
विधि ब्रह्म दिष्टि कुं करौ ॥ १३ ॥ अहं वमैं सब हीन
को सांसी अरुं सब ही को अत्रजामी आपह
तै सब कुं ॥ १४ ॥ पजावो सब पोषो सब कुं बरता
॥ १५ ॥ सकल रहै मेरे आधीन मोही मै सब हो
वैलीन सातैं सब मै दू जान रहै ॥ १६ ॥ बिभूति जानै
सब मांही ॥ १७ ॥ प्रतो संविसेष सो कहै तेरी
धैत दिष्टि कुं दहै सब रिद कन मांही मै रि
षक पतिन मै काल सकल जे भक्षक ॥ १८ ॥
सो मै प्रकृति त्रिगुन की आदि पंच भूतन मै
मे भूतादि सुत्र सकल बधन मै जानौ बडन
मां ह महं त ही मानौ ॥ १९ ॥ सब सुक्ष्म निमां
हि जीव दणों सब दूर जन मां हि मन लेषो वेद
गणन मै ब्रह्म जानौ ॥ २० ॥ ककार मंत्रिन मै मानौ
॥ २१ ॥ छंदन मै गा पत्री छंद मै अकार अक्षर

रकौं नंद। सब देवन कौं मध्य पुरंदर। सकल
वसुनि मै मै वै सहर ११। नीलकंठ प्रका
दरहर मै। विष्णु नाम द्वादस दिन कर मै
तिन मै नगा जै संप्रमहो रिष। तिन मै मनु
जै सबराज रिषि। १८ देव रिषिन मै नार
देजां नो। काम धेन धेन नि मै मां नो। सि
धन मै मै कपिल स्वरूप पंषन मां हि गरु
ड म मरुप १९। पूजा पतिन मै मै हृदय ति
न मै न कर जहां लोमं कृ बादन मै अध्यात
म बाह। सब अ सुरन मै मै प्रह्लाद २०। तब
प्रकास मां हि दिने सज करि द्वा गण मां हि
धने सा। तिन मै सौम्य सकल २१। जै ५ उगन स
व ध्यांत न मै मै हं कंचन २२। गजराजन मां
हि मै गज गैरावत मै अनंग जै सिष्ट २३। पा
वत। तहा बरन जै सब जल जंत नागन मै
म मरुप अनंत २४। नरन मां हि म मरुप न
२५। सरप न मै बासुकी सप २६। वै अबा
हिपे नि मै जानो। दंड धरन तिन मै जम मानो
२७। सकल मंगल मै मै भृगु राज सरत न
२८। गंगा सिरताज सब अ सरनि मां हि संगा
सो बर्न न मां हि विप्र म म वास २९। सकल
सरन मै रूप समुद्र सक धनु क धार नि मै
रुद्र मै हं धनुष आयु धन मां हि परम नि

वासमैरुतिमाहि॥२५॥जेअतिगहनहीमा
लातिममैमिपीयलसबबनसपतिनमै
॥मैपुरोहितिनमाहिबसिष्ट॥तहोबृहस्प
तिजेदृष्टेष्टारहासेनापतिनमैमैसेनानी
॥धर्मपूवतिकवमृजांनी॥सकलश्रोव
धनमैजवजांनो॥पितनमाहिअर्जमांमो
नो॥२६॥ब्रह्मजगपसबजगपनमाहि॥वृत्त
अदोहसमाकोनाहि॥वायअग्निजलस
रिजचोनी॥ओरपेमनषटसोधकजांनी
२७॥चतुरदेहआतमाविचारि॥ब्रह्मचा
रिनीमैसनतकुमांरि॥स्त्रीपनमैसतरु
पारानी॥पुरुषनममैस्त्रायंभूजांनी॥२८॥
सावधानतिनमैसंवतसर॥त्रैभैठोर
तिनमैअष्टअंत्रमैधरम॥अभैकोदांन
॥पुणनहीप्रीयेमोनसमांन॥२९॥त्रियापु
रुषसंजोगीजेतैब्रह्महंतैअरैसवतैतै॥
सकलबनरुमैहंनुमंता॥रुतिनमाहिम
मरुपबंसंत॥३०॥मारागसिरमासमैजो
नो॥निचूत्रनमैअभीचहीमांनो॥
देवलअसितेशरहितजेदृदरा॥कमलको
ससबहीनमैसुदरा॥३१॥जगनमाहिस
तजुगसेनाम॥वेदनमाहिबेदमैशंम

नरकीबुधि कदेनही आने ॥ १ ॥ सरबदे
वनमप्रगुरुकों लेये तन के कछु आ
वरननदेधै ॥ जि दा आदि और कछु जो
शु गुरुकों आनिसमरपै सोही ॥ २ ॥ तबगु
रुतावीर आ ॥ गणदेवै तबपरसाद आप
हेलेवेधै ठे ठाठे आ वतजात ॥ भोजन
प्रनरातिप्रभात ॥ ३ ॥ रानीकी भातिगुरुसे
दाकहै ब्रजलीसौपीछै अनुसरे ॥ त्रैसै
बुबुअमवत धारै मनहमें नही भोगबिवा
रै ॥ ४ ॥ त्रैसै गुरुकृतव रतै सोई जोला
बेदसमापतहो ॥ पुनिब्रह्मकै हिलो
कहीबाहै ॥ तोग्रहस्यां नही संबाहै ॥ ५ ॥
गुरुकों देहसमपेण करै ॥ वेदविचारहि
रदेमैं धुरै ॥ गुरुअरुअग्निअपुसबमा
ही ॥ सेवै मोहि अवरशुककुनाही ॥ ६ ॥ जु
वती अरुजुवती नके संगी ॥ ईनिको क
देन होये प्रसंगी ॥ दसपरसबानी प्रहास
॥ ७ ॥ त्पांगे दूरिमांनि अतिवास ॥ ८ ॥ सौं
च आचमन अरु अस्नान ॥ सध्यापास
नगति अभिमान ॥ तीरथसेवा जपतप
जि दा ॥ तजै दरस संभाषण ई दा ॥ ९ ॥
मन अरु वचन देह बस करै ॥ मरै भजन

द्वैतै धरे अरु मम भजन सब नि को
 धर्म भजन विना सब ही अधर्म ॥ ५ ॥
 ॥ ऐसी ब्रह्म चर्य ब्रत धारी ॥ दिठ न प
 निसिदिनु वेद विचारी ॥ विगति पाप
 ऐसी विधि हो क्षम्येरी भक्ति लहेत ब
 सोई ॥ ६ ॥ ऐसी विधि भव सागर त्रिरे
 मेरीं यश मरुप कौं भजे ॥ अरु जो कोउ
 होये सकाम ॥ तो सौं करै जुवती अरु
 धांसा ॥ ७ ॥ किं निह काम गहे बन बास
 के अधिकार पाप संन्यास ॥ अरु जो उ
 पजे मेरी भक्ति ॥ तो वह करै न कहें अ
 सत्ति ॥ ८ ॥ यह है ब्रह्म चर्य को धर्म ॥ पा
 ते दूजो सकल अधर्म ॥ अब ग्रहस्त को
 धर्म सुनाओ ॥ सकल ग्रह स्तन कूसम
 जाओ ॥ ९ ॥ ब्रह्म चर्य जो नही ठहिरावे ॥
 तो ग्रहस्त असरम हि आवै ॥ गुरु ते वे
 द पढे जवत ही ॥ गुरु दत्त ना देह मुनित
 वही ॥ १० ॥ गुरु ते अणो ले उर धरे ॥ तब
 विधि सौं स्नान ही करै ॥ तब देवै उतम
 कूल लक्ष्मण करै विवाह हि विप्र विच
 दन ॥ ११ ॥ भूष्यो ही करै विवाह विचारा ॥
 विप्र विवाह चारो

[illegible]

मेनेती कायत चर मे होइ तितो ही धनरा
धै सो शि॥१॥ श्री सकल मम हस्त लगावे
मृद्विन दुर्जे मार गजावे जगद्वार रहे कूट
बही मां ह तो ह विपै करे क ह नां ही
॥१॥ नि सि दिन करे विचार मिथ्या जो
ने सब संसारों अखी बंधू सब अंश में
॥ जल कै निक्काटाव श ऊं जै से ॥१॥ ये सब
घों प्रति देह दे आवे ज्यों त्रिदा मुति सुपना
पाने ज्यों ज्यों जगें बार बार तो तो भिटे
सुपन जो हर ॥१॥ धौ ही पर प्रति देह ही
आवे देह जने सब जित तित जावे अरु पो
ही स्वर्गादिक लोक पाये हर षण्ण पस
अति सो का ॥१॥ तातें सकल वासना द
हे अति य समान नवन मे रहे अहे का
र म मता न ही अने सब पाप बंधन क
रि जाने ॥१॥ हे सब कर मन मे रहे त करे
॥ मो विधि अंतरा ये पर हरे प्रेम नाम दिष्ट
उर मे राधे ॥ और सकल हिर तेना धे
११॥ ये क पुत्र भये बन जावे किं बा ग्रह
ही मां हिर हावे ॥ श्री सो ग ही मुक्ति करि
मानो ॥ और क क हिर दे न ही आनो ॥१॥
॥ अरु जो होय नवन अस त जुवत

सुतादिनसो अंनरक्त॥ विषयांलें २ विस्वा प
अतिर॥ ग्यांनरहेत क्रमनमे चात्तर॥ १८
॥ आपही परबससाहिनजाने॥ औरन
कीचित्पांताचेरअने॥ भाईबंधपितर
रहेमेरे मोबिनदूषलहेबहुतेरे॥ २० ॥ ये
हअबलातघुसंततिजाकी॥ मोबिनदु
मेकहागतिताकी॥ येअनापमोबिन
सबबाला॥ कोकरिजीवैअतिबेहाला
॥ २१ ॥ मोबिनईन्हकोनप्रतिपाले॥ कोन
बेबिधिदूषनकंटाळे॥ असेनीसिदिनअ
भेचिता॥ कबहनहीहोवैनिहेचिता॥ २२
॥ कबहनसुषपावैयालोका॥ असेचि
तांअयेसोकायाविधिचिताकरतअपा
र॥ अनरकहीजावेबारंवार॥ २३ ॥ दोहा॥
ब्रह्मचरजग्रहचरजको॥ मेनाषाग्रहध
र्मा॥ पातें ७ धवअरककुसोसबजांनि
अधरमा॥ २४ ॥ तीश्रीभाटावतेमहापुरा
णकादसस्कंधेअश्रीभगवान ७ धवसबादे
भाषां दीकाया अश्रमधर्मनिरुपणनाम
सत्यदसोध्यामा॥ १५ ॥ श्रीभगवानोवाच॥
अबमेकहधर्मबनबासा॥ अरुअधिकार
सहतसंन्यासजातेमेरीभक्तिहीपावे॥

रातिन्यायेमनवरनेत्रावे॥ चतुर्वर्षमचा
रहते॥ उमरततववनजापेरहेयेकत॥
नारि सुत निमेरहेनेदेहा॥ जोविधिवने
संगतोलेये॥ हाकंदमलफलवतिहीक
शिवलकलमिगछायातनधरे॥ त्रिणानि
वीसेजसंवारे॥ इंद्रीनकेसवग्ररथनि
वारे॥ देहदेतमलनहीपरिहरे॥ ३॥ भुमि
संयेनत्रिषकालसनांन॥ मलनउता
रुसलसनान॥ मग्रीषमरितुपंचाग
निसाधे॥ धूमामेंछापानहीबाधे॥ सीसस
कलजलधारासहे॥ सीतकालसेपर
रहे॥ ४॥ ज्येसीभांतिकरेतपदकरधंधन
वापेज्जलपुहंकर॥ अग्निपक्षरितुप
केकलादि॥ जोजनलघुपुवित्रआदि॥ ५॥
मसल॥ यलसुंयेकरे॥ पाषाणनके
देतसिस्वोटेधाने॥ देहीजीविकाआप
नहीअने॥ अधिकनग्रहेनसंचयेजा
ने॥ ६॥ तिनहीतिनसौमौकौजजे॥ ज्योर
जगबनबानवासीतजे॥ अग्निहोत्रअ
रूपणीमास॥ तपोहीदससुचात॥ २मास
॥ इतीसबदिनकोममहतकरे॥ मोवि
नज्योरहिरदैनहीधरे॥ पोतपकरिमो॥

को श्राद्धो प्राणदेह इदं मनवाधे
॥६॥ यो दे सुध लेहे मम भक्ति और त्रि
न विस्तार विरक्ति यो तब ही मम चर
न निश्राद्धे के कर्म बह लोक है त्रि
दे ॥९॥ अरु जो श्रेयो सां कष्ट ही करें प
कामना हिर्य मे धरें ता सम मुख ह
जो नो ही ता के वृथा सकल प्रेम जो
हो ॥११॥ यों पंचहारत वर धन पाछे पाछे
सुध संन्यास ही श्राद्धे ॥ सकल क्रिया
के त्याग ही करें मन सौ मम सेवा त्रि
नु सरे ॥१२॥ क्रम रुचित सब लोक हनि
जानें ताते दिन भी गुरु करि मानें ता
ही हतें करें सब त्याग ॥ मन वचन क्रम
सौ दिट बैराग ॥१३॥ बेद बिहत विधि
मो कौ जजें ॥ कृत्विज कौ सबै सदैव जें
जब कौई संन्यास ही करें तब ही सुवि
ध निबिस्तरे ॥१४॥ परिग्रह बिघन जने
को कुनाही ॥ मेरे चरन धरे ॥ ५२ मां ही ॥
जो कब ही ककुबस्त्र हिराये तो कोपी
न और सब नाथे ॥९॥
कर्म धारे ॥ ज्यो मल तौ न हो ॥

१॥ देवि देवि धरणी पग धरे ॥ वज्र बानु
 लपान करे ॥ १॥ सत्य बात बानी को
 बोलें ॥ हिर दे विचार करें नही डोले ॥ मो
 निधारि बानी को डोले ॥ अरु का पा
 ॥ के कमन मंडे ॥ १॥ निजा करे सप्त
 चरि दीप ॥ श्री रुक कृ कह गेहे नहि
 प्र ॥ सो ॥ वे प्र चतुर विधि जेत ॥ जो निर
 हे निजा कृत ते ॥ १॥ विप्र कही प्रजे
 सप्रकारा ॥ तिन को तुम सो कह वि
 चार ॥ देव विप्र रिधि विप्र ही जानो ॥ वि
 प्र विप्र सो कृ नामानो ॥ १॥ वे प्र मुद
 अरु ये क वि डाल ॥ परम मते क विप्र
 चे डाल ॥ निजा निता रुं पडे पठावे
 सकल अर्थ अरु तत्व बतावे ॥ २॥
 इष्टी ये जीत सीतल संतोष ॥ देव विप्र
 सो निर्गत रोष ॥ तम अरु सत्य अहि
 सा करे ॥ दिन दिन प्र २ कर्मन अनुस
 रे ॥ १॥ काल लोप क बह नही होये ॥
 विप्र फाण कहि मत है सो ॥ विन हि
 सा फल त्याजे ॥ तिन ही दे ही बरतावे

र बरषासीतन ससबसहै॥विप्रवि
प्रनित आधहीगहै॥अस्वादि का
निकरै निरारोह॥एणमें सूरतजेतन
मोह॥२३॥नीति सहीतननें आरम
॥कुनी विप्रहिरदै नहीदंभ॥अरुजो
नेति सुबनिजहीकरै॥यस राखैयेती
विसरै॥२४॥सो बहवै सप्रमहाणक
कहिपे॥तातेले जिज्ञानहीगहिये॥
तेललेन छुत दूधरुलक्ष्मा॥तिलअ
रुनीलमहीमधुम॥२५॥इनिको
बनिजकरवहैजोशिसुद्विप्रकही
मतहैसोशिसबभूतिनिक्कंदोहिकरै
॥सबकोकिट्टनदेष्टतफिरै॥२६॥प्रति
दिनिहिंसासोअधिकाश॥विप्रकहा
वैसोमंजारा॥मदअनदअकारका
रिजागम्यअगम्यनयेअनारज॥२७॥
कृतघनसकलपणुनकोलक्ष्मसो
पशुवृहणकहैविचक्षणावापीकू
पतलावपरावै॥वनबागादिकना
सकरावै॥२८॥

जैसे सावित्र मते छुब घाँने॥ निदक
लोनी पर धन है॥ निद पचुर विष्णु
नता करे रथ सो चंडाल विप्र कह
नाते॥ जैसे दस विध विप्र जो नैता
तै उत म निदा करे॥ ओर सकल दू
रे पर रहै॥ उ॥ सात घर न तौ भिदा पा
वै ताही करि संतोष उ मजा वै॥ सो
लै जावै नदीत जाग॥ तातै क कुरै क
रै विभाग पुर॥ को ई मागै ता कुंदे पे
॥ कै जल माहि प्रेवा हा पे करा पे वि
चरै धरनी दै निसंग॥ कंदे क छुन स
वारै अंगा उर॥ तन मै ह इष्टा पति गर
ह करै॥ मेरो रुप हिर दे मै धरै॥ निस
दिन रहै आत म राम॥ विषय सुषन
को सुने न नाम॥ उ॥ सम दर सी अ
रुधी रज वंत॥ सदार है निर भ म प्र क
त मै रै भाव भ मो अति सुधि॥ परम
बवै की जो जल दू धि॥ उ॥ आ पुही
माहि विचाये क॥ कंदे न दे मै नू लि
अने का आत म अ सब रु को जानै

पृथमुक्तिदोऽद्यममानैः॥३॥ बांधवः
 वदति मनवसि हो शिमुक्ति ईदृश मनः
 बंध सौ शि औ सै जानि ईदृश मन जीतों
 मोहि सुमिरति काय सब बाते ॥४॥
 दहे लोक ते होये विरक्ति तनहनही
 होवै आसक्ति ॥ पुर नामादिक आ
 पे जो परे पति आ अर्थ प्रवेस ही करे
 ॥५॥ ऐस पवित्र सै लवन सरिता वा
 न पस्थ जहां आचरना तहां तहां नि
 तही चलि जावै ॥ तिन आसर्मन निह
 पावै ॥६॥ तिन के लहे सिला को अं न
 ताते होवै मन परसन ॥ ताही ते निर्म
 लता लहे ॥७॥ पजे गणन सकल मल
 दहे ॥८॥ ईदृश अर्थ निसंतपन दै
 ज्ञान संगर सबन सुर लेये ॥ ताते स
 ब ते गहै विरक्ति नहि ॥९॥ द्यमनि बि
 धे आसक्ति ॥१०॥ पह सब अहंकार
 बितु जानै ॥ आत्मा विधे स्वपनु सम
 मानै ॥११॥ कदे नहि दै चितवन करे ॥ मन
 बच क्रम दुरि परिहरे ॥१२॥ औ सी बि
 धे जब ॥१३॥ पजे गणन ॥ होये वि

सब आन भरी भक्ति हिंदे में आवें तब
 बबनी प्रमदित कावे ॥ २ ॥ विधिष
 धरो न प्रमजो नो ॥ वेद सुमति की संक
 न मानें ॥ अति बुधि पर बाल का सम रहे वि
 धिनेष धक कहे न गौहे ॥ ३ ॥ सब जानें
 पर जो न नमते ॥ चेतन मपदी में ॥ ज उब
 पुष्पत वानी रें ॥ हि होई ॥ क बहं वादन ठां
 सोई ॥ ४ ॥ बाहर म धाये क सम रहे ॥ क व
 हं को ई पछिन गंहे ॥ जे त्यों कहे सुने त्यों
 त्यों ही ॥ तत्व मतो नही तांगे कों ॥ ५ ॥ का
 हें ते ॥ उद बैग न आने ॥ अरु कह को आ पु
 न ठां नो ॥ निदा आदि सरे दूर बें न ॥ अत्र धरे
 निरंतर बें न ॥ ६ ॥ काहे को अपमान नि
 कोरे ॥ मन क बचें न मानि विस्तरे ॥ पसूस
 मान बैरादिक ठां नो ॥ सकल विकार देह
 के मानें ॥ ७ ॥ अजुं आतम अपवेतन मां ही
 सोही सब मै दू जो नां ही ॥ जूं बहं घर नि
 मोहि ससिये क ॥ घाट नि संग जा नि ये अ
 ने क ॥ ८ ॥ ततै ईष्ट अनिष्ट ही करे ॥ सो स
 व आप ही को विस्तरे ॥ तातै आतम बुधि
 हिराये ॥ वेद देह कत ते सब नां मै ॥ ९ ॥
 समये समप नो जन नही आवें ॥ तोह क

त

ही

जो मन में लक्ष्मी प्रसरचित सब देह हि
जो नोतिन ते सब दृष्ट सुख माने ॥ ५ ॥ तिस
वद सुख क्रम सरी रापो अतम में ज
मगनी राधेवल हार हीन हार धे ॥ ५ ॥ द
मं करि प्रांन हार धे ॥ ५ ॥ प्रांन राधे हो
ये बिचारि तरे हो हि कटे संसार जो मेरी
इहाते शब्दे न तम मध्यम सो क कृपा
वो ॥ ५ ॥ रापो असन न ही वस्त्रादिक चहे
पिये अशीष की सुधिन आने ॥ दो ॥ मि
आ ही करि माने ॥ ५ ॥ कोई टेक न मन में
धरे ॥ मोदिन और सकल पर हरे ॥ सो च
आचमन और स्नाना ॥ और क कृत्रा
चारुन जाना ॥ ५ ॥ भते क कृ संकाते न ही
कहा जो क कृ सो ईहा आ चरे ॥ जो मेरे
सुतिकी भयना ही ॥ दो ॥ भुम जानत हरे
मा ही ॥ ५ ॥ परत पापि कर्म नि आचरे
॥ नो क नि को हित मन में धरे ॥ लो गपनी
विधिकि कर ना ही ॥ बिधिन वेद भुम जा
ने मा ही ॥ ५ ॥ पर अपनी ईहा आ चरे
लो क नि को हित हरे धरे ॥ ता दो
दिष्ट को ना ही ॥ पांन दिष्ट द्यत हे
५ ॥ पूरव से सकार है

सो ब्रह्ममें तो लौं बहं हो सो भवमें नही जा
वै भरो निज निरमल पद पावै ॥ ५ ॥ अरु
जाके न पजे वै राग कसौ बहै पा भव
को त्याग ॥ परमम भक्ति जूति नही पा
वै ॥ सो सतगुरु को बरणा ही आवै ॥ ५ ॥
अमही बिना तहै सो जूति ॥ पावै मोहि
होये भव मुक्ति ॥ गुरु को ब्रह्म रूप करि
देवै ॥ न बिबू धि क दे नही लेवै ॥ ६ ॥ अधा
सहित आस ॥ या तजे ॥ मन क्रम बचन नि
रंतर भजे ॥ जो त्रिगुं भु विचार ही पावै
॥ तो त्रिगुरु तजि कहं न जावै ॥ ६ ॥ पी
कै ज्यो जानै त्यों रहे ॥ प्रमह स के धर्म न
गहै ॥ परिजिन घट रिपु जीतै नाही ॥ इट्टि
वै अरथ विचार समा ही ॥ ६ ॥ चंचल व
धिम गणन ॥ वैराग ता को सकल व्रथा
है त्याग ॥ वैषदिषा पे जीव का करै ता
को दोष कहौ नही परै ॥ ६ ॥ देव पितर
शिषि भूत न नावै ॥ तिन को शिष्य अपुनै
सिरसावै ॥ अंतराति मै ताहि छिपावै ॥
आपहि बंधु पजावै ॥ ६ ॥ सो सुम को
न तहै पा लोक ॥ अस त्यों भूट हो प पर लो
क ॥ परवै ॥ अम के धर्म इन तैं भक्ति लहै

रहिकर्म॥६॥॥॥अब व्यास के धर्म प्रधान
नारे नारे करु बखाना समरु ग्रहिसा
संन्यासी को॥७॥॥श्रुति विचारित पबन वा
सी को॥८॥॥गुरु में दया जाप मम कर्म॥
ब्रह्म चर्ज गुरु सेवा धर्म॥ब्रह्म चर्ज तप सो
संतोष सकल सुद्विद कत हन हीरोष॥
६॥॥प्रेरो जजन सकल मम कारन पे स
बहिन के धर्म सुधर्म न॥गृही देइ बनिता
रितु दान॥भक्ति नग मन करे दिन श्रान
द्विप्रा विधि अपनै अपनै धर्म मेरै हेत
करै सब क्रम॥सब मै मानै मेरो भाव॥
काहे परि न धरै अभाव॥६॥॥सो पावे मे
रो दह भक्ति॥ओर सकल ते करै वृत्ति
ताते डप जे मेरो गणन॥देखै मोहि मिष्टे
सब श्रान॥७॥॥जैसे के पावे मम रूप ब
रु रन आवै मा भव कृप॥जे है सकल ब
ली आस म॥तिन कै पमे भावे धर्म॥९॥॥
भक्ति सहित मोहि मिलावै॥भक्ति बि
ना भव सिधु बहावै॥जैसे तत्व लहे सो
तिरै॥ओर सकल नित जन मे मरे॥१०॥॥
दोहा॥मह नद बतो सो कह्यो बणी प्रम
को धर्म ताते मम भक्ति ही लहे॥कूटै ब

धनकर्म १३॥ इति श्री भगवते महापुराणे
वाल्मीकि स्वर्गश्री भगवान् उवाच ॥ सप्तमोऽध्यायः ॥
महाबाहो वीर्यवान् शूराय नमः ॥ तस्मै नमः ॥
अष्टादशसप्तमोऽध्यायः ॥ १३ ॥ भगवान् उवाच ॥
उवाच ॥ यत्नं वरुणं रुद्रं सरमा ॥ तिनकैर्मे
सर्वभाषे धर्मि ॥ इति मे र हि म म भक्तिर्
पादौ साते मेरी गणं नही पावे वरना ॥
ममिषा करिमाने ॥ सब साधन तजि मो
कुं धावै ॥ अरक क हृदि नही लावै ॥ रण
नी कै मेरी हो साधन ॥ अरु मेरो इति तत्रा
वाधन मोही कर मो क आराधौ तन म
न ई द्विषे मो सौं वधै ॥ ३ ॥ मो विन स्वर्गादि
कत ह वै मेरे ई चरन निचित देखे मो
विनु मुक्ति क देन हा है ॥ मो विन सकल
वासना देखे ॥ मेही हित मेही ताके प्रिय
मो विन सकल और अति प्रिये ॥ जे हे स
हित गण न विगण न ते ॥ जाने मो हि सु
जाना ॥ पण न ते मेरे प्रिये ना हो ॥ मदा
वसे मेरे मन मांही ॥ मेता को मेरे सोई ॥
जोन ही परस कोई ॥ ज पत पतार पव
रत अरु दांना ॥ कहै कहल गिजे विधि
नाना ॥ ते सब करै नही फल ॥ सो गण न

कलातैहैवैजैसो॥१॥ तातैगणनहिदेमधार
औरसाधसकलनिधारो॥सबमैरुपत्रा
पनोजांनो॥नोहिजांनिप्रभूसेवाठाने॥
बाधैकरिसहितगणनविगणन॥देवै
येकसकलभगवान॥बहतेममनिज
रुपसमाये॥जहाजायेकोईनहीआये॥
एतबहीप्राणीगणनहीपावै॥तबही
ममनिजरुपसमावै॥गणनविनानही
पावैमोहि॥प्रहनिजमतोकहतहैतो
हि॥२॥उद्धवतोमैविवधविकारजनम
मरनसुखदुषपरकारतेसमस्तपातन
कोजांनै॥सोतनमायाभ्रमकरिमानो
॥१॥आपहीसुखनिरंजदेवै॥देतअती
तयेकईलेवै॥पेहजेसकलप्रगटदेहा
दि॥तेआतममैरुततआदि॥१॥अरु
अंतरहैककुनाही॥अपमैअगणन
हैतेवरताही॥गणनदिष्टिकरिदेवैजब
हा॥त्रिगुनरहीतआपुहीतबही॥१॥
जेसैरजमाहिअहिकरे॥आदिनहैतेअ
तनहिरहे॥भ्रमतेमधमैदमतिमानो॥
हेनाहीप्रदेसोजांनै॥१॥तोदेहादिलस
कलभ्रमलेदेवै॥आपहामहाभ्रममय

लेयें॥ ऐसे सुनिहरि जी को गणन सी ७६
न जन पुछों भवा मान ही निध व वा ज॥
हे प्रभु गणन क्रिया करि कहें॥ भरे ना ना
भ्रम ही दहो॥ असु तो ही माघो वि गणन
भक्ति आपनी प्रम निधान॥ १६॥ जा के
बहे सकल महत॥ जाते हो पे जगत को
अंत जा विन गणन कछु ना ही॥ साधन
सकल व प्राश्रम जा ही॥ १७॥ जा को पा
पे मुक्ति नही लेवे॥ और च न पर दिष्टि
न देवे॥ औ सी भक्ति क्रिया करि कहो॥ अ
पने जन ही और निख हो॥ १८॥ यह भव
माराग विकट अनंत जा मे भ्रमत ना पा
वे अंत॥ ता पर ते पे विविध संताप॥ तिन
मे भरे आप ही आप॥ १९॥ ता ते जीव महा
दुष पावे॥ सुष ठा मे सो दुष है आप वे॥ ता
के दिख जो रिक्त क ना हो॥ मे विचार देषे प्र
चर मा ही॥ २०॥ तु मे वरन कृत्र सिर धारे
॥ सो समस्त संताप निवारै॥ ता को द स
दि स ग्र मित वर मे॥ ता के द स न और स
ब हर मे॥ २१॥ जो का ह क गाल ही ली जे
ता के सी स कृत्र ले दी जे॥ सो के नृप
महा सुष पावे॥ और और न के दुष मि

सावै॥ सो अयनै सब दूषनिवारै॥ सो
जैती न्यो लो क निमांही॥ ता सम और
कक्को नांही॥ २३॥ अरु जेता की स
२४॥ ही आदि॥ ते ते सकल परम पद पा
वै॥ पा भव कृप पस्थो बेहाला॥ ता पर
डा स्थो महा अहि काला॥ र मा ता ते विष
य विष हि सुष ज्ञाने॥ तिन निमत बहे
न दाम ठाने॥ ता ते सदा अमित दूषा
पावै॥ जा को कहै अत न आवे॥ २५॥ ता
कं॥ क्रिया पियं पिय पावै॥ का ठि क
पतै मित क जीवा वे बचना मृत की॥
बरषा करो॥ आपने गुण निबोधि॥
द्रो॥ २६॥ तुम ही जगति पिता जग स्वा
मी॥ जग पालक जग अंत्र जामी॥ जे से
बचन सुने भगवाना॥ तब न द्वव सो
भाष्यो गणाना॥ २७॥ श्री भगवानो वाचा॥
उद्वप परस करी तुम जोई॥ धरम पुत्र
की नीधी सोई॥ सरस ज्यो मे जीवम परे
हम कूं सुनत बचन न द्वरे॥ २८॥ ते ईश
व मे तुमै सुनां॥ नक्ति गण न विगण
न जनां॥ प्रकृति पुरषम हात त अ
हकार॥ सब दादि क नेमा

तन्निगुण अरु इच्छेद सपेक पंच भ
तमिह भये अनेक पावर जंगम विव
ध प्रकार इनि अठई सकौ बिसतार
अई न बिन और कहें कहु नाहि पेक
दिष्ट देधें सब मां ही जाकरि सकल पे
क करि जांनै ता को साधु गण न वधान
॥ ३१ ॥ अरु जब पठई सतत्व माप जा
ने सकल अतत्व आत्म ब्रह्म पेक करि
जांनै देहादिक सब मिथ्या मानै ॥ ३२ ॥
रजु जा निजो सुनि वारे तो सभस्त
म मरु म विचारै जे से दिसा मोहि मिट
जावै आठो दिस की बर ही पावे ॥ ३३ ॥
३॥ करत निरंतर गणन विचार देधें
ब्रह्म मिटे बिस्तार ता को कहिये तुहे
विगणन ता ते लहे मोहित जिय आनु ॥ ३४ ॥
४॥ आदि हेतैं अरु रहि हे अंत सोही हेत
बहु बरतत वल कार प्रगट हे जेत आ
दिहंते अरु नुं न मतेते ॥ ३५ ॥ ताते अब
हे मिथ्या करि देधें तिह काल मोही ले
धें जे में तिह काल में धरनी घट नाम
दिक मिथ्या करुनी ॥ ३६ ॥ अति को
मोहि देधें आने नति नति सुति म

सत्यं ज्ञोसबनाये॥३॥ सकल घटन
मैयेकबतावै॥५॥ चनीचसंभेदमिरावै
॥३॥ भातिचिबोरैवेद॥ जानैमोहिमि
रावैभेद॥३॥ असुरतोहीसबपरगाट
देवै॥ सप्रधातुकेसबतनदेवै॥ असुर
देवै॥ उपजतबिनसंत॥ संप्रतद्विचा
रैसंत॥३॥ असुरसत्यपरमभयहेजेते
॥ तिनकेवचनविचारैतेते॥ पकेमतो
सबनकोदेवै॥ जानैमोहिभेदभूमले
ये॥३॥ असुरतोअनुभविहैदेविचारै
चेतनराबिअचेतनउरै॥ सबचेतनअ
धारा॥ इदिअहविवधिविसतोरै॥३॥
चेतनजेउअरणनगहै॥ चेतनबिनको
इनहीरहै॥ योवेदांततथादृष्टताअ
ननअसुरतोहीसिध्दाता॥३॥ इनि
चारुहकोमतोविचारै॥ मोहिजानिस
वभेदनिवारै॥ सकलद्रुस्यतैहोईविर
क्त॥ चेतनबहुसदाअनुरक्ति॥३॥
कमरचितसबमिथांमानै॥ ब्रह्मलो
किलोनखरजानै॥ देवोसुनोहिदेमै

आवै सो सब धन जानि बहावै ॥ १॥ मेरी
 भक्ति हि दे धरै ॥ जिन ते भक्ति होये ते करे
 ॥ भक्ति भक्त होतु है जे ते ॥ तुम सो पीछे भा-
 यो ते ते ॥ ५ ॥ अब बहसो तुव हेत बिचारै
 भक्ति साधन उचारै ॥ मेरी कथा सुने अ-
 रुक है ॥ पीत सहित नर अत्र गहे ॥ ६ ॥ पू-
 जा अति निष्ठा धारै ॥ वहति भाति सुति वि-
 स्तारै ॥ बंदन करै परदक्षिना दे ॥ अरु अ-
 र्छा गुणनाम करे ॥ ७ ॥ सब भूतन में मो-
 को जाये ॥ परम भजन मेरे तन मानै ॥ मम-
 भक्ति नि को बह बिधि से ॥ तन मन-
 धन लिन ही को देवै ॥ ८ ॥ मेरे हेत करै जो-
 करै ॥ मेरे गुन कहै उर धारै ॥ दूजी सब
 काम ना निवारै ॥ ९ ॥ मेरे अर्थ अर्थ स-
 ब लागे ॥ सुप्र अरु भोगन ते वैरागे ॥ जप
 तप जोग व्रत दाना ॥ सपना संन भोजन ज-
 ल्याना ॥ १० ॥ इत्यादि क सब मम हित करै
 ॥ नाते अंतर सो परहरै ॥ सदा आपक मो-
 हि निबै है ॥ प्रेम सस्त्र कर जप हि नै दे ॥
 ११ ॥ ऐसे जब मम भक्ति होल है ॥ तब अब
 सेष क कू न ही रहै ॥ साधन साध ल है सो

सकल॥ कालक्रमतै होवै अकल॥ प२॥
जब मोविषै चित को धारे॥ तब कै साति
कर जत मटारै॥ धर्मै स्वर्ग पावै वैराग॥ ई
न कौ सहि जल है बड भाग॥ प३॥ अरु जो
मेरी नुक्ति न पावै॥ देहो ह सो चित लगा
वै॥ तब होवै तम रज अ धि का श ब धे अ
ध र भ य रै सं सा रा॥ प४॥ ब ध मु क्ति को चित
है कारन॥ वारै चित चित इत्यारन॥ मो मे
धारे मो को ल है॥ भव मै धारे भव मै ब है॥
प५॥ सातै धर्म गणन वैराग॥ ई प्ररता आ
दिक जो नाम॥ ते सम स्त मे रै आ धी न॥ ता
तै होवै मम लोलीन॥ प६॥ सेवत मो हि
सकल पे पावै॥ मो विन को ई निकट न
आवै मेरी भक्ति कहावै धर्म॥ प७॥ दू जो
सकल अधरमा॥ प८॥ पै क ब्रह्म रसन
सो गणन॥ प्रा बिनु और संकल अ गणन
अरु रू द्र सों है वैराग॥ जो सम स्त विष
येन को ल्याहा॥ प९॥ अरु ये स्वर्ग सिद्धि अ
न मादि॥ मम सेव ग की सेव क आदि॥
ताते जे मम सरन ही आवै॥ ते ई भक्ति मु
क्ति कौ पावै॥ प१०॥ दोहा॥ जे सै अदभुत
बैन ज द॥ कहै क्रिमा कर

चन हो सत्ता प्रो विन बोले सकल ग्राम
१३ क्रम नु मे जो हो पे ग्रं संग सो ब
ह परम जो द्रो हे योग सो हे त्यागत जे फल
कर्म सो धन ई १२ परम मम धर्म १५
जग प्रो रूप में हो न ही ग्रं न सो द दो ना दे
हृ ग्येन प्राणा मम परम बल कहिये जा
करि दो स नु म त ग ही में १६ भाग जो
म स मे स्वर्ग हि पावे चेतन नि जानें द हो
प्रे आ दे मेरी भक्ति मे क म ह ह्या भक्ति
विना सो सकल आ क्षा न १७ जाते भेद
सिंटे सो विद्या ईश्वर दू जी सकल आ
विद्या लक्ष्मी मां नि ग्रं कर्म त ग हे मम
जनता को ल जा कहें १८ नि हि कंच न
निर पे क्ष नि लो भा ई त्या दिक जे गु न ते
सो भा सो सुष जो सुष दुष अतीत पुन्य
न पाप रं स्म न ही सीत १९ विषये नि
की ई क्षा दुष जानों गुण संपन्न आद्या
सो मनो बध मुक्ति की जूक्ति ही जो नो
मम जन्म पंडित ता हि व द्यो नो २० अ
हे कार ता के जगत आदि अप ने कह
देह गौ हा दि सो समस्त सुख ई जानों ता

तैं ज्यो र भान्ति मति मानो ॥ ८॥ जो करि मोहि
लहै सो पं प्र ॥ जो प्रवते सो सकल कृपे प
॥ नित संतोषी सीतल हृदये ॥ सात कचि
त सब निपर दम ॥ ८॥ पर पहे र वर ग सुमनि
को भेदार ॥ नर कन मैता म सञ्चरि धिक्
रा ॥ सत गुरु ये कब धु करि जानो ॥ ९॥ जो र स
कल य बैरी मानो ॥ ८॥ ३॥ सत गुरु है सो
मेरो रूप ॥ जाते जीवत जे ग्रह कूप ॥ सत
गुरु बिना बंध नही कोइ ॥ सत गुरु बिना
सो बैरी होइ ॥ ८॥ मान वतन सोइ ग्रह
कहीये ॥ ता के ग्रहे ॥ ग्रही कै रहीये ॥ सो
इत्यदी जो ॥ त्रिस्व वंत ॥ कृपण इद्र प बस
वरतंत ॥ ८॥ ५॥ विधि प निश्राना सक्ति सो
इस ॥ विषये न बसतैं सकल अनीस ॥ इ
तनी प्रसन्न कही मै तो सो ॥ जा जा विधि पू
छी तुम मो सो ॥ ८॥ ६॥ विधि नेष द के ल द
न जे सैं ॥ महं पुरष जानत है ते सैं ॥ विधि न
षध जो लो जानो ॥ ८॥ ७॥ चनी च बहं जे दन
मानो ॥ ८॥ ८॥ सो एह सकल नषध ही जा
नो ॥ जे द दिष्टि में विधि मति मानो ॥ विधि
निषेद पशु मानव माने ॥ पउत कदे नहि

देनही जानै॥८८॥ ताते विधिनयेद्वयमा
जानौ मेरोरुपसकलकरिमानो॥८९॥
देहा॥ विधिनयेधभरमजानौ॥ गणनक
हों जब क्रस बखचनतब सुमश्के ७
श्रवकीन्ही पूसा॥९०॥ इती जेनागवत
हापुराणिं मि काद सस्कंदे श्री नगवान
उजव सब दै भाषा प्रा म को त विस ति
मी धाप्यो॥९१॥ श्री उघट्ट नाच चौ पडा
हे प्र ऋजी तुम कारना करो॥ मेरो ये ह सं सो
परिहरो॥ तुमरी अ गण क ही पे वेद ता ही
मैं दी युत है मेदा॥९२॥ विधि निषेध सो नेद
बसाने ता ही ते सब को ई माने तुफरी
अ गण की भ्रम लेये जाते विधि निषेध
नही देखें॥९३॥ अरु पुगट दी मैं देव वि
धि निषेध को बहु बिधि भेव पागट बि
धि बरण आ सम ति निके बिबिध
जाति विधि क्रम॥९४॥ तिन के पुगट फल
स्वर गादि अब को नही पह पंच आ
नादि॥ अरु निषेध पुगट प्रति लीम
बग्र था दिक् जे अब लीम भ वर्न न में
सं कर रहे जे ते अरु तिन के क्रम पुनि

तेते॥ तिनके फल प्रगट नरकादिक॥
कहे हते पसनाई न बादिक॥ पाजाके
फल ही जों कहें जाको॥ करि नर तो वे
ही लहे॥ अरु तो दुबा दे सब पकाल॥
परगट विधि निषेध गोपाल॥ अरु
जो विधि न मख नही सत्प॥ तो सुष रुद्ध
ष फल आसक्त॥ कोई स्वर्ग न केन
ही जावे॥ तो बहे प्रम करि विधिकरा
वे॥ १॥ अरु का कहिये बार बार॥ तुम्ह
रे बचन ग्रान प्रकाश॥ पह तो कहो तु
म्हारी वेदा॥ जाते विधि न षेद के नैद
॥ चादेव पितर मुनि मानव जेते॥ वेद न
न करि देखें तेते॥ विधि निषेध तिनके
फल जानै॥ अरु त्प ही त्प ते ऊठाने
॥ सकल तुम्हारी अणामा ही॥ जों
जो पापे तो बर नाही॥ सो मिथा को
कहि पे वेदा॥ पाके मोहि बताने॥ भेद
॥ १॥ के विधि बचन बडे संदेह॥ बहे स
ता कि धूप भूय ह॥ पेह मरन संदेह मि
टावो॥ पेक जाति के बचन स॥ नावो
॥ ११॥ मा विधि प्रगट गणन बिस्तारो॥ ज
पने रचे जीव निस्तारो॥ सुनि गैसी॥

ध्वकीवांनी॥ तब बोले श्री सारंगपात्री
 ॥ १२ ॥ श्री भगवानवाच ॥ उद्धव परम ग्यो
 ने अब कहो ॥ तेरे सब संदेह ही रहे ॥ मे
 न अखेहेती नि ॥ ५ ॥ ॥ क्रम रुचि गण
 न समुपाये ॥ १३ ॥ ज्यों जाको देख्यो अधि
 कार ॥ ताको ते सो किमो विचार ॥ जो
 चाख्यो सब ही न स्यो ॥ गणन तो ते विष
 इत जैन ग्राने ॥ १४ ॥ ताते क्रम कर्म करि
 सकल बुद्धा ॥ ले करि गणन मधि ठ
 हिरा ॥ ताते बचन सकल सम सत्य
 ॥ विधिन ये ध्ये नही असत्य ॥ १५ ॥ परये
 सकल गणन के कारण ॥ गणन लेहे ते सु
 कल निवारण ॥ पतु मसीटी ब्रह्म की
 जानो ॥ ताते ककु संदेह न ग्रानो ॥ १६ ॥
 जिन भव सुष जो हेतों जानै ॥ ब्रह्म
 लोक लोदष करि मानै ॥ ताते तिन के
 उदम रहे ॥ ओर सकल तजि दे रहे ॥ १७ ॥
 तिन को गणन जोग अधिकार ॥ धिर रहे
 करनो ब्रह्म विचार ॥ अरु जिन विषय
 दूषन ही जानै ॥ अरु तिन के उदम न
 हो मानै ॥ परम भगुन सुनि करि सुषम
 नै ॥ मेरो भजन भलो करि जानै ॥ ताके

भक्तिजोग अधिकारी॥ श्रीसेजाने
त्वविधारी॥ १५॥ अरुजेविषयेन के श्री
धीन॥ तिनके इदमसौ लवलीन क
पासुन को नही अवकास॥ अरुमम
पीतनही आभास॥ १६॥ तिनको कर्मजो
गसुषदाई॥ इनते श्रीरूप पद पाप
येतीये भाषत होतो सो॥ निहश्चल
चित के सुनयो सो॥ १७॥ प्रथमही जे
गक्रम बिस्तारो॥ बिषये जीवन कूनि
स स्तारो॥ धैरु बहु विधि मुन बिस्तार
॥ कथा प्रसंग विवध परकारा॥ १८॥ तिन
मे प्रितन न पजे जो लो॥ क्रमजोग नही
त जिये तो लो॥ अरु जो लो न बढे बैराग
॥ बिषय न को न मिटे अरु रागा॥ १९॥ तो
लो क्रमजोग नही तजे॥ क्रम नही करि
मो को न जे अपनै धर्म माहि पिर रहे
कबहु भुलिन धेध नाहे॥ २०॥ भज ग
महो कबहु बिधिकरे॥ सकल कर्म
महित बिस्तरे॥ मन नै ईदा सकल
रावे॥ सो जन स्वर्ग न के नही जावे॥ २१॥
जैसे गान भक्ति को लहे ताते कर्म
लिमा देहे॥ अछव पहत न मानव श्री
सकल प्रष्टि में नाही जे सो॥ २२॥ धार

नरक के बड़े पाकों परिको ही नहीं पा
वेता को भाग्य न भक्ति पातन करि लहे
॥ और सब निज ब्रज लवहे ॥ २७ ॥ जो अ
सामान बतन पावे ॥ सो समस्त कामना
मिटि वै ॥ तजे निषेध सकल ईकर्म ॥ अ
रु कामना ही तजे धर्म ॥ २८ ॥ अरु फिर
नही बड़े नर देश परमतन नही पोवे
येहा ॥ अद्यपि बहस्यो नरतन पावे ॥ परि
कहू पांना दिक् नरहावे ॥ २९ ॥ मात पि
ता भाई कुल लोग ॥ ३० ॥ टावे करि स
जोग ॥ ध्यान ध्यान आदि कसाधे ॥ बाला
पन ते ता को बाधे ॥ ३१ ॥ ताते जो लगि नाहि
मरे ॥ तो लगि जतन प्रथे ही करे ॥ पातन
कृमि प्या करि जाँने ॥ अस्त्युति ब्रह्म पांनि
करि जाँने ॥ ३२ ॥ ताते जतन निरंतर करे ॥ साव
धानता हि दे धरे ॥ पातन में आसक्त न होई
करे नैयाय मुक्ति को सोई ॥ ३३ ॥ जंयं छी नर बा
सा करे ॥ तमै प्रीति माहि ॥ मन धरे ॥ हस्त
बिछही काटे कोई ॥ जिन कै हिंदै दया न होई ॥
३४ ॥ बिछ संग जेयं छी परे ॥ तो तिन कै बसिंदे
कैसे ॥ परि जो प्रिय मही बिछही त्यागे काहत

देखि आयन विभामें ॥ ३४ ॥ आयु ही जैसी भांति
बेचावै ॥ पीछे तहां रहै जाहं भावै ॥ त्यों ही नर
त्न तरु आधाया ॥ आत्मपंछी कियो अगार
उपसाकों निस दिन करै प्रहार ॥ सदा निरंतर
बांखार ॥ जै सो देखि धरे मन त्रास ॥ अथ सही न्य
गोत रुको बास ॥ ३५ ॥ सोमैं आयब सेरव करै ॥ ता
ते बहुरि न जन सें मरे ॥ मानव तेन भव सागर ना
वा ॥ मरी कृपा ही हूतैया वा ॥ ३६ ॥ जामें गुरू खेवट
सुख दाई ॥ सान कलमें यवन सहई ॥ तोहू आयह
नाही जो नही तारै ॥ नाव छोडि भव सागर डारै
उपसाकों आत्मघाती जानौ ॥ ३७ ॥ जो आत्मघाति
न मानौ ॥ अरु जो भव तें होई बिरक्त ॥ दुषमय जा
नि न होई बिरक्त ॥ ३८ ॥ सो समस्त इंद्रिय बसि करै
मन नि निह्यल करि सोमैं धरे ॥ जो मन धारत
अवलन होई ॥ तोहू आतुर होई न सोई ॥ ३९ ॥ ये
के बरन ही सकल निवारै ॥ क्रम क्रम सकल न
या धिही टारै ॥ कष्ट ईक दुरे आसामन की ॥ दि
दैरा घे मूल मनन को ॥ ४० ॥ दैव सो तजि वै कहत
सावधान नित रहै सुचेत ॥ आगे फल की अव
धि बतलवै ॥ सुख दिषाय बिरक्त रीय जावै ॥ ४१ ॥
जै सै क्रम ही क्रम मन धारै ॥ क्रम क्रम सकल हि
कार निवारै ॥ दिगगन

जीतिमनकी गति जानै ॥ ३ ॥ मनजीत
न को परम उपाय पाते मन जानी जा
ये ॥ ऐसे अब की तुरंगम होई ॥ अथ धार
सब होई न सोई ॥ ४ ॥ तब तापर चटि
कै असार ॥ हठ नही करये कहो ही
वार कहो हिमै कुरुष सहित चलावे
पीके देवाव कदौरावे ॥ ५ ॥ ऐसे सी बि
धि पह कब सकरे ॥ त्यों जोगी क्रम क
ममम धरे ॥ सांघा विचार निरंतर क
हे ॥ जा विधि पह उदने मरे ॥ ६ ॥ तत
निकी उतपति विचारै ॥ ज्यों ज्यों बि
न सैं त्यों मन धरे ॥ सकल उपाधि उ
रे को देवे ॥ आग्रही मरे ॥ सकल तैले
वे ॥ ७ ॥ पाविधि जो लगि मन बसि
होई ॥ तो लगि करै विचार ही सोई ॥
ऐसी बिधि जब सांघा विचारै ॥ गुरु के
बचन हिंदै मै धारै ॥ ८ ॥ तब सब ही
तै हो मै बिरक्त ॥ मन धर सो मै होये ॥
अनुक्त जाग पंथ ते अष्ट प्रकार ॥ अ
रु पह आतम देह विचार ॥ ९ ॥ अरु
मनु अव न करित न ध्यान ॥ मन जीति
न को पंथ न आन ॥ जोगा रुसांघा अ

क्रियेतीना सब पथन मै ली है बीज २१६
पुनः इति चोपा नही उपाये जाते म
न मोमें ठहराये तातां चोये कछु न
करनो इन पथन मो को अनुसर
नो ॥ ५१ ॥ अरु जो कहे पाप के आवे ॥
सावधानता करन रावे तो हे और
न करे उपाई सो सो पाप ई है ते जा
॥ ५२ ॥ और करे नाना विधि जो ई
सो सो अधिक अधिक मल होई ॥
विधि निषेध सब ई मल जानो बहे ॥
कछु इति मति मानो ॥ ५३ ॥ विधि
निषेध को नो दोई जाते बधे रहे
सब कोई ॥ अथ ते बहे अरु बन करे
अपने अपने विधि अचार ॥ ५४ ॥ भला
पीछे सब बध जनाने ॥ करो अवध
सकल कुडाई ॥ सकल त्यागे बार
बार ॥ ताते कोरे बहे तपकार ॥ ५५ ॥
॥ ताते विधि निषेध नही करना ॥
सकल त्याग मोमें चीन धरना ॥
धन धेध जिन मिथ्या जाने ॥ अरु
सब सब दूष करि माने ॥ ५६ ॥

परममरपतनिवेकूं नाही॥ प्रबलगणानप
रगदोन ही मांही॥ ताकों भक्तिजोग
अधिकार॥ सहजें कूट सकल विकार
पुत्रपेरी कथा निरंतर सुने॥ हिंदे मां हि
मैरे गुन गुने॥ दिठ बिस्वास हिंदे मैरा
दै॥ मैरे गुन नाम जित भाषे॥ पद्यों ज
द्या॥ पिबिषये न मैरे हे परिमन क बच
न त्यागें बहे॥ सो नित भक्तिजोग सो भ
जै॥ मो बिन अंतरापे सो तजै॥ ५७ तंत्रप
द्य पूजा बिस्तरे॥ मम हि तजो क कू सो
सब करे॥ पाबिषि सकल वासनाना
सो॥ मैरो रुप हिंदे परका से॥ ६॥ ताते व
रु रुप मम जोने॥ दैत भाव मिषां कर
माने॥ से सष कर्म भ्रम भय भागों॥ ग्रंहे क
रत जि सो बत जागे॥ ६१॥ न होत हो सो मो
ही को दैषे॥ मो बिन और कसू नही लेषे
॥ ऐसे दे मम रुप समावे॥ पाही जनम
और न हा पावे॥ ६२॥ ताते जा के मैरी भक्ति
निस दिन मम चरन अनुरक्ति॥ ता के
जस्य नाही ग्यान॥ अरु नाही वैराग
निदान॥ ६३॥ तो हूं सो मो कू अनुरे

श्रुतिद्वयसरजवसागरतिरे॥ बरनप्रम
कैधर्मनिकरे॥ बहलभातितपकृत्र
नुसरे॥ ६॥ निसिदिनिसाष्टगणनवि
चारे॥ गहिबैरागसकलगहिडारे॥ सा
धैजेगअष्टिप्रकार॥ दानवृतादिकब
हेप्रकार॥ ६॥ पापेसबआपूहतेचलिआ
वे॥ ममजनकेआधीनरहावे॥ मेरीभक्ति
सकलसिरताजा॥ तेसेसकलनरन
मेराजा॥ ६॥ भुक्तिमुक्तिफलनहीप्रहरे
॥ ममजनकीनितिसेवाकरे॥ अरुजद्य
पिमैबहुविधिकहे॥ भुक्तिमुक्तिकछू
हीनहीचहे॥ ६॥ १॥ घेरमेरेनजननही
लेवे॥ सकलतांगममचरननिसेवे॥
॥ निरपेक्षापरमहेअप॥ मोविनुसंक
लवस्तुकेहेम॥ निस्पृहतापहसुषाअ
पार॥ जहानकालकर्मअधिकार॥ नि
स्पृहमैनिस्पृहीजोहोये॥ मेरेभक्तिवही
जेसोये॥ ६॥ मेरेसमलछनहेजामे॥ मे
रेरुपजानियोतामे॥ सबतेनिस्पृहि
निममभक्ति॥ मेनिस्पृहतासोअनुर
क्ति॥ १॥ तातेनिस्पृहतासुषाअसो॥ स
कलविस्वमेनाहीजेसो॥ सोनिस्पृह

जनमैरसुप्रपावे निस्यहादतके निक
दनआवे ॥ ११ ॥ जैयंकंतमक्तहै मेरे तिन
कैयुनमापनहीतिरे रागदोषवर्जितसम
दरसे ॥ निगुणातीतब्रह्मकंपरसे ॥ १२ ॥ येमे
तीनपंचाभिस्तारे ॥ इतिकैबहुजीवनिस्ता
रे ॥ जैइजेजनइतमेआवे तेइतेमेरेपदपावे
॥ १३ ॥ दोता ॥ जैइनपंचनकोतजे ॥ करैक्रम
अधिकार ॥ तिनपञ्चजीवनको ॥ कहैबि
धिनिषेधविस्तार ॥ १४ ॥ इती श्रीतगवत
हारातेप्रेकादलानंद ॥ १५ ॥ अगवाहन
बलबलावनमायोदीना ॥ विषयनिषेध
पावनविस्तार ॥ १६ ॥ अगवाहन
चागोनभक्तिअरुकर्मउपाये ॥ आपमित
नकोदिप्रेबताये ॥ परिजेअतिहीमपञ्चअण
न ॥ इतिकोहोउतारे ॥ करैकहुअन ॥ १७ ॥
वरुतकामनाहिदेधारे ॥ तिनहितबहुक
र्मनिविस्तारे ॥ तेपञ्चदूषनिरंतरपावे ॥ न
वप्रवाहमाहीबहिवरुजावे ॥ १८ ॥ तिनहित
विधिनिषेधउचारे ॥ तिनिकैबहुआरंभ
निवारै ॥ आपनोआपनोतोअधिकारतामे
बरतैततिविस्तार ॥ १९ ॥ उचोनीचोसवप्रह
रे ॥ आपनैक्रममाहिअनुसरे ॥ सोसोतिन

तिनके विधजानो जाते और निषध ही माने
॥ भये कहु बस्तु बुधिमति देखो जीवपसंजन
को बधन देखो ॥ उपजीवस्तु समस्त सुध
॥ आत्ममेक सो सदा सुधा ॥ पात्र मुक्रम
सकल को डिवन कारनामै पेह की पा भेद
उचारना पाप को डाय धर्म ग्रहिवा नीपा
विधिवहं ग्रंथ को डाग ॥ ६ ॥ समस्त जग को
बोहार पाते जग को बारन पार ॥ किति जल
ते जपवन अकि सा सब जग पंच भूत प्रका
स ॥ ७ ॥ बुद्धादिक पावर पजिता ॥ पंच भूत क
र सब बरतता ॥ अरु आत्ममे कै सब मां ॥
जाते भेद कहु कहु नाही ॥ चापरित पाप
मै भाषो वेदा ता करि कीन्हें ना ना भेद ॥ ति
न कै स्वारथ सुष केहेता ॥ विधि चारै फल
नि समेत ॥ ८ ॥ देस काल गुन द्वाख भाव ॥ इ
न को भाषाना ना भाव ॥ मेक निषेध मेक वि
धि भाषै ॥ दोस को चमाहि सब राखै ॥ ९ ॥ जो ने
देस कुरु मृग नाही ॥ अरु १० ॥ दिन सेवान क
राही ॥ अरु जो कुरु मृगो बहुरे ॥ परम लेख
तहा वासा उहे ॥ ११ ॥ अरु ज दायितुरु कै त
हानाही ॥ परि मग हर आदिक के मांही ॥ अ
रु जो मृग धादिक परहरे ॥ परक दश जता दृ
श्न करे ॥ १२ ॥ अरु कदर जता मेटी होये ॥

एतत्तु मेरु सर को मे सो लो दे सन मेध कहौ जे
 तिन मे वासा दिक्क नही कहौ १३॥ तिन ते आ
 र दे स सा वे जा नै तिन मो हो वा सा दिक्क ठानै
 अरु नौ काल धर्म को नही सुत क आदि भ
 मे जा मा ली १४ भा मे सो वा ल नि मेध कहौ जे
 अतम सो ज मे वि विक्क जे ब ल्हा दिक्क ज ला
 दिक्क सु ध प्ला दिक्क ते हो दिक्क सु ध १५ रु
 ध सु ध व च न तां हा सु ध ते पु ह पा दिक्क
 सो ली त व री मा वा ल सु ध ब ल त का ल त ह
 रु सु ध १६ वा ल मे सु म म सा न अ रु ध व
 हो ग वा ल ते हो वे सु ध नू नो व र प्रा ज ल ह
 हो ब ल त वा ल ते हो सु ध हो ये १७ वे सी भा
 ति त्रौ र जी नो मे सु ध अ सु ध मे द म ल्हा नै
 वि तु अ स न त ल न वा ला र क अ भा न दिक्क
 सु ध अ सु ध दिक्क १८ जी लो व ल्हा न मे न को सु
 ध अ सु ध व च न मे अ सु ध अ र स क ल स ति
 अ सु ध नो सु ध अ सु ध ल की नो व क न १९
 सो ल अ र स क ल अ सु ध सार वि मि नि मे ध को
 को लो वि न र अ सु ध अ ल न व ल ग ज ल ते
 ल क र अ त ह न दिक्क न त र अ ल स क ल अ
 ल म दी ल्हा न भा ज न प ह र सु दिक्क र ह
 अ ल म न ल्हा न मे अ र स क ल अ ल न अ
 वि न न र मे लो ल ग ज न अ सु ध ली ग ली

पौण्ड्रगपेतें निरमल कहोये॥ सक्ति अत्र
स्थातपत्रसनानासेसकारसुअकर्मअरु
दोना॥ रणमसुमरणतें होवै सुधाकरेअन
प्राहोईअसुधा॥ मेरोमंत्रलीयेविधिजानै॥ मं
त्रविहौननिषेदहीमानै॥ १३॥ अरुमोहि
धसबकर्मकरेविपर्जपहोयेअधर्मदेसा
अरुकालक्रमअरुकरता॥ इवमंत्रपषट
अचरता॥ रभापजबसेधहोईतबसुधाक
हेअसुधमोहोवैसुधमेअसुधतोहोयेअ
सुधा॥ अरु कहें होवै सुधअसुध॥ १४॥ सुध
असुधभेदहैजाकैं॥ राजदहैकोहैताताकैं
॥ जोकहीये॥ ५॥ चैकाधर्म॥ नीचैकोहैबहै
अधर्म॥ १६॥ अरुजोककूधर्मनीचैकोसा
इधर्म॥ ५॥ चैको॥ ताहीतेदो॥ ५॥ भूमजानै॥ मेरो
भक्तिकदेनहीमानै॥ १७॥ जोककूहैविषअ
मृतलीजै॥ ले॥ ५॥ चैनीचैकोदीजै॥ तोतिनमै
तोभेदनहोई॥ मरतोअमरयेकसमदोई॥
रचजोपहविधिनिषेध॥ होवै॥ ५॥ चनीच
कीअरेनजोवै॥ परिपेदो॥ ५॥ हेंककूनाहीआ
पुबिचारीअंतरमांही॥ १८॥ नीचैनीचकर्म
आरचै॥ मदिरापानादिक॥ ५॥ करतोहै
५॥ नकोदुषननाही॥ नितहै॥ ५॥ नहै
हो॥ ५॥ जैसैमसो

रने को भये नाही। पर जै कछु बढे है उचै
संग चरै ठहि आवै नीचै। ३१ असु जो ग्रही
करतुरे संग रितु के समप जुवती पर संग
तोता को कछु दुषन नाही। सो नित रहै दूष
नही माही। ३२ ताते तिन को संग न करतो
नन कम बचन सुकल प्रहना। ज्यों ज्यों
प्राणी छोडे क्रम त्यों त्यों छूटे पावे समे ३३
है मधमे सब हीन को पेहे। मेटे सो क मो
ह सदेह। पानि मत मै बदे सुनाय। पारे पो
रे मै ठहराये। ३४ पीछे भूमक हि स कल
निवारै। जैसी भोगति न जीव निस्तारे। तब
चर बिष पेन जेतम जानै। तब तिन म हि
आसक्ति हा ठानै। ३५ ताते हिरदै कं पंजे
काम ताते तहा कलह को धाम ताही ह्वै
क्रोध उपजावे। तब अविब क आयस्य
आवे। ३६ सो अविब कहै स्वर्णन ता
ते प्राणी मृतक समान ताते काज अकाज
न मानै। निस दिन बह बिधि चिंता ठानै। ३
७ सब पुरधार यहो वैदान। निस दिन रहै
दुषत अरु दीन। ताते समुजे आपुन आन
मि प्या जीवै विद्वसमान। ३८ ज्यों होवै
लहर की घात। स्वास लेपे पौषो वै का
ल अरु पुनिक है कर्म फल जेतै स्वर्गी

दिकनानाविधि केते॥३॥तेते कहि करि
रुचि उपजाये॥४॥निषेधनिविध कर
बारी॥जैसे श्रोषध कटु कपी मावै॥बाल
क कौला डं दिष लावै॥५॥श्रोषध को फ
ल ला डं नांही॥श्रोषध हंतै रोग सजांही॥६॥ब
सुगिहत जो कर्म निकरे॥पुनिसुनित त्वफ
ल ही परहरे॥७॥तब अर्थ तजि अर्थ ही
पावै॥मो मै के नि कर्म समावे॥अरु मे जब
ते जनम ही पावै॥तब ते बिषये अपु कमा
वै॥८॥पुत्र कलत्र कट मरु प्रांना॥इ न कौ
हेत चहे सुषमाना॥आपु आपु कू करे अ
नर्थ॥तिन कौ मुरष जानै अर्थ॥९॥अ
से पा भव मै नित भ्रमे॥क देन जानै सुष के
मर मै॥अरु तिन कं जो भर मत देखै॥सदा
निरंतर दूषत लैवै॥१०॥सो तिन कू कबह
न कहावै॥अर्थ रु काम क देन दूटावै ता
ते॥मै तो सब विधि जानै॥कौ से कर्म रु का
म बषा नौ॥११॥पर जो कछु सुरति मां हि
सुनाये॥अर्थ धर्म अरु काम बत पाये॥ते ते तो
सकल कू डावन कारना॥हित बिचार की
नौ उचारना॥१२॥अर्थ मै बेद तत्वन ही जा
नै॥मुरष पुषा तबे न बषानै॥फल न हेत

आरजै कर्म तिनको कदेन छुटै भ्रम ॥१९॥ का
मी कृपन लोचन अधिकारी ॥ त्रिआ आकूल
सदा विकारी ॥ फूल ही माहि फल करि मानै
॥ का मनिला गित त्वन ही जानै ॥ २० ॥ मै तिन
कै तिन ही रदै मांही ॥ पर तोरु ते जानै नोही ॥
जाते पेह सब जग तरबारा ॥ अरु समस्त
जाकी आधार ॥ २१ ॥ जाक सिक्ति पाईस
बबरतौ ॥ चंबक संग लोह ज्यों निरतौ ॥ जाकी
आण सब कोई मानै ॥ कोई मरि जादानही
भानै ॥ २२ ॥ जै सो मै परगट सब ईस ॥ जै से स
कल देह मै सास ॥ परिते काम कर मत म
अंध नामोहि देखै ॥ अरु नही बंध ॥ २३ ॥ जै से
नैन रोग मपे होवै ॥ आगै होती बस्तु न जोवै
॥ २४ ॥ जै गण न अंध कर्मि ॥ देखै नही निकट
मपे ईस ॥ पर ते मो बिन मम मतोन जानै ही
निजी ॥ निज गण दिक्ठानै ॥ ते फिरितिरुहि
हने परलोक ॥ जन्म जन्म पावै ॥ जै लोक ॥ २५ ॥
जब प्राकै हिंसा बह देषी ॥ रुनि रुनि जख
जाव कापे ॥ तिन के हेतक ॥ हापन बांनी
॥ हिंसा जग ही मांही बखानी ॥ २६ ॥ पप्रब
धपै कजग मै नाघौ ॥ ओर बस्तु हरिक
रिना ॥ जब प्राणी तामे ठहिरावै ॥ तब पु
निवेद सकल मिटावै ॥ २७ ॥ प्राणि मत्तप

शुद्धि सा भाषी सोमुरषजिन तत करि राखी
ताते बहं विधि कर्म न करै ॥ बहं कामना छि
दै मै धरै ॥ ५६ ॥ पसे हि सा करि करै विहार
जे जे पावै बह परकार देव पितर भूत न
कूं जजै ॥ ५७ ॥ उरै सुषई दान ही तजै ॥ ५८ ॥ सु
पन तुल्य स्वर्गादिक लोक ॥ तिन को अंत
म सुनि पों लोक ॥ तिन की ईसा हि दे धरै
॥ ५९ ॥ द्वा घर च कर्म निबि स्तरे ॥ ६० ॥ विघ्न
होई बहं कर्म न मां ही ॥ स्वर्गादिक न पा
वै ना ही ॥ ६१ ॥ कोई सा पेर पार ही जावै ॥ धन
हित ग्रह के धन हो ल गावै ॥ ६२ ॥ पीछे प
रै विघ्न जे को शो तो दून ते जावै सोई तो
जे बहं विधि कर्म न पावै ॥ ६३ ॥ पशु दुहं लोक
तै जावै ॥ ६४ ॥ साति कजे ते देव नि भजे जया
दिक निराज सी जजै ॥ ताम स भूत पेत ब
हं जो दै ॥ तन मन धन तिन तिन को दै ॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥ इहां जग बहत विधि की जे ॥ विप्र बह
त जाति दक्षना दी जे ॥ ताते स्वर्गादिक
सुष पे पेत हां बहत विधि भोग भोगे पे
॥ ६७ ॥ पुनि जव होवै तिन को अंत तब
हो जे भुव मै धन वत ॥ ६८ ॥ सी भांति काम
नां करै ॥ तिन निमत कर्म न बि स्तरे

६३॥ तनको मेरी बात ना भावें भक्ति कहैं तैं ॥
६४॥ हिंदे आवें जिय वेद कर मर्न्यौ ॥ धर्म अ
६५॥ कों म अरथ बिस्तार ॥ ६६॥ यस्तथापि विम
६७॥ देवतावें ॥ कम कम ह जो सकल छुड़ावें ॥ परि
६८॥ श्रुति को आसिन हाजानें ॥ तेक छू और और ब
६९॥ यो नैं ॥ ६९॥ सबद बुझ महि दुख बोध जा को कोइ
७०॥ लै न सो धा ॥ ७०॥ तम थूल रूप देवा के मोचिन
७१॥ भेद लहे को ना के ॥ ७१॥ प्रान स्व रूप परसे नाम
७२॥ य सती को मन में धा ॥ म ती जी के ठम धा सा मूल
७३॥ चौथी प्रादियरी थूल ॥ ७३॥ भेद तीन को कोइ न जा
७४॥ नैं ॥ तातें और और बयानें ॥ अतियार को इ न ही प
७५॥ वै ॥ ज्युं सायरा हो न ही जावें ॥ ७५॥ अति गं भार अ
७६॥ रथ देया को ॥ कोइ भेद न जानै ता को ॥ में सब हि न में
७७॥ अंतर जामी ॥ सति ॥ अनेत सकल को स्वामी ॥ ७७॥ स
७८॥ ख व्यायक बुझ स रूप ॥ तिय तन का ह्म र म अ न
७९॥ य ॥ सोइ व्यायक सब हो सांही ॥ सबद रूप ह जा को ना
८०॥ हो ॥ ८०॥ कमल तोल में तन जै सें ॥ सबद रूप सब में
८१॥ में ॥ सें सोइ प्रगटो बर विस्तार ॥ मन करि हिंदे पद
८२॥ तें मुख द्वार ॥ ८१॥ ज्यो म करी तन न बिस्तार ॥ करि बि
८३॥ स्तार बरु रिस हो ॥ बेद रूप त्यों मम बिस्तार ॥ के
८४॥ को मूल अधिकार ॥ ८२॥ तातें अंतर बरु तयक

सतिनैतच्छ्रद्धाजहीषाचारिचारिचरत्र
धिकाही॥ छंदहीतत्रैशविधिजाई॥ ७३॥ येकाह
तैयहोहिअनेवा॥ अरुसकलयेककेयेकागा
एनीअक्षरवैबीसार्जुमनिकछंदअष्टअक्षरस
७४॥ जोबंसनुष्टुपसोहैं॥ बहतीनामतसती
षटकोहैं॥ पक्षिनामअक्षरचौस॥ त्योंही
त्रिष्टुपचबलसि॥ ७५॥ जगतीछंदअष्ट
चासीस॥ कहतपारनहीकोटिबारीस
॥ प्राविधिपरगटवेदविस्तार॥ जाकोंक
छुवारनहीपार॥ ७६॥ कहाहिदेमैका
हाबतावै॥ लेकरअंतकहांठहिरावै
॥ ज्येसोमतोनजानैकोई॥ मोबिनुभा
वैविधिकीनहोई॥ ७७॥ जगपरुपकहि
मोकोराखै॥ सकलदेवमममोकोभा
वै॥ मिरैहेतकर्मकरवावै॥ मोतैउपजा
सकलबतावै॥ ७८॥ अंतसकलको
भाषैनास॥ मोकूंकहैनितपरकास॥
नानारुपनिबृथाजनावै॥ पेकब्रह्म
कहिसकलजनावै॥ ७९॥ ज्येसैसांपजे
वरीमाही॥ मोसबजगतबतावैनाही
॥ मोकोंनितनिरजभाषै॥ अंजनसक
लदूरिकरिनाथ॥ ८०॥ तातैसुरतिनि

11

वाचाहे देवसदनतहै कहे कहो
 जगजकारिनामो जेते जिन कोरचित सक
 जसंसार जेदमिनातापरिकार ॥ १ ॥ मुम्तो
 जे द्याविसति कहै जेमें दठ करिमें संगह
 जे रिवहते रिवबहे विवि कहै अरु तिन
 जे सुनितागह गहै र केई कहै तत्व कवी
 सत्र सत्या केई कहै पची स केई षटत्र
 न केई चार केई नाम सपत विचार ॥ ३ ॥ के
 र नवको कर विवेक केई नाम षट्सत्र रु
 पक केई तत्व बतवै पाउ स ॥ अरु त्यों प
 वा कहै त्रयोदस ॥ केई नाम षट्सत्र रुसा
 त स रिवमत सुमति विद्यात कोन सो प्रा
 जन लहे नाम ज्ञापन कर पने मत ही राव
 प्र कज करो निज विन सुनवावी सतमता

सोमोहिबतावो॥ मुनिऽद्वयकेवैनरसा
 ला॥ कृपासिंधुबोलोगोपाला॥ ६॥ श्रीभृगु
 वानवाच॥ हेऽद्वयज्योतीं सबभाषों
 जिनजिनतेतत्त्वनिराखेंतेतेतुमसबजोनी
 सत्यबनविचारेंसबैअसत्य॥ ७॥ मायादे
 धिकहैजोजेतेमायामोंहिसत्यईतेतोमो
 हिदेधैअजोतिनकोदेधैतोसमतईमि
 णोंलेधै॥ ८॥ मायामांहिजुक्तिविचारेंअ
 पुनोअपनोमतोर्तुचारें॥ पहयोपहयोप
 हयोहीहैकहेसवैमीलिअपनमांही॥ ९॥
 पहयोहीहैजोमईभाषोंतेईरकिहांस
 त्यहीरांभो॥ १०॥ विधिमममायाभ्रमलापे
 ॥ तिननानाविधिपंचचलापे॥ ११॥ मममा
 याकीसक्तिअनंत॥ तिनकोपथनिकोन
 हाअंतजबसमदमअंतरअवेतब
 पेभेदसकलमिटिजावै॥ १२॥ जेतेतत्वस
 कलमायाकें॥ जिनतेभयमतेताताके॥
 क्रमक्रमततअपजहेंगये॥ त्योंत्योंभेद
 बहेतबिधिभयो॥ १३॥ जैसेयकबूदाबि
 स्तारताकीसंपतबहेतिप्रकाराकक
 साधबहेतैपरसायाअरतिनकीबह
 विधिअपसाध॥ तिन

विस

तार ॥ पातफलफलविधिप्रकाश
रुतावृक्षहीवृषिकोईजो जौ कहै सत्य
त्योंही ॥ १४ ॥ पोरै होये कहै जो साधे व
हंत होहि मिले परि साधा ॥ उपसाधा ॥
तिबहं विधि भैवें ते सब पंथ सत्य सब
जोंवें ॥ १५ ॥ यो संसार ब्रह्म बिस्तार माय
मूल बहत परकार ॥ तत्त्व सकल साध
पर साधा ॥ अरु तिन के बहं विधि साध
॥ १६ ॥ तातें ज्यो बरने त्यों सत्य परि सब म
या सकल असत्य ॥ ज्यों ही ज्यों जिन के म
न आये ॥ त्यों ही त्यों नित बरन सुनाये ॥
॥ १७ ॥ प्राण करि बंधो सो आतम तातें कूटे
सो परमातम ॥ ये कै अरु जड ते चौबीस
॥ तिन कौं मिलै सकल छबीस ॥ १८ ॥ अरु
जै बंध मुक्ति हे दोई ते मम माया सत्य न
कोई तातें ब्रह्म देखे नाही ॥ पौ पचीस जा
नौ मन मांही ॥ १९ ॥ सतरज ॥ तम गुण है जे
तै जड सरूप माया के तै ॥ रज ॥ तप तसा
ति कप्रतिपाल ॥ ताम सरूप ग्रह स्त है का
ल ॥ २० ॥ राज सहै तै कर्म अधिक ॥ ताम स
तें अंब बेक अपार ॥ साति क गुण ते उप
गुण ना ॥ ये है माया के गुण नाना ॥ २१ ॥

इनतै परे ज्ञात मा मानौ तातै ब्रह्म रूप
 करि जानौ पंचवीस तातै कहै ॥ अरु
 तौ ही सुनि श्री रौगो हार रसो है काल गु
 नन बिस्तार ॥ ससुत सुभाष सौ सक्ति
 पसारा ॥ तातै काल रूप हरि जानौ ॥ अरु
 रुस नाव महत त्व ही मानौ ॥ २ ॥ तातै
 तत्व अधिक नही गये ॥ पंचवीस छ
 बीसै कहिये ॥ प्रकृति पुरुष महा तत
 अहंकार ॥ तनमात्राते पंच प्रकार ॥ २
 भकर्णरुत्व चानै न र स ध्यान ॥ प्रेप
 चो इंद्रीये हे गणन ॥ पापु उपस्थ चरन
 करवानी ॥ पंचक्रम इंद्रीये हजानी ॥ २
 धामनद सह इंद्रिये को रजा ॥ जाकी स
 क्तिकरै सब काज ॥ छित जल तेज प्रव
 न आकास अग्निसतीन गुण पास
 र ॥ गति उत्तम र्ग कर्म अरु बचन ॥
 प्रेपंच इंद्रिये फल रचाना ॥ तातै अष्टा
 विसतित तत्व ॥ अधिक न भाषे गणनी
 सत्वा ॥ २ ॥ अष्टि आदि ती मा पापे का
 रष सक्ति ते भई अनेक ॥ तनमात्रा म
 हतत अहंकार ॥ प्रेपे है कारन सपत प्र
 कार ॥ २ ॥ पंच भूत अरु मन इंद्रिये

ही

प्रकृतिविरगहौ॥२॥ इनमें चेदन जानो
पुनः प्रेकमेक सब अनुसरे॥ इनिमे प्रकृ
ति कहा लौक हिसे॥ कौन आत मा जो
दिगहीये॥३॥ करिक रुणा बांनी बि
स्तरा॥ बचन बान संसम परिहरो तुव
माया बंधो ससां सार तुम ही रहते हो
ये उवाच॥४॥ तुम ही माया की गति जो
नो॥ कृपा करो तब तुम ही भानो बा
नी सुनी॥ अकि अपूने की तब बोले श्री
केशव विवेकी॥५॥ श्री गुरुदेव नमो
हे उवाच॥ हे गणान अगाध कोई प्रेक
लेह सम साध॥ सो पह गणान सुना उतो
हित हे सदा अनुवृत्त मोहि॥६॥ उवा
च॥ परिकृतिर ये संसार॥ सुक्ष्म मूल
साता मे अतम नित्य प्रकास॥७॥ उवा
च॥ पह है मेरी माया॥ तिन सतर जत मगु
न उपाया॥ तिन को त्रिविध सकल
विस्तारा॥ जाको ककु वारन पारा॥८॥
त्रिविध कहन को परिवहं भेद जि
ने तें जीवलहे नित ये द॥ अध्यातम अ
धिव अधि भूत॥ त्रिविधि कृपा सबन

गर्भदभूत॥३॥दिगत्रधांतमरुप
अधिभूत॥४॥विअधि॥देवतमिलिअ
दभूत॥तीन्योमिलिपरसपरजबहीति
नकोकारजसीकेतबही॥५॥तीन्यो
बिनाककुनहीहोरीतीन्योमिलिवरते
सबकोईत्वचासपरसपवनज्येजा
नो॥कनरुसबदिसाधोमानो॥
५॥नासागंधअखनीसुता॥जिह्वार
सबरुनजलजूता॥चितचेतनाअत
रजांमी॥बुद्धिबोधनावमहास्वामी॥५
॥अहेकारअहेकर्तारुदामनुमानि
योदेवांताचंद्रायाविधित्रिविधप्रप
चपसारा॥सकलपरैआतमनिजसा
रा॥५॥इनतीन्योबिनजगतनहोईते
आतमबिनुरहेनकोशआदिसक
लकीआतमयेकाजातेचेतनहोही
अनेक॥५॥आतमस्वप्रकासअवि
नासी॥चेतनरुपसकलपरकासी॥
येसबआतमकेआधार॥अरुआतम
सकलकेपार॥५॥बिनआतमाक
कुनहीहोई॥अरुआतमानजानेकोई
महंततवनपज्योअहेकार॥तिहंगु

एनि को विविधि प्रकारों ॥ सो
अपान मूल करि मानो ॥ ता को कीपो
जगत् सब जानो ॥ सो आतमा आप-
जहिलीयो ॥ अब भय आपु आपु को-
कीयो ॥ ५१ ॥ आतम सदा भूक ईरुप
॥ अहंकार ते परे अन्त ॥ सो जब रूप
आपनो जानै ॥ तव ही सकल उपाधि
हि जानै ॥ ५२ ॥ सो कहै हमें नही उपा-
धि ॥ परि आतमा लई करि व्याधि ॥ सम-
जै जब ही आपनो रूप ॥ तव आतमा
तजै भव रूप ॥ ५३ ॥ अरु तव रूप
आपनो जानै ॥ जब मम धरणा हिंद
मै जानै ॥ जय विधि ध्यांसव से सार
॥ जो कहै दी सै विवध परकार ॥ ५४
॥ पर जौ लौ नही नो को भजे ॥ जौ लौ-
निजि अग्न न न तजे ॥ जब ही मेरी स-
र नही आवै ॥ तव ही आतम गण नही
पावै ॥ दो ॥ सो श्री मुख बैन सुनि
॥ पर कृति पुरुष को गण न ॥ नंद व-
की को पूस जब ॥ हरि जन परम
सुगति ॥ ५५ ॥ नंद व ॥ नंद व ॥ तुम

करिहितवृद्धिहैनिकी॥कहीपैदे
वकोनगतिनिनीकी॥सकलविप्रा
पीत्रातप्रपेका॥कोकरिपावैदेह
अनेक॥हरिअरुसुभअसुभकर
महेतेते॥त्रिगुणरचितकहीप्रस
वतेते॥तिनकर्मनिनिहंक्रमवधा
वै॥कहकरिज्योनअज्योनीपावैह
॥अपरमरैकैसैकरिदे॥वा॥पा
कोमोहिबतावोमेवा॥पहतुम
विनानकोइजानै॥जद्यपिबिद्या
वेदबयानै॥जोककूपडेबधसो
इ॥नातेतत्वनजानैकोइ॥पावि
धिअद्वयपूछ्योगांनातबहरि
बोलैश्री॥भगवान॥इध॥श्रीभग
वानोवाच॥अद्वयरुमनपरम
विकारी॥सबईद्रियेनिमाहिअधि
कारी॥इद्रियनहैसबमनइकरै॥सु
षहितवहैअद्वयमविसतरे॥इह
॥सोतनतजिदुजैतनजावै॥तहि
तहिहीआतमाअधि॥जिनजिन

सुषमि सुनै अरु देखै ॥ तिन तिन को
उत्तम कैं रिलै ॥ ६७ ॥ तिन को सो मन
मि ॥ सदिन धावै ॥ यह तन को न भये
तहां जावै ॥ यह तन पाई बि सारे पा
को ॥ जनम मरन कहितु हेता को
६८ ॥ जो तन मे बांधै अभिमान को
उपुखत न जो आन ॥ जनम मरन
आतम ना सोई ॥ ६९ ॥ जो जमन मरन
नही कोई ॥ ७० ॥ जैसे सुपन मनी
२ प जावै ॥ यह तन को डिओरई
पावै ॥ तब पातन की सुधु न रहे ॥
बाहो तन को आ पुही कहै ॥ ७१ ॥ जन
मरु मरु सुभूत को होई ॥ आतम ज
नम मरन हे सोई ॥ ओर क हू आत
म नही मेरे ॥ अरु कबहू नही अ
तरे ॥ ७२ ॥ पोतन में मन को आभि
माना ॥ ताते तन उपजत है नाना ॥
ते सब आतमा के आधार तन म
न बुधि चित अहंकार ॥ ७३ ॥ ति
न संगति आतम को दृष्ट ॥ तिन

हितजेबिनपलनहीसुष॥१३॥
सकलदेहहेजेते॥सदासकलवि
नसतहेतेते॥१३॥कालनदीपरवा
हपुच्छंडाकरिपलकपरतनहीव
३॥जेसेनदीनिरंतरबहेपरदेधून
कोतोहीरहे॥१४॥अरुजोअचिनि
रंतरजावेपरिदयादिकतिनमेरहि
जावेअरुजेसेसबबृक्षनकेफल
दसेतोपरिपिरनाहीपुल॥१५॥
तोहीसबदेहनिकोजानाकालहि
मसतनिरंतरमानो॥जद्यपिअ
वस्थाजातीलेमेवाकलकुमारि
जुवादिकदेधे॥१६॥परतोहमुख
नहीजानेमेवहहोपोंकरिमाने
॥पहचातमसोसदाअजनमदेह
संगतेपावेजन॥१७॥अरुत्यअम
रनिरत्रजानो॥देहसंगमरनोसोमान
॥जेसेअग्निदरुकेसंग॥सदाहेउ
पतिअरुअंग॥१८॥जोअगितनकी
संगतिरहे॥नोलीआतमअ
मुहे॥॥अप्रवेसवद्विअ

स
अवस्था ताथा कुमार ॥ १२ ॥ जो निम
धा जारा समर नो जाव अवस्था देह
आचरना ॥ आतम पेक रुप सब हिन
भो ॥ कह नही लिपेति नति नमै ॥ ८ ॥ श्री
मेजा निमुक्त तब होई मेरी सरनाग
ति जो कोइ अपनो रादो पिता विचा
रे ॥ तिन को मर नो ॥ ५२ ॥ मे ॥ धारे ॥ ८१ ॥ आ
इ जो अव मै अनुरक्त ॥ तो हीते जते
आसक्त ॥ ते तो प्रगट काल वस नये
पर वस हो डिपरे सब गये ॥ ८२ ॥ मेरी
दोई देह गति जैसे ॥ नई बाप दादे की
है सी ॥ अस मेरे बालक जैसे ॥ हम हह
ते पिता के ते मे ॥ ८३ ॥ सकल अवस्था
सो मम गइ पह तो प्रगट और ई भई
॥ या ही विधि जैसे सब देह ॥ सब कुटिह
पुत्र तजे धन मेह ॥ ८४ ॥ यों ५२ मे बह न
ति बिचारे ॥ अपनै वधन सकल नि
वारे ॥ देहादिक सब संगति तजे ॥ मद
नि रतर मो को नजे ॥ ८५ ॥ बीज जन
ममाया के है अत ॥ ये तीघेत माहि ब
तत ॥ ये ती कर न हारतै नारा ॥ यो त
नारी करे बिचारा ॥ ८६ ॥ क्रम बीज

विस्तारै नाही ॥ दंगद करै जै है तन मा ॥
ही तन ते न्याश आप कूजा नै ॥ संग को
रिते सुष दूष मानै ॥ ८७ ॥ ताते तन को स
ग निवारै ॥ पा बिधि आप न्याप को त्या
शै ॥ जो तन न्यारो आपुन जानै ॥ तन सुष
हेत क्रम बहं ठानै ॥ ८८ ॥ तिन ते नाना दे
ह निपावै ॥ तिन प्रजे मम रिजावै ॥ साति
कतै सुर कै रधि होई ॥ शंज सनर कै लो
दान ब होई ॥ ८९ ॥ ताम सप स्वादिक कै
भूत पा बिधि त्रिगुन जगत ॥ ९० ॥ भूत ॥
जद्यप आतम सदा अनीहा ॥ कबहु क
कून करै समीहा ॥ ९१ ॥ परित करितै क
ता होई ॥ संग दोष बंधु तहै सोई ॥ जै सै
ना चै गावै कोई ॥ तिन कै दृजो दृष्टा
होई ॥ ९२ ॥ तं त्यो आपु ही बेटै करै ॥ ता
न ताल राग हि ॥ ९३ ॥ र धरै ॥ त्यो माया गु
न कर्म न ठानै ॥ आतम करै आपु कुं
मानै ॥ ९४ ॥ तिन ही कर्म न बंधे आप जो
कहु करै होई सब पाप ॥ तिन को जानि
त जै नही जे लौं ॥ ज नम सरन दूष मिटे
न तो लौं ॥ ९५ ॥ जल प्रवाह ॥ ठिगु ठा ठा
को ॥ तट बिछं न देखै ॥ चल सोई न

येन भ्रमत ज्यो को ई देवे तब सब धर
नी भ्रमती छेवे ॥ १४ ॥ ते से ये ह आतम ।
धिर जां मे और सकल चंचल करि मा
ने निहल मन करि देवे जब ही निष्ठ
ल ब्रह्म रूप सब तब ही ॥ १५ ॥ जे से स्वा
प्रमनो र भ्रमषा प्रो सब जग अरु वि
षय सखा पर ज दाय जग सत्य न को
ई तो हूँ क दे निवर्ति न होई ॥ १६ ॥ जे से
स्वप्न सत्य क हूँ ना ही परि जो लौं हे नि
द्रा मां ही ॥ तो लगि सकल सत्य ई जां ने
सुषुप्ति पावे ॥ १७ ॥ तो
अग्नि नीर व स जो लौं जनम मर न
प्रमिटे न लौं ॥ तति न द्रव सब भूम
जां नो महो अनय रूप करि मां नो ॥
॥ १८ ॥ विषय न को ॥ दाम कृष्ण का वो
अरु जे हेत सकल मिटा वो जो लिग
आपु ही समुज ना ही तो लगि हे नाना
भये मां ही ॥ १९ ॥ आरु आपु ही समुज
न ही तो लौं मम आधीन निरंतर रहे
जग उपहास सब से ॥ २० ॥ को ई एक
करे आपु ॥ मान के ई गहि बाधे
अगणन के ई मूतै पृथक् तन मे मारे

धृ॥ भीषके अति मे ॥ १२ ॥ पेकें उहिकें
 मूढ डिठावे ॥ पेकें निदे चोट लगावे ॥
 ऐसे बह बिधि दृष उपजावे ॥ बह बि
 धि भके वेन सुनावे ॥ १३ ॥ परिजे अ
 पनो श्रेय बिचारे ॥ सो पेकें मेन मेन
 नही धारे ॥ बह कष्ट नितें मन निडिगा
 वे ॥ सो भवत जिमम चरन नि आवे ॥
 १४ ॥ मेरो पंथ घडग की धारा जो न
 डी सो उतरे पारा ॥ हरिके वेन निदु
 करि जानि ॥ उद्वव प्रसव करी भवमा
 नि ॥ १५ ॥ उद्वव उवाच ॥ हे प्रभू तुम वे
 न सुनाये ते मेरे ॥ १६ ॥ कर आप जो
 असाधु वे काज धकावे ताते सहे को
 न बिधि जावे ॥ १७ ॥ मेरे हिंदे गण बह
 रावो ॥ सहन उपाये मोहि समु जावो
 जे सहनो उतम करि जाने ॥ अरु तो
 ओर निपास वषा नै ॥ १८ ॥ परिते आप
 परे नि सहे ॥ अंत प्रकृति के वस धैर
 है ॥ केवल तुव चरन अधारा ॥ तिनके
 को इनही विकारा ॥ १९ ॥ ते नित निह
 चल सीतल रूप ॥ नित्य अदित पर

मंत्रूप जिनकी कदै लियें कछु ना
ही सदा बसै तुब चरन न मोही १२
और सकल प्रकृति आधीन सदा
विकार नि आगे दीन ताते तुम ही क
रुना करो ॥ १३ ॥ नादिक मम हिंदे धरो
॥ १४ ॥ दाहा ॥ त्रैसी की प्रसज ब
व परम सुजान भाष्यो सहन पायेत
ब ॥ भय भंजन भावान ॥ १५ ॥ इती श्री
भगवत् महापुराणे एकदस स्कंधे
धे ॥ श्री भगवान् उवाच ॥ सदा दया
वादी कायं ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥
॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥
॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

मोसो सुनो ये कहति हास जाते होये
हिंदे परकास ॥ त्रिंशु कपे कणनम
ये भाषी ताकी तोहि सुना उसाषी
॥ भ ॥ किपो आसाधुन बह आपमाना
॥ तिर सकार दाने विधि नाना तब
तां त्रिंशु कगाथा कहि ॥ कृमति आ
पुनी सब ही दही ॥ प ॥ सो अब सुनो सु
चित दै मोसो ॥ निज जन जानि कहंत
हो तो सो ॥ मालव दे सरें हे हर जा को
धेती बनिज जीव काता को ॥ ६ ॥ क्रोध
बल लो नी अरु कामी ॥ बिपुनि के
अपजस को नामी जा के हो पद व्या
अधिकार ॥ अरु जो नही देही नही पा
॥ ७ ॥ आयुन को पीडा उय जावै ॥ पु
त्रादिक धानै नही पावै ॥ देवरु पितरु
अक्षिपि नही पोषे ॥ बैन हंते न कहै
संतोषे ॥ ८ ॥ सो कह दरज जो असो हो
इत ते नीच और नही को ॥ इत ते सो
कद जे दिन सो ॥ सब जग मै जिन अप
जस लै सो ॥ ९ ॥ पाता त्रतिषि बंध
निज तन को ॥ इन हंते तन पर चै धन

कौ॥ पुत्रादिक कसपे दूषलह ग्यात
 चतुर्दशवेन निबुद्धे ॥ १॥ पुत्र कलत्ररु
 कन्या साधु जहात गौहे संबध सगा
 धाते सब दूह निरतर करे ता को अप्र
 पे सब ब्राजरे ॥ ११॥ ओ सो देषि पापत्र
 तित्त को जप्य समान वित है जा को
 पाधर्मिकों म दून्ने करी हीन दहं लोक
 के सुषते कीन ॥ १२॥ जिन हित पचज
 ग्य नित करे सकल ग्रह स्थ दंड को
 भरे तिन तब किमो देव तन को पता
 ते भयो विपु धन लोप ॥ १३॥ ककु दूष्य
 ग्यां लनु हरि लियो चोरी भये हते क
 दूष्यो ककु अप्रित्त गौते जस्यो क
 दूष्यो कधरानि मां हि वी सस्यो ॥ १४॥ क
 दूराज विग्रह ते गयो पां बहू भांति
 कीन सब भयो जव ता को सब धन
 हरि लियो तिर सकार तव सने कीपो
 ॥ १५॥ बहूत कष्टि करि धन उपजा
 वे सो नही दोषो न आपुन पापा
 ताते उपजे चित्त चित नि सदिनु ब
 स्यो द्विदै मे वित ॥ १६॥ होवे तप तप

दको पावे। आसं कठ बहूत विधि
धावे। जैसी विधि उपजो चैराग
जातें सकल दूषन को त्याग। १७।
तव सो विप्र बचन उचारै। बहूत
तिकरि आपुहि धिकारै। कहो वृष
मै कष्ट ही पायो। आपु आपु को दूष
न जायो। १८। बहूत श्रम उपजा
यो दर्ब। स्वप्न समान भयो सो स
व नामें परबौ नामें पायो। नामें मे
कलें अरथ लागायो। १९। दूष कद
जै को है जेतो। पै कहें अरथ न आवै
तेतो। नारै लोक नही पलोक। के
वल बढै दूष भये सो का। २०। बहूत
कष्ट सहि ईहां उपावे। पुनि परलो
क नरक मै जावे। परमजस स्वप्न को
जस सुध अरु जै पंडित गणान प्रबुध
२१। सकल गुन निके हैं जेतो। लोभ
ले सते ना सते ते। जै सै रूप वत अति
कोई कह अंग न लकन ही है। २२। से
न कष्ट को छिटे कामे कामे भेगुण
रूप अनेक। सो थोरो उहो वैलो

धिधावै परपानरदेहीपावै सोन
 रतनमे जिहिदेह कर नामै प्र
 हरिजी को गेह ३३ ताको पाई अ
 रचनही साधै सबतजि हरिको त
 ही अराधै महा अंतरथ अरथको गेह सो
 भवसिधु आयुतेबहै ३४ तातेह जो नही म
 तिमंद यरे दुषनिसे तजि आंतद देवपित
 र पिभूतसहाई पुत्रकलिन आयुनहि
 तमाई ३५ धनयाइ जोई नहिन पोषै अ
 नहू को नही संतोषै सो सब त्यागिनरकमे
 जावै तहासूढ नाना दुषपावै ३६ सो तन
 धनमे बृथागमायो भवदुषतेनही आयु
 बचायो जहिया प्रबुधि नैसी करै जाते बह
 रिन जन्मै मरे ३७ सो नरतनमे बृथागवा
 यो छोडै अरथ अरथ नैयायो बय
 बल्य आयु सकल ममगारे नवोसिध अ
 वृध सब भोगे ३८ अरथमे अरथ को न विधि
 साधै दुशारे धरि को आराधौ भाई जे
 अरथ सब जानै तेरे को अरम निग
 नै ३९ छोडै अरथ अरथ नैयावै को
 स
 तेने सकल दे

[illegible]

ताकों भजो ॥ औदसकल हिर देतैं तजो ॥ ऐसे
निश्चल मन मे धर्यो ॥ भिन्न क भये सकल
परिहृत्यो ॥ ४४ ॥ सात लहि देय त्रिषास
वत्तों गी ॥ निश्चल मनो विप्र बड
भागी ॥ अहंकार ममता क कुना
ही प्रकाश की बिचरे भव माही ॥
१ ॥ इन्द्रिय प्रान बचन मन गहो ॥ अंत
र बाहरि संग ही दस्यो ॥ आपु ही काहें
कौन लषावे ॥ भिन्न हीत गहन मै जा
वै ॥ २ ॥ संसकार न होत न को जाके
जीवन टुक बरु तन ताके ॥ भिन्न
क बुद्धि विप्र को जावै ॥ तब वह दृष्य घ
ल की होवै ॥ ३ ॥ के ईता को दंड द्य
वै ॥ के ई पात्र घो मिले जावै ॥ के ई ले
हि कम डल करतैं ॥ के ई निक सुन द
ह घर तैं ॥ ४ ॥ के ई धूरि भीष मे डा
रै ॥ के ई मूठ क्रोध करि मारै ॥ के ई अ
सन को ले भागै ॥ ५ ॥ क्रोध करि के ई प
गला गै ॥ ६ ॥ के ई यथु को प रिहरै ॥
मारि मारि बांनी ॥ ७ ॥ जरे ॥ के ई यो

मलेपुत्रपमाल॥ केई शीलन
करिदेवे॥ केई सोसिधोसिधुनिलेवै॥
केई नीमग्रानिलेजांहा॥ भोजनकरि
नेपावेनाही॥ ५॥ केई तनमेणुकेम
तै॥ केई मिंदकरिबहते॥ केई काननिल
गिपुकरि॥ केई सीसधूलिजलउरि॥ ५॥
॥ केई भोनकुडाईवोलावै॥ केई खोलत
मौलगहावै॥ केई ताहिबाधिकरि
सो॥ केई जाननपावेभाषे॥ ५॥ केई क
रेबहतेअपमान॥ निदेबहविधिभूट
अगणन॥ ६॥ केई चोरजाननहोपावे॥ दिन
देखेनिशिचोरीआवै॥ ५॥ पाककोदी
नभयोनीत॥ तातेपहहेबाकुलचित
सकलकूटवप्राहपरिहरो॥ प्रीवन
काजनेवपेरुधयो॥ ५॥ केई जोपकेसो
हेमोयो॥ महाप्रबलअनेकोमोयो॥ देसो
हममचहारेकेते॥ परिपाकेऊरलिदे
नतेते॥ ५॥ धीरजवतअंडगप्रहकेसो
पवनपूंडमेरुगिरुजेसो॥ प्राकोजान
निहमकंकुकोहो॥ बागजोधापानमो
गहिरहो॥ ५॥ पोकरिकोधबधले

रै काठमां हि देउपरिमारे ॥ हासी
सहत बीनती करे ॥ हित सौं विषये वै
ननि उचरे ॥ एहि मे भवति कदुष भा
ये हे मे मे ॥ देव आतमिक पावे ते ही सी
तनु सब वषादिक देविक जरारोग
आदिक ते देहि काहि ॥ जै सैं वह बि
धि पावे दूष कदेन आवै तन को सु
ष पर सौं कहू न मन मै आने आय
ने कर्म कर्म सौं जानै ॥ हरि तब तिन
भाषी गाथाये का ॥ हरि दे ध्याये प्रम
बिबेका ॥ निद्रा ककहे बचन तब जे
शामे तो सौ भाषातु होतै ॥ निद्रा कस
बाच ॥ श्रुष दूष दाई कलोगन पेते
॥ अरु नही देही नही श्रु जेतै ॥ नागर
नही कर्म नही कावये सम सहे मन के
षांला ॥ हि जगत चक्रमे मन हि फिरा
दे ॥ जीव महा दूष मन ते पावे ॥ मनै करे
विषये न को भोग ॥ ताते हो प्रक्रम संज्ञ
गाहि ॥ होवै सतरजतम विस्तार ॥ ताते
जो निवि विषय परकार ॥ ताते दूष निर
तरहे ॥ देह जोगतै

ताते दृष्य ईक मन प्रेक सेत कहै प्रह
परम विवेक अपु आतमा स आ
नीह पर सो मन करि रस नीह
ह मन सो बधो अविद्या मांही ता
ते बंधन जौने नाही विषय समान वि
प्रये भिको प्रावे ताके संग जीव दृष्य
वै ६८ यहै जीव ब्रह्म को अंग प्रा
को संस्त मन के संग मन करि रहि
तब ब्रह्म प्रसासी सदा प्रकर सपर
म प्रकासी ६९ ताते वधन मन ईक
अ संग अति माजन में परे जब मन
हित जीव ईहो ई ताब सीव जीव
जे दही को ई ७० ताते जिन अपनो म
न गहों ताहि कर्क कारनो नही रह्यो
अरु जो मन बसिकी लो नाही ता
मम सकल ब्रथा ई जौही ७१ स्व
नादिक देवे वह दानो प्रेका ६ सी अ
दे ब्रत नानो अपने ७२ अपने ध
न करे सम मज मन विस्तरे ७३
दा बेद पढे उच्चरे ओ सो सकल
प्रविस्तारे पर जो मन वसि ना

क॥ तो मिथ्या आचरन अनेक ॥ १३ ॥
मन बसका जको है सब ते ते ॥ वि
धि आचरन बेद मै जेतें ॥ मन निग
ह सो ॥ उत्तम गणन ॥ मन निग्रह वि
न सब अगणन ॥ १४ ॥ तातें जो मन
निग्रह करै ॥ सो विधि का है को बिस्तरै ॥
ता को विधि न हंतै ॥ ककु नां ही ॥
सब धि बिहै मन निग्रह मां ही ॥ १५ ॥
अरु जो मन बसना ही पै क॥ तो वि
धिकी नै बुझ्या अनेक ॥ सब दिन
को फल मन बस करनो ॥ मन ब
सका ज सकल आचरनो ॥ १६ ॥ म
न को बस करै जो को ई ॥ ई द्विपे स
ब गुण आपु ही होई ॥ मन बस बि
न ई द्विपे बसनां ही ॥ करि करि ज
तन बहंत मरि जां ही ॥ १७ ॥ मन बस
भये सकल बदेवा ॥ तीनों भवन
करै तिन सेवा ॥ सकल बल नितै
मन बल वत ॥ मास्किरै सब दिन
को अंत ॥ १८ ॥ मन को को ई जी तिन
संके ॥ बहुत उपाये निकरि करि
थि कें ॥ ऐसे मन कूजीतै को ई सब

हीनमांसिप्रबलहै सो १२ सो ६
जपेरिपुबसनहीकरै बादरिजुद्ध
दिकविस्तरै धैरीमित्रबहुतवि
धिमानै नहीतअरुहिततिन
तैंजानै ॥ ८ ॥ तैअतिमुठसुमीनही
होवै मनजीसैविनजुगजुगरोवै
दूषरूपजउमिण्यातनको आपु
मानिकारिबधोमनको ॥ ८ ॥ तब
बहुकीपदेहसनबेधी तिनसो
मुखममताबेधी पहनैपहस
मस्तहैमेरे मित्रसत्रठानैबहुते
॥ ८ ॥ तातैंमुठमहादूषपावै ॥ ९ ॥
पजिउपजिमुनिमरिमरिजावै
तातैंदूषकोमनहीकारन ॥ आ
तमकुंभवजलमैंडरन ॥ १० ॥ अ
रुजोसुषदूषदातापत मोकुद
षदेतहैजेतैं तेसबदूषसुषमो
कोनांहीदेहपेकसबअंतममा
ही ॥ ८ ॥ तेसुषसुषदेहहीपावै ॥ अ
तमकेवहनिंकटआवै अरुज
दूषतनकोसजोगकरै जीवह

६
 दुष्ट भोग ॥ ८ ॥ तो हमें दूष दे न का को
 रुप से कलम म देव जा को ॥ आपु आपु
 कृ कृ दीजे ॥ आपु नो अहित आप कृ
 कीजे ॥ ८ ॥ पातन मै मै ही दूष पा ॥ अ
 रुतन हमें कृ ॥ उपजा ॥ दंतन भूलि
 जी नि क दीजे ॥ तो फिर क हतिन हं
 ष दीजे ॥ ९ ॥ दंतन अरु जी मै दूष दे
 ॥ सो तो सकल आप करिते ई ॥ इ दिये
 अधि क प देव ता जे ते ॥ जो दूष दा त हो
 हि सब ते ते ॥ ८ ॥ तो हे आप को प को
 कीजे ॥ फिर ५ पा धि को सिर करि दी
 ॥ करि दी ॥ जे मुख मा हि आसन सों
 ॥ सों मुख काटे कर हि दासन सों ॥ ८ ॥
 तो पाव क अरु वासन जानो ॥ राग दो
 ष भावै तो ठानो ॥ पं सब इ द्रि पन के
 सब देवा ॥ करे आप म हि दोष रु नेवा
 ॥ तातें सब जानो तप करे ॥ गणनी
 अप मै मन न ही धरे ॥ अरु जो मुख दूष
 दाता आप दूजे को क कृ न ही पाय
 ॥ ९ ॥ तो ये सब आपु नो सु भाव को
 जे को आनी प भाव भाव नो ॥ अरु

आतममै सुषदूषनांही ॥ ५ ॥ अणानम
कलमिदिजांही ॥ ६ ॥ आ. पु. भूले सु
षदूषकरिनी के सबमिदिजांही आ
पुके बीने ताते दोषको नको धरिपे
॥ जो अपना मन बस नही करिपे ॥
॥ अरु जो गुरु सुषदूष के दाता लो
कवेद कहि पत बिघांता ता आ पुन
लो को धनही कीजै ॥ परिको दूष आप
को कीजै ॥ ७ ॥ गुरु असम माहि हेजे
ते घाद सरा सब सै सब ते ते रागाद
ष आपुनि मै करे ॥ तिन को सुषदूष
नही परे ॥ ८ ॥ ताते सा स जन्म जन्म
जे पावै तिन की संगति सुषदूष आ
वे ॥ ताते आतम सदा अन्मा बार बा
र देह निको जन्मा ॥ ९ ॥ ताते सुषदू
ष देह ही पावै ॥ आतम के कहै नि क
वन आवै ॥ अरु ज्ञाद्यपि संगति दूषरे
आप को धतो का सं करे ॥ १० ॥ कन
हारते गुरु ही जाने ॥ राष दोष आवै त
ठाने ॥ अरु दूष दां नि होहि जो कर्म
ते ते सकल आपु ही भर्म ॥ ११ ॥

हजउदेहकर्मतामांही आतमनि
 कटदेहकैहनांही आतमचेतन
 गणनसरूपपरैसकलतैपरमअन
 प॥२॥ तातैकोधकौनसकरुका
 कोदोषदिदेमैधरुअरुनोदूषक
 लहैतैकतापेतातैआपनकदेन
 लहाये॥१०॥ तनहीकालहैतैदूषपा
 वैतोआतमकैनि कटनआवैका
 लआतमाब्रह्मसरूपदेहबिलछ
 नसकलआनृप॥११॥ तैतो काल
 हैतैदूषनांही कालभयानकदेह
 निमांहीअलेअग्निअग्निमाहिउ
 रैसोबहंअग्निअग्निहीजरै॥१२॥
 अरुनोपालाकोकनलीजैलेव
 हैतैपालामैदीजैतोतापालाकुंभ
 पेनांहीजद्यपिरहैसदातामांही
 १३॥ पोहीयेकआतमाकालसुष
 दूषादिदेहनि केष्यालआतमसब
 तैसदाअतीत॥ इकारहितअनीह
 अभीत॥१४॥ अरुआतमापरैतैपरै
 रंदजहांलौतैसबवरे॥ इआतम
 नांहीजानै॥ सुषदूष

कीं ठामें ॥ १५ ॥ सुषद्रुषतन हाहा
जेते येक प्रकृति ही के सब तेते ॥ सो
प्रकृति पे आपुन ३ रूप ॥ चेतन आत
म बुद्ध सरूप ॥ १६ ॥ केवल मान ली
यो संसार ॥ सुषद्रुषतन मन सकल
आसार ॥ मोहिनि सार्ते जागे जेते नि
रूप चपेत त छिन तेते ॥ १७ ॥ ताते अ
बेमें जपन आनो ॥ आपही परे सक
ल ते जानो ॥ हरि चरन न की सेवा क
रो ॥ ऐसे विधि भव सागर तियो ॥ १८ ॥
जैसे जे आप हरि चरना तिन ही ॥
तिन पाप हरि चरना ॥ ताते मे हरि च
रन निभजो ॥ मन क्रम वचन ओर स
बत जे ॥ १९ ॥ उद्धव यो धिज यो बी
र का ॥ तन हं मे नर हो ओरु बहंत
असाधन बहंत डिगा यो ॥ प्रसोक
छु न मन मे ल्या यो ॥ २० ॥ पेद भाये
दस अष्ट सीर लोक करि विचारि
मे द्यो भये संक ॥ ताते उद्धव सुषद्रु
षदा प्रका ॥ आनम को को प्रते हिला
प्रक ॥ २१ ॥ सुषद्रुष दाताना ही को
जो तो कहें ॥ त कछु होई सुषद्रु

षष्ठमतेजानेसकलं आत्मपेक्ष
जेजनाअकलं ११२ ॥ भ्रमछेदेह जाकोना
हि भेरोरुपमिलौ सोमाहि ॥ जवसुषुप्तमि
ध्याकरिजानेपानअमानहिदेनहीआने
११३ ॥ धीरजधरिममचरननभजे देहादिक
कीआसांतजे तबभवसगरकौतरिजावै
मेरेनिजानदपदपावै ॥ ११४ ॥ तातेहुवम
नवचकस ॥ सकलदेतकौंजानेभर्म सबतेम
नकोनिग्रहकरो ॥ निश्चलकरिममचरन
निधरो ॥ ११५ ॥ बाहीकौकहीयतुहेजोग ॥ जा
करिहोवैममसंजोग ॥ अरुजेयागाथाकौंधा
रें ॥ पुनैसुनावैसदाविरचारें ॥ ११६ ॥ तिनकैनि
कटहंदनहीआवै ॥ अंतकालममचराननि
पावै ॥ तातेयाकौसदाविरचारें ॥ भेरोबलअ
तरसेतधारें ॥ ११७ ॥ देहायहुहुवतोसोक
हो ॥ मनसजमहुदपान ॥ अवभाषतहंसाव्य
कौं ॥ सुनमितेजोआन ॥ ११८ ॥ ५ ती श्री भग
वतेम होयुराणे यकादस स्तुधे श्री ग
वान ॥ ५ व सदादेभाषयीकायाभिध
क गाथा कथना मत्रियो वि सोध्या
श्री भगवानोवाच ॥
कहों ॥ देतभूमश्र

की ठान ॥ १५ ॥ सुषुप्त अरु दृढ जहासा
जे ते येक प्रकृति ही के सब ते ते सो
प्रकृति पे आप ज ३ रूप ॥ चेतन आत
म बुद्ध सरूप ॥ १६ ॥ केवल मान ली
यो संसार ॥ सुषुप्त तन मन सकल
आसार ॥ मोहिनि साते जागे जे ते नि
रुप चपेत त छिन ते ते ॥ १७ ॥ ताते अ
बै भय न आनो ॥ आप ही परे सक
ल ते जानो ॥ हरि चरन न की सेवा क
रो ॥ श्रेसी विधि भव सागर तिरो ॥ १८ ॥
जै जै आप हरि चरना ॥ तिन ही
तिन पाप हरि चरना ॥ ताते मै हरि च
रन नि भजौ ॥ मन क्रम वचन ओर स
बत जौ ॥ १९ ॥ उद्धव यो द्विज प्रयो बी
र का ॥ तन हं मै नर हो ओ सु बहंत
असाध न बहंत डिगा यो प्रसोक
क न मन मै लप्यो ॥ २० ॥ पेंद भाये
इस अष्ट सीर लोक करि विचारि
मे द्यो भये संक ॥ ताते उद्धव सुषुप्त
पदा प्रका ॥ आनम को को प्रते हिला
प्रक ॥ २१ ॥ सुषुप्त दाताना ही कोई
जो तो कहें ॥ त क कहें होई ॥ सुषुप्त

सुन भितै उपजौ पदम जांमै सक
 ल भुवन को सदम प रहैं तब व
 म्हा भयो बरले मो सौ जग निरम पा
 ए राजस अधिपति भयो विरंचि॥
 ताते पशा दो सकल पुषं चि लोक
 पाल लोक निसो करै ति नो लोक
 त्रिविध विसरै ॥ १ ॥ स्वर्ग लोक देव
 न करी प्रो ज्ञं त्रय भूत नगर कि प्रो
 ॥ भूमि लोक में मान बरायें ॥ असुर
 अहीनु को नीचै भाये ॥ ११ ॥ महर्षी
 कजन तप सत लोक चो स्या मै सि
 ध निर्वै ग्रे दो जेतिर गुण कर्म निवृ
 करै लेती न्ये लोक नि मै फिरे ॥ १२ ॥
 तप अरु जोग तथा संन्यास इति ते
 तिन चारौ मै बास भक्ति हंतै जाये
 वै कृठा सो सब हीनु करि सदा आं
 कृठा ॥ १३ ॥ प्रबल काल रूप है मे
 रो ॥ सकल जगत भ दून तेहि कै रो
 सत लोक हं मे जो जावे काल तहां
 उता कृपावे ॥ १४ ॥ कं बहु जाये क

नतहीछूटैतदेवेयेकब्रह्मअहेतु॥ प्रथ
 महीमहापुरुषजोभयेतयहसंख्यप्रगटक
 रिगये॥ मुक्तिसाध्यजानतहीहोईसंख्यविना
 नहीछूटैकोई॥ सोईसांख्यकहौमैतोसैं नि
 श्चलमनइसुनियूंमोसो॥ ७॥ ब्रह्मअप्रथमह
 तोभयेकोमोबिनाकछूनहतेअनेक॥ ३॥
 तबमैप्रकृतिआपुतेकरी॥ जडचेत
 नद्वेबिधिविसरी॥ तिनदुन्योतैउप
 ज्योपुत्र॥ महातत्वसोकहीपेसूत्र॥
 ४॥ एकप्रकृतिकेविपेगुनकीहे
 लकिनसंभतिउनहंकौहीने॥ सूत्र
 हेतैतिरविधिअहंकार॥ अरमावन
 कौबडोविकार॥ ५॥ पंचभूतजेपृथ्वी
 आदि॥ अरुपंचसूक्ष्मसबदादिता
 मसअहंकारतैपते॥ राजसतेइंद्रियेस
 बतेतै॥ ६॥ सातकतेमनअरुसबदेवा
 ॥ जिनकोपापअपेबहंनेवा॥ तबसब
 हीनकोंप्रेरिमिलायो॥ तिनसबहीन
 भिविअंडउपाजायो॥ ७॥ अंडसलि
 लमाहैपिरकसो॥ तामैमै॥ निजअ
 सहीधरों॥ आदिपुष्पसोमेरोरुप॥
 त्रिगुणनिप्रतापानसवरुप॥ ८॥ ता

सुन भितै उपजौ पदम जाँ मै सक
 ल भुवन को सद सप रहै तब व
 हां भयो ॥ बर ले मो सो जग निरम पा
 द ॥ राजस अधिपति भयो विरंचि ॥
 ताँ ते पश्या को सकल प्रपंचि ॥ लोक
 पाल लोक नि सो करै ॥ तिनो लोक
 त्रिविध विसरै ॥ १ ॥ स्वर्ग लोक देव
 न करीयो ॥ जंत्र भूत नगर किमो
 ॥ नृमिल लोक में मान बराये ॥ असुर
 अहीन को नीचे भाये ॥ ११ ॥ पहलो
 क जन तप सत लोक ॥ चाँ सो मै सि
 ध निकै ओकी ॥ जेति गुण कर्म नि कृ
 करै ॥ ते ती न्यो लोक नि मै फिरे ॥ १२ ॥
 तप असुर जोग तथा संन्यास इति ते
 तिन चाँ रौ मै बास ॥ न कि हतै जावे
 वै कृठा ॥ सो सब हीन करि सदा आ
 कृठा ॥ १३ ॥ प्रबल काल रूप ॥ हे मे
 रो ॥ सकल जगत भक्षन तेहि कै रो
 सत लोक हं मै जो जावे ॥ काल तहो
 उता कृपावे ॥ १४ ॥

ॐकारि उचै॥ क बहंका लह हवे नीचे
जैसी विध सब भरमतर है॥ जनमै मरे
बहंत दुष सहै॥ १५॥ अंतम मध्यम नीचे
जैते छुँडि वदे एलं क स केते जे क क
जो हरे आकार ते सब प्रकृति पुरुष वि
स्तार १६॥ प्रकृति पुरुष विन ओर न के
हइ द्विप मन जो चरै हे जो १७॥ प्रथम हि
निराकार मै ये का ता ते ये आकार ग्रने
का १८॥ अरु पुनि मै ही रहि है अंत ता
ते अबहं मै बरतं ता की आदि अंत
है जो १९॥ ता के मध्य हं मै पुनि सो २०॥
जो माटी ते बहं घट भये अंत फटि
माटी मिहि गये माटी आदि माटी ये अ
त तो माटी प मध्य हं बरतं ता २१॥ जो
के चन के बहं आ भरना आदि रु अ
त प कई खरना तो मध्य हं ओर क
हं क हं नाही नाम रुप मिथ्या है जा
ही २२॥ जो जब देवे त जे ब्ये हार तव मै ही
हो सब विस्तार आदि अरु अंत मध्य
मै एक मिथ्या नाम रुप अनेक २३॥
माया ते महतत अहंकार तिन ते हो

ये सकल बिस्तार बहे स्यो नाह सक
ल को होई मह आदि को रहे नही को
र श प्रकृति मूल अरु पुरुष आधार अ
रु जो काल सकल करता ताते मेरी
सक्ति निजानो पोते देत कदे न मत म
नो ॥ २३ ॥ या विधि च लो जाई बिस्तार
नही पहं तुल्य संसार परमात्म की
छा जो लो बरै सकल निरंतर तो लो
२४ ॥ बहे स्यो पल प सकल को होई स
क्ति पल रहे नही कोई महा बलिष्ट
सक्ति मम काल ता को सकल जगत
ये ह्यो ल २५ ॥ काल बिना से सब
हमंडा कित हे क कून राये पंड अना
वृष्टि होवै सत वर ताते देह विको अ
क धार हा छोडे बडे देह हे जे लो
असन मे होवै ते ते असन मने हने
लान भूमि गंध मे लिहें छे न
गंध लीन होवै जल माहि जल मुह
२ समाहि समाहि २ मुह न न

न हित व स पर स ग न है ॥ स पर स ली
न हो वै त व ग ग न ॥ ग ग न स व द मे हो वै
म ग न ॥ २० ॥ स व द मि ले ता म स अ हं
को र सो अ रु र्द्वि प द स प्र का र ते स
व मि लि रा ज स अ हं का र ॥ मि ति क रि
स क ल हो हि स हार ॥ ३० ॥ अ हं का र म
हि त त्व हि मि ले ॥ प्र क र त म हं त त्व ही मि त व
ले ॥ प्र क र ति काल मे हो वै ली न ॥ काल
पुरुष मि लि हो इ छी न ॥ ३१ ॥ पुरुष मि
ले पुरुषो त म मा हि ॥ पुरुषो त म कू हं
जा वै नां ही ॥ मे दा मे द र हि त त्व व मे क
नि त्पा नं द दे त व्वा ति रे का ॥ ३२ ॥ चं त न
नि र म ल ग ण न स्वरु प ॥ पुर न अ षा ई
पर म अ नू पा ता ते उ द्भव मि षा ई त ॥
॥ आ दि चं त म ध्या हं अ र्धे त ॥ ३३ ॥ जल वृ
द् वृ द स व अा का र ॥ उ त म म ध्म वि
व ध प्र का र ॥ ३४ ॥ अै से स दा बि चारै
जो ई ता कै को न भा ति भ्र म हो ई ॥ वि
उ द्घो त र है त म कै सै ॥ न द म ध्म दा व
न ल ते सै ॥ ३५ ॥ प्र ह मे ना षा सा षा प्र
का र ॥ स क ल दै त उ त प ल स हार ॥ पा

कैग्याननसंसपरहै॥ अहंकारदटग
पहिदहै॥ ३६॥ कोडैरुपत्ररुपसमावै
जातैवहं॥ नदूषकौपावै॥ तातैपाको
सदाबिचारो॥ मोकोजानग्रायुकोता
रो॥ ३७॥ दोहा॥ नद्वयपहतोसौकहो
सांघांग्यानविचार॥ अबगुनवृत्तिन
कोकहो॥ निन्ननिनपरकार॥ ३८॥ इ
तीश्रीभागवतमहापुराणोपेकाद
सस्कंधे श्रीभगवान् नन्दवसंवाद्
भाषाटीकायां॥ सांघानिरुपणना
मचतुर्विंशोऽध्यायः॥ श्रीभगवान्
वाच॥ नन्दवश्रवभाषागुनवृत्तिः
जिनुकोजानैतहैनिवृत्ति॥ जागुनतैजो
लकुनहो॥ निन्ननिन्नभाषूंसोसो
३९॥ समदमहिमाविवेकस्वधर्मल
जामाननिकरैविकर्म॥ सत्यदयानही
चूलेसुखि॥ नतममारागमैथिरवृद्धि॥ ४०॥
जसअरुसोभाधीरजवंत॥ परउप
गारीसदावरतंत॥ वृद्धिआसिकानि
तनिहसंग॥ संतोषीअरुदांनिअंग
३॥ कोमलबिनपेदीनचतुराक्षसीत
लहिपेसकलसुषदाई

हस्तसंपत्तिः सा तिकगुनकी जन्मैवति ॥
 भ्रातामहं निसवहिनते न्यारा चेतन
 कश्चिबरातावहारः भोगसक्तिद्रिदेव
 हे कामाधिनश्चिनि लाषाजसश्चिभिरा
 मापत्रिस्माहासगर्वबलवंतः शिपुमि
 चादिकभेदश्चिन्त कश्चिक्कामनाभजै
 वह देवापरमाथकोलहेनभेवः ॥६॥ व
 हे श्रांभनसैऽतसाहासदाकठोरसदा
 श्रितियाहवहतिवतिराजकीत्रैसी
 पदुमसैभाषीभैतैसी ॥७॥ हिंसात्रोध
 लोभश्चधिकार्थिनहितहिदीनरुदभट
 जूटाई श्रमश्चरुकलहसोकश्चरुमो
 हा निद्राश्चालसभयपरदोहा ॥८॥ नि
 सिदिनुचिंताऽद्यमहीनः हिरे श्रासा
 साहसंहीनः त्रैसीवहेतामसकीवृ
 तिः जिनतैकदेनसहैनिवृतिः ॥९॥ उपजै
 ममताऽश्चहकारतातैकरैविवधः
 बहारतेस्वमिलिगुननिकीवृतिः ॥१०॥
 तिनतैवाढैवहतप्रवृतिः ॥११॥ धर्मरुश्च
 र्थकामश्चनुरक्तिः श्रधालोभतथाश्चा
 सक्तिः धर्मप्रवृत्तियराधेनजैते बहत
 भांतिविसतारेतेते ॥१२॥ वस्तैश्चपने

चापनै धर्म प्रिये यह अरु ग्रह सुष
क्रमे सब मिलित गुन नि कीर्ति
जिन ते वह विधि होये प्रवृत्ति १२ स
मदमग्रादि मुक्ति नर जोई साति कल
कन कहीये सोई राजस कामादिक
आदि धि कर ज्ञानम सजहां क्रोधदिवि
करा १३ सब स्वधर्म सो मो कों भजे
॥ ६३ ॥ सकल काम नात जे ॥ प्रिय पुरष
भावे सो होई साति क प्रकृति कही जे
सोई १४ जब काम नाहिरै दे धरिले व
चपनै धर्म निमो कों सेवे ॥ यह स्वाभा
व राजस को कहाये ॥ मुक्ति हेत क वह
नही गहिपे १५ जब हि साहिरै दे मे आ
भे ॥ निज कर्म निमम से वा ठा नै सो व
हेता यस विरत कहावे ॥ ताते मम सुष
क दे न पावे १६ सतरजत मती न्योगु
न जे हे ॥ जावही कों बंधन ॥ सते हे
ते गुन मेरी अगण करे ॥ ताते मोहि भजते
तिरे १७ चित हेतै ॥ उपजे यस कलाई
न को तजे ॥ आतमा अकल ॥ इन को छो
डि रै सो मोहि वह ॥ वन से ॥ परि
नाहि १८ करिस

हरी सातवगुन की बृद्धि करे सा
ति कसरज जो प्रकाश अति सीतल
जो चंद प्रकाश ॥ २० ॥ सब कल्याण मूल
सुप्रकाश ॥ निश्चल करन सकल दुष
हारी ताते धर्मिणान सुफल है चिंता
सो क मोह भय दहै ॥ २१ ॥ जब साति क
तुं मसन ही रहै ॥ राजस ग्राह्य सुरा
गुहै राजस रूप संग बल भेद ताते मा
नै कर्म भय दहै ॥ २२ ॥ जब सत अरु रज
कूट दोरी के कलप कत मो गुन होई
तब विवेक नास अवसर ॥ २३ ॥ दाम
हर ताज डला करन ॥ २४ ॥ ताते सो क
मोह को बासा ॥ निद्रा ग्रास नि सिद्धि
चु आसा ॥ जब कूट इद्रियेन की बृद्धि
हि दे नही ईहां इत पति ॥ २५ ॥ चिंत प्रस
न सकल निह संग सो साति क मम
ग्रह है अंग ॥ जब तन मन इद्रिय अरु
बृद्धि धिर नही होयै लहै नही सुधि ॥
२६ ॥ ठानै विबध कर्म बिस्तार ॥ सो जा
नो राजस ग्राधिकार ॥ जब विकार ब
है विधि मन गहै ॥ आसा बध निरंतर
है ॥ २७ ॥ सो क बिषाद चेत ताही न

सोतामस इत्यमबल कीन जब
 पजे साति कको भाव तब सब हो है
 देव स्वभाव २६ राजस तै अ सुरेन
 की वृत्ति भूत गन नि की तम उत प
 ति साति कको नागर नो हो है राजस
 पावे सुषना सो २७ तामस हते सु
 षोप तिल है वृक्ष तुरीय निरतर रहे
 सात्तिक ३२ धन लोक नै जावे राजस
 नर आदिक तन पावे र च तामस न
 चे थावर आदि पा विधि प्रमे जीव
 आनादि सात्तिक धर माना जो हो है
 तामे मरन ल है जो को है २८ सो है वन
 के लोक ही जावे राजस म मरि नर
 तन पावे तामस म मरि नर क निल
 है तीनों गुन तजे मो मे रहे ३० मे रहे
 त क्रम जो करे तामे क्षुण्डो पल नही ध
 ३१ सो वह सात्तिक क्रम करावे ताते
 जीव महा सुष पावे ३२ फल निमि
 तम मु कर्म निदाने ता को राजस क्रम

ज्ञान बावकं मूलतः स जो हो सताम
सगंन कहि जै सोई ॥ ३८ ॥ ह
रहित जो येक ॥ सोई मेरो ग्यान वै
हो पे विरक्त वसि ये कंतु साति
बास कहै सो संता ॥ ३९ ॥ हमे कहि पे
राज सब साताम सरुप सूर ॥
साया वर ॥ चहै मम मरति जहां
न बास कहि जै तहां ॥ ४० ॥ सातिक क
त जो नही संगी ॥ सो राज सफल क
मे पु संगी ॥ विधिकर ॥ रहितताम सी क
ता ॥ आसला गिक मे नि बिस्तार ता
॥ ४१ ॥ आयही मे टि रहै मम तरना ता
को सब निगुन आचरना ॥ सो जन
निरगुन कर ता कहिये ॥ ताते संग पर
म पद लहिये ॥ ४२ ॥ जो निह कर म आ
तमा जा नै ॥ सकल तन ॥ ४३ ॥ अघावा
नै ॥ सकल त्याग निश्चल जो होई ॥ सा
तिक सरदा कहि पे सोई ॥ ४४ ॥ राज सु
अघा गिने क्रम ॥ ताम स अघा कर
बिक मे निगुन अघा मेरी भक्ति जा
तै ॥ मिटे सकल आसक्ति ॥ ४५ ॥ पवाप
बिंब बिना अम आये ॥ जामे अपनो

धर्मन जावै जातै उपजै नही विकार
सो कहि प्रसातिक आहार ॥ १ ॥ पाटा
मीठा तीषा धारा दुषदाये कर जस
आहार जो असुध हिसाते आवै सो
तामस आहार कहावै ॥ २ ॥ मम जन
अरु मेरो ऊँछि सो निर्गुन भोज
न अति ॥ ३ ॥ इदिये सुषुप्ति स्नादिक द
हे तजि आरंभ निज भैरहे ॥ ४ ॥ आत
मते उपजै सुषुप्तो ॥ सातिक सुषुप्त
हिये तु है सो ॥ ५ ॥ इदिये सुषुप्ति सनही
गहिये निद्रा आलसता मस कहिये
॥ ६ ॥ मेरे प्रेम भूति सुषुप्तो ॥ निर्गुन
सुषुप्त कहायतु है जो ॥ ७ ॥ इदिये सफ
लका अरु गपेन कर्ता कर्म अवस्था
दान ॥ ८ ॥ अघनिष्टा अरु आकार
निरागुन निर्मित सब विस्तार ॥ जो क
हु कहै सुनो अरु देषो ॥ ९ ॥ अरु बु
द्धि जहो लालिषो ॥ १० ॥ सो सब प्र
कृति पुरुष विस्तार ॥ ११ ॥ निरगुन निरमि
त सकल पसार ॥ १२ ॥ न तै जीव लहे संस
र ॥ १३ ॥ निगुन कर्म ममे दार ॥ १४ ॥ जो

इतनी न्योगुननिजी वारे चित आयतै मो
मैं धारै सो सेरो निरुन यदयावे विहस्यो म
भवसैनही आवैं ॥ ४७ ॥ तातै यह जैरी नर
देहा जाकरि सिटै सकल संदेह होवै प्रगट
ग्यान बिग्याना पावे सो हि सीटै सब आन
धया तातै यं डित सकल निवारै सो कुंसेई
आयु को तारै प्या बिन सकल अयं डित जा
नो जातै आत्मा धाती मानो ॥ ४८ ॥ सकल
होवै होवै निहसंग सावधान यत्न यरै न भग
ई दीये ध्यान देह मन जीती सम चरबा दिन
रेन बदीतै ॥ ४९ ॥ सकल स्वानि को संगति को
राजत अरुताम सपरिहरै देहा दिकतै स्पृ
ह होइ आगे वि ईष्ट्या करै न कोइ ॥ ५० ॥ मो
मैं धारै निश्चल बुद्धि तव यावे अंतरगतिसु
धिया विधिसाति कर्त छिदकोवे तातै लिंग
सरीर सिटौवै ॥ ५१ ॥ लिंग सरीर सिटै भवत जे
निरमल रूप आयु तो भजै अयोक्ष मोक्ष को ज
नै ॥ बाहरि भीतर द्वैत निमांनै ॥ ५२ ॥ मो मे मि
लि मो ही मैं रहै ॥ बहो स्त्रो काल अग्नि नही देह

रहै निरंतर मेरे संगः ताँतें कहे न हाव भग ॥ य
देहा ॥ ३ ॥ उवाचो तो सी कहती नौ गुन की ब्रिति
अब ओरों ग्यान ही कहें ॥ जाँतें होई निरवृत्ति
यथा ॥ इति श्री भगवत्पुत्र महाप्रसादने एकाद
सत्सङ्गद श्री भगवान् नरेन्द्र वसुदेव भावा
टीकायें गुणवृत्ति निरूपण नां सयें च बिसी
श्री ध्याय ॥ २५ ॥ श्री भगवान् नरेन्द्र वसुदेव
ये हन रत्न नहे ओ सो ॥ सकल सिद्धि में नही जै सो
या तन करि सम ग्यान ही पावें ॥ जाँतें भवत जि सो
जै ओ वें ॥ १ ॥ वाँतें ओ सो तन कौ या ॥ सो मिलते
की कौरे न या ॥ २ ॥ अंतर माँ सो ही बिचारे ॥ ओर
सकल वासना टोरे ॥ ३ ॥ मम भक्तन के लखन
जाँतें ॥ ४ ॥ तो तो ॥ आयु आयु में गाने ॥ अनायास
तब सो कौ यावें ॥ ५ ॥ काते ॥ लख हस्यो नही
यावें ॥ ६ ॥ साया गुन जब सिद्धा जाँतें ॥ मेरा ग्यान
याई करि भाँते ॥ ७ ॥ पूरे ॥ रहे रहू साँदा ॥ तो लूके
रितिये कहू नही ॥ ८ ॥ यरि जि दिय होवें ॥ ओ सो
जै ॥ कोरे ॥ असाधु संग न ही सोने ॥ सिद्ध रू उँदर
यराये ॥ जिते ॥ मन कसब चन त्यागिये तते ॥ य
कोरे ॥ असाधु एक को संग ॥ तो हू ग्यान ध्यत
को भंग ॥

गनरकमैपरे ॥ ६ ॥ असे अंध अंध धके
संग कृपपूर होवे सुख भोग पाकी
गाथा भाषों पैक तले ॥ ७ ॥ मने पमि वि
वेका ॥ ८ ॥ जब ७ २ वसी ॥ बिरह तन हसी
॥ सो कपोत सागर मै बह्यो ॥ तब पुरु
खा भाषी जो ॥ तो सों गाथा भाषी
सो ही राज पुरुखा चक्रवर्ती ॥ जाकी
आनजहां लौ धती ॥ आप हते उतरी
७ २ वसी ॥ सो मिलि कै नृप कै गहव
सी ॥ ९ ॥ बहस्यो आप मुक्ति जब भई
तब तज नरपति ७ २ वसी गई ॥ नृपति
बिना पकरे बहरो वै ॥ १० ॥ सो नृप
की ओर नजो वै ॥ ११ ॥ राजान गदह
सुधि नाही ॥ बानी विकल दीनता मा
ही ॥ लज्जा रहै तमत मंद जै वै ॥ चलो ॥
७ २ वसी पाँ दै तै सै ॥ १२ ॥ अहो प्रियातु
मठाही हो नो ॥ मेरी ओर कृपा करि
जो वो पाँ को मारे कह हेतु मजा वो
॥ क्रिया करो मेरे गह आवै ॥ १३ ॥ मि
लि ७ २ वसी ॥ संग सुख पायो ॥ सो सो म
कल दृष्ये आया ॥ निपति न भयो न
गवत भोगा ॥ पाई ७ २ वसी को संजो

ग॥ १२॥ ता ५२ बसी गणन आकषी
तातें भलों मो नि करि हूँ ॥ तन्म
पे हि दे प्र क हू न ही आने नि सि दि
नु मा स ब ध न ही जा ने ॥ १४ ॥ त ब ता न
प के पु र न भा ग ॥ जा ते प ग ट भ यो वे
रा ग ॥ त ब नि प्र व च न ब धो ने जे ई ॥
तो सौ मे भा ष त हो ते ई ॥ १५ ॥ सु रु र वा
५ वा च ॥ आ ह्ये पे क दे यो म म मो ह
आ पु हि कि या आ पु नो ॥ १६ ॥ ग ॥ पो
कं ठ दे व की मा या जि नि मे रो स व ॥
अं ग बा ॥ १७ ॥ न मो को उ ह को
ब ह ते रो स र्व सु आ मु लि यो ह रि मे
रो मे दि न रा सि न जा ने जा त ॥ अ म त
क रि मां नो वि षा त ॥ १८ ॥ ब र्ष स मु
ह ग ये दि न बी त ॥ स क ल बि का र नि
ली ने ॥ जी ति दे यो मे के सो उ ह का पो
॥ अ स्त्री के कर आ प बि का पो ॥ १९ ॥
जो मे र ज रा ज च क र व ती ॥ जी ति स
म स क रि स ब ध र ती ॥ स क ल भू प
म म च र न नि से वै ॥
ब मो को दे वै ॥ २० ॥

अस्त्री के हाथ जो वात गरबादर
 साथ जो अस्त्री मोहिन चापे
 ॥ तो तो मै नु रिं पुष पापे ॥ २ ॥ ताप
 शिराज सहित तज मोहि ति ए समा
 न करि चली बिछोहि न गरु भयो
 मै पीछे ध्यायो ॥ उन मत आपु बिस
 रायो ॥ २ ॥ कौन भांत ता के बर होई
 तेज पुता परहे नही कोई ॥ जो लेवे
 अस्त्री आधी न जे से षरी संग पर दी
 न से ॥ २ ॥ दि द्या मोन त प सा तांगी
 बन मै बसि बी दि ट बैरागी सो समस्त
 की का करु नारी ॥ २ ॥ ला नि वि प्रा व सी
 मन मांही ॥ २ ॥ अप ह ॥ बि न व ही ते पाई
 काम आ पि व ह ॥ भा ति ॥ ल ग ॥ परि ये
 ह ॥ अग्नि न ॥ सी त ल भई ॥ अ धि क अ धि
 क वा ध त नि त ग र ॥ २ ॥ भ जे से अग्नि प्र
 ज्व लि त होई ता मै ई ध न डारै कोई सो
 तो तो अ धि क अ धि क प र जे प ल के
 न ही सी त ला करै ॥ २ ॥ मे अ प नो न ज
 नो अ ॥ २ ॥ थ आ पु आ पु को की पो अ थ
 ॥ मु र ष आ प हा प डित मां नो प र म त
 मु ष अ व र जा नो ॥ २ ॥ ॥ जो मै ई स क ल

न कैरो सो कैर हो प्रिस्मा को चैरो मै
मुखता के अधिकार॥ जिन नि की मो क
छु गणन बिचार॥ २१॥ अस्त्री करि जा को
चित ह सो॥ गणन बिचार सकल परि
ह सो॥ ता के ह रिखी नु को न छु डवे॥ दृ
जे आपुन कृट नि पावे॥ रच ता ते मै ह रि
चरन नि ग हो॥ सकल तां गि हरि को कै
र हो॥ ज द्य पि दे बी मो हि बूजा यो॥ त्रि मा
प्रीति दूष क हि सम जा यो॥ २२॥ तो ह मै
मुख न ही जा न्यो॥ काम अध ई सुष क
रि मान्यो॥ ता ते ता को न ही अ परा ध॥ यह
मेरो मन ब डो आ सा ध॥ ३॥ जो मै स्वर्ग न
र क मै दे षो॥ दूष ह मा हि सुष करि ले
षो॥ गुन मै सा प जा नि दूष पावे॥ अग्नि
पतंग न परे म रि जा वे॥ ३१॥ तो तिन को अ
परा धन को॥ आपु दूष करि ले वे सो ह॥
ता ते इन को रहै स्व भाव मै मन मै को
ध सो अभाव॥ ३२॥ जो मै आपु अग्नि मै
परो तो अ दोष को न को ध र्यो॥ देह म त
न महो दू र गंध सो करि मो नी बिमल
सु गंध॥ ३३॥ सो आपनी अ बिद्या क सो
निजान द म प्र आत म बी सर्यो॥ महत

नहीं बहूत न को कहिये तापें मपताप
हि को कहिये ३५ मपत पिता आपनो क
रि कहें अखी ऐकमेक मिलिरहे के फह
तन कहिये राजा को के पावदा भवन
है ता को ३५ के नू को के सान अगाल
के आपनो मित्र के काल पहतन क
होये धो धि न किन का प्रगाट दी सतु
है तिन तिन को ३६ महा अ सुध देह पे
है जैसी परगाट नर कथांति है जैसी
तिर को मन बधे मति मेद अखी ना
म काल को फंद ३७ त्व चारु धिर अ
रुमा सरु अंत मजा में रो मन घदंत
बिष्टा मुचरै किम हाड अखी प्रगाट न
कै की घाड ३८ ताते अखी अरु ता
संगी तिन के नही के जै पर संगी तिन
के इस न जित मन होई देये बिना बि
कारन को ३९ ताते तिन को दर सना
करिये आपु हा आपु नर के नही उरि
जो पहई द्विप अ पे निवारै मन क मेव
वन इह संगति टारे ४० तव पेह मन स
है जै पिर होई कंदे बिकारन परसे को
इ ताते जे अखि नु को भजे अरु अ

तो जै जगत छूटै चहै ते हम से कूं संग ही ॥ १ ॥

स्त्रीतिन को बूधत जै ॥ १ ॥ दर सपरस
अरु अवन निवास सब भावन ते सा
भैत्रास ॥ इति पन को बिस्वास न करे
गण न बंते तिन ही परिहरे ॥ २ ॥ महा पु
रुष जै जीवन मुक्ति ॥ तिन हें कों सब
संग अजुक्ति ॥ ताते भै सब संग निवारे
॥ श्रीपति चरण कवल उर धारे ॥ ३ ॥
दीन बंध करु नाम पे स्वांमी ॥ कृपा
की शिष्ये ह अंतर जांमी ॥ ४ ॥ श्री जग
वान उवाचै ॥ पा विधि बैन कहे न रा
जा तजि उर वसी लोक सुष संजा ॥ गण
न लहो सब संसपटा स्यो ॥ मन निश्च
ल करि मो मै धा स्यो ॥ ५ ॥ ताते उधव
प्रह पुरधार प नर ही पापो तब ही सा
रथ ॥ तब समस्त की संगति तजै ॥ सत
सांति गहि मो को न जै ॥ ६ ॥ संत बत
वै हित उपदेस ॥ जिन ते संसै रहें न लेस
मन की सब आसक्ति निवारे ॥ संत म
हा भव सागर तारे ॥ ७ ॥ निस्पृह नि
रारं भ सम दर सै संग रह रित ददन
ही पर सै ॥ अहेकार म मूतान ही आन

दै॥ तहां कथा मेरी नित होवै॥ तै ई अंध
 संदेह निषोवै॥ व मेरी कथा सरब न
 जे करै ते सब पाप न तै निस तै॥ सुने
 कहै अत्र गत ध्याये॥ अति आतसुं यी
 तब धावै॥ य॥ तिस रहि ही तै हे म म धक्ति स
 हंजे॥ हे वै सकल विरक्ति मेरी भक्ति तै हे न
 रज बही॥ पूरन काम भयो सो तब ही य॥ ता
 को काछुन कर लो र है॥ पाना नंद रुस म म ल
 है सो तनिस कहं होवै को ई तहां अग्नियर
 जोर सो ई यर॥ तस नुषार भय सहजि ही जावै
 त्यो सा धूस ब देष मि होवै॥ येह अया र सा प्र स
 सा॥ जो मै बूडे नाव अया र य॥ तिन को नो
 बोकि ई ये हा सेतरु य प सा टा म देहा॥ जो
 प्रान नि राये आहार मेरी सर न दूष सहार
 प म जो प्र लोक ध मे ध न ज्ञानो॥ तो भव
 ता स्क सा धू मानो॥ जिनि कै हि दै प्र ग र म
 म चरन॥ तिन बिनु पा भव अर न सर
 न॥ प प जो बाहर है सुरज पे क पो न र न
 यन नु वारे ने क॥ सेत मात पिता ही का
 रा॥ सत देव बंध ही दूष हारी॥ प ह तां ते
 सत संग नित करनो॥ आर्या मे नु द्वि द ध
 रनो॥ तिन तै आना या स न व तै रे॥ आ

नापासमोकोँ अनुसरे ॥ ५॥ तब पुरुरवा
पेसो करणे सो उरबसी लोकरि हरे
सबत निभयो आतमाराम बिबस्यो
भवमै द्वे निहकांम पवततै ग्रशीसं
गप्रहरीये साधु सिंग निरतर करीये
साधजन सुबही भवतारे सुषरीमं
चरनन बित्तधारे ॥ ५॥ दो ॥ श्री सो साध
या साध को सुनिहरि जी सो संग तब
उदवजन पूछी प्रो कर्म जोग पर संग
ह ॥ इती श्री भागवते महापुराणे ये का
दस स्कंधे श्री भगवान उदवसंबादि
भाषाटी का प्रोये लगी ती बारवानेष
द्विसो ध्याये ॥ २॥ उदवचाचा हि प्रमे
क्रिया करी अब जैसी भायो क्रिया जोग
विधि जैसी जानै करत होये संत संग
॥ पावे ग्यान होये निहसंग ॥ १॥ पहजातु
वपस्तिमा की पूजा साते श्रेये कहै नही
दुजा पाको कहै वास अरु नारद गुरु
बृहस्पति परम बिसारद ॥ श्रीरुस्क
ल मुनी सुरजेते परम श्रेये पहभाये
तेते कल्पसत्रादि विधि सो कर्म कहा
सो दठ करि विधि हरे गहो ॥ ३॥ तिनि
नगवाधिक सुतन सुनायो

तेन बनी पाप्यो जे ते सकल वरन श्रीसम
 नसी श्री लज सुद्रको धर्म ॥ पाविबुत्र
 रधरम दे जे ते पाही कान कहै हे ते पा
 विन श्रीरधर्म जे कौशलोति न ते फि
 बधन पशै ॥ ५ ॥ इह सर्व धर्म नि को धर्म
 पाही हलै कोटे सर्व कर्म ताते प्रजा वि
 धि विस्तरे ॥ कि पाकरि जीवनि निसत
 री ॥ हनुमद पाल सब कै हितकारी सु
 मिस्त सकल दुष हारी ॥ ६ ॥ निमेष र
 पकारी बैन ॥ बाले हरि धि कमल
 नैन ॥ ७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ शुद्धवपु
 अंतन पार ॥ मम पूजा बह विधि विस्
 री प्रतीक संछे प्रसुनां ॥ नाम त
 सकल को ॥ या जे पूजा विधि हे
 निपर कार बेद कत ॥ त्रिक प्री
 सार बेद मंत्र श्रु बेद क अंग
 हि प्र वैदिक पर संग ॥ ८ ॥ यो हात
 मिश्रित नाने ॥ भावे ता सो पूजा
 विपुरु छत्री वै सत्रि बाणि ॥ इति
 विधि पूजा बाणि ॥ ९ ॥ सो समस्त वि
 प्रही सुना ॥ जीवन को कल्प
 ॥ प्रतिमा श्रीमि ॥

हिनको मोमें जानै जथा जोगा सब पुजा गान
गुरु ग्रामो से भेदन राखें मानुष बुद्धि
दुरि करि नाथे ॥ १४ ॥ सुधि होये जल मारी
संगा अस्नानादि सकल ईश्वर जे जे
गठ वेद अरु तेना तेने सकल पटे मम
मंत्र ॥ १५ ॥ संध्या पासनादि जे कर्म पुन
दतिह बणिनि के धर्म तिन तिन से नि
ज मोको भजे होये निषेध सकल से
जा ॥ १६ ॥ जाली कश्मि मसुमर न होई
ते सब क्रम तिको सोई सोई सोई करे
मधुनि मसुमर पाविनु बंधन
१५ ईव भाषो प्रतिमाको भेद से
नही मिटे भव घेद पेकसी ला

दिहेनेर येयेतननांनेनितहेते १८ श्री
२ सबनिकोपुजावाला किवानाने
नितगांपाला दीपलिवी मेरे मनकरे
॥ ओर निग्रसनाह बिस्तरें २० ॐ
मसागजीसों सेदे तनमनधनसब
मोको देदे जो निहकांमनिकपटहो
॥ करे भाव सबमोको सो २१ ॐ
मवसुनिमकरिया दे प्रेम सहित
सबमोहि चढाये जेतम विधिअस्मा
नवकसदे बरबा भए दिक्पहिरावे
२२ अग्निघृता दिक्कहा महीकरे ध
रणी २ विग्रसति बिस्तरें जलकूप
जै जलफालफुलजाने मोहि सकल
जै मूलार २३ नितिसहितजो अरपेतो
इतहैतै मोकं सुमहो शो जो धूपदी
पनै देदा मोको बहे विधिकरे निवेद
शभाताकी महिमा कहसं वमानो ॥ २४ ॐ
हे तपोमैरीयेजानो जेतै मेनितप्रीत
त्राधीनातो पुनमानो प्रीतिविहीन
२५ अब भायोपुजा विधितो मो सा
वधावहोपे सुनिदा मोसो होपेपवि
वत्रकरे अस्नान मनमै रोये मरोधो

नारदपुत्रासाजयुधमसबले ई फिर
अठिबैकौरहचनदेई बैसे उतरकै पर
बमुष्णिहचलप्रतिमाकैवलसन
मृगारभभनिमोनिजत्रासन
करो। अंगनिकेन्यां सहविस्तार न
सकरैमममूरितिअगातबठानैत्र
स्नानप्रसंगारचउतमकलसतीई
सौभरो। इजैजलकैपात्रहीकरैजल
मैबहुतसंगधमिलविजासोमोहि
सनानकरावै। २४ अर्घपाघघरु
विष्टरकरो। तीनपात्रतातेजलभरे
गंधपूषातिनमैबहुधरेगायेत्रीअ
भिमन्ननकरो। २५ तबअपनीकरैत
नसुष्टकाहं दारनहोपत्रसुधहि
देखमाहिममरुपहिधांवै। २६ कारज
होतेआवे। २७ जैसेग्रहमैदीपप्रका
स। सोधावेतनमाहिअजासपूजिषि
मसौतनमयेहोई। पुनिमूरतिमैपा
येसोई। २८ सागोपागकरैतनपूजा
कोईभावनअपजेइजादेवैअरथअ
रघपादअचमन। २९ वैअष्टद्वपंक
जभवना। ३३ ताप

सकलसत्त्विरविससिञ्जनादि। संघर
चक्रगदात्रिशिखरवाधनुषकवाण
मुसलहलसस्त्रात्रापुत्राद्योत्रावदि
मित्रैर्निर्मण्डलमालमताञ्जनां नै म
दयुजदमहोबलचंद्र। कूमृदेवएव
लक्ष्मणमुदप्रचंद्र। इमाग्रप्रदिसापा
रक्षदसमगनठाढे गरुडजोडिकरि
अगनगाथे। निखकसेनवासगरदे
वजाणयतिदुगात्ररुवसदेवउदिक
रिजेरैहरिसनमुषठाढेहरिबिबदन
प्रेमअतिवाढे। सबनकोपुजेआद्या
दि। विनमनमलाबदनआदि। २०॥
द्वंदनअरुकर्पूरअसीशकुंकूमअ
गरुसुगंधध्यातनीराप्रथमहिकक
मधुपर्कचटावै। निरमलजलअच
मनकरावै। इत्यपुनिसुगंधजलदेई
सनांनामंत्रवेदममक्रमनहीआना
पुउरीकलौचनभवभावनआदि
पुरुषसबकेउपजावन। ३२ जपुन
मवसकलआध्यायनमोनमस्त
वारनपारात्रैसैतंत्रमंत्रउचारसह
स्रसीधोश्रुतिविस्तारै। ३३ वस्त्रजे

नैऋत रुद्रा भरनां त्रैलोक्य गगन तल
 कादिक करन अतम माला बहेत सु
 गंध प्रेम सहित मो सं मन बधा ॥ १ ॥
 लभोग आचमन करावे कुसुम सु
 गंध रुध पवना वें बहेत नाति आ
 रती नतारे ज्ञाना विधि ने वेद सवारे
 ॥ २ ॥ श्रीरघाडुदधि घृत लापसी
 लाड पुवा सुहार सुर सी ब्यजन करे
 श्रीर बहते रे विभव लागा वें बहु हि
 त मेरे ॥ ३ ॥ तित दां तपे न उबट ना तेल
 ॥ ४ ॥ रुं बां वै पंचा मृत मेल जलें का
 रद पिन आदर सा जात नृत्य वादित्र
 सपर सा ॥ ५ ॥ बहते नाति ने वेद सवा
 रे नित नाही तोय वन टारे बहते क
 रै पावक मे पूजा मो विन ताहिन
 जानै दृजा ॥ ६ ॥ अग्नि कुंड महि अग्नि
 ही धरे सम ध्यू तादि कहो मही करे हो
 म करे पटि पटि मम मंत्र अिन कौं कहै
 वेद अरु तंत्र ॥ ७ ॥ करि हो मही अचम
 न करावै ता को मेरो रुम ही ध्यां वै त
 पू सुवर्ण तुल्य कृ वि त्रै ग चर्चा तु भुज
 आपुध सगा ॥ ८ ॥ पात वसन

निमाह्यासीसमृक्कटकरिस्वविसा
लागनरुचुगुलाग्ररुछीमीआदिबह
विधिधावेरुमग्रनादि॥८८॥पुनिनंद
दिपारधदेतेतेबलिविधानसोपजेते
ते॥जपेष्टमंत्रहीबहबाराजाविधि
बंधेष्टमग्रविधार॥८९॥पीछेतापर
सादहीत्येवेलेकरिसबभक्तिनको
देवै॥अगुणापायेआपतबपावै॥प्रीत
सहितजेतोजिअभावे॥९०॥पुनिअरपे
सुगंधतामृता॥९१॥तममालाउतमफू
लामेरेगुन॥९२॥सुगगावै॥नामनभा
वेष्टमवधावै॥९३॥मेरेगुनअरुक्रमस
राहे॥पूरनष्टमसिंधुअबगाहे॥कथा॥
नितममसुनैसुनावै॥मोबिनकहेन
पलठहरावै॥९४॥चरनफरोहेमेनकरा
इष्टमतेनाम॥९५॥तिनहीजाइप्राकृति
अरुसंसकतवेदजेईजेस्तुतिकेहीचे
दा॥९६॥तिनसोममस्तुतिकेरे॥बारवा
२४॥ननिमैपरे॥पीछेधारिजोरिकरदो
३॥करैदीनवीनलीसो॥९७॥हेप्रभुन
वसागरतैतारै॥कलमित्रभयेसो
कनिवारै॥तुमबिनमेरे॥९८॥अरुकोईपा
नवरननिकीजेसो॥९९॥हिंदेजोति

३
३०

जोतिमें धारै। पुरति कों सजा बिस्तारै॥
सौं अकार जहां तौ देखै। ते समस्त मम
मुरति लेखै। पछि करै जथा विधि सब
मै पूजा। सो को दिन जानै दृजा। पा
विधि क्रिया जोग मनु लावै सो नर भू
क्ति मुक्ति फल पावै॥ ५७॥ मो कों उतम
गृह समरावै। ता मै मम प्रमाप धरावै
मो कों करै वाग फूल बाई। जातम हो
कब की अधिक। पट। मम हित सदा
ब्रता दिक देखै। बहोत भोति मम भक्ति
न सेवै। मम पूजा प्रवाह कै हेत। देखै गा
व पुर हाट्यैत। प७॥ सो मम समि। सुर
ता पावै। तिहं लोक को। सकहां वै। जो
मम प्रमा। पापन करै। सो सब भूषति।
देखै प्रवतरे॥ ६॥ ती। नो। कि। पे। लं। है। वै। कूठ
का। ला। दिक। सब। हं। ते। अ। कूठ। जो। यो। से।
वै। कै। नि। ह। का। म। सो। मम। भक्ति। ले। है। सु
ष। ध। म। ६॥ जो। मे। रो। म। दर। सम। रा। वैं। तिहं
लोक। प्र। भू। ता। मा। वैं। पूजा। दि। नि। ब्र। म। कै।
लोक। जहां। न। ही। नाना। भय। सो। का। ६॥ रा।
निह। काम। भा। वैं। तो। से। वैं। जो। तन। मन। ध
न। मो। कों। देखै। सो। पा। वैं। मे। रो। नि। जग। पां। न

वहे मोहि कहै सब जान हउ बृत्तिसुर
निन्नरुविप्रनिवारी असुजो करी हो
ये कहु मेरी कहै करी की किवा अपु
तावै कहै करी सब पाप हउ सोही
वे किम विद्यामाही बरष को दिहेति
करै नाया चाली प्ररक्त था सहाई
अनुमा कि निन्नरुवि उपजा हउ
सबहि नको फल हो समान नावे उत
य भावे आन हउ दोल ॥ पाविधि पूजा
को करै ताके उपजे गणान जाते मेरो
पद लहो ताको करै बषान हउ इता
श्री नगवत म हां पुराण पका हउ खोरे
श्री भयवान नंदव संवादे भावाटी वा
का महापुरुष जा विधि वलि नाम सप
दे सौ धाम्ये २१ श्री भगवाने वाच ॥ ५०
बवतो को भाषों गणान जाते लहे मोहि
तजि आन उत म मध्य म कर म सुच
वजे सब जग मै नाना भाव ॥ तिन ति
नकी निदान ही करै असु नही कहु
ति विस्तरे प्रकृति पुरुष निर्मित स
जाने पेक जानि सब भेद हि भांने र
महादि कीट प्रजंत ये करु पदे धे म
जाते म म हित क्रम न करै सो बहत नि नव जलति

संत जे जे वह बिधिकर्म स्वभाव तिन
को ग्राने भाव आभाव ॥ सो तो सो
होई अर्थ ते जे थपाया मोहि चित आ
कष्ट ॥ मिथ्या मोहि चित को धरे ताते
मरष जन मे मरे ॥ आलीन होहि जवई
दिपे देह स्वप्न हेतव आतम येह ज
हो मन लगे पोत हा जावे ॥ बहूत नाति
के दुष सुष पावे ॥ धा धुनि सुष पति मे
होवे लीन ॥ मरनो कही पे अहम मही
ना ॥ यो सुष पू अरु देषत सुपना जन
म मरन बहू ॥ दुष सुष उपना ॥ जो
ल गि सोवे तो ल गियावे ॥ जागत ही क
हुँ वै न रहावे ॥ लोप ह सुष पाप र पुनि
॥ जनम परन सब जानै सुन्द ॥ जो पे
येह सब धैत अ सत्प ॥ मो बिनु ओर क
हुँ न ही सत्प ॥ देषन कहेन सुनन मे आ
॥ जो मन अरु बुधि जहो लग जावे ॥
ते समस्त कहुँ वै ना ही ॥ तो सुभ ॥
अ सुभ कहो कामा ही ॥ जद्य भि हे मि
था संसारा ता के दुष के वार पाश ॥ न
॥ जो ल गि देह बुधि न ही कहुँ ॥ तो ल
गि भ्रम न व पल क न दूटे ॥ जे से अप
ना धुनि की जाई अरु प्रति

धकी नोहीरसी परुष जेवर मे सो
 पा ॥ अरु मृगय सा मां हि आ यहि नाही
 परि है सो ज्ञाने तिन ते सुषुद्र बह बि
 धि मां नो ॥ १ ॥ ज्ञाने ल गि मि था ज्ञाने ना
 हा तो ल गि सकल अनर धन मां ही
 ब्रह्म रूप पे ह सब संसार ज हो ल गि क
 हें अकार ॥ १ ॥ ब्रह्म रूप ब्रह्म हि उप
 जावो ॥ ब्रह्म ब्रह्म अध ॥ २ ॥ हा वै ब्रह्म क
 रे ब्रह्म पुति पाला ॥ ब्रह्म रूप ब्रह्म को का
 ल ॥ २ ॥ अ जे सै जल बृद्ध बृद्ध जल मां ही
 जल को छोडि वै त क हूनां ही ॥ तो ही
 ब्रह्म रूप सब पे क दिखै ॥ भू मे जीव अ
 ने क ॥ १ ॥ भ परि ह सब जग जानो नि
 र मूल ॥ १ ॥ मृग बा रि ग गन मे फूल
 त्रि गुन र चितु पर सब जग जानो ते म
 न ई माया के मां नो ॥ १ ॥ ज्ञाने पा वि
 सब मि था ज्ञाने ॥ ब्रह्म भावना ॥
 ज्ञाने परि न द्य पि सौ जग मे रहै
 र वि ज्ञान गुन दोष न गहै ॥ १ ॥ हा ज
 मे शुभ अ सुभ न देखै ॥ मि था ज्ञाने
 ब्रह्म करि लेये ॥ ज्ञाने पुत्र छ द्य
 क देखै ॥ उप जत विन सत मि था
 क देखै ॥ १ ॥ अ दि काल त्रि प्र

नामरूपते सकल असत्यः। तपोहीव
मृसत्य तिहे कालः। नामरूपमिथा
जं जालः॥१८॥ अरु तपो करि देखै अनु
माना। भाइ प्रज उत न मन प्रान। मति
कौन कीचेतन रहै। अपनै अपनै अ
पन गहै॥१९॥ निराकार ते चेतन होई
सब अकार जहां लोको क्षिणाते सब मि
था अकार। चेतन ब्रह्म सकल आध
रः॥२०॥ अरु श्रुति को परि नाम विचारै
। नेति नेति कहै सदा प्रकारै। अरु तपो
देखै अनुभो मांही। नामरूप कहै है पे
नाही॥२१॥ अंतन रहै हंतै नही आदि॥
अतम निहचल ब्रह्म अनादि। ज्ञे सै
बहै विधि को विस्तार। मिथां जां नि
बर नि आकार॥२२॥ मन क्रम बचन
होई निहसंगा। ब्रह्म विचारि करै अ
नंग। ज्ञे सै बचन कहै नगवान। त
ब्रह्म ब्रह्म पृच्छा दुष्ट गणन॥२३॥ अहं
वाच हे प्रभू पेह आतम अविनासी॥
चेतन रूप स्वयं परकासी॥ निरगुण
निराकार नित सुख। सदा अनावृति
सदा प्रबुद्धि॥२४॥ इहं रहित सदा अ

नयन... कलप का सि कलिप
नद... सक्ति कर हीन
जड अमु व के जा वी नीन र पा ता ते ति
न को संग न हो क्षी न हा वि स म पर स प
र हो शि क क इ छां न ही आ त म मा ही
आ रु त न सौं क क हों वै ना ही ॥ २ ॥
आ त म कौं बंध न ही कौं श अ रु आ
त म आ व ए न हो शि प्रे ह सं सार श प्रे ह सो
कौं न आ त म सु द स दा सु प मो न
२ प्रे ह करि कृ पा मो हि सु म जा वो
मे रो अ म सं दे ह मि टा वो ॥ जे सो न द व
पु को ज्ञां न त व वे लिं अ प ति न ग
वा न ॥ २ ॥ श्री ग ग व नो वा च ॥ आ त म
कौ ना ही सं सार अ रु ति न कौ न ही
आ का रा ति न द नो ते जो अ वि बे क
ला ही कौ भ व दृ ष अ ने क ॥ २ ॥ इ ति
दे ह प्रा ण म न बंध ॥ इन सौं जो आ त म
बंध ॥ ता तैं आ भा सैं सं सार ॥ म हा
ना ना प र क र ॥ ३ ॥ जो स गि लो इन
बंध ॥ तो स गि आ त म ज नै बंध ॥ से
ग्यां न क र्यो स व ज्ञां नो ॥ ता हि व
स क ल करि मां नो ॥ ३ ॥ ज द्या प

यांहे संसार परतोहं कहं वारनप
रासदाजा वदूषही मैरहे। बारबार
तनकोड़े गंहे। २२। ज्यो सुपना कह्य
हे येनाही। परस्व सा चोनि दामोह
जो जो सुषदूष मन मे धावे। सो सो स
कल स्वपन मे जावे। ३३। हे नांही पर
हे जो जानो। नाना विधिके सुषदूष
माने। जागत ही कह्य हे येनाही। सब
बोहार ब्रथां के जाही। ३४। हरष सो
क नप मोह अरु लोभाई दो क्रोध
असौ चो सो भाजन मरु मरन विका
र जहो लो। अंहंकार के सकल तुहो
लो। ३५। आतम सदा पेकर सरह अ
हंकार संगति दूष सहे। इन्द्रिय देह
बुधि मन प्रांन। स नरु महांत त्व अ
निमान। ३६। इन सो मिलि करि आ
तम एक। माया के सुष गहे अनेक
। तिन तिन के हित क्रम न करे। कर्म
न के वस जन्म मै मरे। ३७। लिंग बंधी
देहन मै जावे। तिन के संग बहते दू
ष पावे। बुधि बचन मन प्रांन सामी
र। महंत त इन्द्रिय कर्म सरीर। ३८।

सुखरूपममता अहंकार ॥ तिनको
नाना विधिसे सारा सो निरमूल्य स
कवई जानै ॥ जो जेवरी सापत्यो मो
नै ॥ पुत्र ॥ पांन घ ॥ उग ॥ भजि मोहि उपा
दे ॥ गुर से वासो सांन धरा वै ता सो
काटि सोई निह संग ॥ विचरे सब दे
पुत मम अंग ॥ ५ ॥ गुर के बचन हि दे
मै धरे ॥ आदि अंत लो सुख तिहि बी
चारै ॥ जनम मम रक्ष देम परत छात जि
अंग नही हो वै द छा ॥ ६ ॥ साधन ध
म मोहि चिति हो ॥ आत म धरम वि
चारै सो ॥ जौ पाजग की आदि रु अंत
॥ सोई म धां विचारै संता ॥ ७ ॥ आदि अ
रु अंत म धां अंत मे पेका नाम रूप भू
रूप अनेक हेम पेका ज्यौ अदि रु अ
ता म धां विपे आ भरन अंत ॥ ८ ॥
॥ तो कहु हेम को डि नही आन जो
चार को र देम ॥ पांन मि प्या स व
नाम आ कर हेम काल त्रिप क
विचार ॥ ९ ॥ भजौ जग आदि म धा
रु अंत मोहि अरु रूप विचारै संत
दि अंत मे पेका अरु रूप सोई म ध

या सब रूप भाजाग्रत रूप न सुप्
 पित्रवस्था आदि अं न मध्यमा स्व
 स्था ई न के ना स भय जो रहे सक
 ल छोड़िता कौ बुधि गंहे इ इद्रिपत्र
 रु इद्रिपन के देवा इद्रिप विषय नि
 के बहने ब्रह्म ते सब जा के कहि बिना
 नाही सत्पब्रह्म सो घो जो मां हो
 जाहि परका सित सकल प्रका से जा
 की सक्ति सत से भा से मुख को मुख
 करन नि को करन कर के कर चरन
 के चरन भाजा साना स नैन के नैन
 जिघाजी भवै न के वेन या विधि स
 कल प्रकास कये क ता विन मिषा
 सकल अने का लये ते नाम रूप वि
 स्तार जिनि सों पूरन संसार ते सब
 आदि हंते कह नाही अरु नही रह
 है अंत हं मां हो पता ते अब हं मिषा
 माने करन ब्रह्म निरंज जाने नाम
 धर्यो सो सकल विकार तिहं कल
 मे मां ती सार पह जो ककु सो ब्र
 ह्म समस्त आदि मधा अरु सब के
 अस्त जो से बहं विधि बेट बर्षाने ब
 रूब ता ई धै त सब माने पर आदि

समस्त ह तो कहूँ नाही। अब प्रभासत
है मो मांही। माते परे ममरुपा सकल प्रक
सक नायु अरु पाप अमल निच नता मे आ
नारै मांता की सकल सकल प्रकासो माते स
कल बुद्धि ले मो तनिकै रूप अरु पही दे मो
पम ई को परे रूप निज जांनो। अरु ये सब
ममरुप ही मांनो। धैत को डिनि ह चल हो
तेर हो। जान बुद्ध तो बुद्ध ही ल हो। पप ये
ये जो नित करे विचार। मि पा जांने सब
आकाश गुरु से वाकरे। गान बध्यां वै।
चैतन मोहि अ वंडत ध्यां वै। पह पर जो
तन सो आतम नां हो। तन घर रूप बिचा
रे मांही। अरु ई देव ते दीप समान। ई रूप
का सक आतम आन। पम अरु त्यो दे। प
वन मन बुद्धि। आतम की नही जांने सु
धि। छित जल ते जप वन आकास। अह
कार गुण चित प्रकास। पव स्यां म प्रकृ
तितन मात्रापे च। ई नही को सब धैत प्रपे
चा से जउ आतम को नही जांने। आतम स
क्ति। ई हा सब ठानै। पस सकल प्रकासक
आतम पे का। प जउ जांनि सकै अनेक॥
पा विधि जो ममरुप बिचारै। सकल प्र
कास रूपाधि ई की टारै। ई सो वनर

है इन्द्रिये निषेधे ॥ किंवा परविष्य निश्चार भे
 तोहं ताको नही गुन दोषा जीवत ही जिन
 पावै मोषा ॥ ६१ ॥ जैसे घनर बिआडे आपे
 तोहं सो ककूर बिनही कापे ॥ अरु मेघ
 दूरि के गये सो ककूर बिन प्रकासत भये
 ॥ ६२ ॥ बिहै परे बरे घन बंद जा नै लिपू
 लोक मंति मंद ॥ जैसे प्रगट पवन घन तो
 ॥ ६३ ॥ धूमि धूलि अरु दोन हो ॥ ६४ ॥ रिबु के
 गुन सीतल ॥ ६५ ॥ दिप जत बिन सतर
 है जना दिप नही लिपत ॥ लिपु आका
 सा ॥ जो आतमा परम प्रकाश ॥ ६६ ॥ प्रतो
 हें संगति न करै ॥ पाया गुन न देखि परे
 जो लोकरि मेरी दृढ भक्ति कूटी नही
 रजत मंत्रासक्ति ॥ ६७ ॥ दे दे नैन भूले
 जो लो मम जन संग करै नही तो लो ॥ जैसे
 रोग हो पे तन मांही ॥ ६८ ॥ मूल न बारी ना
 ही ॥ ६९ ॥ सोत जिअ गंद अप प्याहि करै ॥
 सो तो रोग बहं रिबि स्तरे ॥ ७० ॥ अहंकार रो
 ग नय मूल ॥ सो जो लजिन भयो निरमूल
 ॥ ७१ ॥ सो लीगि संग अप प्याहि
 हं रुज गं अवतरे ॥ बहु
 ॥ ७२ ॥ आदैं सकल श्रुर

अंतरायें बहें करें ॥ जोगी को कर्म न विस्त
रें सो तिन के पावे अद्वैत ॥ वहें सो करें
नक्ति विस्तार ॥ इत्यं कर्म पं पं भे चूलेना
होयें प्रेरकता के ॥ उर मां ही पा विधि पापे
ज्ज्ञान विग्यान देयें मोहि भिरावे श्रान ॥
॥ १ ॥ तब ता को कर मनि करें ॥ जे न देन जो
जन विस्तरे ॥ परब संसाकार करवावे
विधि को सिग्यान मिथ्या जावे ॥ ११ ॥ सो मु
निमग्न ब्रह्म सुषमां ही ॥ ताते करते जानें
नो ही ॥ जो बैठें अरु ठावें हो शत्रावे जाये
कहें तो सो ॥ १२ ॥ अत्र न पाये जल पीवें सो वै
॥ जो विवहार देखें कहें वे ॥ सो सो कछु न
जानें जोगी ॥ निश्चय रहे ब्रह्म स भोगी ॥ १३ ॥
अ जो कबहें देखें संसार इक्षिप गोचर वि
विधि प्रकार ॥ ताते कछु सत्तन ही जानें ॥
स्वप्न वस्तु जो जागै मानें ॥ १४ ॥ प्रथम
तमाहतो अब ध्याय ही मयो पृक्त ति
सो बध ॥ वहें सो मो सो विद्या पावे ॥ तब
वज्र निहि पृक्त ति किरकवे ॥ १५ ॥ तब
हें सो ता को न ही गहें ॥ मोहि ज्ञान मोहि
रहें ॥ परधम ही जव जव मो को न ही जा
॥ तब माया सुषुप्त ममा न्यो ॥ १६ ॥

स्यौ जब मम चरणहि आवै मम प्रसा
द अगण न भिटावै तब माया कों दूष
मय जों भै परमानंद रूप मोहि मानै ॥ १ ॥
प्रतातें आथ ही गही उपाधि ता को त
जै जों नि करि बाधिस दानि रत मो
भै रहै बहस्यो भव सागर न ही बहे ॥ २ ॥
दाज्यो र बिअं स सकल ईश्वर दो ॥ पुर
वि बिना न लखै परत दो ॥ र बि सं जोग
बहे रिज बहोई तब समस्त देखै सो सो
सब दो ॥ र बि विन अधकार अति होवै ता
तैं को र नैन न जों वै ॥ र बि सं जोग प्रकास
हि पावै ॥ तब सब देखै तम ही भिटावै ॥
दा ॥ परतें नैन त्रिकाल अलेप ॥ अधकार
सो भये न लेपा तें तौ के लो तम ही मां
ही परि र बि बिना कछु देखै ना ही ॥ ३ ॥
र बि तें तम उपाधि परि रहै पाई प्रका
स प्रकास ही करै ॥ तौ परह आतम मेरो
रूप ॥ स्वयं प्रकास कपरे अरूप ॥ ४ ॥
जनम मर जाद रहित ॥ काहं करि क
बहं न ही गं रहित ॥ दुजे रहत आ पू ही पे क
ता ही करि ये देह अने का ॥ ५ ॥ महानु
भाव सकल अनुभाव जा भै क देन

कमिमाव॥ नित्यानदसदाश्रितिसुद॥ मदा
निरीदसदापरवुद॥ ८७॥ जाकरिद्रिये
तनमनप्रानुचैतन है वरतेविधिनान
जौलोमनओरनचननजावे॥ ओरकोन
निधिताकोपावे॥ ८८॥ परिजतमोतैरही
ताभयो॥ तवताकोसबलमिटिगयो॥ अ
भकारआयोअमान॥ तातैहरिभयोमेभा
न॥ ८९॥ जबबहुत्योममसरएहिआवे
तबसोमानपुकासहीपावे॥ तातैछोडैस
कलपपाधि॥ जौमोविसुकरिलीन्हीवा
धि॥ ९०॥ ताकोअवहंपरसोनाहि॥ परिमोवि
नातजीनहिजाहि॥ मोकुपायसकलपरि
हो॥ मेरेवरननकुंअनसहो॥ ९१॥ रविपुका
समिटैतमजैसो॥ ममपुकासहैवभूमअसो॥
सोयुनिमोकोनहीविसरावे॥ मोहिसेयेमो
माहिसमावे॥ ९२॥ मोमेहतेनामायात्यावे
अरुसोमायामैनहीआवे॥ तातैनितहीमो
मेरहै॥ मोसिलिपरमानदहीत्वहै॥ ९३॥
दुवईतनोहीअग्याना॥ जोकेवलमैजानेना
ना॥ ब्रह्मविनाकछेदुजोनाही॥ जैससायजे
वरीमाही॥ ९४॥ देतदेहजडमिथ्याजानेवे
तन्ययकब्रह्मधिरमाने॥ अहयहपचवरेण

वित्तारः ॥ ५ ॥ जैबिनसैबारंवारः ॥ ६ ॥ जाको
 मिथ्यावेदबधानैः ॥ असुखहीगुरुसाधमा
 ने ॥ असुखनभवतत्पहीदेवै ॥ जागोसुपन
 जगतत्योलेवै ॥ ७ ॥ असोजगतसत्यजो
 जाने ॥ पुष्पितवांजीवेदबधानैः ॥ अतनश्रुति
 केवचनविचारै ॥ बुरेकहेतेईरधारै ॥ ८ ॥
 तातेकर्मकामदोकेहै ॥ तेमरघयाभवमेव
 ह ॥ कर्मविद्यपततिनकीबुद्ध ॥ तातेकदेनया
 वैसुखि ॥ ९ ॥ तातेतिनकैबेलगोनग्यानम
 रसआपहीजानेजान ॥ तातेविषईजीवसम
 स्त ॥ तिनहिभ्रमाईकरैतेअस्त ॥ १० ॥ ताते
 नहुबयहईग्यान ॥ वरुमंनिकरिछोडैआ
 नमेरोभजननिरंतरकरै ॥ जाग्रकासहेतह
 प्रहरै ॥ ११ ॥ असुखवजो जोगकहावै ॥ अष्ट
 अंगकीवेदवतावै ॥ सोज्योओरैविधित्यो
 जानै ॥ भवमोचककबहुमतिमानै ॥ १२ ॥
 जवयाकेतनपरबलविकार ॥ करिनहीस
 कैभक्तिअधिकार ॥ तातेवहोविधिविस
 तरै ॥ समविश्वासपाईपरिहरै ॥ १३ ॥ प्रथ
 जोगधारनाकरै ॥ सीतर्

दसौ रोग शीतन जतन पै कहै जोग काम
दिक मान सिबे कार जीतै मम सुमरण
अधर ११ मम भक्ति न की सेवा करै ता
करि दंभा दिक परिहरे पाविधि दिदि
ममस्त निवारै मेरो भजन हि दै बिस्ता
१२ असुपे के मुठन के राजा साध
जोग देह के कजा जो पेह देह मिटाई
हि मे देह मिटे मेरो सुषल हिये १३ मे
रो अंस अतमा पेह पा के दूष दाता सो
देह ताहं देह जो राघो चहे ते आपु ही पा
भव मे रहे १४ तन के राग रादिक टा
रे स्वास जीत करि मति निवारै अंत म
त्यु होवै कल्पंत बहं सो पावे देह अन
त १५ ताते व पा करै मम मुठ मेरो भ
जन न पावे गूढ ताते मे अस संतानि
मोहि तिन को बहं आ दर्शनाहि १६ अ
रु प्रथम हि जोग दी करै विघन निवा
रि भक्ति बिसरै ता को मन जो निह चू
होई तोह आर करै न सोई १७ छोड
जोग समाधि समेत गहि मम सरण
बटावे हेत जोग माहि बाटे अहंकार
ताते नही कहे संसार १८ ताते सब
वृत्ति मो को भजे मम आधीन के आ

पातजै॥ममपुसादतेंमोकोपावे॥बहुंसो
नभवदृषमैनहीआवे॥१६॥जोहोवे
मेरेआधीना॥आपहीमानेसबतेंबह
नामेआधीनहो॥ताजनको॥जोआ
धीनदेहपहमनको॥११॥केवलजोम
मसुराहिआवे॥ताहीकीसबईहा
जावे॥तातेंविघननआवेकोईविघ
नतहोईहा॥जहाहो॥११॥ममआ
नंदरहे॥आदता॥सबदेवनकोहोवेब
दिता॥तातें॥धवपेहईकरणो॥मेरोभ
जनहिदेमैधरणो॥११॥जगअरुआपु
ब्रह्ममपजानै॥दैतभावकबहुनही
आनै॥ब्रह्मभावतैब्रह्महीपावे॥जन्म
जन्मकेदृषविसरावे॥११३॥दोहा॥
ऐसोसुनिश्रीकृष्णसो॥अतिहीदुःक
रणाना॥पूछो॥सुगम॥आपतब॥
धवपरमसुजाना॥११४॥इतीश्रीभगव
तमहापुराणपेकादसस्कंधेश्रीभग
वान्धवसमादेभाषाटीकीआपर
मारथनिर्णयोनाथाबिसोधापर
८॥॥धववाच॥हेप्रभु॥सहस्रगुण
नबमानो॥सोतोमेअतिदुःखजानो
बसनाहीइक्षिमनजिनके॥केसेका

जहोई प्रभुतिन के ॥ १ ॥ जैसे परमहंसाइ
द्विचिंत ॥ तिन के ब्रह्मदृष्टि हे निव ॥ ओरे
जे परगणान बिचारे ॥ वेचि सै चिपामन के
धारे ॥ २ ॥ तिन को मन बसि होई न ज्यो ज्यो ॥ महा
कले सत्ते हे ते त्यों त्यों ॥ तिन को मन बसि होई
न क्यो ही ॥ अम करि जन्म गमावै पृथी ॥ ३ ॥ तु
व्यद परमानंद समुद्र ॥ ता को भेदन जाते दुद्र
कै ॥ जोग जपादिक क्रम ॥ तिन तै कदे न छू
टे भरम ॥ ४ ॥ ता तै गार भव धे जो कोरे ॥ जाते ज
ग जुग जनमै सारे ॥ केवल भक्ति तुमारे जे ते
परमानंद ले है सब ते ते ॥ ५ ॥ जब ही ते तु वच
रन नि आवे ॥ तब ही ते पूर्ण सुख पावै ॥ साय
निकट नि आवे ॥ तिन के ॥ तुमारे चरन द्विंद मे
जिन के ॥ ६ ॥ ता तै सह जिहा जगत मिटावै ॥
तु वचरन नि मै सह ज समावै ॥ तुम ब्रह्मादि
सकल के नायक ॥ सब ही न कू प्रभुता के दा
क ॥ ७ ॥ तिन के चरन गहै द्वेदान ॥ तुम ता के
वो आधीन ॥ अरु सेह कहो अचं भांसांसी ॥
तुम प्रभु सब के अंजामी ॥ ८ ॥ तिन को सब
जिसे बैसो ॥ कोरे आयु बसि तुम कू सोई ॥ सी
गुरु धारी है जे ते ॥ तुम पद मुक नि ॥ जाते ते

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥ तितकीनेखन
 र अधिकारी ॥ बानरसकलसखातुमकरि सब
 हितकोसब हित आचरे ॥ १ ॥ जातै जो तुव कृत
 बिचारै ॥ सो कोयल तुव भजन निवारे ॥ तुम
 हीन बस बदेह सखाही ॥ चेतन सक्ति तुम्हें
 निधार ॥ ११ ॥ सदा रहै तुमरे आधार ॥ तुम ही
 निति प्रतिया लनहार ॥ तापरि जीव तुम्ह हीन
 हो जांनै ॥ करत भरत और निसांनै ॥ १२ ॥ तो
 ह तुम ओगुनत ही जांनै ॥ बरु बिधि ज हित हि
 र दावांनै ॥ पुनि जब ही तुव सरण ही आवै
 तब तुम सौं व्यास्यो फल पावै ॥ १३ ॥ यरित थापि
 सो अति अगमान ॥ तुम को सेइ तेई जो आन ॥
 व्याख्य दारथ सेवकता कै ॥ तुम्हरी भक्ति बिर
 जे जा कै ॥ १४ ॥ ऐकंज जहां ही तुव भजने ॥ नर
 क जांनिसो ही सो तजने ॥ तोतै जो होवै सरबग्य
 तुमरे उयकार नि को लग्य ॥ १५ ॥ अरु बिधिस
 मि आरब लयोवै ॥ बरु बिधि प्रत्यूय करब न
 वै ॥ तो ह तुव हि अंन स हि होई ॥ ब्रह्म आदि ज
 हं लौं जोई ॥ १६ ॥ जे तुम्ह बाह
 सी तरि चेतन सक्ति अनौय ज

बोभजनानेद सहजमिलोतुवहृदय
प्रेमनिप्रिये श्रवकेवेन बोलै किम
क्रियकेने १८ ॥ श्री गगवानोबच ॥
धन्यधन्य श्रवमम भक्ति सबजीवन
के हित अनुरक्ति तो सो कहें आपुनो
धर्म जातै मिटे सहज सब कर्म १९ क
सो सुष आगे सुष जावे छोडे भव भय
मोमें आवे श्रव क्रम करै नर जेते
मेरे हेत करै सब तेते २० कर्म न मे भाषे
मम नाम मेरे करि राखे धन धाम मोमें
अरपै मन की बृति ताके सब आचर
ए निवृति २१ प्रेरी पीत करै जो करै मे
शी पीति रहै त पर रहै जिन देसन मे मेरे
भक्ति तिन करि बास होई अनुरक्ति
२२ श्रु श्रु श्रु सुन न निमे जेते मेरे
भक्ति भय है केते तिन तिन के आचर
न निजाने तपो ही तो आपु हं गाने २३
मेरे जग म हो छो करै परवन मे भिला
पक्षि स स्तरे मेरी जहां जातरा होई तहां
तहां चलि जावे सोई २४ गीत नित्य बा
दित्र करावे छत्र चवर आदिक अवि
कावे अत उदार करि सब ठाने मम
हित लगे भलो सो जाने २५ सब भूत

मैसी को देखे। अत्र बाहर पे के लेखे।
पुत्रादि जगमो में जानें। अथ का स
आनों वत माने। एषो सब में जानें
मम भावात्प्रागे सकल वत स्वभाव ५
सब हीन के सत का हि करे। अपान दृष्टि
ने दृष्टि पर रहै। एषो के बिप्र वेद अ
धिकारी। एषो के अत्र जम हां बिकारी
ये के बिप्र नि के धन हरता। अरु ये के
धन के विसर्ता। एषो के तेज हान ब
हं देखे। अत्र जव तब हूये के पे देखे। ये के कूर
सकल दृष्टि दाष्टि के सांत क सकल
सहाई रहै। इत्यादि कनाना बिधि देखे
। एषो जो नेद कह नही लेखे। मेशी दृष्टि
सवन में अने। मम जन पंडित ताहि ब
धाने। अथा बिधि सब में मो को जानें
। देह नेद क कु नही अने। एषो काल म
हि ता जन के। सब बिकार मिटि जावै
मन के। ३१। सर्व तिर स्था अहंकार।
सकल मिटे क कुलगे न बार ता ते दे
ह दृष्टि नही धरे। जो क कूट बला जम
रिहै। ३२। हा सी करे सकल इ लोक
परि सो अने हर घन सो क
मन में नही अने। सब जीव।

जानै ३३ परषत्पर चंडालनिश्रंत ज
हो लो मेरी सिद्धि अनंत निमस्कारति न
तिन को करे ३३ समान धरणी मे परे न
हृद्य गिथा वरजंगम मांही मेरो भाव होई
प्यर मांही जहां लगाम मवच काय समे
त पौ सब मे ठाने मम हेत ३५ पाविधि
करत रहे नर जोई जा को सकल ब्रह्म
प होई मिटे अविद्या विद्या आवे त
तै बंधन सकल मिटावे ३६ उध्वर
कल मते हे जेत बेद मंधा मे भाये ते
तिन में तो पहम मसार जाते बेग
हे संसार ३७ मन क्रम वचन जह
जेते मम रूप ही जान हते ते ३८ ध
सो धर्म है मेरो महा प्रभाव कह
केरो ३९ अनुरूप उपागट जोह
किंही बहं मिटे नही सोई जहां
एनिर्मल बस्तु तहा लगे सब
स्व ४० मे निरागुण सब गुण प्र
ता मे मम धर्मो अवना सी मे
कदे नही कह सी मम धर्मो यो
ही ४१ असु उधव पह कह ब
मेरो धर्म कदे नही छो जे ४२
मेरा राज सताम

धनु का रा- एभि नते कौवल हो हिअन
पुप्रवृत्ति हो को सब मेटे अर्थ अनरक
निमाहे अहि निहारि काम को धपा
दिवंकार- राजाते उते मोमे करै तो
होमो हिलहे भवतिरै जे सैं कंस मर
नमय कसो मेरो धर्म नही आच-
र्यो- अपर सो भय न कर मोमा
हामपद पल्यो भय मै नाही अ
रुगोपि मन की पो बिभचार लघे
बदत जे भरता रा- अपर बिभचारो
मोमे कसो हो हतिन भवजल परिह
सो- अरु जौ दोष की पो सिखुपाल
जातैं जीव निरा सो काल- अपर
सो भोमे करि दोषा भवजल तजिक
ए पल्यो मोषा पो विषरुप बिकारो
जेते मोमे आये अमृत तेते- हाताते
यह बिबक चतुरा- इह बुधि दुतीन
ही जाधि जो गूढै सो साच ही नी जे प
रन काज आयु न की जे- अपर हफूठी
धिया भगुर देह- सकल बिकार नही
को गेहा ता करि पाय हरि अविनाश
॥ निरबिकार पूरन

प्रहसववप्रहणनकोसारजातिमह
हजसंसारमेंसंकेपमाहिसबकस्यो
घातिसारनकहिवोरतो॥४॥परनर
तनअरुप्रहममगणनदेवनिहकोह
लभजानजद्यपिदेहलहेनरदेह
तोहगणननिपावेप्रह५॥तातेमैभा
षोनिजगणनजातेमोहितहैतजिअ
न॥७॥अवप्रसकरीचुमुतेती॥७॥उतर
सक्तिकहीमैतेती॥५॥तेसबतत्ववे
दकेजानो॥मेरुपरमरुपकरिमानो
॥प्रहतुमरोमेरोसंवाद॥अधातमप
रमातमवाद॥५॥ताकोसुनिहिदेमै
धारेपावेमोहिअपुकोत्पारेजोम
हमेरोपूरनगणन॥मेरेअगतिनदेवे
दान॥५॥सोकहीतुहमेरोदाताजहां
तहांहोवैबिष्णाता॥जेजोदेयेलहैसोसो
ईलोकवेदभाषतुहैदोई५॥ताते
दानदेईजोमेरोमैआधानहो॥उतहि
कैरो॥मोहिदेईसोमोकोपावे॥तिन
कोलेमोमाहिसमावे॥५॥जेनरपा
कोनितहीपटै॥ताजनसोमोसोहित
वटै॥सोजनमेरोअतिप्रीयहोई॥ताकै

समिद्धजो नही को क्षय धनो प्रह सुने नि
त्य करि आदराव्यो र सकल को करे अ
नादरा सो कर्म न सो लियत न होई मेरी
भक्तिलहे दद सो क्षमै यह परम गणाने वा
सो अक्षय तुम कहै हिंदे क्षा सो सो क
मो ह भय भयो निर्वृता निरुचल भयो ह
दै आवर्ता पय अक्षय यह जो मेरी गण
ना सो मति जानो मो ते आन ता ते दे भ
सहत है सो अक्षरुना सति कउह कु
वा होई पल प्रीत न जाने नही मम भक्ति
॥ दूखे नाति विषय नि अ सति स्तिन कृ
गणन न दे नो यह अणो काल रु भू बीज
रु मे ह ॥ ६ ॥ नि दो मन करि होई बिहीन ॥
मेरी भक्ति प्रीत दद दीना अ स्त्री सु दो अ
सो लेश ता हे ते अतर नही को ही ॥ ७ ॥ सी
विधि सो कंजी गणन ज कहि प्रो तो ति ना
सहत परम म दल ही प्रो जो महजाने मेरी
गणना ताहि जा निवे रहे न आना ॥ ८ ॥ जो
को ही वै पीयूष ता के रहे न दूजी भूष
॥ ९ ॥ जो न रु कर्म जोग अ अंग ॥ कृषि बाणि
जो नीति सब अंग ॥ १० ॥ अर्थ अरु धर्म
मौ क्ष अरु कामा ॥ ११ ॥ न सब न को मो मे
धाम ता ते मो मे आ वै जो ही ॥ १२ ॥ न सब सी न
कृपा वै सो ही ॥ १३ ॥ भा पर मेरे जन क कृ न ले

सकल गति करि मो को सब ता
साधारु साधन जेते मम जन देखे मो
तेते ६५ सबत जिजब मम चरन निसे
वे आपुन बेद कछु नही लेवे ताके मम
दुजो प्रिय नाही मो नित मो मे मै ता माहि
६६ तब सुनि जे से हरि के वैन ५ धव ज
सुकला कूल नैन आगे ठाठे अजलि ब
वे प्रेम मगन तन मन छिंटि संघे ६७ वे
नहते बोल्यो नही जावे कंठ हें वै गदग
द स्व आवे ताते ५ धव चपकरि रहे क
कूबेर कछु बेन न कहै ६८ बह सोचि
त प्रेन करि धीर ज परन प्रेम भयो
ब कीरत निश्चल आपु कतार पमो
सब संदेह छिटे ते भा ६९ हरि के
चरन निमो पो धास्यो ५ धव जून ब
न ५ चास्यो जिन ते हरि सो बाठे प्रेम
जिन को कहि सुनि पै यछे म ७०
बचि नाथ अजन्मा अरु अबना
परमानंद परम परगा सी तिन को
निधान जब आपो तब ही सब अ
न भियायो ७१ संनिधान पावक
जावे अरु ता परतु म परम दया
मो निज जन प्रभू क पाव ७२

हविर्गणनदापमोहिदीन्हो॥जातेस
 कलस्वभास्वभचीन्हो॥तुमरेचरन
 सरननेनाहो॥दूजीठोरकदेसुषुना
 ही॥७३॥जोकोईतुवकतकोजाने॥
 अरुतापरभवकोदूषमाने॥सोतु
 वचरनसरननहीजावे॥तोदूजोका
 तेसुषुपावे॥७४॥प्रभूजीतुमअतिक
 रुनाकरी॥मममायापासीपरिहरा॥
 सकलजीवनिअग्नेह॥अरुजुवता
 सुतबितग्रहदेह॥७५॥येसबमेरमन
 तेटारेअपनेचरनकवलसरन॥
 धारे॥तुमविस्तारीअपनीमायाजि
 नप्रा॥जिनयहसकलजगतभरमा
 या॥७६॥सोतुमगणन॥३॥गसोछेदी
 ॥कैकपालभितप्रीतनबेदी॥नमो
 नमस्तैगणनप्रकासी॥जोगेखरईस
 रअबिनासी॥७७॥दूजेमोहेयेकबर
 देवा॥निहचद्विदैपनिरंतसेवा॥तुम
 हीछोडिदूजोनहीजानो॥परसेवकके
 सेवागनो॥७८॥मोहिपुसाददीजीये
 पह॥तुमसोनिहचबढेसनेहा॥कर
 विनती॥धवभक्ति॥बोलहरजीधे
 अनु॥७९॥श्रीभगवानोवाच

मे

ल

वै॥ सकल॥ ताजिकरि मो कौं सेवै ताते
 साधारु साधन जेतै मम जन देखै मो मे
 तेते॥ ६५॥ सबतजि जब मम चरन नि से
 वै॥ आपुन बेद कछु नही लेवै॥ ताके मम
 दूजो प्रिय नाही॥ मो नित मो भैं मै ता मांही
 ॥ ६६॥ तब सुनि ग्रै से हरि के बेंन॥ ७॥ धवग्र
 सुकला कूल नैन॥ आगै ठाठे अंजलि बं
 धै॥ प्रेम मगन तन मन द्विष्ट संधौ॥ ६७॥ बै
 न हंतै बोलै नही जावै॥ कंठ हंतै गदग
 द स्वर॥ आवै ताते ७॥ धव चूप करि रहै॥ क
 छु बेर कछु बैन न कहै॥ ६८॥ बहं सो चि
 त प्रेन न करि धीरज॥ परन प्रेम भयो अ
 ब कीरज॥ निश्चल आपु कतार पमानो
 सब संदेह द्विदै ते भाग्यो॥ ६९॥ हरि के
 चरन निमो पो ध्यां सो॥ ७॥ धव जून बच
 न ७॥ चा सो॥ जिन तैं हरि सौ बाडे प्रेम॥
 जिन कौं कहि सुनि पै यहे म॥ ७०॥ ७॥ ध
 व वचि॥ नाथ अजन्मा अरु अब नासी
 ॥ परमानंद परम परगासी॥ तिन कौं स
 निधान जब आपो॥ तब ही सब अंग
 न भिटायो॥ ७१॥ संनिधान पाव के के
 जावै॥ अरु ता परतु म परम दयाल
 ॥ मो निज जन प्रभय कयाल॥ ७२॥ प

हविर्गणनदीपमोहिदीनो॥जातेस
 कलस्वभास्वमचीनो॥तुमरेचरन
 सरननेनाहो॥दूजीठोरकदेसुषना
 ही॥१३॥जोकोईतुवकतकोजाने॥
 अरुतापरभवकोदृषमाने॥सोतु
 वजरनसरननहीआवे॥तोदूजोका
 तेसुषपावे॥१४॥प्रभूजीतुमअतिक
 रुनाकरी॥मममायापासीपरिहरा॥
 सकलजीवनिअग्नेह॥अरुजुवता
 सुतजितग्रहदेह॥१५॥येसबमेरेमन
 तेदारेअग्नेचरनकवलसरनअ
 धारे॥तुमबिस्तारीआपनीमायाजि
 नअह॥जिनग्रहसकलजगतअरमा
 या॥१६॥सोतुमगणनय३॥गसोहेदी
 कैकपालनितप्रीतनबेदी॥नमो
 नमस्तैगणनप्रवासी॥जोगेसरईस
 रअबिनासी॥१७॥दूजेमोहेयेकबर
 देवा॥निहचद्विदैपनिरंतसेवा॥तुम
 हीछोडिदूजोनहीजानो॥परसेवककै
 सेवाठानो॥१८॥मोहिपसाददीजिये
 पह॥तुमसोनिहचबढेसनेह॥करी
 विनती॥धवभक्तिबोलेहरिजीके
 अनुरक्त॥१९॥श्रीभगवानोवाच

मे

ल

तथा अस्तु ॥ ५ ॥ वमम भक्ति ममवे
रानन निहचल ग्रासक्ति अबतुम ॥ ६ ॥
ऐसी करो लोक न सी द्वा विस्तरो क
॥ ७ ॥ बदरी घेउ आश्रम मेरो अतिपु
नित दस जिह कोरो तरु तीर थमम
चरन कोतल दस परस ॥ ८ ॥ अरना
नहरे मल ॥ ९ ॥ नाम अलक नंदा सो
गंगा ॥ निरमल करै दस सब अंग ॥
जहां जाये तुम वासा करो फल भ
रुन तन बल कल धरो ॥ १० ॥ दंड सी
तनु सादिक सहो ॥ विन पादिक शु
भल रुन गहो ॥ इद्रिपनु के अरथानि
पर होरो ॥ पह बिगण न गणन ॥ ११ ॥ धरो
॥ १२ ॥ मोतै सिष्यो गणन तुम जोई बैठ
ये कंत विचारो सोई ॥ वचन चित सब
मोमें धरो ॥ मेरो धर्म सदा बिस्तारो ॥ १३ ॥
॥ तब तीनो गुन को परिहरि हो मम
निरगुन पर को अनुसरि हो ॥ पह ॥ १४ ॥
वप्रतिग्या मेरी ॥ फिर ॥ १५ ॥ तपति न घै है
तेरी ॥ १६ ॥ प्राविधि कसुम वचन ॥ १७ ॥
॥ ते ॥ १८ ॥ वले मस्तक धारै ॥ चरन नि
परि पर दी ॥ १९ ॥ नादी की ॥ तिन तब चल
बे की ॥ २० ॥ द्वा की की ॥ २१ ॥ ज द्यपि घंघ

द्विदैनही आदौ। तो उहरे जीत जिनही
 जावे। आसु कंठ अति आरु बुध॥
 ॥ तनमय मणोन तन की सुधि॥ ८१
 कस्म बिजोगन कोही सहो। बारबा
 र चलि फिर फिरि रहे। तब अंत्र नामी
 गोपाल जन को जानि प्रेम वेहा ल॥
 ॥ ८२ ॥ निकट बुलाये मिले देखे गंगा
 नरुप॥ की को सर्व गात बअपनी प
 वरा सीसी ते उधव जन मां थोली नी
 टे। तो हे प्रथम हि कस्म पधारि जा
 दव ले प्रभास लहरें। तब ही तहा उध
 व चलि आये। कस्म देव येक बेठ पाय
 ॥ ८३ ॥ पुनि मै त्रै पधारि तहां। कस्म देव वे
 ठे है जहां। इह की घोहरि को परनाम
 हर स्म पायो अति अमिराम। ॥ ८४ ॥ ठाठ
 म प्रे जोरि करि दोरी। प्रेम मगन कछु
 कहै न कोही। तब तिन को हरि भाषो।
 गणन। जै से अंधकार को नाना॥ ८५ ॥
 मै त्रै को दी को आ दे सो। बिदूर हि क
 हियो प्रह रूप दे सो। अगणो दी नी उ
 धव जन को। अपनि सक्ति कि प्रोषि
 र मन को॥ ८६ ॥ तब उबह रिचरु नि ध
 परे। हरि हि दे निहचल करि धरे। पु
 नि उधव जन पुह चैतहां। नर नारा

यनप्रगटेजहां ॥ ए०४ ॥ तहाजायकीनेआच
रनां ॥ जेजेहरिभाषेतेकरन बलकलअंब
रफलश्रहार ॥ प्रेममगननितब्रम्बिव्या
र ॥ ए०५ ॥ तवतिगुनविस्तारमिटायो ॥ १०
वैब्रम्बनिरंजनपायो ॥ यहहरिनेहवकोस
बाद ॥ हरिजीकोहैप्रमप्रसाद ॥ ए०६ ॥ जांको
कृपाकरैसोपावे ॥ तेजिभवसिधुब्रम्बमेजा
वै ॥ जबतैयाकोभाषेसुने ॥ प्रेमसदतहिरदैम
भने ॥ ए०७ ॥ तवतैपावैप्रमानंद ॥ अमदीबि
नामिटैदुषद्वंद ॥ यहस्वयंमेवआपहरिक
हो ॥ जामैकब्रुसंदेहनिरहो ॥ ए०८ ॥ यामै
असोछसप्रभाव ॥ मिटैजगतपजैहरिभा
व ॥ जिनहरिप्रगटअमृतहैकरै ॥ भक्तिनपा
यसकलदुषहरे ॥ ए०९ ॥ एकजलधितेअ
मृतपायो ॥ निजाधीनदेवनकोंप्यायो ॥ जरा
रोगआदिकदुषहरे ॥ बलजपजायेबिगतभ
यकरै ॥ १० ॥ असूहजोयहअमृतयेक
वेदसिधतेब्रम्बविवेक ॥ सोआपनेजनकों
प्यायो ॥ जन्ममरनभवभयहिमिटायो ॥ ११
असोआदिपुरुषअविनासी ॥ सुमरतजिन
हिमिटहिभवपासी ॥ कृष्णनामलीन्होअव
तारा ॥ तिनकोबंदनबारंबारा ॥ १०२ ॥ दुहा
असोसुनिसुषदेवसं ॥ परमतत्त्वनेपदेस
कृष्णकथाकेप्रेमसो ॥ कीलीपक्षनरेस ॥ १०३

इतीश्रीभावतेमहपुराणोयकादसत्केधेश्री
भगवान्भुवसेबादेभाषाटीकायांनहुव
मुक्तिनिरुपातीनाममेकोनत्रिसोअध्याय
२०॥ श्रीभाजानुवाचः हेप्रभुहरिकीकथा
सुनाबोकरनपुरनियहअम तयावोहरि
नृपदेसनुवहीदीन्हें। पीछेआपकहातिह
कीन्हें॥१॥ जाद्वकूलकोनप्रगटनोआप
हरिजीकहाकह्योतबआप॥६॥ अरकोबा
धानहीकोईअसुद्धिजआपनमिथ्याहोई।
२॥ सबकोतनसनमोहनदेहापरमानंदस
धाकोगेह। जेनारीहरिदरसनपावे॥ तिनसं
जेननधेचेजावे। असुजेहरिकेरूपहीगावे॥
३॥ बानीसहतमानअतिपावे। असुजेसुनिक
रिहिरदैधारे। तेपलकोनहीछोड़ेपारे॥ ४॥ भा
रथमेअहुनरथमाही। बेटेदरसमलहैजात
ही॥ तिनतिनहरिकीसमतापाई। सबसंअ
तिततकालगावाई॥ ५॥ असोतनहरित्यागो
केसेचकोईहरेनागमनजैसे॥ असोबचनक
हेनदेवा। नृतरदीन्होश्रीसुकदेव॥ ६॥ श्रीसु
कदेवोवाच॥ दुरावतीनृतिनृतयातपतिन
कोदेविकहीहरिबाता। नृनसेनआदिकस
बलोकासभासंधर्मादुपनहीसोका॥ ७॥ तिन

सौकस्य बचन उच्चारै हरि कौमता
लयेन विचारै निज माया सो मोहनक
रे गणन विबक सब नै हरे ॥ श्री न
जवा नौ बाचा हे जा देव सुनो मम वा
ता दारावती बहंत उत पाता प्र उत
पात मत्त नी सांनी ताते तजी पय
ह अस्थान ॥ जुवती बाल वदिस
वजेते संघो दार पठेते ते ओरे स
कल प्रभा सहि जे पेतहा पश्चिम स
र सती अने पे ॥ १ ॥ करि अमान तन
निरमल करीये सुविहि देती रप
वरत धरीये भजीये बहंत पितर अ
रु देवा तिन की करीये पूजा सेवा
॥ ११ ॥ अरु विप्रन की पूजा की जे
करि असनान दान बहं दी जे गा
प भूमि सो नौ वस्त्रादि ॥ १२ ॥ हा प
र पत्र नग्र हादि ॥ १२ ॥ आसी र बा
दि धिजन के ली जे जा हतै बिघन
कल छी जे देवरु बिप्राये की प
जा पाप हरन बिधि नौ ॥ १३ ॥ न ह्य
॥ १२ ॥ जैसी सुनि हरि जा की बा
सव जा दवन मली करि मान
मवन बैठि सिंधु उतरे चटि

१२५॥ यनिष्प्राणेकरे ॥ १५॥ जो हरि ति
न को अग्र्यां दीनी ॥ लो लो सब नि स
बै बिधि कीनी ॥ करि श्रान धर्म ब
हं ठाने ॥ अंध पुत्रा सत्राय माने ॥ १५॥
॥ तब तिन की मो कसू में माना जा
तै भूल गये सब ग्यान तब तै मंत सं
गले ई भयो ॥ हरि माया वै वै कह रि ल
ये ॥ १६॥ तिन मै कलह भयो ॥ तयं
न सब मै हरि पेरि क पर छिन तब
तिन की तो सभा मजारी सातिका
वीर गिरा ॥ १७॥ कृत कर्मा
को करि अग्र माना सातिका छोडे बा
णी बांन ॥ १८॥ जो कृत्री तन धारी ॥ अ
रु बहं रसे कही ये अधिकारी ॥ १९॥
ऐसी ऐसी की करे ॥ सो वत बाल नि
के सिर हरे ॥ यह पृथु मन बचन सत
का सो कृत कर्मा को अति धिका सो
॥ २०॥ तब कृत कर्मा की को कृधु बी
ए बाए प्रकास्यो जुधा ॥ अरे करे कृत्री
को ऐसी ॥ व्याध कुरुत की नृजै सी
२॥ नृरि श्रवानि राघु धर्म भयो जा को
बाहं जुगल कटि गयो ॥ ला को बुधतं
की नो ऐसी ॥ व्याध के सा

२१ तव सातिक ५४ बोलै बां नी
मुनो सुनो हो सारंग प्राणी इन को
न स अरु आघु सिरा पो ताते इसो म
तो द्वे आघो २२ पकही वचन घडंग
तिनि का बो कृत कर्म को मस्त क
वा द्यो ज द्यपि सब मिलि बहत नि
वा स्यो तोह सातिक क्रोध नटा सो
२३ ताते सकल भय ते कृध साति
क सेही ते ठान्यो ज ध तव ते सकल
भयो द्वे ओर जुध र चो सापे तट दो
२४ केई धन्य भाल सो लरे केई प्र
उग गहे सहरे केई फर सी गदा कृ
गर केई बे सोह पा प्रहार २५ केई
गुरु गो फण केई ब दौ दि कनि
लरे ते ते ह ध त सबे करे संग्राम
२६ केई देवे क स्र रुम २७ हे स
पह हाथी सो हाथी र थ से र थ सो
सों साथी २८ सो घर २९ ५४ तिनि
महिष रुम हिष बैल बैल न सों
३० घ चर सों च चर मिलि लरे न
नर मिलि नु दिही करे महामत
कल येन नै सै नु धि करे बन मे
साव घु मन ठान्यो

धातो अकूर जो ज अति कुं धत हो सं
गाम जीतरु सुभद्रा करे जुधवीरन के
न दारवण द सेना म क र्म को भ्राता
नाम सुचारु पुत्र विष्णांता तो साति
क सौ मिलि अनिरुध सु रथ स मित्र
करे मिलि जुध पुत्र कनि स ठ स
ह स सत जित भोनु आदि दे जो अपरि
मित आपु आपु मै जुध ही ठाने सरि
करि मोहित क कून जाने ३१ क
सब स सदा सार पब स सोत त्य अ
ध क भोज वत स अरु बुद सुर से न म
धुमा युश दे स बि स जे न कंति रु क क
ल पुश आपु आपु मिलि जुध ही ठाने
सब नि पर स्पर सो रु दे भानो पुत्र
पिता भाई अरु भाई मामा अरु भान
जे ल राई ३३ का का भती जे ना ती ना
ना मित्र मित्र मिल जुध ही ठाना स
ह द सु ह द गोंति न सों गता सब मि
त्र भये पर स र घाती ३४ त ब सर
दीण भये सब ही न के हटै त था धनु
ष तिन तिन के आ युध सकल की नि
ज ब भये त ब त नि कर नि अर का

२९ तव सातिक ५४ बोलै बां नी
सुनो सुनो हो सारंग प्राणी इन को
जस अरु आमु सिरा पो ताते इसो म
तो देखो आपो २२ प्रकटी वचन घडंग
तिनि का बो कृत कर्म को मस्त क
वा द्यो ज द्यपि सब मिलि बहत नि
वा स्यो तो हे सातिक क्रीधन टा सो
२३ ताते सकल भय ते कृधु साति
क से हे ते ठानो ज ध तव ते सकल
भय देखो और जुधर चो सा पर तट दो
२४ के ई धन य भाल सो लरे के ई प्र
उग गहे सहरे के ई फर सी गदा कु
गर के ई बे सो ह पा प्रहार २५ के ई
गुज गो फण के ई ब दौ दि क नि
लरे ते ते ह ध त सबे करे संग्राम
बैठे देखे क र्म रु र म २६ हे स
पहे हाणी सो हाणी र प मे र प सो
सो साणी २७ सो घर २८ ५४ नि
महिष रु म हिष बैल बैल न सो
२९ घ घर सो च घर मिलि लरे न
नर मिलि नु दि ही करे महां मत
कल ये न नै सो जु धि करे बन मे
साव घु मन ठान

धातो अकूर भोज अति कुं धत हा स
ग्राम जीतरु सुभद्रा करे जुध वीरन के
चंद्र खण्ड से नाम क रम को भ्राता
नाम सु चारु पुत्र विष्णो ता तो साति
क सौ मिलि अनिरुध सु रथ सु मित्र
करे मिलि जुध पुत्र ५८ लु कनि स ठ स
ह स सत जित भो नु आदि दे जो अपरि
मित आपु आपु मे जुध ही ठा नै र शि
करि मोहित क कून जाने ३१ कृ
स्व सं स सदा सारथ ब स सोत त्व अ
ध क भोज बत स अरु बुद सुर से न म
धु मा यु श दे स बि स ज न कं ति रु क कु
र ३२ आपु आपु मिलि जुध ही ठा नै गो
सब नि पर स्पर सो रु दे मान्यो पुत्र
पिता भाई अरु भाई मा मा अरु भां न
जेल राई ३३ का का भती जे ना ती ना
ना मित्र मित्र मिल जुध ही ठा ना सु
हृद सु हृद गणंति न सौ गण ती सब मि
लि भये पर स र घा ती ३४ त ब सर
दीण भये सब ही न के हृद त था धनु
पति न तिन के आयु ध स क ल की नि
जब भये तब तनि कर नि भै र का

लोये ४५ भाँसुसलचूरनतेजेते बज्र
समांति सिंधूतटेते ते ते सकल करनक
प्रिलीने ॥ हरिसोजुद्धहीकुधहीकीने ३६
रामकृष्णवह्मांतिनिवारै यरितेसूरिषक
ब्रूनविचारै रामकृष्णकौरियुकरिजोनें जु
द्वबूद्धअतरगतिअनें तबआयुहीकीयोति
नकोय कस्योचिहै सबहीनको लोय तबअ
रकाकरनकरलोये थोरसांदिप्रलेएसब
कीये ३८ विप्रआयआछादितकीये हरि
मायाविचारसबहरे पावकक्रोधप्रगटनह
भयो बांसबियनकुलनरिसरिगयो ३९
तबकुलसकलनिष्ठहरिदेख्यो भूँकोभार
जेतास्योलेख्यो जाकारतिलीनौं ओवतार
सोप्रहस्यो धरनिकोभार ४० तबसमुद्रतट
मेंबलभद्र कीनौं ब्रह्मांतअतिभद्र आ
युहीब्रह्मांतिहैराख्यो मानवदेहहरिकारि
नांख्यो ४१ रामप्रयाणलख्यो हरिजबही लख्यो
यायलतलबैवैतबही निरसलरूपचतुरभ
जधास्यो दसहृदिसकौतिमरनिवास्यो ४२
जुंधूमपावकप्रकास ओसोप्रगटभयोनिजा
स पातवसनद्वैतनघनस्योमं तपूखबाए

सोभा अतिरास ॥ ४३ ॥ सुंदर लसि से दित मु
यदस कि सलै नैन सो भा के सदा करण रु
कुंडल मकर काशी समुद्र के सोभा अधि
कार ॥ ४४ ॥ चिर नील सिर के सविधाला
उर भृगुलता मनि बन सा ला ॥ कंठ धृत कटि
सूत बिराजे ॥ दो द्रघटिका नूयाराजे ॥ ४५ ॥
बहुं आ नूषन नूषत अंगा देषत मोहि
अमित अनंग ॥ अयूध मुरति मंत्र स
प्रस्त ॥ सुमर्त जिन ह हो म नम अस्त भ
धुत म चरन कवल आ क जिन
को ॥ इर धा वै नित भक्ता ददा ज
घानी चै कस्यो ॥ वाम चरन ता उप
रि धार्यो ॥ ४६ ॥ मो निहवल वै वैठे क
सा सुमरत जिन ही मिटे नव वर सु अ
तिल धु मूसल पे ड जो रहो ॥ जल में ड
स्ये मंकी गह्यो ॥ ४७ ॥ सो वह मंकी जा
ल में आयो ॥ ता कै ॥ इद्र लोह सो मा मो
॥ जरा बांध भल को सो कीन्हो ॥ ले
करि सर के आगे शिन्हो ॥ ४८ ॥ सो वह
बाध ह तो बन मांही ॥ हरि को पद जि
न जां नों नांही ॥ हरि को दिष्टि चरन ज
व पस्यो ॥ मृग मुष जा निघात तिन

मन॥ आयुध॥ मरति॥ दिति॥ योनि॥ जप
 ति॥ देवै॥ भगव॥ तिर॥ ई॥ ध॥ त॥ व॥ दार॥ क॥ धी॥ र॥ ज॥ न॥ ही॥
 क॥ स्यो॥ १॥ म॥ गु॥ यो॥ हि॥ द॥ य॥ ने॥ न॥ ज॥ ल॥ छा॥ यो॥ ॥ प्र॥
 म॥ ग॥ न॥ म॥ ष॥ वे॥ न॥ न॥ आ॥ यो॥ ॥ ६५॥ त॥ व॥ क॥ रि॥ धी॥
 र॥ ज॥ आ॥ सु॥ नि॥ वार॥ क॥ रु॥ ना॥ स॥ हि॥ त॥ व॥ च॥ न॥
 न॥ वार॥ ॥ ६५॥ म॥ मे॥ त॥ व॥ च॥ र॥ न॥ न॥ दे॥ वै॥ ते॥ प॥ ल॥
 क॥ ल॥ प॥ क॥ रि॥ ले॥ धे॥ ॥ ६६॥ त॥ व॥ ते॥ न॥ दृ॥ दि॥ रि॥ मे॥
 भ॥ यो॥ ॥ स॥ व॥ दु॥ ष॥ य॥ क॥ वार॥ अ॥ न॥ भ॥ यो॥ ॥ भू॥ ली॥
 दि॥ सा॥ न॥ क॥ ह॥ सु॥ ध॥ मा॥ यो॥ ॥ ॥ यो॥ ॥ ६७॥ दि॥ प॥ ति॥ नि॥ स॥
 मा॥ हि॥ कु॥ पा॥ यो॥ ॥ ६८॥ त॥ म॥ बि॥ न॥ ज॥ म॥ मे॥ त॥ न॥ बि॥ न॥
 प्रा॥ न॥ ॥ जै॥ से॥ न॥ य॥ न॥ अ॥ ध॥ बि॥ न॥ भा॥ न॥ ॥ अ॥ से॥ वे॥
 न॥ क॥ ह॥ त॥ ही॥ स॥ त॥ दे॥ व्यो॥ य॥ क॥ च॥ रि॥ त॥ अ॥ द॥ भ॥ त॥
 ॥ ६९॥ ग॥ ग॥ न॥ ह॥ ते॥ ॥ त॥ म॥ र॥ थ॥ आ॥ यो॥ ॥ ह॥ य॥ ने॥ स॥
 ही॥ त॥ अ॥ रु॥ ग॥ रु॥ ड॥ स॥ हा॥ यो॥ ॥ म॥ र॥ ति॥ म॥ य॥ द॥ रि॥ अ॥
 यु॥ ध॥ जै॥ ते॥ ॥ र॥ थ॥ मै॥ जा॥ य॥ च॥ टे॥ स॥ व॥ ते॥ ते॥ ॥ ७०॥ य॥
 ह॥ य॥ रि॥ त॥ दा॥ रु॥ क॥ ज॥ व॥ दे॥ यो॥ ॥ वि॥ स॥ म॥ य॥ भ॥ यो॥
 अ॥ र्च॥ भो॥ ले॥ यो॥ ॥ त॥ व॥ ह॥ रि॥ स॥ त॥ ही॥ वै॥ न॥ सु॥ ना॥ यो॥
 ॥ क॥ रि॥ स॥ न॥ मा॥ न॥ दु॥ ष॥ बि॥ स॥ रा॥ यो॥ ॥ ७१॥ म॥
 वा॥ न॥ वा॥ च॥ ॥ स॥ त॥ ह॥ रि॥ का॥ को॥ त॥ म॥ जा॥ वो॥ ॥ स॥
 मा॥ च॥ आ॥ स॥ व॥ जा॥ य॥ सु॥ ना॥ वो॥ ॥ स॥ व॥ को॥ म॥ र॥ न॥ सु॥ म॥
 नि॥ ज॥ जा॥ न॥ ॥ अ॥ रु॥ मो॥ को॥ अ॥ व॥ क॥ र॥ त॥ प्र॥ या॥ न॥ ॥
 ७२॥ ह॥ रा॥ म॥ ती॥ र॥ है॥ म॥ ति॥ को॥ ॥ त॥ म॥ को॥ ध॥ रै॥ ज॥ ह॥
 लो॥ जो॥ ॥ य॥ ह॥ न॥ र॥ लो॥ त॥ जो॥ मे॥ ज॥ व॥ ही॥ ॥ सि॥ धु॥ ह॥

ॐ कावो रीतवरी ॥ १२ ॥ हसरा मातापी ॥ दि
दी कजे सिले अपनै लोकन ते ते
हदि घी जेयो अरज संगरहे ॥ चारिका
के हे गंगा ॥ १३ ॥ तिन को प्रहसंदेह सु
नाथे ॥ अरु तुम मम धर्म हिमन लाम
॥ मम माया रचना पहजानो ॥ नाम
रुप सब प्रिय गो मानो ॥ १४ ॥ किन भ
गुर सब नाना रुप ॥ निहचल जानो मो
हि अरु रुप जहां तहां व्यापक मो को
जानो ॥ नाम रुप मम माया मानो ॥
अपने रे चरन निरंतर भजो ॥ १५ ॥ सीस
कल वासना तजो ॥ जैसे के आवो
मो मोही ॥ जानै फिरि दूष पावो ना
ही ॥ १६ ॥ प्रहसुनी सत कस को गणी
ना ॥ काओ सो क मोह भय आनन
मस्कार करि बारं बार ॥ पूदक्षिना
दे बिबध प्रकार ॥ १७ ॥ हरि बिजोग ते
बहं दूष पायो ॥ गणान विचार चि
त ठहरायो ॥ हरि के चरन कवल
उर धारि ॥ तब दारु क दार का प
धारि ॥ १८ ॥ दोला पहनि प्रेम सो क
ह्यो ॥ जद कूल को संहार ॥ अब भा

प्रो हरिकोगवन अरु हरिजन ५१
धर १९२ इति श्री नगवते महाप्र
सन्नोपकादे सखी श्री सुकपरी
दासनादे भाषा टीका प्रो बालदेव
निश्नापी नाम निरुपमा ३ श्री
पञ्चनाम तव वृक्ष सनकादिकुलि
म भृगादिक निवृथा संग किम् सह
तनवानी संकर देव इद्रिदिक सुर अ
रु उपदेव १ विद्याधर किं नरगंध
र्व पितर महोगरचारन सर्व गरुड
लोकपंक्ती अरु सिंध हरिका दर स
कामनां विधर सब मिलि हरि ३ स
कौं आप सब ही न हरि के दरसन पाये
हरिके जन्म कर्म गुण गावे सब मि
लिज पजप सब द सुनावे ३ सकल
बिमान निछा योगिगन वरधे पुष
प्रेम करि मगन बार बार करै प्रन
म मुषते नाथै हरिको नाम ४ ब्र
ह्म सब कस्य बिभूत कस्य ही
तिन की अदभूत ते समस्त देव
वान मेन मुदि सब ठाने ध्यान प
मुरु आपु येक करि ध्याये देत
नंद शिव हायो निज तनु लो

नि को अंधिरां मा ध्यान धारना मंग
ल ध्याना धिता वें अग्नि धारना ध
रा अग्नि उप ई भ स सो करी तब
हरि जी वै कूठ सि धारे ध्या विधि सब
के का रज सा से अत ब द बी बा जे
सुर लोक उप जो हर य मि टो भ य
सो का स त्प रु की र त धी र ज ध र्म सो
भा जे रु रु त म क र्मा च ते सब ग पे
संग जग दी सा जा ते हरि सब हि न के
इ सा त ते ज हां क था हरि जी की ॥ प
जा ध्या न धा र ना नी की ॥ त हा स म
स र हे ते इ तो स त्पा दि क वि धि सब जे
इ जो ध र्म सो आ दि स क ल सुर जे ते ॥ ह
रि की ग ति हि न जा ने ते ते ॥ हरि वै कू
ठ प या नो क र्मो ॥ सो कि न ह न ज न
न प र्मो ॥ क ह न ही ति न हरि कू दे यो
ब डो अ चं भो सब हि न स्यो ॥ र जे से
मे घ हो हि आ का सा अ रु द म नि प्र
ग टे घ न पा स ॥ के क रि प्र ग य पु हो पे
जा दै ॥ ता को यो ज न को ई पा वें ॥ २ ॥

देखै गुपत भय किन हं नही पेखै १३
हे नृप यह अचं भाना ही सक्ति अनं
त सदा हरि मां ही जद कूल में हरि को
ओ वतार असु करि है नाना बौ
हार १४ सो समस्त मा प्रा करि जां नो
हृत्की सक्ति होत सब मां नो हरि पे
के सदा सर है कर्म करै जन्म न
ही गं है १५ औरै कर्म करत सब जो
ने जन्म लीयो हरि जी को मानै पे स
ब देह निके बौ हार हरि जी इन सब
हिन के पार १६ जे सैन २ बाजी बिस्तार
रे बहं सो आप ही सकल निवारै वा
जी गर सब ही न ते नारा यों हरि के क
र्म ओ वतारा १७ जिन हरि २ चो त्रि
गुन संसार नाना भांति प्रगट आ
कार आपु प्रे वस की प्रोति न तन में
सब बरताई बिना सैं छिन में १८
अत आपु के आप ही रहै ज्यों ही इन अ
वतार न गं है गुर को मृत क पुत्र जिन
आ न्यों काल मृत्यु के गर्ब ही भां न्यों
१९ ब्रह्म सख तै तुम्ह ही बचा प्रो ब
धिक हि स्वर्ग सं देह पठा प्रो ते त्यों

अपनीरी ल्यां करते। तो तिनकों का हे प
रहें तो। रास बज ग की प्रित पाला ना स
करे जन्म को बल कलि। ज्ये से सकति
सकति मे देवा ब्रह्मादि करै जा सेवा।
२॥ हरि बै कंधरनी को भास धरु हो
तो माँस आकार। सा सौ भू को भार
ता सों। पी छे हं दृष्टि करि डा स्ये। २॥
ज्यों काटा भा भे मग मां ही। सो काटे
बिन निक सैनो ही। काटे काटो को
सा जव ही। ३॥ ३॥ इति दामो पुनि जव
ही। २॥ ३॥ हो हरि मृतक देह को शयें।
भिजानंद पद सौ को नाथे। अरु प
के अति ही अगणन। तिनकों प्रगट दि
बा योगणन। २॥ भानो गसा धि करि रा
धे देह। पुरधारत कर। माने पहा। सकल
विकारन को आगारता को राधित जे
सुष सारा। रप नाते तिन को मोह मिटा
यो। दि सत जे ब्रह्म बतायो। ज्ये से तन को
कि प्रो अनाद र। जाते को ई करे न आ
दर। २॥ दत्ता ते हरि बै कूठ य धारे। बाजी
जो देता दिने निवार। ब्रह्म रिष ई। इ
दि कजे ते। दि धि प्रया नो को ते तो। २॥ १॥

विस्मित भये कृष्णगुण गावैं आपने ग्र
पने लोक निजावैं जो प्रहचन पठै उठि
प्रातः कृष्णस्व की उत मजात ॥ १८ ॥ सो
दिठ भक्ति कृष्ण की पावैं जाते कृष्ण
लोक मे जावैं हरि दास कृष्ण का पठा
यो सो सुब देव रूप ये आपी ॥ १९ ॥ कृ
ष्ण बिजोग बि कल अति चीत जै सैं कृ
पन गये तैं बित ॥ तिन दू गो के चरण नि
परे तब सारणी बचन उचारै ॥ ३ ॥
संप्रवहि चले भै न तैं अति बाकूल
अटे बै न तैं सब जइ कूल को ना स
नायो अरु बल को निन जा जनायो
१ ॥ यो सुनि सो कत पत सब भये क
त बिलाप प्रभास ही गये नर राजा
२ ॥ नर देवे तब बै कूठ गये करि ले
३ ॥ तब देव की रोहणी बसु देव
से न राजा नर देव हरि बिजोग ते
सो क ताते बिहंत जो नर लोक
रांम कृष्ण को ई सो बिजोग जाते
देह संजोग बल जुवती सब देव
ह अग्नि प्रवैस की यो अति ने
बसु देव दाल बोडु सना रि वि

सहगमनचित्तं संवांशि॥ प्रधुम्ना दि
 नहंलो जेते॥ तिनकी विप्रनिलीये स
 बतेते॥ ३५॥ सबही निकै अति कसब
 योग॥ तातै कसो अग्निसंजोग॥ हरि
 कसबध जहंलो जेती॥ रुकमनि आदि
 सकल मिलिते॥ ३६॥ हरिकोरूप दि
 दे मै धासो॥ अग्निप्रवस सबन मिलि
 कसो॥ अर्जुन परम सखा हरिजी को॥
 ॥ कसबिजोग प्रहार कजी को॥ ३७॥
 तातै अर्जन बहंत दूषपायो॥ क
 सग्यन हि दे मै आयो॥ गिता मां हिक
 सो हरि गणन॥ मिथां देह सत्य भग
 यान॥ इत्यत्रै सो बहं विधि गणन बि
 धासो॥ कसबिजोग सो कसब रा
 ह्यो॥ आपु आपु मै मारे जेते॥ अपने
 बंधूणात प्रयतेते॥ ३८॥ तिनको जो
 पिडादिक दांनो॥ मृतक क्रिया जेती॥
 विधिनानो॥ सोही सो अर्जन सब क
 श॥ कसब प्रीत ते नही परहरा॥ सब
 धारका
 लकमें लई॥ केवल ह

तबिहारतहांहरिजीको सुमरतसुन
तऊधारेनजीको मगाहसकलमंस
लिजिकरै ॥ त्रिभुवनसुषहोवैनित
चरै ॥ २ ॥ असत्रीबालबृधिसबजेते
परतमरतउवेरेतेकेते ॥ तेअर्जुनदि
ह्रीलेआपे ॥ समाचारपंडवनसुना
ये ॥ ३ ॥ तुरुरेसकलपिताहमजेते ॥
कृष्णपापानहीसुनिकरितेते ॥ तुरु
हिवेसधरराजाकीपो ॥ मभुरातिल
कबजकोदीपो ॥ ४ ॥ तेसबतजिउत
२कोगमे ॥ कृष्णहिसेपकृष्णमपेन
ये ॥ जोपहरिजीकोअवतार ॥ नामैकु
मरुगुणविस्तार ॥ ५ ॥ तिनकोकहे
सुनैनरजोश ॥ सबपापनितैछूटेसो
६ ॥ पाविधिहरिकेजेअवतार ॥ बाल
पनतैकर्मअपारा ॥ ७ ॥ लोकवेदमे
परगटजेते ॥ गावेसुनैबिचारैतेते ॥ त
बतैवहेपरमआनंद ॥ मिलैकृष्ण
देदृषदंद ॥ दो ॥ ८ ॥ प्रहरिकीकरिअ
वतारमे ॥ तुमसोंकहासुनाये ॥ पाक
कहे ॥ निसो नरनापनपेपाप ॥ ९ ॥
वै ॥ १० ॥ ब्रह्मनिरीहनिखनखामी

सकललोककेअंतरजामी॥ अतिनेहे
 तधरेअवतारानानामोतिकरेउधा
 रा॥ अतिनमेकस्वप्नभगवानागण
 नक्रियासबसक्तिप्रधानजिनकेगुन
 निकहोसुषदेवासुनततिहोपरीछ
 तनरदेवा॥ अजिनकोनामलिपेभव
 नाही॥ लेकप्रियेजिजयदसाही॥ अशक्तिस्त
 ततिकोबिता॥ निष्कारतिनप्रभुकोनित
 यशतेअवसतदाससेनासादेहधेसतनके
 कामक्रियानिधानभक्तिकरवावे॥ अयनी॥
 सक्तिहिदेमैल्यवे॥ य२॥ असाविधिभवदु
 षमिटावे॥ अयनेप्रमदहियदुचावे॥ क० प
 स्मरुसतिनग्यानसुनायो॥ उदवजननिज
 पदयल्लचायो॥ य३॥ सोलेकहोससकृतव्या
 सासातेहोईनअरथप्रकासा॥ जोयडितजा
 इजोकिदेनजानैकोडि॥ य४॥ ताते
 ली॥ सोसेवगकीअ
 धारी॥

याकोबांचेस
 ध्यानकोरेकचैस्वर्गावे॥ तितेलेहे

कदे

हे श्रीसैदे कारि ब्रह्मसमावे तजि आनि
 गति नही आवे ॥ ५७ ॥ कबहु कौरे कामना
 ॥ ५८ ॥ पातै तेहे सकल सो सोई ताते जे जे हो
 ॥ ५९ ॥ संकास ॥ अरु ते बड भागी तिहु काम
 ॥ ६० ॥ तिन सबहि मको भाषा
 ॥ ६१ ॥ मुक्तिरु मुक्ति तिरा को गेह ताते या
 ॥ ६२ ॥ को जे प्रीति यहै सकल संतन कीरीती
 ॥ ६३ ॥ संवत सो लोहि ॥ सेय बाणावा जे छु
 ॥ ६४ ॥ कृत्य श्री कुजदीवा संतदास गुरु श्री
 ॥ ६५ ॥ दासी चतुर ॥ दास यह भाषा कीनी ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥ प्रमगं न परगट कस्यो ॥ मम र
 ॥ ६८ ॥ हे जिन देव ते मेरे रति तब सो संतदास
 ॥ ६९ ॥ इती श्री भागवत सहाय
 ॥ ७० ॥ श्री सुकयरी चित
 ॥ ७१ ॥ श्री कालवे कुंज
 ॥ ७२ ॥ श्री सायादी काया श्री कालवे कुंज
 ॥ ७३ ॥ श्री नांत एकत्रि सो व्याप संयुक्त न
 ॥ ७४ ॥ पुनः ॥ सबत ॥ १८ ॥ मत्त ना फ
 ॥ ७५ ॥ नरुधि १२ ॥ नार मंगल ॥ दल व
 ॥ ७६ ॥ को नो दहि का ॥ श्री गौरी को ह
 ॥ ७७ ॥ नैली ॥ श्री ३ ॥ इति विदु गी वं च
 ॥ ७८ ॥ नैली ॥ श्री ३ ॥ इति विदु गी वं च
 ॥ ७९ ॥ नैली ॥ श्री ३ ॥ इति विदु गी वं च
 ॥ ८० ॥ नैली ॥ श्री ३ ॥ इति विदु गी वं च

अछली बंते गर घाबल कबो धुकी रंभेनी ।
बल कस दरय ॥ कं दे श्रं बूपा ॥ जहां सुलतां स
नी ग्यां न सरूपा ॥ पाति स्यां साहन सिर दारा पे ह
माई प्रिति मन मां दि बि चार ॥ १॥ पट इ स्म
को बूके नाई ॥ अल हरूप तुम दे हो ॥ बल ई
दो नु दी व पे को न बनं ॥ को न रं म ओ र के ।
न मु दाई ॥ राये ती बात क हो अर चाई ॥ इ
हां ते जब ही जां न जो पाई ॥ के तुम सब ही
क हो दिवां नां ॥ जां तुम दूरि क रो कु करं नां
र ये ती बात का सी सु नि पाई ॥ तब न ठि ध्या ।
ये अप गु सां ॥ जिंदा का रूप गु साई की ॥
हं ॥ आप स्या द कं दर स न दी न्या ॥ धा बै बत
चत आप सु लतां ना ॥ जिं दे की या द वा स ल ।
मां ॥ द वा द मां री ॥ नि न ही मां नां ॥ मा यां के म
द गर ब दी वां नां ॥ पा ॥ सु लतां न उ वां चै ॥ क
है सु लतां न सु नो दर बे सा ॥ जिंदा रूप को न
को ने सा ॥ क हां ॥ सो आ ये क हां तुम जां ई
को न का नि द मे रे घर आ सी ई ॥ सा बी ॥ कह
सं आ ये जिंदा जी ॥ फेरि क हां तुम जा य
हि दू तर क ये को न हे ॥ मो हि क हो स म जा म
॥ जिंदा न वां चै ॥ क हे द बे स सु नो चि ।

लाई जिंदारूपपुदायकाभाई अल्ह
पसकलघटमांही दिह तुरक दोउरा
चलांही ॥ ८ ॥ हम दो जिग बाडि भीस्त को
॥ ९ ॥ सोपन तोहि चीज ये आइ तुम हो
न दुनी के सुलातां नां ॥ १० ॥ भीयां राखि हो सं
सह दां नां ॥ ११ ॥ जब तुम आवो निस्त के
मांही तब हम सू लेवें तुम पां ॥ १२ ॥ ये ही क
जितु मरे घरि आइ भीयां सू इधरो तुम
मां ॥ १३ ॥ हमि के स्याह सू कर ली न्हां स
प्रसूई का कौल जो दी न्हां जावो निस्ति
मां नो बिसवास ॥ १४ ॥ सहस सू इली जो हम प
सा ॥ १५ ॥ इतनी कह हम उठि चले
स्याह कौतर कलगाय ॥ निमां स्यां मकी ब
घत मै ॥ १६ ॥ जुरी अदालत आय ॥ १७ ॥ रटे नी
तब मिलि आय दरी खां नो ॥ १८ ॥ बैठत घत
आप सुलतां नां ॥ स्याह के हाथि सू इज
बदेयां तब उजीर मन की या बे बे का ॥ १९ ॥
दस्त जो रि के बिन ती लाई ॥ के सें सू इहा
थे में सां ॥ २० ॥ स्याह कहै तुम सुनो दीवां नां
बदे अल्ह के दीया सह दां नां ॥ २१ ॥ इ बे स
येक आये समु जाई ॥ सू इये क धरो तुम

गद्य॥ जन्तुस्य श्रवणेन निश्चयेन ही॥ तब
 दमसुईलेवेनुमां ही॥ १५॥ येकसुई
 दमउनसौलीनहां॥ सहससुईकाकोन
 जोदीनहां॥ तबदीवांनकहीअरयाई॥
 सुईसंगचलेनहीसांही॥ १६॥ मालमूलक
 दीमैठकुशडी॥ सोसबधस्यारहेथादीगंई
 इतनात्मसकरसंगलेजंईहस्तीच्यारिसु
 ईनैरिवांई॥ १७॥ तबदीवांनकहीअरयाई
 हस्तीसंगचलेनहीसांही॥ वेठिसुषपालनि
 स्तिदमजाई॥ जेहेबांसोमेसुईभराई॥ १८॥
 यांसुषपालकबरतकजाई॥ आगेकैसेक
 रिहोसांई॥ आगेदमवोरैचटिजाई॥ लेहे
 जीनमेंसुईभराई॥ १९॥ चोरासंगिचलेनही
 भाई॥ चोराहस्तीइहांहीरहजाई॥ गांवमु
 लकराजसुषहोई॥ येसबसंगिचलेनही
 कोई॥ २०॥ साषी॥ इतनामेंसगिनीचले सु
 नोस्माहचिंतहाई॥ येहजोजूददिनच्या
 रिंहे सोनीसंरिगिनजाय॥ २१॥ रमैली॥ तब
 हीस्माहमनचक्रितभयेजी॥ कूतोराजपाट
 ठकुशडी॥ २२॥ सहससुईहमकीयाप्रसंगा
 सुईयेकचलेनहीसंगा॥
 निवालाजबहीभा - ॥ २३॥
 निवालाजबहीभा - ॥ २४॥

हेतुमको न कही तें अत्र को न का न वर
 मं न कही तें अत्र को न का न वर
 जिंदाइ समे सुरति लगावा ॥ १६ बरा
 अधमतिहि नां मां राजमांदि
 हीमं मां २५ तब ही स्याह धव
 बिचारी तब हम दी तें मे सुरतिस
 य तब हम अत हाप ग धारा स्याह
 लन बहि गोहरावा २५ सुन
 रध कही धावा को न हमारे मह
 परि अत्र तब हम कही उटयेक
 ठंठ न फिरै आप नो उटय २६
 धीन उटौ चारु भोजन उटमह
 उ सुणि के स्याह तबे हसि दीन्ह
 तबे हल परि अत्र दीन्ह २७
 भोजो होनाई कैसे उटमेह
 कहै कबीर बूजो तुम गपाना
 ठा अत्रा हाकिन जांना २८
 बकौ पहचांना जिनया सिर
 जिहां नां महल प्र आयो नही
 तब न उटि नही अत्रा निहा
 महल परि नाही कैसे

धोतुमप्रपनोपीरा॥रा॥ओडोमोनगुमाने
 नाडि॥अल्हस्यतुयहीमिलिजाडिसुनत
 नसीहततबडिधिधोषोजनषोजनम
 हलपरिआये॥येतीसुणतस्याहसुष
 पये॥येजिंदसोबंचनसुनायेकौनह
 प्रकौननासतुमहाराकैसंपाउअपरम
 मारा॥उरा॥कहेकबीरसोजेसोपावेषोज
 तषोजतअलवलसावे॥असादी॥प्रेमपि
 तकरिषोजीयेहिरदैआवेगांनाअलम
 अलौकिकेजोभो॥जागरतनवेसुलतान
 सुधारमणी॥बहोरिदेकदिनबलकमज
 री॥स्याहकेमहलनपरिपगधारी॥नचरो
 जावेतैसुलताना॥गितमबिबायेतकौरि
 समाना॥अपा॥महलमांदीप्रहंचेजाडिदि
 यतफिरतमहलचंद्रपाडिद्वराइमआ
 येसुलताना॥हमकंदेपिकेबहोतरिसान
 सुधाकंदेहो॥स्याहतुमकोहोनाडि॥
 कदिकारनेमहलनपरआडि॥हमप्रदेसी
 देशी॥दुटतफिरेंसरायबसेरा॥अ॥स्या
 हकहेवेहमहलहमारा॥कहासरायजो
 करोबिचारा॥गितमबि

म

बारा॥ जामें हीरा जडे अपारा॥ कहै जा प्रकै॥
सैं धूनी बारा॥ तातैं जा वो सहर बजारा॥ के
हे दर बेस सुनौ तुम भाई॥ करि ह बि चारा॥
र सो दिन माही॥ ३५॥ मह ततुम हारा तुम
काहं पावा॥ करो बीज ये कौन बनां वा॥ म
हत तुम हारा हो बनां भाई॥ तुम बीमुस
फर बसो सराई॥ ४०॥ सुनु हो स्या हतुम च
तुर स्यानां॥ सुरति निरति त्रि बूजो ग्या
नां॥ पात स्या हे के तैं हो यग येरी॥ मह त्रक
हू के संगिन ग येरी॥ ४१॥ चा चा बां पतुम
हारा हो ये ग उमैं हतुम का हू के संगिन येरी
जो तुम घायो मैं हतुम हारा॥ अंत कालें छ
डो बर बारा॥ ४२॥ मात पिता नं ती ब हो ते रा
या मैं नाही का हू के रा॥ जहां को तहां छुटि
हैं धामां॥ या सरा यदि न चारि मुकां मां ४॥
धनु॥ लाहर दम सा है ब कौं ग्रह चानौ॥ मह
त सरा ये वक करि जानौ॥ ग्या न दिखि दि
त मैं जब आई॥ छो डोरा जपाट पति साही॥
४४॥ सा यी॥ ग्या न दिखि दित आ वही स
ब बत जि न ये फकीर॥ कहै कबार ई न रा
ई म के लगे ग्या न के तीरा॥ ४५॥ दैती॥ दुं ज

न्यामतिमायेन जाई नारे दर बेस कुता से तां
हूँ मे साधिरत की दाद बेसा ज्ञाह के मन
में नया जूँ सा पत्र नंदे हुर हुर ये कदि
जा साह चले सिकारा गोहन लाघ ये कअ
सवारा ॥ प्रिया संगि सुलतां न अकेल ॥ न
ही कोई सैरा नही कोई चेला धृति गीपा
ससाह को नारी ॥ महा नयान कब ने में जा
डो ॥ बंट का बिबुध ये कत हों नारी ॥ सीत व
ल लाह बहोत अधिकारी ॥ धन मिले फल
की रये कद बेसा ॥ कुता दो ये रहें उन पा
सा सातल कस पांनी ॥ ते नरीया ॥ जा परि
गेलिया माटी की धरिया ॥ धन धन जत नोर
साह चले अयो ॥ दवा सलां म करे बेसा ये ॥
कहे सुलतां नया समोहि नारी ॥ जाये जान
मोहिले हो उबारी ॥ धन हम फकीर दर बेस
कहा ॥ सुरति हो ये नरियो वो न शिजन
पीयो साहली दो बिस्वासा ॥ जिंद की या अ
जब तमांसा ॥ ५० ॥ मायी ॥ अंग कडि काटी
अगनि में मिश्री धिरत मिनाय न्यामति
धरीत वा कोमो ॥ कुता से कद बेसा ॥ जाई
नारे दर बेसो कहे अयो ॥ ५१ ॥ सेनी ॥ कुता न्या

प्रतिष्ठापन जाई। मारे दरबेस कुता के तो
ई अस चिरत की या दरबेसा। स्याह के मन
में नया अंसे सा। पर कहै सुत्रता न सुनो गं
न दिवां ना। ये पसवानां मति कह जा नां।
कहै दरबेस सुनूना दानां। जैसा दीया ते सा
ही छां नां। पर सो ही करै करतूति कमाई
जो ही देह धरि भूगते आयी। तुम तो सही
अताह के बंदा। मैं काहा जां मूं आदमंदा।
पध। आगमवां नी कहै सुनाई। अगे ते क
ही कौन घासाई। तब दरबेस कहै समु
जाई। सुनो हो स्याह तुम सुरतिल गाये
पप। बलक सहर रहै ये क देसा। तहां के ह
ये दो ई नरे सा। ई बरई म अ बं दे ये क राजा
ये क बाम हू जो वा को आजा। पई दो बूं दे दो
य स्या न बंधाई। तीजा बूं द। जो नारा
हाई। कहै सुत्रतां न सु नू तुम सोई ये
पूरा बाली के सा होई। प७। ई बरई मन
मताहि होये। बलक सहर को राजा
सोई। मान गुमान राज सुख करे हो।
बिना बंदगी छोड़े देही। प८। सो तो जन
प्रसासनि को लेई। ई नं मे जाहि है ई न के

ताई॥ अब देखी नौर है ये कगई सुनि सुन
तां न चंच नै चये नै॥ पृथक् तब दर बेस को पूछि
जो ते शिखे ही जो निकै से दूटे जाई सो दर बेस
को हे समझाई जाते मोरी से हो जाई दि॥ छोड़ि
राज सकल सुख सो जा करे भक्ति मन प्रेम समो
ई दया सील चित साच सुहाई॥ दूटे जो निस्व
निगति जाई दि॥ स्याह कहै मोहि ते हबं च
ई सो दर बेस सति है नाई बार बार मोहि आ
निचिताई॥ सो दर बेस मोहि लेये बं चं ई दि॥
इतना स्याह मन कीया आ देसा॥ नही तं हकुं
ता नही दर बेस॥ तब ही स्याह मन कीया बि
चार॥ निहये है दो सिर जन दारा॥ दि॥ सा सी
कहे स्याह अब कै भिले पुर वै मन की आसा॥ क
द रूसी सनिय वाये कशि पत नही छोड़ पा
साई ध॥ रमै नी॥ तब ही स्याह मन ग्यान समा
ना॥ राज पाट सुपनां करि जाना॥ दोये दिने मे
फिरि पल्लवे आई राजन छोड़े लो न को ध्या
ई दि॥ पात बहम की नही रूप धरासा॥ जाते छा
डे तब तक की आसा पजे सा जीव ते सां तन धारा
की मसि बिधि जीव
सही ती रूप
धिक प्रिया सी हो

पू तत्प्रायस्सच्चिसेजबिच्छाई ६७ तहां
जायसाहोपौटेजाई ॥ येकदिवसचित्त
ऐसीआई ॥ ता ॥ हीसेजहमपौटेजाई ॥ म
ताधेककीन्हाठहराई ६८ ॥ उं पज्यासुख
घरीयेकमनदेखा ॥ जीवनजनमसुफल
करिलेखा ॥ पौटेपिलंगनीदजबआई ॥ स्या
हसोवनकोपहंचेजाई ६९ ॥ स्याहकहे
कोसेपौटीनारी ॥ क्रोधचढातबमारीनारी
बहोतक्रोधकरिमांरेजब ॥ ही ॥ बहोत
कहसीसहेलीतबही ॥ ७० ॥ बहोतक्रोध
स्याहतनधारी ॥ जूंजूंहसीसहेलीनारी ॥
तबसुखतांनअचं ॥ मोकीनहां ॥ अचर
जबातबूजिजबलीन्हं ॥ ७१ ॥ निक्किबुल
येआपसुखतांनो ॥ बकसंचूककरूंजीव
दानो ॥ येमोहिबासकहोसमुजाई ॥ भारत
तनकूंहांसीआई ॥ ७२ ॥ येहीबातकहोहे
येनिसंका ॥ तुमजिनमानोमेरीसंका ॥ त
बहीसहेलीकहेबयांनो ॥ अबतुमसुनो
स्याहसुखतांनो ॥ घरीयेकहमहसुखत
न्हं ॥ ताकारनिइतनांदुखदीन्हं ॥ सदास
बदायोसुखकरही ॥ तापरिप्रारकेतीयेक
परही ॥ ७३ ॥ कहाकरोमोहिसहेलीनांजाई

जासैं धनी हासी मोहि आधी राज करै बहोतैं
 सुख पावै॥ तब बूटै चो बरा सी जावै॥ ७५॥ पाचा
 वरा सी में कवू आपरा बिनां नांम नही होयै
 रै बारा॥ भक्त गुर मिलै तो नेद बसावै॥ तब
 ही जावै करै अनंदा॥ जन्म जन्म का मिटि जा
 यं फंदा॥ तब ही स्याह मन कीन्ह बिचारै॥
 है को ई पुरस नही या नाश॥ ७६॥ बांवार मो
 हि आशि चिताई है को ई प्रम पुरष यह भा
 ई॥ जो वेह कहे सो ही में अहं॥ तातै फेरि ज
 नान ही धरि हूँ॥ ७७॥ तब ही स्याह मन प्रेम
 समोई॥ दोऊ जोरि बीनती ली॥ ७८॥ धनि
 आग मोहि दरसन दीन्हें॥ पतल जीव पाव
 न करि लीन्हें॥ ७९॥ निरुपतु मदे हो बि
 पाई॥ पुरसरूप होय दे हो दीवाई॥ जब ही
 ले गनि स्याह घट चीन्हें॥ पुरसरूप होयै
 दरसन दीन्हें॥ ८०॥ आभा जहां अंग बहो
 होई॥ जगमग जोति बिराजै सोई॥ बिहोता
 नाति दीसै रूँ जियाराहे बि स्याह भयो ह
 र आपरा॥ ८१॥ तब ही स्याह मन बिनती ली
 ई॥ अमोहे नेद क हो समजई॥ कहै कबीर
 सुनौ चितला

आइ॥२॥ जो कीइ माने सब दह मारा सो
जीवत तेरे नव जल पारा॥ तब ही स्याह
भयो आधीना॥ चरन प्रछाति चरनां
मि नली न्हा॥ न त्रसत गुर मोहि दर
सन दी न्हा॥ अब साहेब की जै मम का
जा जाते न ही छेड़ ज मरा जा॥ ८॥ सो ही
नां म मोहि दे हो ब ताई॥ जाते जीव अमर
घर जाई॥ क० ५॥ हे कबीर सुनो चित ला
०६॥ सुरति निरति ते सब दस माई॥ ५॥
ज न मुनी ध्यान रहै लो लाई॥ गुर प्रताप
अमर घर जाई॥ ताहि घरि हंसा करे
अनंदा॥ जन्म जन्म का मिटि जाई कंदा
॥ ८॥ लब हो बिधि सो नारूप अनुपा
पर म धाम अनांद सरूपा॥ कीयो चाहो
०७॥ जो आपनो काजू॥ तो तु मरा ज को
डि दे हो आजू॥ ९॥ सत गुरनां मग हो
बिस वासा॥ जासू भिटे काल की नासा॥
ये सुनि स्याहं तब त को काटा॥ प्रग
०८॥ तेनां म ही गुन बाटा॥ १०॥ जब सत गुर
ने अलख लखाया॥ करि परती प्रम पद पा
या॥ ११॥ सादी॥ कबीर सोला स हस सहे

लीया॥ तुरी अगारा तस॥ सां इते रे का
रने॥ छोटा सहर बलस॥ १४॥ कबीर
गुर डोरी लागी रहे॥ सीस करै बकसी
साये क गुनां की व्याचली॥ कोटि
गुनां बकसी सा॥ १५॥ बल कबीर की
कीर मैनी संप्रसा॥ सत नाम कबीर
सत नाम कबीर साहिब की दया लीवतै गृध
कासी छिन सिक सिक इ बोधा॥ कासी बेस
कबीर जोये कू॥ हरि भगत न कीप करीटे
कू॥ विधना बनी बोलैये ह॥ बिस नू बिना न
इसन दे ह॥ जो तुम माता तिल क बनावो॥ तो
तुम हमारे इसन पावो॥ मुसल मान दे हम
री जाती॥ माता तिल क पहरां किह जाती॥ वो
हरि बां नी बोलैये ह॥ रां मान दौपे दिखाले
ह॥ रां मान दौपे दिख जां नै॥ कौन क है
कैसे पद चो नै॥ रां दति रहै मार गे जाइ
वो सेव क॥ निकसे आइ॥ रहै कबीर पंथे
जाइ॥ रां मान द असनां नाक आइ॥ नोकर
लागी तास सरी रा॥ रां मनो म॥ तुम्ह
से बीरा रां मकहत धर अपनै अये त
ब कबीर माता तिल क बनाये क
करै सो मायन जा .

नं आइवै। सजन कुंठमनार। मिती रो
वै। बिकल भये काहे परखों वै। कहो
कबीर तुम को। किन भ्रमाये। ये पाव
उ कहो ते त्नाये। मका भदी ना हमारे।
सा जा। रो जा कलमा बंगनिवा जा। हि
इतुर कबूजिले हृदये ई। अपनी रा
ह चले गति हो ई। अचरज भयो न
ग्रं मंजारा। रां मानंद पै गये पुकार।
मुसल मान जुला हाये क। जिन ह।
रि भगत न को प ह स्यो भेषू। कीर
तन करै भगत कूं ध्यावै। बूजे नां वतु
मारा बतवै। तब रा मानंद नै तुरति
बूबु लाया। आडा पार दातं हा दिवा
या। श्री रामानंद उं बा चै। कब हम
तो कंति दिछा दी न्हा। ते मूठ हिनां
महमारा लीन हों। कबीर उं बा चै। ह
स्वामी राति रहो। मार गं भै जाई। तुम
सेवा कं नि क से आई। तुमरी गो कर ला
गी मोरे गाँ। हं मत बतें मानें गुरु बिधा
ता। तब तुम मो पैरां म हाये। हं मरां म
कहत घर आपने आये। रां मानंद उं बा
चै। भ्रै सैरां म कहै सब को ई। इन बात

ननां हरिजन होई॥ जब कबीर कहें सुन
गुरमेरा॥ गुरमे तै सो जम का चेरा॥ गुरमे जटे
जे जमे ही चंडारा॥ जूनी जनम भरमों
संसार॥ कर डी बात कबीर की चीन्हो॥
रां मानें दमन संसो कीन्हें॥ सेवा पूजा की
न्ह बिस्तरा॥ रामाला मुकट मांदि अरु जा
रा॥ तब अंतर गतिकी न्ह बिचारा॥ किसे व
की जे सेवा उपाचार॥ कबीर उवाच॥ क
हैं कबीर सुनो बात हमारी॥ माता गांठि
है निरवारी॥ ओंसे पूजा करो गुसांई॥ मात
फतवा गल मांही॥ निरमल दिखि कबीर
की चीन्हें॥ तब आडो पर दोहर करि दी
न्हें॥ तब रां मानें दं अपनो करि लीन्हें दं
मांछे हाथ अटल करि दीन्हें॥ दोहरा
रां मानें द गुर पाईया॥ चीन हो बिम्व गिय
न उपाजी भक्ति निह कवल॥ पाये पद नि
रखान॥ रां मानें द को सिखे है॥ कबीर नमत
को संता भगति दिदा दोष न ओत चो
गा वेद स अनंत॥ द्योपई॥ कबीर नमत
गति चित लाई॥ छोड़ी माय के कद
पहेले तो दास तन की नहें॥ बदे
वसंत न कहो न्हें॥ कपर कहे

ग वे बधु होये सो याये सुता वे ये कदिना
हर अंतर लीया दरसन आये चौहटे
दीया सुनौ कबीर तुम्हारे नां क
ताते आये तुम्हारे नां क नृगत को रू
स्यो त्रिंति जीनू बस तर मागे बहोत अंधी न
आधी फारि दीन ज बला गो सगल देह
भग हुन गो द ई सुरति बार नां लाई त
ब कबीर मंड नां जाई हाटि बाट मै रहे
लुकाई घर के काहु बर न पाई दि
नां तीन के मान स भूये बाल करे वे ब
होत बिदुये सब हरि ऐसी की नही द
यो बाल दिते घर बे विगाया बहोत सै
जले आये डारी त्वे बल धां बा घरि में
ठारी नित रध रो कबीर की माता दी
नही रांम तुम्हारे दाता के सो रांम कहां
को दाता सुने कबीर करे अपघाता
को हे बिर कतै ते आया का को धन कि
नने दे पठाया कबीर क बहुते नही मा
गे लाघट का जो मे लै आगे सुनि
माता बात हमारी का सो बसे नां ध अ
धिकारी ताके इस न राजा ये क आये
जिन बहोते रो दर बिचटाये दरिब

लेनहीबेठातेरा॥तबराजाउठिकियानि
होरा॥मालिराजाबिनतीतेरा॥सौजमगा
इमहोछाकरी॥तबराजासबसौजमगा
इसोकबीरघरदीन्हपगई॥घरीयेक
भुवैआवे॥लोगजात्राइसनपावे॥तबके
सोअंतरहोयेगयो॥नेदआपनांकहना
कह्यो॥जनेचारिकबीरकोंधाये॥जैसे
तेसेंधारलेआये॥स्वामीतुमकोनेटकह
आई॥कैसरचोकैधरोउगई॥देयीजाये
आपनेनेना॥तबपातिद्यानेसबकेबेना
कोनदईकहातेआवई॥तबमातासब
घासुनाई॥मनहीमनकबीरतबजानी
क्रियाकरीहेसारगपानी॥साहिबमेरो
ऐसीकरिहै॥अबजीवरातुमकाहेडी
है॥दिहा॥तननांबुननांकाडिकै॥रहे
रनचितलाया॥अबतेराभदयाकरी
चिपचिमरेबलाये॥नक्तबुलायमहे
कीनहांकह्यो॥नराघोसगतोदीन्ह
पेवामहनऔरसियासी॥करनेच
कबीरकीदहासी॥राजायाहीति
गयोदरबू॥देधातोसुदरनकोसर
नामहनकहाघाटिईन

जासबकोईमानी॥इनकबुनारावीका॥
निहमारी॥नग्रमाजतेदेहनिकारी॥ये
ककहैनीकेधरिकाटी॥जातेमिंदेहमा
रीआटी॥येककहैहमतापरिमरिंदे॥जो
कबीरकोउपरकरिंदे॥ऐसोरोसमनक
रिकरिआये॥होतेनग्रमेंसबउठिधाये
गुपतचक्रलेआप्रसिंयासी॥कोतगा
देखनउमगीकासी॥चौहदिसबायरि
घेरीआई॥तबकबीरमितेसनमुखज
ई॥आदरकरिनीकैबैगरे॥दयाकरीके
संपगधारे॥ब्राह्मनकिरोधकरैडुरका
रा॥निकरिमंगरतेनाहोतोहिमारा॥क
बीरउवाचा॥कोनचूकतेमा॥रोमो॥
ही॥मैरामनांवचितरावोपोई॥कैमैब
टपराईमारी॥कैमैतकीपरइनारी॥कै
मैदरकहैकोफोस्यो॥मानसमास्योके
धनचोस्यो॥नगतिकरीतेहमनबुला
वे॥सुदरलागतेआनिजिमाये॥अबतु
महैमैरसोईदेरे॥जातोहमतुमलागन
हैरे॥गीगामी॥गीहोतीदेधी॥कबुना॥
बोलेकबीरबबेधी॥अबतौअननही
घरमाही॥मैलेआउतुमबैगेहाही॥उत

करिकबीरउंगिगदऊ॥केसोकेमनसा
सेनयेउतबहरिकरीकबीरकीकला॥
साधेदरबगेबकाधरा॥सोइदरबबनीया॥
केदीन्ह॥जातिनांतिकासीधातीरूपमैदे
चावलयांडबहुकुती॥सकतरसोइधो
तसंजुगती॥जनचाखिमजूरतहायलि
सोइसोजलेकबीरधरिचाले॥बाम्हनदे
खिनघासुखभारी॥कोइनजानेचिरतर
मुरारी॥जनकीमहमाअधकबठाई॥ज
नेजनेकोसेरअठाई॥येककहेजुअ
हेधनपाई॥सोरा॥जसोकहीयेजाई॥
अककहेनीकोरेनीको॥अतोउदर॥
देयोहेजोवको॥दिखनांपानदेतसुख
पायो॥तबकबीरसबकेमनभायो॥
गयोकिरोधजबस्वारथनयेआध
निधनिंकरतअपनेधरिगयेउदी
रा॥साचोभक्तकबीरहे॥कासीप्रग
आथ॥जोसाधनकीनिद्राकरोसो
रकमेजायो॥चौपे॥जहांकबीर
हांहरिगयेऊ॥अनपहचांनेबाम
अयेऊबेउंकहाकतहेनाई॥क
रकेधरकाहेनांजाई॥सबकाहे

द्वार साक्षी जो पता वोटे कोई ब्राह्मन
और संन्यासी तीनों ये देवो मोक्ष
कंदीन्हों में दंडावल सेर अठाई धि
रत संजुगति और बांडु मिठाई इतने
सुनो भयो सुख भारी कै सो राखी बात ह
मारी तब कबीर अपने घरि आयें हो
रि के चिर तरना का हूपाये ब कुत सो
ज देवी घर मांही अजहं ब्राह्मन ले
ले जाई धनि धनि बोले सब कोई तब
कबीर राख्यो मुख गोई धनि धनि बोले
सब मरघ हो कृता मेरा मैं तो सदा संभ
का चेरा हरि बिन को न बड़ाई देही ह
रि बिन को न अपने करि ले हो तब क
बीर की तारी लागी न ई प्रतीति भरम
गयो नागी प्रेम सहत हरि के गुन गा
वै लोग दूर ते ई मन पावै सो नाह
पाक परा देही दास कबीर कहे ना ले
ही भौ जन छाजन इतना ले हो आव
सहत जो हरि जन देही राजा प्रजा क
प्रत्यागे ताते अधिक जातरा लागे नि
मदिन भीर होत अधिकाई सुमरन
कृतांचित चलि चिल जाई तब क

बीरये कबुधि बिचारी॥ लोक बड़ा धिंधरी उ
तारी॥ प्रातः सभे गनि का के गये ऊ॥ लीन्ही
संग अचंचो नये ऊ॥ गले बाहु गनि का के
धाली॥ गनि का ऊठि कबीर संग चाली॥
नरि करवा चरनौ दि कली या॥ मद के धो
ये नरि नरि पीया॥ त्रै गनि का बजार में नि
करो॥ लोग न जानी गान सब बिसरो हासी
करे नंग के लो गू॥ नक्तन के मन उष ज्यो सो
गू॥ ब्राह्मन बनीयां अधिक बिगो वे॥ हरि
जन देखि देखि मुख गो वे॥ भक्ति कियो चा
हे सब को ई॥ नीच जंतिये भगत निहो ई॥
दिन दस भक्ति कबीरा कीन्ही॥ ये दे दे सो
गनि का संगे लीन्ही॥ चले कबीर गये हेत
हा॥ नगर को राज बैठे गे जहां॥ और दिना
आदर कबु नर लेते॥ सिंघासन सूं उठि बै
ठन देते॥ ता दिन आदर कबु न कीन्हां॥
सभा के बाहर बैठनां दीन्हा॥ सब ही को
मन संसे नये ऊ॥ त्रै सो नक्त बिगरे कांग
ये ऊ॥ दीहा रा॥ नयो अचंचो नगर मै॥
सब को ई करे बिचार॥ निंदा बिंदा सब क
रे॥ सिर पर सिर जनहार॥ तब कबीर पा

नीपगठारा॥ हरिकोपंडो जरं नत नंबारा
जबसं सैपूछै राजापती॥ कहोकबीरतुम
अपनीगती॥ कहं चिरतरकरिदिमला
वा॥ ताकोमरप्रकबूमोहिबतावा॥ का
हैंकबीरसुनौहोराई॥ कहैसुनेतेकोपति
याई॥ जगननाथकोपंडो जरया॥ अटका
फूटिपावपरिपरीया॥ सोजलसीचिलोयो
हैराखी॥ सकलसनादेयहैआंखी॥ तबरा
जासबकोमुषचाहै॥ साचीकहैकयो
बोराहै॥ तबहरखेकभक्तकहैसमजाई
राजाप्रजासबकेमनआई॥ छाकेअनछा
केहीडोले॥ दासकबीरमिथ्यानहीबोले
राजाप्रतरीतुरतिलिखाई॥ घरीमूकुत्थ
बिसरनिजाई॥ जगननाथकंहैतपग
ई॥ कबीरउठिअपनेघरिआई॥ दिनदस
मैसोपकुचौजाई॥ दाज्योपंडोलियोबु
लाई॥ कहोपंडाआपनोसतभावो॥ कैसे
जस्योतुमहारोपाअ॥ पंडैकहीपसावत
जरीया॥ अटकाफूटिपावपरिपरीया॥
तबकबीरपांनिलेध्याये॥ कृपाकरीपा
गआनिबुजाये॥ इतनीसुनतहिबूजैसं

सा कौन कबीर होत दोह कैसा ॥ जाति जु
 लाहा का सीबासा ॥ सब को ईजां नै हरि को द
 सा ॥ जगल नाथ के इसन आये ॥ हरि यह
 रवि हर के गुन गाये ॥ अब कबीर की देखू क
 या ॥ हित नीक हत अचा न क आया ॥ सब स
 तन मिलि इसन पाया ॥ हितन के मन आन
 द आया ॥ सो कबीर रहें मदेयो तब ही ॥
 पावन रत जल डोस्यो ज बही ॥ तब ही हित
 मन आनंद की ॥ ईला टप पानां धर को
 दी ॥ दिन दस में कासी चलि आये ॥ लो
 गनगर को बूझ न ध्याये ॥ हित कह्यो राजा
 सो ने हे ॥ हे सपडासू कियो निवेदा ॥ पंडे हम
 सूक ही जो साची ॥ सो हम तुम सू बून राखी ॥ क
 तब राजा मन संसोत्रयो ॥ सुनत सदे स अचं
 भो नयो ॥ अब कबीर सू मिलिये जाई ॥ ना
 तर क बूना होत भला ॥ विसाहि बहं म
 अंतन जांनै ॥ सब सो हे जो लीला गंनै राज
 क हीरांनी सू जाई ॥ नई कथा सब कहि
 समझाईरांनी कहें बिलम जन करीये ॥
 जाये कबीर क पावेन परीये ॥ राजा कहें
 भैंडर मूजारी ॥ दे इस राप को लेई

ॐ रिसांइ दोहा गलेकुंदरी बाधिकरि
सिरपरितिनको नारा कुटमसहत राजा
चलो सब जग को तिगहार बीरसिंघ
देवबधलो राजा कबीर के कारन सोई
ऊलता जा देखि कबीर हर ते उठि ध्याये
राजा देखि बहो सुषपाये डारो राजा सि
को नारा हमारे जीवनां हि अहंकारा रा
जा जाये डंडो वत कीन्हं अकमाल कबी
र तब कीन्हं येक पावरा जा गहरहे उ॥
दूजा पावा कुटमस बपरै ऊ बक सो स्वा
मी चू कह भारी तुम बिन कोन करै रव
वारी हम कपीठि जिन देहो गुसाई ब
ऊरि बात का हाक डुबनांइ कहै कबीर
भलो तुम कीन्हं हम कं आनि बडा इरी न
बडे सो औरै देह बडाइ बडे सो बाटि बांटे
धन याई बडे सो सांच ऊठ पद चांने मू
रख काहा बडाइ जांने तब राजा मन आ
नंद भयउ पावला मित्र पने धरि गये च
कबीर आपनूं नांम डुराई जू कुलवती
गरब छिपाई दिन दिन प्रगट होतै हे सो
ई करनी कैसे छा नी होई जो कोई अप
नी करत बडाई सुख नां हो पावे जरि जरि

जाई। अपनी कृपे आप ही पर दे। कैसे मि
 है काम नींद रहे। ऐसे सब संसार नुलाना
 हरि सुभरो। जिन मारग जाना। बहोरि
 कबीर की चढी बडाई। दरसन देवन ड
 नीयां धाई। बिगरे काम जोर म सुधा
 रौ। जौ जल बूड तरंग उबाये। काजी मुल
 ना करे उपाधी। ब्राम्हन बनीया बहोत
 बक बादी। बेर करे अरमार कहे। देषि
 देषि के सब ही जुते हैं। ऐसी नाति बहोत
 दिन बाते। निरभे नजे कबीर कनि चिते
 और कबीर की माता छोटी। भक्ति ना ना
 वैप करे छोटी। धर में नारि करे निते रारी
 धनि कबीर जो रहे संभारी। बाहरि बेर
 और धर मां ही। कबीर उबरे हरि की बा
 है। भक्ति को बेरी संवे संसारा। आदि अ
 त हरि राख न हारा। ये कसे मे ऐसी नयो
 आई। बिधि संजोग भि दोन ही जाई। स्था है
 सिं कंदर कासी आये। काजी मुलनां के मन
 ये। चले फिरादि बार ना लाई। ब्राम्हन ब
 नीयाति मियां जाई। और कबीर की माना।
 दो वरी। समजि नाहि न श्रम तबो वरी। सब मि

नाम ब्रह्म नैव ह्यसौ नृत्ति मुक्ति में आ
ये गुरु प्रसाद रंग गुण गायि रंग प्रभरो से मि
नून का हूँ जो पैरा जारं करि सा हूँ दोहरा
राघन हारा रंग मे है भारन सँके को ये पाति
साहसूना डरु हूँ करता कोरे सहोये क।
ठिक ते बदि धाँवे का जी बिचि बिचि बा
मन पारे नाती प्रात्मा तिल कहर करि डो
रो तापी छै पाथर स्तमारो जब हवा न क
हे सब को ई मुसलमान कू का फर होई
कहे कबीर सम कि देयो नाई तुम ही का
फर दो जग जाई कौन बाते बंभंग उक
टाई बकरी मुरगी किनि फुरमाई बि
जित ने देये आत्म घाती जिन की लौ जम
तौ रैछाती काजी ब्राह्मन नार के जां ही
रंग कहे जिन कू नैनां ही सुनत सिक
दर्शने रियाई जां नू दूत बे सुदर नाई
जां नू का लेकी पूछ प्ररोरी जां नू सो बत
सिंघट कोरी जां नू बे सुदर मे लही होली
जां नू चीता की आँखें बोली गाफिल सं
कना प्रानी मेरी अब देख कर प्राति मे

तेश बाधिपगमैमेहीजंजारा॥लेबोस्यगं
गाकेतीरा॥हुकूमकरतकबीरगहलीन्ह
मामधारगंगामेदीन्ह॥द्वेजंजीरपरजल
मही लागेतीरबूडेहनाही॥किरोधन्रय
असुरतबनामै॥जलोमरह्योतोअबको
राये॥बहुरिबाधिमंदरेमेडारा॥आसपास
पावकप्रजारा॥पहोपहुतासनओरसीत
तनीरा॥हरिहरिसुभैरेदासकबीरा॥कबी
रकीकरनाहरिकरितीन्ह॥पहोपबास
पावककरिदोन्ह॥जरिगयोमंदरबेहउडा
नी॥सहीकरामातिसबकहेजांती॥अधि
करूपप्रमेसुरदोन्ह॥देहबोबटनाजन
कीन्ह॥जैजैकारन्रयोजगमाही॥काजी
बामहाराबहोतरिसांही॥नाटकचेटकगुरु
हजांनै॥स्पाहासिकंदरदुमनमानै॥इत
नीसुनिमनउपज्योरोस्य॥अबकबीरतोहि
कोननरोस्य॥माताहाचीतुरतिबुलाया॥
अपनीछाहबेधताआया॥संकनाकरेम
हांवतकेश॥बडेबडेरावतरनैमेमाशा॥
सोनेंकीसक्कलबाध्योरांधे॥दोनोंघास

दूरतें नांयै॥ सौनेका आक सदां तम
ये बिचिबिचि हीरामोतीलातजराये॥ न
गरमाज जो बूटन पावे॥ प्रांन समौ रे कौट
टहावै॥ रंन भैखत मा रेखां के॥ आट कि
बत गावत है ताके॥ भैरु का तम हार घ
पो॥ तेल सिंदूर पूजनां टापो॥ पूनी बहीत
नां भर न जीत॥ पंच चंते तब मा वै गीत॥ स
दा सिंगार घंट चोर सी॥ ईड लो कं मे भौ
उपजा सी॥ सो कबीर कौं आनि ऊ कायो
पीछे चंते आगे जब आयो॥ दोहरा॥ का
ल रूप जब आईया॥ सब को ईचा ले आ
गि॥ दास कबीर नां डिगै॥ रहे रं प्रलौत
गि॥ जौ प्र॥ सिंदूर रूप के सो डर पावे ता
तै हाथी निकट न आवै॥ पीतल दोन कौंद
रसन दीन्हें॥ मोडे गयंदयरा जब कीन्हा
पीछे स्पाहा क सिंदूर दीग॥ कबीर के आगे
सिंदूर ये कबैग॥ पीतल वां न हसती करि न्या
रा॥ सही कर मांति है दास कबीरा॥ सांचा रां
भकबीर तुम हारा॥ अब कै राखो प्रांन हमा
रा॥ काजी बा महन मर मन जांनै॥ सिरज

नहारतु फ़ारामांनै॥ दिखिहीनता दासक
बीरा॥ अबजिन डरयो रघैरघूबीरा॥ जो
नसिंकदर अबके डरते तो हरिनिहचे प्र
लेकरते॥ दासकबीरके डेजनही आशि॥
ताते असुरस जानही पाई॥ जो कोई आ
गो ओगनगंनै॥ ताकदास भली करिमा
नै॥ जो जन देखै हरिको कियो॥ सो तो हरि अ
पनूंक रितीयो॥ सबके सो अंतरहोई जाई
जब असुर गय कबीर पाई॥ मांगो सोनां मा
गो रूपा॥ मांगो कपरा अधक अनूपा॥ मा
गो गावप्रगनां घोरा॥ तुमको दीजे सो सबये॥
रा॥ कहै कबीरनां मांगू भाई॥ राजारक सबै
जिनयाई॥ जो मांगू तो नक्तिन होई॥ मनदि
ठरवै हरिजन सोई॥ हाथ जोरि कै मायनि
वाई॥ दासकबीर अपुने घरि आई॥ जहां
जहां कसपातहां हरि दूग॥ काजी ब्राम्हन
होयि गये कूग॥ अपुने घरि आय दासकबी
रा॥ गुरप्रताप भयो अप्रसररीरा॥ बहुरिक
बीरकी लागी जाता॥ मिले संत जन बूझी बाता
हसि हसि बोले दासकबीरा॥ चरन सरन
रघैरघूबीरा॥ पातिसाह तब कसनी दीन
हा॥ जब भैरे जीव संकन कीन्दा॥

नग्नगतको नही बल होई ॥ तिनको प्रारि
नसे के कोई ॥ कोटि पाप जो भक्ति न सोवे
भक्तिके पीछे हरि चलि आवे ॥ जो भगत
न सूरहे निनारा ॥ जिनके नाहि संभरष
वारा ॥ जो भगता की निंदा करही ॥ बडु त
पाप होई नरके परई ॥ जो भगतन की कस्त
है हासी ॥ तिनके गते दई जम फासी ॥ सब
जीवन मै ये के संभू ॥ हरि भक्ति न बिन स
रै न कामू ॥ गुरु गोविंद भक्ति मै चीन्हें
ताते मेरा कबुना कीन्हें ॥ दीहरा ॥ जल
बोरा पाव कजरा ॥ बिन सो नाहि सरीरा ॥
गजतौरत हरि राखीया ॥ निरभै भये कबीर
ऐसी जाति हरि की सो उबारा ॥ जहां तहा ह
रि भये रघवारा ॥ और भये ब्राम्हन मत
कीन्हें ॥ पंचदेव कीन्हें ॥ जल हाह
मै बहोत दुष दीन्हें ॥ पंचदेव कीन्हें
अनहोता ॥ छल बल कीन्हें मता बहोता
डाद सब नमुड मुडाई ॥ माता तित
क सांग एहराई ॥ जिनक सीख गुपत च
लाई ॥ द्यो हो देस के साध बुलाई ॥ दीन्हो
दल कबीर के नां ॥ असी को सज हांल

या जीवनजनममुफलक करि लैया ॥
मकबोर सदा बिनि आई ॥ ब्राम्हन बनी ॥
रहेषि सियाई ॥ बरस येक बीतौ हे ज बही ॥
हरि अपठ राप गइ ज बही ॥ जाये देखो - तु ॥
मदास कबीरा ॥ बसे बनारस भक्त हमारा ॥
कति बलि ॥ जो अंग लगई ॥ बाबा रह ॥
कह समझाई ॥ आइ अपठ रा दीन्ह दिया ॥
इ ॥ मानूं सुख देवरं ॥ आइ ॥ जा के रूप नापू ॥
जैकोई ॥ मधूर बचन सुनो वे सोई ॥ चंचल ॥
चपल डिष्टि कराई ॥ जानूं बन बिहारे मि ॥
गफिराई ॥ चित वत चित सबही को हरे ॥
मानस कहं बिरह हठे ॥ दोहरा ॥ पांचू ॥
इंदी बसिकरी ॥ चिन्हितियो निज तत ॥ क ॥
बीर हरिका भावेता ॥ गावे दास अनंत ॥ सु ॥
नौं कबीर तुम मो कं राषो ॥ हरि के चरन क ॥
वत रस चाखो ॥ कां मचे सटा लिते बोले ॥ क ॥
बीर को मन क बहना डोले ॥ हम स तुम सु ॥
कौन संगता ॥ पां नी अगनि नां लां मे मा ॥
ता ॥ तुम हो रे पा सिर घुना चपल गइ ॥ ह ॥
मदेन महातम तुम कौं ॥ आइ ॥ मधि मजा ॥
तक मीन हमारी ॥ तुम ज हा ना ह न हा ॥

प्रलम्बकपूराफुल्लितजोश्रा

शिंगू

परितारघं बहशि। एकजोधमांघोटी
येकजोजयेहिवालेसोजे॥ ३५

हमोरा॥ तबलगफीकाजनमत्तुमहारा

रा॥ तबकबीरबोलेसमजाई

सुरगलोकमें

ही ठिग

नाजेंमरिहो॥ नीचदेषमनसंकर

हाथ जोला उमाई साहिब मेरो बहोता
रिसाई कांम बांन नां लागें तुम्हारे हरि
सत्वागे प्रांन हमारे जिन जिन करी तुम
हारौ आसा तिन कं निह चैन रक्कनि
वासा जो नर तुम संप्रति बटावे सो
जीव कबहू नारां ममितावे धरिवा
ल ककवाप निहारी निवस्यो चत्वे
सरप कं मां सिरजि धर उपरिताहि डा
री ई नूतौ मेरो बल कमाशे सो मन प
छता होई तेरो संग करौ जो कोई होत पि
टारो नीतरिकारा भू सो जां निमी मे अहा
रा कादि पिटारो नीतर गये उ पाई भुज
गमोन होये रहे कं ऐसी गति ता ही की
होई तेरो संग करौ जो कोई छोडो माता
आस हमारी सुरग लोक कहा प्रभयो उ
जारी हो हारा बहोत जतन कि यात्र प
छरा नयो कबीर अडोल गई अपछ
रा धर आपने रह्यो कबीर को बोल हरि
सूक हो अपछरा जाई कबीर के आगे
कबू न बसाई सकत अगहम मोहन चा
हें अति अडोल नां पायो घाहा जोर
बिपक्षि मर्न देकराई प्रबत फेर फार जो

धरही॥ जो धूद ठन देत पयां नां॥ तौं ह कब
 र नां होत अयां नां॥ प्राया सुख तिन सा देखा
 जोग जुगति कबीर बिसेया॥ जब के सो
 अप अप नां करि लीया॥ दरसन आयो चै
 हटे दीया॥ संख चक्र गदा पद मूबिर जै॥
 कोस तमने पीता प्रखंड जै॥ भिगल त्या
 गरुड आसन सो है॥ मां धिं मु कट देखि जग
 मो है॥ प्रवन कुंड तने न बिसाया॥ मु
 जा चारि बैजंती माया॥ नख सख सुंदर
 मस शिरा॥ गुंज गले दस नो बल हीरा॥ गज
 मोती इन की दुलारी कंग॥ ऐसी जाति
 आयो गोद बिंदा॥ देखत सीतल नयो सर
 शिरा॥ चरन कवल गहर हे कबीरा॥ हरि
 संपति की रूचि उपगोवे॥ तीन लोक के
 सुख दिखोवे॥ मां गुं मां गुं भेदे हो सोई॥
 जो तेरे प्रन ईछा होई॥ नो कहो तो पा
 होमी को पति कसं॥ मां धे छत्र अटल क
 रि धरु॥ कहो तो ईद लोक तेरा यू॥ रास
 अटल सति करि नाय॥ कहो तो कामा
 ति देह चारी॥ गडंत जरंत उडंत कुकारि
 को हो तो सा
 इनि

भडारा नारद सह त अति बोधै रंगा सना
कादिक प्रलिवै र संगे कहै कहा लगे
संब सुख फीका ॥ नये सभा पति देह समीप
हरि अपने गुन आप ही गवे ॥ जन को जस
दे प्रति बढावे ॥ भक्ति न के संग ला गोडे
लो ॥ नक्त न के घट बठे बोले ॥ दोहा सु दास
अनंत कथा कहै ॥ हरि की कथा अपार
कह्ये क कहै कबीर ने ॥ सत गुरु के उप
चार ॥ इती श्री कासी चरितर सिकंदर बो
संपूरण सभा पता ॥ राम जित लो व न जग
नाने म न श्री गने शायन मः श्री मते क
म न जग न ॥ सो र ॥ जय जय नानु
कुमारि ॥ जय राक्ष न सरन सरन ॥ अ
पने विरद विचारी ॥ पारी पाल रुदी
न जन की रतिल लीत न दार ॥ करु
णा निधन मरा वरी ॥ छाये जगत अ
पार ॥ बंसी अलिकी स्वामिनी ॥ गोरी रु
प निधान ॥ प्रीत म की प्राणे स्वरी ॥ तुम
हे परम मुजान ॥ करिय कां न जन की
नरी ॥ चा निरुपा की ग मि जयति

निकुञ्जविहारीणी॥ कीर्त्तनेनिजपद
दासि॥ कुविरिकिसोरिअलीको॥ स्वा
मिनिश्वत्तसप्रकासाच्छायरह्योतिज
लोकमो॥ अद्वश्रीद्वनकोबासालनी
अलीकोदीर्ज्ञया॥ जयबृंदावनधाम
जयजमुनेरबितदिनी॥ सबविधि
पूराकोसाकरनहरनबाधामक
लाजय॥ ललितेखकुमारि॥ जयबेसी
गुरुगुपणी॥ मीरीओरनिहारि॥ हाहा
छमिअपराधको॥ सरणागतप्रीतपा
शधगायेरसिकजना॥ वृथाजातयह
काल॥ दरमदीजियेबेगिमोहि॥ रंग
रंगीलेसेतरंगेजुगलरमरंगमो॥ तिने
कोखजसअनसतदपिजथामलि
गायहो॥ ए॥ चोपई॥ श्रीगुरुचरन
कवलसरनोके॥ सेतनकीमहिमा
कबूगाऊ॥ कलिमेंनामकीरतनसा
रातिहिमुमरेजगहोयेउधारा॥ कछ
जजनकेसबअधिकारी॥ वरणाश्र
मसबहीनरनारी॥ हरिहीनजेतेस

लपुतता श्रुतिपुराणस्मृतिगावत
ता ॥ त्वमतजोतिजियलखचौर
॥ कदीनाहिकबकजमफासी
वारिखोतिमधिसंततफिरही सही
मेकटजनमेअरुमरही ॥ नरक
नकेबहोभोगतभोगा केमेसिंदेक
मेमयरोगा ॥ मृगविष्णाजगकोबि
वहारा ताहीमेजियलुभोअपारा
अमेकडुयमधिस्यामसनेही क
रुनासिंधुदेतनरदेही ॥ नरथखंड
पुनिजमुनातीरा ॥ ओसीकपाकरी
बलबीरा ॥ देवादिकऊजाचतओ
ये यहनरतनहमपावेकेमे क
रिमतमंगजजिहरिनामा तवपा
तिश्रेविश्रांमा ॥ ओमोर्ततमनर
नपायो ॥ नृत्योमेदविषेरसखा
॥ मोहरजनीसोवततेजागि श्री
रिचरनकवलअवुरागि प्रत्त
पतिकोचहेर्नपाय सोमतमंग
॥ ॥ अत्रनिधितरनन

सतसगा॥ तादी मोहियरं चो कंशा॥
॥ सतसगतिञ्जधारससाशा॥ यदीक
हतकृत्विबार्कवारा॥ ताते सतस
सागमकीजे॥ निश्च सांनिलानपह
लोजे॥ सतसगको मुनो महातमा॥
ताते मिटे सकल संसेलपामहि
माञ्जमिहसकेकोगाई॥ सतिप्रमा
नवरनोचितलाई॥ लिखिहो सक
लपुरातनसाधी॥ सोविचारिकेवि
नञ्जतिलाधी॥ वरनी मुनिनपुरा
ननिमाहि॥ कही कृजेतीकजांनी
जाही॥ कवि विजिप्ति॥ येः प्रमाइ
मलकोमलो ज्जलगतत्पीपुयधारा
धरा॥ प्रोक्तिप्रोदिविराजमानरसा
नापाशेश्चिरवधातानाकले
कलाकलापविलसत्याडित्यवि
ख्यापितश्रीकृष्णपित्रतान्त्रणे
वतिसिरसातदोजनोपक॥
लोपई॥ ब्राह्मणचत्रीवैस्पतह
विद्वानाविजतिजप

विप्राद्विषदगुणयुता
 द्रविदनाचपादविंदविमुखातश्च
 पंचवरिष्ठमन्येतदपितमनोवचने
 हितारथप्राणपुन्यतिसकलेनतुहिर
 मानः॥५॥चौपडः॥सूडशीलस्वपचाध
 मजोर्दत्तगवदत्तक्तिपरायणहोर्द
 त्तिनिहिजातिकहिकरैजुतरका॥मं
 दबुधितेजोरोनृका॥६॥आदिपुराणे
 श्लोकः॥सूडवाचगवदत्तं॥निसादं
 स्वपचंतथा॥वीक्षेतेजातिसमानं॥
 मजातिनरकंध्रुव॥६॥चौपडः॥ऊ।
 णांअध्रुपुलिंदकिगता॥आशीरकं।
 कजवनस्वमजाता॥हरिदासनके
 नैन्नावे॥होयपुनैतातागवतगा
 द्वैअन्यन्यहरिभक्तिहीधारै॥स
 ण्मातंकौतनछिनतारै॥द्वितीय
 कंधेश्वकवाक्यश्लोकः॥किगतऊण
 ध्रुपुलिंदपुष्कसान्आशीरककायव
 नाःखसादयः॥येनेचपापायडपा
 श्रयाः॥तस्मैप्रनविष्णु

वेनमः॥॥॥चोपई॥कहतवचनये
पंकजनेना॥सुनिअर्जुनबुमरेवेन
मेनकचलेजहाआछेचलोजा
भुमैतिनकेपाछे॥तिनकीपदरज
मोवपुलागो॥नवमेरोबितअतिअ
नुरागो॥नक्रनकेपायनसौलगी॥हि
मिमुक्तिगततगमगी॥८॥आदि
पुरागोश्लोक॥यइत्तायत्रगछेति॥
तत्रगछेमिपाथिवसक्तानांमनु
गछेति॥सुक्तपोमुक्तिनिःसहा॥८॥
॥चोपई॥पुनरूपसागरनेउलही॥
तमअज्ञानविनासनिपुलही॥जद
जाकीसहसंगविराजे॥अहामयप
ब्रवतिहिमाजे॥यहविरक्तिबली
तिहिमोहो॥प्रेमफलजाकेमनमो
होघनआनदकीबरखाबरयो॥र
सवरखायरसिकजनसरयो॥ध्वेय
ईसृईहिनिधिकीदानाअतिउ
दारनुवनविखाता॥असहरिच

वसंव न हारी ॥ १ ॥ हरिश्चक्रितिकल्प
तलिकायां लोक ॥ पुन्यो नो धिन्नवा
तमो विघटिनी सत्यगमूलोत्तमा ॥ श्र
द्धापद्मविनी विरक्तिलतिका प्रेमसं
नोजला ॥ सोऽननदरसावहाच ॥ परमै
धेया विभूतिः परा ॥ मैया श्रीहरिश्च
क्रिकल्पलतिका च या तस्य तां धीतये
॥ चोपई ॥ कवलपत्रपरजलकनतै
मै ॥ उद्धरत न हीय कपलजैमै तां
ते जीवनचंचल अति ॥ ताहिलयनहे
कोऊं विमलमति ॥ छिनऊं सजन
संगति करई ॥ तिहि नो काच टिन्नव
निधितरई ॥ सत संगति महिमा यह
मही ॥ सोही हरिश्चक्रिलता मधिक
ही ॥ १० ॥ नलीनीदलगतजल
वनतरणे ॥ तद्वज्जीवनमतिमचंप
ले ॥ रुणमपि सजन संगति रेका
चवतिनवा ॥ वतरणे नोका ॥ १०
॥ चोपई ॥ श्रीगुरु विंद पद पूजन
करई ॥ भावसहित श्रद्धा च नय

श्रीसंतनको पूजन करीही॥ हरिक
 पापात्रतेनाही॥ दासिक जात कह
 वेमो श्रीशुभगतिनिनको केमेंहो
 शानातैं संतपूजन अचिखारेवे॥ आ
 गमशास्त्रबचनयह सारेवे॥ आग
 मेंश्लोक॥ अचेपित्वा तु गोविंदात्
 दीयान् नार्चयंतियो न ते विष्णुप्रसा
 दम्प॥ ज्ञात न दानिका जनाः॥ ११॥ चो
 पई॥ सुनहु नवानो बचन हमारे
 सार विचारयहे चित्तधारो सकल
 देव आराधे नो नरा हरिसेवनना
 ते सर्वो परा हरिसेवा कृतैयह मत
 मा विष्णवसेवा उत्तम उत्तम॥ आ
 गमशास्त्रबचनयह लह्यो सो शि
 वपारबती प्रतिकह्यो॥ १२॥ आग
 मपारबती प्रतिशिववाक्यश्लोक॥ अ
 राधनां सर्वेषां विद्मो गराधनं प
 रं तस्मात्परतरं देवि॥ तदीयना
 समर्चन॥ १२॥ चो
 गहजारहि

पूजनलेवे कोटिबिप्रपूजेसनमा
नी॥ एकसाधुसेवासमजानी॥ संतन
कोप्रसादवयहजानत॥ महिमाप
दपुगनबयानत॥ १२॥ पादोक्तो
क॥ सवलिगमहस्त्राणंसाविग
मसतस्यचतुल्यःपात्रकोटिबि
प्राणं॥ मेकोदचवेधव॥ १३॥
॥ चोप॥ ब्रह्माभेनैवेद्यजुहो॥ द
ष्टिद्वारसबहीकोग्रहो॥ स्वादले
नपरतछिवतार्जु॥ संतनकोरस
नासंपार्जु॥ यहकहीहरिश्रीमुख
वाजी॥ मैयहसौहीसाखिवखानी
१४॥ प्रत्नलोकंश्लोक॥ नैवेद्यपुर
येन्यत्प॥ दद्यौवसीकृतमया॥ रं
वेधवजिह्वाये॥ मश्राप्तिकम
इव॥ १८॥ चोप॥ प्रातकालजु
गीकीर्तनकरइ॥ संतनकोमहि
मार्जुद्वरइ॥ तेजागवतहेकक्षस
माना॥ यामेकधूमदेहनाना॥
यहउतममतहीयधरिगखी॥

पूजनलेवे॥ कोटिविप्रपूजेसनमा
नी॥ ऐकसाधुसेवासमजानी॥ संतन
कोप्रज्ञावयहजानत॥ महिमाप
द्मपुरानबयानत॥ १२॥ पादोक्तो
क॥ सितलिंगमहस्त्राणांमालिगा
मसतस्यचातुल्यः स्यात्कोटिवि
प्राणं॥ मेकगेवचबेधव॥ १३॥
॥ चोपद्र॥ ब्रह्माभैनेवेद्यजुहो॥ द
ष्टिद्वारसबहीकोग्रहो॥ स्वादले
नपरतछिवतानी॥ संतनकीरम
नासृपाके॥ यहकहीहरिप्रमुख
वाजी॥ मैग्रहमोहोसाखिवखानी
१४॥ प्रत्नवाकंश्लोक॥ नेवेद्यपुर
तोन्पत्प॥ दहोवसीकृतमया॥ र
विषवजिह्वाये॥ मश्राप्तिकम
द्रव॥ १८॥ चोपद्र॥ प्रातकालउ
गीकीर्तनकरई॥ संतनकीमहि
माउच्चरई॥ तेजागवतहेक्षर
माना॥ यामेकछसंदेहनक्र
यद्वनमममनहीयधरि

१८॥ जगत्तानके सक्तं च वनं कौ पुन
ति कश्च न हेतुं श्री नाम वत प्रवो न
श्लोक ॥ वागा द्रवा द्रव ते य स चिंत
दस ॥ तत्तौ द्याम दति क्व विच्छा विल
जर्जरायति नृत्पले च मद्रक्ति युक्तो
च वनं पुनाति ॥ १८ ॥ चोप ई ॥ सतन
की निदरा रत ते न राते ही प्रगट्ट ग्राम
के मूक श ॥ मूक श ॥ मदी विद्या खड
॥ ग्राम सो धिते नित्य क शत्री साधु की
निदा प्रिय ते दो ॥ तित क पा प आ प्र
हले हो ॥ निदा विद्या र्ज द र नि तर ई
साधु न को ति मेल नित कर ई ॥ सतन
की निदा व हो बुरी ॥ ब्रह्म पुरा न सा
मि य द धरी ॥ १९ ॥ साधु निदा वरी हे न
हो ब्रह्म पुराणे वा क्य ॥ श्लोक ॥ निद
काः श्रू कर श्रै द्या म कला ति मे ता द
रा सो ध ति श्रू कर श्रा मान ॥ साधु न सो
॥ ध ति निद का ॥ २० ॥ चोप ई ॥ की ट
प तं ग आ दि स ब को डी ॥ मुक्ति दे न
नि न प्री ग नि दो डी ॥ निद क करे

दसम अतिच्छुद्रा वच्छपदतैमृति
कानिकारै तांमैयेकचलजलज
तिहिउलं यतजलगेनवाग अत्रै
भवनिधितरै अपाग परममुक्ति
वेकठिहिपावे आपतिपदसंसा
रनसावे दसममधिष्णुकमुखकी
बानी मोई लिखी सरममुखदानी
७॥ दशमे चतै दसो ध्याये मुक्तवा
का श्लोक ॥ समाश्रिताये पद पक्षव
प्रवं महत्पद पुन्यय सो मुगरे भवा
बुधिवेत्सपद परं पदं पदं य
द्विपदानते सा १८॥ दो पद ॥ गदग
दकंठकव ऊहोय आवे चित्त
वेतन पुलिकितनावे कव ऊहमै
व ऊं पुनिगोवे कै बिलजगावे
रस भोवे प्रेममग्नै कव ऊनावे
अमै तन जे हरि गरावे मेरो तक्त
उनीत चरित्रा सकल तवन मोक
पवित्रा संतन की महिमा मन हर
॥ कै प्रहृष्ट हरि निज मान गरी

१८॥ जगदांनकेनक्तचुवनकोपुन
तिकरतहेनहाश्री-नागवतप्रवाना
श्लोक॥ वागाद्वाद्वाद्वातेयस्यचिनं
रस-तनीद्यामदतिक्वचिद्वाविन
जर्जजायतिनृत्पतेव मद्रक्तियुक्तो
चुवनंपुतालि॥ १८ ॥ चौपई॥ सतन
कीनिदाराततेनरातेहीप्रगटगाम
केसूकरा॥ सूकरा॥ मदी॥ विद्यावर्द
॥ गामसोहितेनित्यकरा॥ साधुकी
निदाप्रियतेही॥ तिनकेपापआपण
हलेही॥ निद्याविद्याउदरनिनरई
साधुनकोलिमेलनितकरई॥ सतन
कीनिदावहोबुरी॥ ब्रह्मपुरांनसा
प्रियदधरी॥ १९॥ साधुनिदाबुरीहेन
हाब्रह्मपुराणेवाक्य॥ श्लोक॥ निद
काःश्रूकराश्चेदासकलातिर्मेताद
रा॥ सोधंतिश्रूकरागामान॥ साधुनसो
धंतिनिदका॥ २०॥ चौपई॥ कीट
पतंगआदिसबकोई॥ मुक्तिहेन
जिनकीगतिहोई॥

तुलगाजकीकोनचलावे तोलेसवे
तुलगाजमतिमाही लवसतसंगतिसम
येनाही यहमहिमामहामगलकरन
प्रगटपुराणागावतवरनी
तुलगाजमलेवेना
पिनस्वर्गनापुनर्जैवे नगवतसं
गिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिय
तोपही विचरतसेतमहीईहिहेता
तीर्थेनिकपावनकरिदेता सब
अयदेखितोवतेउर हरिप्रापतिवि
नचाहतयरो नुमरे नक्तनसोहिन
गाने तिनसोअचिकैमैनहीमाने ह
रियोहरिकोदाममिलावे यहमुन
साखिजागवतगावे ५५ ॥ श्रीकृष्ण ॥
तसोविचरतापद्मा तीर्थानापाव
नेछया नीतस्यकिनरोचेतताव
कानासमाराप्रः ५५ ॥ श्रीपद्मे ॥ मह
तपुरायआश्रमतेआश्रीदीनगृही
ग्रहधारेपाई तिनकोकरनविपु
नगयागोपादनागनगनगन

न्यानां॥ वृजराजसूक्तोपह्वानी॥
कहोगार्गिरिषिमोमुखदानी॥ १६॥ श्री
चागदतश्रीवृजराजवाक्यश्लोक॥
महद्विद्यतनंनृणां॥ १७॥ दीनंते
तमो॥ निःश्रीयसायजगद्वनकल्प
तेनान्यथाकृत्विन॥ १८॥ चोपडी॥
दोयघरीइकधरीमुसाश्वाबसेजहां
हरिकेजनश्रीतीर्थसकलल
होहोजांनो॥ संलजननिजहोक्रियोदि
क्रिनो॥ वहीलपोवनरंतमबामा॥
कृष्णजक्तजहांकरैनिवामा॥ जहां
हरिजनमोईउतममदी॥ आगम
माहिमाविग्रहकहो॥ १९॥ आगमे
श्लोक॥ मुकुतेवा मुकुतीश्रीयत्र
तिष्ठतिवैष्णवाः॥ ननैवसर्वतीर्थो
निलदेवचतपोवनं॥ २०॥ चोपडी
॥ हे श्रीशुकमुनिराजकृपाळा॥
दीनर्धधारनविरददयाळा॥ तुमस
महानुभावमुदभरई॥ तिनकोसु
पगपात्रदीकरई॥

उहाइ॥ महान् अधम द्विज ज्ञानी सोई
संज्ञाय एति हि करिय नही ताही क
बहु छौ वासि न छांदो॥ मास्त्र न कां
नि कि क की राखे॥ पद पुराण बच
नय ह जाखे॥ २८ ॥ पद्ये लोक॥ अ
वेध वा सुये विज्ञा स्ते वेदी ना धमा
मृताः॥ ते सां संज्ञाय ए संपर्ण हरतः प
रि वर्जयेत्॥ २९ ॥ चौपड़ी॥ हमरे स
ब जगध्वंकारा॥ ध्वं कह मारे ब्रत ब
धि विचार॥ ध्वं बिद्या पटिबो सब
मानो॥ ध्वं कह मारे गय ह ग्या ता पनो
॥ ध्वं कह मारे बरत सब ही करे॥ ध्वं
क कुल म द अशिमान निजरे॥ ध्वं क
नि पुन तार जो गुण छये॥ हाये कृष्ण
ते मुख मुख जु नये॥ कृष्ण भक्ति महि
मा ज ब जानी॥ निज मुख ध्वं क ता छि
ज नि ब खानी॥ धन्य ये पतनी हरि
मन जो वना॥ ई न हि पर सि ह म के हे
गो वन॥ ४० ॥ श्री नागवते दसम स्कं
द उत्तर पपाखी काष्ट निद्रा वन को तपा॥

भिकुलननविद्विद्यां॥भिकुल
भिकुलकनतां॥भिकुलभिकुल
आदाद्या॥भिकुलभिकुल
॥चोपड॥रहिकेविभुलनन
यो॥तिनकासाकरनननन
दयतलीबिरनिते॥ननन
जिननननननननननननन
बाना॥ननननननननननन
॥पदपुगणेप्लोक॥मंगलगावि
हरेणा॥नगवद्विमुखेनननन
कनसात्रेणा॥नगवद्विमुखेन
५१॥चोपड॥मगरसापनाहरसांमि
लीयो॥ननननननननननन
लियो॥ननननननननननन
नानादेवननननननननन
मिलननननननननननन
नोमनमोही॥५२॥
अलिगननननननननन
लोकसा॥नमंगः
गदेवैकमेवनां॥५३॥

न॥ यत्र यत्र च मद्भक्ता॥ तत्र तत्र सुख
निच॥ गंगादि सर्वतीर्थानि॥ तत्रैवा
याति सर्वदा॥ ५१॥ चौ पद॥ मेरे भक्त ल
गतति हिम्पारे॥ मोई मेरे प्राण प्रियारे
॥ तामम मोहि को उबद्ध नही॥ अ
र्जुन सत्य कहों तो दिपाहि॥ ५२॥ दो
क॥ मद्भक्तो बद्ध तो यस्य॥ स एव मम
बद्ध नः॥ तत्परो बद्ध तो नास्ति॥ सत्यं
सत्यं ममा र्जुन॥ ५३॥ चौ पद॥ बिख
ई नक्त होये जो कोई॥ उर चागे तामे
कच्छ होई॥ मेरे भक्त पवित्र हिजांने
॥ ओ गुन ताकन मन मे आंनो॥ भक्त
दोख जो मन मै लावे॥ सो नर नर्क माहि
उख पावे॥ तो अपनों चाहे कल्यांनो
मुनो साखिय ह आदि पुगंनो॥ ५४॥ ॥
॥ दो पद॥ विषयां तथ्यकारीव॥ मद्भक्तः
सर्वदा शुचिः॥ न दो संदृशने लोका॥ स्ते
वे न रक्ता मिनः॥ ५५॥ चौ पद॥ तेई
दस पावन निमित्त मैं॥ जहां हरि के पा
रे जन वं मैं॥ देस जेहि भक्त न होई॥

ताममोननपिबननकोईमहपुनरी
दिसतेरांजे॥जहांहरिप्यारेसंतबिरांजे
५५॥श्लोक॥नदेसंपतितंप्रत्येषत्रा
नासिहरप्रियः॥नदेसंसफलमन्ये॥
यत्रास्तेहरिप्रिया॥५५॥चोपद॥मेख
दिसनिषेदेतहां॥अथवादिशमालिन
होइतहां॥जहांबसतसंपजनमुख
दानी॥जोजनतीनवेत्रवहजांनी॥नि
जतकनकोयहप्रताप॥कहतबप
गहधरनिसेआपू॥५६॥वाराहपु
रां॥श्रीवाराहदेववाक्यश्लोक॥यो
जनानितयात्रीणि॥समक्षेत्रेवसुं
धरा॥मेखदेमेश्वरेवापिमद्रक्तो
यनतिष्ठती॥५६॥चोपद॥नक्तन
मारबोधवनीके॥नक्तनकेदमन
धूमकीकेमेरेरक्तगुरुवैमेश्वरे
रक्तसदासमक्षेत्रेनक्तनकीम
हिमायदगात्री॥श्रीमुखआदिपुरा
नलखाई॥५७॥आदिपुराणश्लोक
॥अथाकंनोधवनीके॥नक्तन

वावयं॥ अस्माकं गुरो नत्ता॥ नत्ता
नां गुरो वयं॥ ५७॥ नत्ता॥ महिमा
महा प्रसाद जिते का॥ गोविंदनां म
प्रभाव तिते का॥ ब्रह्म जाननो निय
दुर्गा पू॥ वेष्म व महिमां नक्ति प्रता
पू॥ अल्प पुन्य संच पति हिंसा म॥ ति
न के क व ऊं न होय बिस्वासा तांते
इन मे दृष्ट करि नाया वरनो पद पु
रणे उपावा ॥ ५८॥ नत्ता पुनः ॥ नत्ता
महा प्रसाद गोविंदे॥ नाम ब्रह्मणि
वेष्म वे॥ स्वल्प पुण्य वतां राजन॥ वि
श्वा मो नैव जायेते ॥ ५९॥ नत्ता ॥ जो
कदि बिहरि नत्तन मोही॥ सा ना
क जु दोष दर मोही॥ तथा देह क
न दृष्टाण दर मे॥ हरि नत्तन को क व
ऊं न पर मे॥ नत्त दोष प्राकृत न मा
नीये॥ नत्तन को बाध क जानीये॥
ओर न को पुन न दृष्ट अर्थ॥ सक
ल नत्तिते सदा स मर्था॥ ता को यह
नत्त नत्ता गो॥ मो मुनि के सदे

हनिवारीणां मधिवरवुदंशु
जागा लोरोरकी च देनि नुत
देखन मधुन पुन न देव न देव
प्रजावमिवां वीवस्य प्रवता जय
मगत जहा हो हरित वसुह तप वि
न मा हो ते मे हिसत विग विदपिय
मधु दोसन को च जम हा शा जामे
कळ मदे हर देना महा प्रभु त के ये
वेना म ॥ १ ॥ एको ॥ दहैः स्व न व न
मि ते वे पुषा रु दो ये न प्रा कृत त्व मि
हि न क त न म प प ए न म म न सान
खलु बुद दूद फे न प के व स प्रव त्व
मय गा छि नि नी र ध मे म ॥ चो प श
नाणी ह मरी तु व पु न गा वो ॥ प्र व नि ने
मु त स ति हा रो सा वो ह स च र न से
वा नि ल हो ॥ म स क च र न क व ल म
धिर हो ॥ म न सु प्र ए नि त क रो ति हा
रो ॥ मं त लु म हि रे न य न मि हा रो मु त
क व र के व ड न गी दां मे स र नू से
य ह मा गी ॥ ६० ॥ श्री चा ग व ते द स म

यते येकां निनस्तुपुरुषा ॥ गच्छ
परमेपद ॥ ८२ ॥ चौपद ॥ महाडरा
चारी ऊहोई ॥ के अनन्यहरि न
जेनु मोई ॥ तो वक्तो साध हो जा नो
॥ निश्चेताहि पवित्रहि मां नो ॥ पावि
धिको है अर्जुन साखी ॥ कृष्णचंद्र
गीतामधि साखी ॥ तनछिनधमो
त्मा वह होई ॥ परम सांति कौ पावै
सोई ॥ विजयमप्रकरित कहियही
॥ कृष्णभक्त कौना मन सहो ॥ पापीऊ
जो नतनहि करई ॥ मेरे चरण सर
ण अनुसरई ॥ अइवे सप्रथवा
ऊई नारी ॥ होई मुक्ति पद के अधि
कारी ॥ विप्रराजार्थ जु करै सनेहा ॥ ते
नवतरे कछु न संदेहा ॥ ८४ ॥ ॥
॥ अपिचेत्सु डरा चारो ॥ न जते
मां मन न ताक ॥ साधरेव समनव्यः
सम्भाव्यवसितो हि सः ॥ १ ॥ हि प्रन
वति धर्मोत्मा ॥ सधृच्छांति निगच्छति
कौं ते यप्रतिजानाहि ॥ न मे तक्तः प्र
णश्यति ॥ माहि पार्थव्यपाश्रित्य

येपि स्युः पापयोत्तमः॥ स्थिते वेदाह
थाश्रुत्वा स्तेपियांति परमाति॥ किंपु
न ब्रौह्मणः पुण्यां चक्रराज देवस्त
था॥ ८४॥ चोपद्र॥ नरहरिपुण्यमा
हियहगाद्रात्तमनित्तहत्तनिनीदी
मिवादी॥ कृष्णचक्रप्रचुपरमनद
शामोदिकपालदियोऽधिकारा
त्तहरिगुर्वै विमुखसदाई॥ तिन
कोदददददमताई॥ तिरहरिगुरय
दवंदनकरश्चात्तिनकोदमप्रगा
अनुसरई॥ ८५॥ नृमिहपुरांगधर्मे
राजवाक्यं श्लोक॥ अहममराणा
चित्तेन धात्रायः॥ सद्रितिलोकहित
हितेन युक्तः॥ हरिगुरविमुखान्
प्रशास्त्रिमर्त्यान्॥ हरिचरणप्रण
तान्नमस्करोमि॥ ८५॥ चोपद्र॥
जेहेहरितत्तअनन्या॥ तिनमैदी
महोयैकच्छन्न्या॥ श्लोकहानि
नकोदोमदुखावै॥ मजनप्रचाव
तेनिकटनआवै॥ सप्रिमेजदयि

यते येकांतिनस्तुपुरुषा गच्छन्ति
परमेपदं ॥ ८७ ॥ ज्योतिर्माहादरा
चारी ऊहोई कै अनन्यहरिभक्त
जेनुमोई तोवैको साधुही जानौ
निश्चैताहि पवित्रहि मांनौ पावि
धिको है अर्जुन साखी कृष्णचंद्र
गीतामधि साखी तनछिनधर्मो
त्मावहहोई परमसांतिको पावै
मोई विजयसप्तकरित्कहियही
कृष्णभक्तको नामनसहो पापीऊ
जो भजनहि करई मेरे चरण सर
ण अनुसरई श्रद्धावैस्य अथवा
ऊई नारी होई मुक्तिपदकै अधि
कारी विप्रराजार्थजुकरै सनेहा ते
नवतैरै कछु न संदेहा ॥ ८८ ॥ ॥ ॥
॥ अपिचेत्सु डराचारो भजते
मांमनन्यताक साधुरेव समनव्यः
सम्पद्यवसितो हि सः ॥ १ ॥ हि प्रज्ञा
वति धर्मोत्मा सच्चिदांतिनिगच्छति
कौंतेय प्रतिजानाहि न मे भक्तः प्र
ण श्रुति रमाहि पाथे व्यपाश्रित्य

ये पिस्युः पापयोतयः॥ स्त्रियो देवस्य
थाश्रयास्ते पियोतिपरागतिः॥ किपु
नव्रीह्यः पुण्याचक्राशयदयस्त
या॥ ८५॥ चोपद्र॥ नरहरिपुगापमा
हियहगाज्ञातमनित्तद्वतनिनीति
मिवाडी॥ कृष्णचक्रप्रचुपः समुदा
रा॥ मोहिक्पालदियोऽधिकारा
तेहरिगुर्वैविमुक्तसदाज्ञा॥ तिन
कोदददददमसाज्ञा॥ तिनद्विगुरय
दवन्दनकरज्ञा॥ तिनकोदमप्रगाप
अनुसरज्ञा॥ ८५॥ नृसिंहपरागधर्प
राजदोकंश्लोका॥ अहममरागा
चित्तेनधात्रायः॥ सद्रविलेकहित
हितेनयुक्तः॥ हरिगुरविमुखान्
प्रशास्त्रिमत्यान्॥ हरिचरणप्रण
तान्तमस्मरोषि॥ ८५॥ चोपद्र॥
जेहेहरितक्तअनन्या॥ तिनमैदो
महोयेकद्वअन्या॥ श्लोकहाति
नकोदोमदुर्गावो॥ सजनप्रसाव
तेनिकटनआवे॥ सधिमैजदयि

कलंकलखावै॥ नौ कहा चंद्रहि त्रि
मिरदवावै॥ यह नरहरि पुराण की म
स्वी॥ सो मुनि तक्ति ताव अतिलाखै
॥ ८६ ॥ श्लोक ॥ नगावति चहरावन
न्यचेत्य॥ अशमलि नौ पिबिराज
ने मनष्यः॥ नहि शशक लुप्यच्छविः
कदाचि॥ तिमिरपराश्रवतामुपै
ति चंद्रः॥ ८६ ॥ चौपड़ी ॥ मनक म
वचन नकार मो पांही बैलवप
रातव किये न जांही॥ चक्र येक दि
सर छाकरई॥ इकदि मगरुजन
कव डं टरई॥ ऐक और तेहि पा
रयद दोरै॥ हरि रछा ताके च डं
औरै॥ बैलव पीडा करे जु कोई
ह मेरी सामर्थ्य न होई॥ तम हत
प्रतिबचन मुनावत॥ यह नरह
पुराण विधि गावत॥ ८७ ॥ श्लोक
॥ करै मिर्क मोण बाचा॥ मनस
न विप्रिय॥ बैलवाना महाजागा
मुदर्शन तयादपि॥ १॥ एक तो

भवते चक्रामेकतो ह रिखाहनः
॥ एकतो विष्णुहताश्चै विष्णवे च
दिते मया ॥ ८॥ चौपडा ॥ नंदनं हन
यह जनम महमारे ॥ अनिवद जाग
को उव पुधारे ॥ ब्रह्मा देह धरो मन
मोर्जा ॥ अथ वा पसु पंछी तन पांर्ज
॥ कृष्णदा मय हता एकदंर्ज ॥ पद
पल्लव मेर्ज गुन मर्ज ॥ ८८ ॥ दशमे
ब्रह्मसुतो प्लोक ॥ तदस्तु मेनाथ न
रिजा गो शवन वान्य ननु वा तिरश्च
॥ धाना ह मेको पित्तव जनानां ॥ न
त्वानये वेतव याद पल्लवा ॥ ८८ ॥
चौपडा ॥ सवन की महिमा को पाश
॥ सब महिमा को करै बिचाग जस
पित्त था बुधि मन दीये ॥ अपनी नि
मलता को यो तो महिमा कछ मग
ह करी ॥ सो हो म्मान उं हरी ॥ हो उं क
ना क जो जो लो चा हो सो सत संग
ते हेत उं मा हो ॥ ८९ ॥ तं न वा क्य ॥
लोका ॥
ज ॥

नानासंगतिः सदा कार्या सर्वैः प्र
यत्नेन ॥ दोलोको विजिगीषुतिः ॥
८८ ॥ चोपद्रो ॥ हरिकेसंत प्रभाव
अनता ॥ सतसंगतिमहिमानहीन
ना ॥ संतनकी पाडक अतिगमा
तिन कौंवारंवार प्रणामां ॥ संतन
को सतसंग प्रधानां ॥ साधन मुई
अखिल कल्याणां ॥ संतसमागमा
सब मुखदांनी ॥ महिमा पुराण ब
खांती ॥ १० ॥ श्लोक ॥ नगवद्वक्त्रपा
दाव ॥ पाडके न्योनमोनम ॥ प्रसं
गमः साधनं च ॥ साध्या खिलमुत्त
मं ॥ ११ ॥ चोपद्रो ॥ वैद्यवसंगतिक
रेनुकोई ॥ ताके पापनाम सब होई
॥ हरिभक्तनकी संगति पाई ॥ अति
पातकी ऊमुक्ति कै जाई ॥ तहां कौ
यदि विधिलि ॥ खौ प्रमानां बहद
नारदी बहद पुरांना ॥ १२ ॥ बहद
नारदी पुराण श्लोक ॥ हरिभक्ति पर
माणं तु ॥ सगिनो संगमां नमः मुच्चते स

वैपापेनै॥ महापानकवानपि॥ ए॥
॥ चोपई॥ नक्तप्रसंगान्नर्थसिद्धौ वै
॥ अर्थप्राप्तिस्तसंगकरोवाञ्छप॥
जसकौसलसंगनिसादौ॥ निर्मलव
द्विप्रतिष्ठापावे॥ वे॥ सबद्वरसकञ्ज
सफलदाना॥ पद्मपुराणसाखिवि
ख्याता॥ १२॥ पद्मपुराणश्लोक॥ वि
नाशयत्पप्रयणो॥ बुद्धिविशदय
त्पया॥ प्रतिष्ठापयतिप्रायो॥ नृणां वै
सबदर्शनी॥ १३॥ चोपई॥ वे॥ सबसं
गसकलसुखदांनी॥ सर्वतीर्थनतैश्च
धिकोजांनी॥ गंगास्नानसकलफल
विधिको॥ संगमहात्मसबतैश्च
को॥ यहमहिमां सबमुनुमुत्तानां॥
टरिकहतुहे पद्मपुराणां॥ १४॥ पा
दश्लोक॥ गंगादिपुण्यतीर्थमुयाये
नरः स्नातुमिच्छति॥ यः करोति सतां
संगं तयो मत्संगमो बरः॥ १५॥ चो
पई॥ सतसंगपरमधरममयरिद्वी
सतसंगतिकरिपावे सिद्धी॥ जेजे

संगारे संगमेन दत्तात्मजं भागवद्वक्त
संगोहि हरिचक्तिं ससिद्धतां ५८
नौपद्मं सतसंगप्रयन्त्रमृतकहां
हो सागरतें तो निकस्यो नांही यह अ
लोकिक अत्र न गायो नामहि माको
पारनपायो सागरतें यह अमृतनि
कास्यो महाकष्टताको बिसाको
बिखजको वह बंधु कहां वे जन
ममरण नयनां हि मिटावे तातें श्रे
ष्ठ अमृत यह जानो सतप्रभाव नही
कळखों नो पुनि सतसंगरसाइन
रूपा सबै रसाइनको यह रूप
महाकष्टमो बने रसायनि नवन
यगोगसकै मिटायनि सुखसि मिलै
सतसंगरसाइन भावचक्ति जुतह
रिपददाइनि परमानंदरूप सत
संगा जगको रंग सोचको अंगा ज
गतसंग सब सो ककपहै सतसंग
मुखसकल रूपहै बाण्यो पदमपु
राण प्रसंगा यह सुनि कै करियो

सतसगा ॥ १७ ॥ पद्यपुराणे श्लोकः
असागरोत्थं पीयूषं मद्ब्रह्म व्यास
नोयध्वं हर्यश्वाश्लोकपर्यंतं संतो
किल लसागमः ॥ १७ ॥ चोपदेशः
लक्ष्मणस्य तपान्ननु चाहे सोम
तसंगातिहेतुं प्राप्ते जीवन्मोक्षं
संगमं तनकोहि सुखदाईकं
व्यासमनको ॥ श्रीहरिकथारसः
ईनरुपा सतसंगातिहेतुं ननु
या पद्यपुराणे मद्ब्रह्म ब्रह्मानी ॥ ना
रदज्ज्वरनी सुखदांनी ॥ १०० ॥ प
द्यपुराणे नारदब्रह्म श्लोकः ॥ प्रस
न्नसतामात्मा मनः शुक्तिरसाय
नाः ॥ ननु तिकीर्तनीयस्य कथा
कथमप्युक्ताः ॥ १०० ॥ चोपदेशः ॥ न
क्तिलान्नहोय सतसंगात् ॥ होय न
क्ति सतसंगागते सोप्राचीनमु
त्तमो मिलः ॥ तव ग्रहमन्त्रान्
दशमजिलः ॥ बृहद्वनारदी
हवप्रमाना मुहीबुचनचित

गमो हिला नयहजोनौ सतसमाग
मुडले समाने जनप्रह्लादहि धर
णी कइइ महि मां भक्ति सुखे द्युप
हइ १०७ लहेन हिउ मने नयह
नी प्रत्यक्ष प्रदिष्ट होव को को
न्य-होः फलें त्वा दस दर्शन हित न
फलें त्वा दश गात्र संगः जिहा फलें
त्वादशा कीर्ति नहि मुडले सा नाग व
ताहि लोक १०८ लीला छिया नेपु
र डले नयह नर नन डले नहरिन
नन को दरसन नृपति विदेह बच
नयह नीको नव जोगन प्रतिश्रुत स
बही को १०९ ला नये दिने नयह
नयह नीको डले तो मानुषो देहो दे
हिना काणतंगुर तवा पिडले न मन्य
वे करु प्रिय दर्शन ११० लीला
हे हरि ते अनन्य तुम्हरे जन कपठ
रहित निर्मल जिन के मन तिन
को संग नाथ मोहि दीजे हिल मिनि
तिन हिला नयहलीते कथा सुधा

रसपातकरोमौ॥ ज्ञानायास नव
सिंधुतरोमौ॥ चतुरथमैधुवज्ज
रसमोती॥ प्रहसौयेहताचनार्की
नो॥ १०५॥ चतुर्थस्कंधे श्रीध्रुववाक
श्लोक॥ नक्तिमुकुप्रवहतां न्ययि
मप्रसंगो न्ययोदनेन महता मम
प्रयाजो योनां ज्ञेयः न्ययामुखव्यस
नां नवाधितेष्वेकवहुषाकधाम
तपां नमनः॥ १०५॥ चोपदेशे हि हि
बुवसाया ब्रह्मजो लोकमनितस्यो
न्नमनहो तोलो॥ नक्तनकी सतस
गतिदीप्तो॥ यहकृपा नंदनेदनकी
जो जन्म जन्म संगति मुखकारी॥ य
ही कृपा मोहि बिराद्विहारी॥ सन
समागमसौ मतिराची॥ यही प्रचेत
न प्रहसौताची॥ १०६॥ चतुरथस्क
धप्रचेतासां बांकां श्लोक॥ यावत
मायया स्पृष्टा॥ त्रमा मईहकमेति
तावद्भवत्प्रसंगानां संगः स्थानो
नवेतवे॥ १०६॥ चोपदेशे इत्या

येष्वचनचनेता अतिअपारमहि
मानिधिमंता नरदेशीकोलाक्षेय
हड्ड हरितक्तनकी संगतिलहड्ड
कृष्णविमुखनेकह असंता ति
नकोमानकैरुधिवेता विमु
खसंगकरियेनअमजानी होइ
सकलपुरधारथहानी नकजात
तावजविधितरइ अमो लोक
मेनेनरपरइ १०० ॥ नरेश्वरव
कोलोका अमहिःमहसंगत्सु
नकनेद्यःकदाचन यस्मात्समी
येहानिम्या दधःप्रातश्चेजायेते
१०१ ॥ नरेश्वर ॥ अग्निज्वालचक्रा
रजराध्वे पीडासुतोसहनमेअवे
कृष्णवितकननेनुविमुखज
न तितकैनिकटन वैडिमुठम
नानिकटद्वामकीज्वालतचावे
पीडातासुसहनहीजावे १०२ ॥
कात्यायनहरेवैद्यकोलोका दे
रकुतवहज्वाला पंजरंतर्वव

धृतिः॥ नमो रश्मिं ताविभुवजन
वसुधैव कुटुम्बकम्॥ १०८॥ चोपडं॥ विप्र
हर्षतस्तस्य स्याद्रीवैश्वर्याम
रश्मिं ही आर्द्रा॥ तोतां नित्यनीच
नमिरमोरातिनयो संतायणनजि
वोरा॥ जोकदाचित्तसंज्ञासमहो
॥ तोमपरमकीतोमतिकोर्द्र॥
तोमपरमकदाचित्तकेतार्द्राति
हिंकोन्नककन्नहिवाधोप
यपुरांनमाहियह्वानी॥ प्रिय
गिरजाप्रतिमं नुवर्वाणी॥ ११०॥
॥ प्रत्यपुरांनमाहियह्वानी॥ ११०॥
महादेववाक्यं शोकां नवेक्षव
सुयविप्रा॥ चोडालादधमास्म
ता॥ तियां संतायणस्य प्रोयोम
यानादिवर्जयेत्॥ ११०॥ चोपडं॥
कृष्णनक्तिकीनीनहिचाइना
तस्योदरमाहियह्वानीति
कोमंगकवर्जकोर्नकर्द्रा
कन्नधतममं लेगिरर्द्रातेमं

अंधागहिहाथा परतकपमैशे
कैसाथा पहरकादसकीहेसावी
यहीबिचारिहियेधरिगानी ॥११॥
संगतकुर्याद
सना ॥ सिद्धोदरतृपांकचित्त ॥ नम्या
नुगस्तमस्येधे ॥ पततं धानुगांधव
न ॥११॥ चैपड ॥ कृष्णनक्तिनैरह
नहेजेई ॥ मुखान्नसंततांनियेसेई
सदाचारनितकरनबिचारये ॥
पुन्यकर्मतिहिकरननिहारिये नै
ऊर्जनकीनिहासोई ॥ कृष्णचंद्रमे
वबऊनहोई ॥१२॥ श्लोक ॥ कृष्ण
नक्तिबिहीनाये ॥ मुख्यासंतस्तएव
हि ॥ तेषांनिहाश्रुताकापि ॥ नस्यान्न
वरितैरपि ॥१३॥ चैपड ॥ कृष्णन
क्तिबिहीनजुकोई ॥ बिदशास्त्रव
ऊजानतहोई ॥ कहाहोयकरिती
रथवासा ॥ कहाहोयनपकरित
नत्रासा ॥ कहाहोयकरिजगबि
धाना ॥ ब्रह्मदत्तारदीकहतपुरा

नां॥११७॥ ब्रह्मदन्नादी पुराणं होव
॥ किं वेदः किं मुखा शास्त्रे॥ किं मुनी
र्थनिमेषं योः॥ विष्णुचक्रविहीन
नां॥ किं वपोहिः किं मधुरं॥११८॥
चोपदे॥ सर्ववेदनकेन्द्रं तद्विज्ञाने
सकल शास्त्रकेन्द्रार्थवरान्नै॥
जोपरबृहद्विस्तृतमहोद्री लोचन
पुरमन्त्रधर्महेमोद्री॥ कहां कहां य
ह विधानां॥ प्रगाढवरान्नतगरु
डपुराणां॥११९॥ गरुडपुराणो॥ श्लोक
॥ अंतर्गतोपि वेदानां सर्वशास्त्र
र्थवेद्यपि योनिसर्वेश्वरचक्रसं
विद्यातपुरुषाधर्म॥१२०॥ चोप
दे॥ कृष्णविमुखकै प्राश्चितकर
दे॥ प्राश्चिततिनके पापनहरदे॥
मदिराकुनपुनीतनहोदे॥ वरस
हजारगंगाधोदे॥ भांगात्पुनतन
हीकरदे॥ त्यक्वही पापप्राश्चित
हरदे॥ कहां यह विधिकही कहां
हो॥ अज्ञां मेवर्ग परात्मानं जहां है॥

११५॥ यच्च तन्नाम लिख्यमाणं विना
न॥ प्रायश्चित्तानि चोणा नि नाग
यणपरो मुखे नमिः पुनतिराजेंद्र
मुगकुतसिक्कापणाः ॥ ११५ ॥ वि
उन्नकोपापह्यनकवद्वाहे
उन्नकोमंगललहेनत्पोही तिन
केमनसैमंगलरूपा जौलैवमैम
कृष्णस्वरूपा ॥ द्विष्टुधर्मोत्तरिष्ट
कीवांती त्रैयदलिखी सुमंगलक
नी ॥ ११६ ॥ द्विष्टुधर्मोत्तरिष्ट
तः पापकृपस्तेषां कुतस्तेषांचम
गले येषां नैवहृदि स्थायं मंगला
यत्तनोहरिः ॥ ११६ ॥ विष्टुधर्मो
चरणान्ते विमुखनुकोइ कथाप्र
वनतिनेकरोनहोइ नरकपाइ
वेकोमंगलरूपा ताही मैति तिक्का
सौमनेहा ॥ त्रिक्काहरिपुणमही
उच्चरइ चित्तनकृष्णपदमुसि
राकरइ कृष्णचंद्रकेचरनति
मांही कवकप्रणां प्रकस्योति

हिनां हो॥ मेरे लोक लिन हिसे आवे।
॥ देवें त्रासन रक चुपाता वो॥ छठे
संभे ताप वंशाडी धर्म राज इत न त
समाजा डी॥ १७॥ यद्युक्क धरत न
प्रति धर्म राज बाक्य श्लोक॥ तानान
यधु ममतो विमुखा न॥ मुकुंद
पादारविंद मकरंद रसाद तसे
॥ निश्चि चने परम हंस कुले॥ रमज
जे दाना॥ गृहे निरय बल निबुद्ध
दृष्टान॥ १८॥ तिका न बलित मव
दुणाना मध्ये येते तश्च न स्मरति
तच्छरणा विद्वद्दृष्टाय नो न मति
यत्तिर एकदा पिता मान यधु म
मतो दूत विष्णु कृत्या न॥ १९॥ चौ
पद॥ नक्त न न की दामो गंती॥ क
रिञ्च निमान तिन दी अपमा
ने॥ अर्थ धर्म जम अरु मुत जा
के॥ येती सकल विना मे ला के॥
करहि मूढ जे वैल्य निंदा॥ जा
निय ते नर अति मति मदा॥ पित

करपत्रैश्च फाल्यते सुतक्षेय
शासनेः॥ निदां कुर्वन्तिये पापा
स्त्वानां महात्मना॥१॥ पूजितो
गवान् विष्णुर्जन्मानरशनेऽपि
प्रसीदति न विष्वात्मा वैष्णवे च
पमानेते॥१२॥ चोपध॥ वैष्णवकी
निदां श्रुति सुन ई॥ हरि निदां सु
निमीसन धुन ई॥ महापापवाको
वहलागो॥ तिन के संगरगन हं पा
गो॥ निदां सुन तजोन उरि जाई॥ सु
कृत पुन्य सब ता सुन साई॥ श्रीशु
क यह महिमा उर्चरी॥ सीध दई ज
न मंगल कारी॥१३॥ दसम स्कंधे
॥ निदां जगवतः शृण्वन् तत्प
रम जनस्पदा॥ ततो नापैतियः सो
पि पातधः सुकृता चूतः॥१४॥ चो
पध॥ कृष्ण नक्त कै हरि रमणी वै॥
पाच चारि दिन जगजीवे ता वै॥
तीवन सुफल सही है॥ महिमा स्कं
द पुराण कही है॥ न कि बिना जीवे

गमोही जीवो कल्पहजारवृथं
॥१२॥ विष्णुधर्मोत्तरश्लोक ॥ जीव
विष्णुतत्त्वमयं वरं पंचदशानि
नानु कल्पसदस्याणि तत्किं हि
नमः केशव ॥ चोपदेश ॥ तार्ते जो हरि
पद ननु रागो ॥ विष्णुवक्त्रकी भग
हिनित्य न्यायोऽस्य तस्य गति सौ शति
मरमावे ॥ कल्पतत्त्वही संतकहावे
कोरणा नीकोरेक भावि सतस्य
लिकेन ही मभा ॥ दुष्टबा मभा महे
संता ॥ हिय मे प्रेरि राधिक कंता ॥ दि
उपदेस मकल प्रमहरे ॥ कल्पचे
इसो मन मुबक गौ संतन की म
हि मा मन हर नी ॥ श्री हरि जु उ व
व प्रलिवर नी ॥ १२ ॥ एकादशे श्री क
लचंद्र वाक्श्लोक ॥ ततो दुःसंगः
मृत्यु ॥ सन्म संजेत बुद्धिमान्
संत एवा स चिंद निमना व्या
ग मुक्ति लि ॥ १२ ॥ चोपदेश ॥
ननु कंगी गल धरी

किये मुदकारी लखन डरि तै हि
 न चित्त धरिये निकट जाई पद
 बंदन करिये ॥ १२५ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 शितान् गन्वा तान् हरता दृष्ट्वा
 दंडवत्प्रणमन्मुखा ॥ १२५ ॥ चैतन्य
 ॥ वैष्णव कौ वैष्णव जो देखै क
 तप्रणति हित यह बिसेस है हरि
 दोर्जन के बीच बिराजे तिनहि
 दंडवत्तनुवपरिमांजे जो ननमो
 सुनिलेऊ बिधानो होत तहां ह
 रिको अपमानो सजो इ बिण
 पंचरातिको लिख्यो बचन इह
 जातिको ॥ १२६ ॥ तिनो इ बिण पंचरा
 नो ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ वैष्णवो वैष्णव दृष्ट्वा ॥
 दंडवत्तनुवपरिमांजे विर्जनयो रत्न
 बिभुः शंखचक्रगदाधरः ॥ १२६ ॥
 चैतन्य ॥ हरिजन आवैं हरिहि
 करसै ॥ मन मुख जाये पायन ही
 परसै ॥ घादस बरख जु पूजा क

॥ तिहि न्नी गी कृत कर तन हरी ॥
संत महा तम न्नी नद करी ॥
सा संद पुराण न चरी ॥ १२ ॥
॥ संद लोक ॥ दृष्टा ना वन
॥ सन्मुखे यो न या तिहि
न गृह्णाति हरिस्तस्य पूजा द
श वार्षिकी ॥ १२ ॥ चो पंडी ॥ जा
सहन सन पग धर श्री तिहि स
मान ग्रह स्थान कर श्री ना ग्रह
घर को पित्रा ॥ द्वा ड त ता ति
वित्रा ॥ वा को ग्रह स म
मान स माना ॥ ज्ञानि न पान क न
मुजाना ॥ संद पुराण वचन
॥ मार कंडे रिषि कहत
वखानी ॥ १२ ॥ संद पुराण मार
कंडे यत्रा कं लोक ॥ यो न प्रह्ला
नि नू पाले विष्णु वं ग्रह मागत ॥
तद्रहं पित्र निःस्तुतं ॥ श्रम सा
मि व नीषण ॥ १२ ॥ चो पंडी ॥ जा
ग्रह सन जन न्नी व

लालमधुमह ते॥ परिकामिलमं
पद॥ यद्गुहास्तीर्थपादीपापादी
तीर्थविवर्जिताः॥१११॥ चौरद्वे॥
सतकपाकरितवनपधारै॥ हाथ
जोरितिहिबिनुर्नचारै॥ आनुध
न्यमोहिकियोक्तपाला॥ आनुभयो
क्तपक्तपदयाला॥ मेरेघरप्रभुअ
नुपधारै॥ अतिडलेसहैदरमनुम
र॥ तेमोहे॥ हरिकोपदपरमन
नेमोहीहेतुमुरैदर्शन॥ त्रैसी
नातिवीनतीकरई॥ यहमहमा
संकदउचरई॥११४॥ दंतदेवोक्त
धनोहंकातकृत्योहं॥ यतयुंयंग
हमागताः॥ ऊर्लेसदर्शननन॥ वै
खवानोयथाहरेः॥११५॥ चौरद्वे॥
अधनीऊंवेधनीबखानैजिहि
प्रहसंतहिआदरगानै॥ आसन
तलविधिवतसनमानै॥ अधनी
ऊंवेधनीप्रमानै॥ सतनकीम

हिमामनहरणी॥ पृथ्वराजचतु
ष्टमैव रणी॥ १२५॥ चतुरस्रमक
मनकादीनप्रतिपृथुवाक्यश्व
क॥ अधनामपिबेधन्याः॥ सा
वोगहमेधनः॥ यद्गृहाह्यदेव
र्णिवु॥ तृणाचमीष्टराजराः॥ १२६
॥ चौपड॥ वैष्णवकेतोसुसुख
जाई॥ दरसनकरेसीसपदनाई
॥ पेडपेडफलहोईजगसमान
हतसंकटपुराणमहात्म॥ १२७
॥ संकटेश्लोक॥ समुखंवृत्तमा
नम॥ वैष्णवानांनगरधिपपदे
पदेजज्ञफल॥ प्राकृपोराणिक
दिजाः॥ १२८॥ चौपड॥ प्रतलि
पराचिभक्तिमनजाईवैष्णव
जनकीकरवराई॥ महापापी
ज्जननरहोई॥ घोरपापतैव
मेमोई॥ कृपावासुदेवकीपा
शिसोचवसागरकोनरिजाई
मनकीमहिमामनजाई॥

पुर्यावे॥ ब्रह्मदत्तारदीपुनियहम
ये सुनियहसा विहियेधरिगरे
१४१॥ ~~ह्येक~~॥ यो विष्णु नक्तान नि
धामान॥ नो जयेत्त श्रध्मान्वितः॥
त्रिः स प्रकल संयुक्तः॥ स याति हरि
मंदिरं॥ १४१॥ ~~चौ पद~~॥ तान्को अन्न
नक्त जन नो गौ॥ श्री हरि ना हि आप
आरो गौ॥ लिंग पुरा न मा हि मह देव
वचन लिख्यो मे ना वै विसेखी॥ १४
२॥ ~~लिंग पद~~॥ नारायण परो विद्वा
न॥ यस्या न्नं श्री ति मानसः॥ अश्राति
न हरे रासं॥ गत स न्नं मे शयः॥ १४३
॥ ~~चौ पद~~॥ नक्ति हीन जो हो ईकुली
ना॥ पंडित जप तप मा हि प्रवीना
वा के सब पुन जा नो अं मे॥ मृतक
देह को म डन जे मे॥ १४४॥ ~~हरि न~~
क्ति यु धे द्ये॥ ~~प्लोक~~॥ न ग व द्र
क्ति हीन स॥ जाति शा ख ज य स्त पः
॥ अश्राण सौ व देह स॥ म डन लो
करं जने॥ १४५॥ ~~चौ पद~~॥ ता नै

प्रयत्ननकरिके॥ वैलवसेवा
करिहितकरिके॥ वैलवसेवाजो
जनकरिहै॥ सोनरडवसमुद्रने
तरिहै॥ १४४॥ श्लोक॥ त
प्रयत्नेनावैलवानपूजयेत्तदा॥
सर्वतरतिडवैद्योमवाजायत
चेनात्॥ १४५॥ चौपई॥ परिचर्यो
मेआदरगरे॥ सबअंगनबंदन
अलिखारे॥ सबगमोकोसमक
रिजाने॥ मरेनकनसोहितजाके॥
॥ उद्वहोनिहिचेबसताके॥ कु
लचंद्रनिजमुखतेंकही॥ सोही
बानीप्रदभैगही॥ १४५॥ श्लोक॥
आदरःपरिचर्योयो॥ सर्वो गैरलि
खंदन॥ मद्रक्तपूजाअधिका॥ स
वेनतेषुममतिः॥ १४५॥ चौपई
॥ नारीकोरुतुमुहागनिहोके॥ अथ
वाकोरुविधिवाहेसोके॥ निनमै
जोवैलवतापारे॥ कुलईकोतर
सोतारै॥ ताकोजनसमुफलजग

जानै॥ महिमां बहूपरां ब्रवा
ने॥ १४६॥ ब्रह्मपुराणे॥ श्लोक॥ मन्त्र
तुकावा विधिवा॥ विष्णुनक्तिं क
रति या॥ समुद्ररतिचात्मा मानं॥ क
लमेकोत्तरं शतं॥ १४६॥ त्रिपञ्च॥ कृष्ण
नक्तिरसमग्नजुकोई॥ सब जगमां
हिनरोतममोई॥ डगचारकुजो क
कुं करई॥ अथ ब्रह्मसदाचारचिन्तध
रई॥ तिनको बारबार प्रणामो॥ कृ
ष्णनक्तसे नतमुखधामो॥ ब्रह्मद
नारदीकी यह माखी॥ निश्चये मा नि
द्विये धरि राखी॥ १४७॥ ब्रह्मज्जारई
श्लोक॥ हरिनक्तिरमाखाद॥ मु
दिताये नरोत्तमा॥ डबता वा मुब
नावा॥ तिमो निरूपे नमोनम॥ १४७॥
त्रिपञ्च॥ सब जलजीवहि बकगिलि
जाई॥ मिडुकहि कबडं नदिवाई
तो जमदंडमवनको करई॥ कृष्ण
नक्तको देखैत डरई॥ यो प्रहलादस
हिता कहई॥ हरिनक्तिनको काल

नगहरी॥१४८॥प्रह्लादसहिताया।
श्लोक॥बकोजलचरणनन्दन॥म
इकादीनवर्जयेत्॥तथायमःस
र्वहता॥वर्जयेत्कल्लमेवकान्॥
१४८॥चोपडी॥यदिजगामोहिकान्
अतिमिया॥प्रलुब्धितनुमेसर्
विद्या॥ताऊतैअतिमिबुक्काह
॥हरिनामावलीमधुरमहादे॥ई
हितैमधुरमुञ्जोरुञ्चरियो॥हरिदा
मनकोदर्मनकरियो॥यातैमिबुक्का
रकहिदेह॥सतनकोचरनामृत
लेका॥इहिसमानमीगोकवृन्तो
ग॥कल्लनक्तकीकुठुनिकौरा॥
याकीसाविकहोकहागाडीश्रीध
रस्वामीवरनिसुनाडी॥१४९॥श्रीधर
स्वामीकृतश्लोक॥किंमिदंमधुवे
रिणोधरमुधासिक्तंस्वनक्तापितं
॥तस्मान्मिदृतमंचकिं~~च~~
~~च~~मुररिपौनीमावलीकीर्तनं
तस्मान्मिदृतमंचकिंजगवतोत्ततं

समदर्शनतस्मात्सिद्धतमं च कि
पदमुधातुक्तशेषासुतं ॥१४९॥
चोपदे ॥ जाकीबैलवसंपाहोई
बैलवअन्नप्रीतिकरिसोई प्रा
रथनां करिजो जनकरई येहि बि
सिमहासोदमनचरई जो कोउ
बैलवनां मकहांवे ॥ अन्नअबैल
वको नहि पावै ॥ अंगीकारसुअन्न
नकरई ॥ कहै पुराणवचनउचर
ई ॥ १५० ॥ कोउ नहि ॥ बैलवानां हि
ज्ञातव्यं ॥ प्राथ्यानां बैलवः सदा
अबैलवानां मनंतु ॥ परिवर्त्तम
मेध्यवत ॥ १५० ॥ चोपदे ॥ बैलव
अन्नअंगीकृतकीजे ॥ प्रारथना
करिके ऊलीजे ॥ सबअपराध
रिकरिदेई ॥ बैलवअन्नलेतछि
नतेई ॥ अन्ननमिलयंतो नैपैकी
जे ॥ जलही तहां मागिके पीजे ॥ बै
लवअन्नप्रजावन्नपारा ॥ पद्म
पुराणवखांनतसारा ॥ १५१ ॥ पादे

देवदत्तविकुंडलासखादेह्लोक॥
प्रार्थयेद्वैष्णवादेन॥प्रयत्नेनवि
चरुण॥सर्वपापविशुद्धार्थे॥न
दत्तावेज्जलेपिवेत्ता॥१५॥चौपड॥
महापातकीजोनरहोशिवेषव
क्षमंमजाइकेसोई॥वैष्णवअन्त
अमृततैमिरै॥तिहिजाइजाचन
करै॥अन्तमिलैतोहितकरिलई
॥परमपवित्रमानिकैसोई॥अन्त
जहांजोनाहिनमिलही॥तहांमागि
कैपीजजलही॥सकलपापतैच्छ
देनेई॥नारदरिषियदविधिक
हिदेई॥१५॥नारदीयेह्लोक॥म
हापातकसंयुक्तो॥वृजेवैष्णवम
दिशि॥याचयेदन्तममृतानदत्तावे
ज्जलपिवेत्ता॥१५॥चौपड॥नागव
त्तनकोअन्तपवित्रा॥तैमेंपुनीत
गोविंदचन्ना॥गंगाज्जकोवारिपु
नीता॥तैमेंगिरवरधरकौगीता
परमसुखचितपनुमे

केहेन मोह मद त्यागो यकादशी।
 मुद्र वन यहई याको नर निशेक
 रिगहई एचा सो विधि रिषि मुमना
 खी मार कंडे यना गीरथ साखी ॥ १५२ ॥
 नृपति जगदीश्वर वीर अखंड देह
 ॥ शुद्ध विष्णु शक्ति सागवत स
 न्न शुद्ध सागीरथी जल शुद्ध विष्णु
 प्रचितं शुद्ध मेकादशी व्रत ॥ १५३ ॥
 नृपति ॥ वेष्टव होय कछर न जो ज
 न करहि अवेष्टव के ग्रह तो जन प
 वेत हो जल हि विनु जानै ताही को
 प्रायश्चित्त वरवानै चायण व्रत
 करे जु सोई तिहि पायतै मुद्र तव हे
 ई ईष्टा पूर्ति पुन्य सब वाके किये
 अनिधानि फल ताके यह स्कंद
 मही मालिषि दीनी मार्कंडेज वने
 न कीनी ॥ १५४ ॥ लोक ॥ अवेष्टव
 हेनु न्का पीत्वा वा ज्ञान तो पिवा
 शुद्ध आराधणो प्रोक्ता ईष्टा पूर्ति
 बुधा तदा ॥ १५४ ॥ जे पड़े ॥ कोइ

वचन मन करि रत जे हैं। कृष्ण चंद्र
के सेवक ते हैं। तिनकी आगमा
निये जैसों। कही कृष्ण को कीजिये
जैसों। कृष्ण मां हि प्रजु जकन माही
रंचक रहे दयानीयें ना ही॥ स्कंद पु
राण प्रजावद खानों। यह जा जैसों
ईस व जानों॥ १५५॥ स्कंद श्लोक॥ क
र्मणामनसा वाचा ध्ये च यं तिसदा
हरि॥ तेषां वाक्यं नरैर्कार्यं तस्मिन्
विष्णुसमात्मना॥ १५५॥ चोपद्र॥ ह
मन विप्र नहि छत्रि सही है। विस
नाहि हम सुजन ही है। नहि हम
ब्रह्म चर जे ब्रत धारी। नाहि प्रस्था
प्रमत्त अनुसारी। बानं प्रस्थ हम न
हि न उदासी। हम पुनि नाहि कव
म ऊँपासी। पूरण परमानंद अनु
पा। अष्टतम मुद्र मधुर रसरुपा
जोगोपी जन बध्न नपांगी। कोहि
कमन मथ्य मोहन हारौ। तिनको
चरन कमल के दासा। आवन कि

हियसरसनिवास॥ तिनकोदास
निदासकहाऊ॥ जन्मजन्ममें यह
गतिपाऊ॥ पद्याबलियो कह्यो बहो
री॥ यह मोमतिहिन देऊ कि प्रोरी
देदा॥ बरुणहमारो नाहिकबू
आश्रमजनमुहाय॥ जगमें निभये
अवतये॥ दासनिदासकहाई॥
पद॥ मयावद्यालोका॥ नाहिविप्रा
नचनरपतिनापिबेसोनश्रुद्रोना
वावणनचगृहपतिनावनस्थोय
निवा॥ किंतुप्रोद्यनिखिलपरमान
दपूर्णमृताब्धेगोपीनर्तुः॥ पदकम
लयोद्दोसदासानुदासः॥ १५६॥ चो
पदी॥ कितेकपांनअवलवनकर
हो॥ कोऊकर्मनहीकोअनुसरही
हमसोंजोकोउपूछेआई॥ तासों
यहहमकहैसुनाई॥ हमनहीपांन
कर्मकोजानै॥ साधनओरकबून
हिमानै॥ पादत्राणहरिदासनकरे
साधनसिद्धियईहैमेरे॥ देदा॥

पानकर्मको उगहिरहै॥ अपनी
रुचि अनुसारा सो को तो हरिदास
को॥ जो रिन को अधिकारा॥ १५० ॥
जो क॥ पाना बलंबकाः किंचितः
केचितः कर्म बलंबकाः॥ ब्रह्म
हरिदासना॥ पादत्राण बलंबकाः
१५० ॥ चोपदेश॥ प्रतिमामोहिमला
मति अनै॥ श्रीगुरतिन को नरक
रिजानै॥ ज्ञाति बुद्धि बलंबमेकर
॥ हरिचरणोदिक जल चित धर
॥ संतन को चरणोदिक सारा ना
हिकरै जल बुद्धि विचारा कृष्ण
मम बपा तक हारी॥ मंत्र जा पह
रिको सुप्रकारी॥ तिन को साधारण
करि मानै॥ अखिर बुद्धि गुतिनो
मानै॥ हरि मम सदेवन के स्वाम
॥ सर्वेश्वर प्रभु नरनामी॥ जोर
देव सम तिन को एनही॥ निश्चै
निनारकी तिनही॥ न कि सुखोद
महिमा कहो॥ यह विधि मा

लीजीयोसहो ॥ १५८ ॥ इति विष्णु
धर्मसूत्रे ॥ अथ विष्णोः शिवा
धिर्गुरुमुनरमतिर्वैष्णवे ज्ञानिबु
द्धिर्विष्णोर्वैष्णवानां कलिमल
मयेनेपादतीरथेबुबुद्धिः ॥ कसा
रनोस्तिमंत्रेसकललुपहेशद्वसा
मान्यबुद्धिर्विष्णोर्महेश्वरशोतदि
नरममक्षीरयस्पृशानारकीमहः ॥ चै
व ॥ सतनकीमहिमाजुविसेमा ॥
वरनिसकतनहिसेमप्रहेमा ॥ महि
माजदपिजध्यामतिवरनो ॥ मधुरम
नुमुदमंजलकरनी ॥ १५७ ॥ कैसेव
रनोसकलमहातम ॥ अत्यबुद्धिअ
तिमंदडरातम ॥ खगाकीचंचुपुटी
मधिजलनिधि ॥ सबहीकहोसमाय
कैसीविधि ॥ १५८ ॥ न्युहोसतप्रना
वन्त्रगाध्रा ॥ सैकछगायोमेहनवा
ध्रा ॥ सतकृपाबिनसदगतिनाही
प्रीतिनहोईतुगलपदमाही ॥ १५९ ॥
नाहोसतसमागमकीजु ॥ नरत

नतहि सुफल करि लीजे॥ सत सं
गति सब मुख को साशा॥ यहै कह
तहौ वासुवाग॥ १६०॥ सत संगति
तै बुद्धि प्रकासै॥ सत संगति तै नव
नयनासै॥ सत संगति सम ओख
होहै॥ लहे सिद्धि सब तो जो चाहै
॥ १६१॥ याही तै हरि न किहि पावै॥
जाको बह्या दिक्कल लचावै॥ न कि
समान परम पुरषा ॥ १६२॥ सुही जीव
को साचो सार ॥ १६३॥ नर न लया
न सकल जगसां हो॥ न कि सभा
न आन कछु नां हो॥ महा गंती र न
क्ति ॥ समा गरा॥ न कि ताके वस
नाचन नर नागरा॥ १६४॥ रस सागर
गंती र यहो हो॥ याको पारावार न
ही हो॥ तद पिआप नो मन समज
वन॥ बिंडु मात्र लिखि हो नति
पावन॥ १६५॥ महानुभाव निवा
ऊ बिस्तारी॥ आसादन कियो
हि न हि न धारी॥ गुरु संत निको

इदं गहि परनौ प्रथम तत्कि उल्लेख
बस्यो ॥ १६५ ॥ इहि संसार अनंत जी
व गन लख चोरा मोक्ष मत श्रम तम
न जीव स्वरूप शास्त्र जग चह्यो ॥
अति सुखि मतै सुखि म कह्यो ॥ १६६ ॥
तिन जीवन कै वै विधि जेदा याव
र जग म बरनत बेदा जग म ऊं मै न
द घनेई अका स चारी कित नैई
॥ १६७ ॥ पछी प्रभु तिक जाति अनता
गंनत गंनत क जल हिये न अंता कि
त नई कति न मै जल चारी तिन की
अगिणि त जाति निकारी ॥ १६८ ॥ ता
पो छै थल चारी काही ये तिन ऊं के
कछु पार न लहीये तिन कै बीच
बिचार जु देखै मनुषि जाति धारे
ई लेखै ॥ १६९ ॥ ओर सरीर बज्र तज
ग होई मनुज देह धारे जग मोही
ओर देह जग बज्र पजाही तैमै
मनुज न की कछु नाही ॥ १७० ॥ देखै
परि विचार तिन मांही बज्र त

कजातिनीचदरसांही॥मलेच्छपुलि
दबोष्टदित्तनेई॥निजनेनीचअ
रतितनेई॥१०१॥आधेतोईहिनालि
निकारे॥आधेरहेमुनिनहिचिचा
र॥विदलिसुनिनमेवउतेरे॥वेद
पठेअसकदेघनेरे॥१०२॥विधिव
नकर्मकरैककुरुअंशोवेदबिमु
खचलेककुरुमुनिनेमोवेदलिसेध
पापजेकहे॥कितनेईयापकर्म
गहीरही॥१०३॥विदोक्तकर्मकरत
हेजिनमो॥कर्मलिसुवउतेरेतिन
मो॥कर्मलिसुकोटिनमधिकोई॥
विखययनिन्याणिमुमुचउरही
॥१०४॥कोटिमुमुचहोहिजितका
ग्यानलिसुछिनमेकोउएका॥कोटि
कग्यानलिसुमभिलहियेजीवन
मुक्तएककोउकहियो॥१०५॥को
टिकजीवनमुक्तनसांही॥कृष्ण
नक्तविरलेदरसांही॥कृष्णनक्त
नेईहेनिःकांमा॥कृष्णनक्तसव

सुखके प्रोमा याते कृष्णचरण प्रति
वता जुगल नक्त सोई कहिये संता
उक्त मुक्ति सिद्धि चाहिन चाहै केवल
प्रमानंद उमा है १०७ मुक्ति मुक्ति सि
द्धि कहि कहै जा नौति नहि असंतम
है ताकी साखि भागवत येही श्रु
कसौ नृपति परीखि कहौ जागद
तब बल देगी तब बल देगी ॥ मु
क्तानाम पि सिद्धाना नारायण पराय
ण ॥ मुकुट नरतात्मा कोटि सुपिम
हामुने १०८ तब बल देगी तब बल देगी
ब्रह्मांड मुकोई ब्रह्मागी मुजीव के
सोई कृष्ण कृपा ते कृपा करहि गुर
नक्ति लता को बीज लहै नर १०९ य
को भाग बिचारहि करई श्री गुर पद
पकज उर धरई कृष्ण वंद्य अपनायो
चाहै तब जिय हिय इहि जाति उमा
ही गुरसन मुख कै बेकी बुद्धि प्रै
वहिले न मति मुची तब स गुर कै
नरनै आवै ते वे स द गुर कौन कहा

वै॥१८०॥ जुराव मां हि जिनको इदं ज्ञा
वा॥ मां नो ना नो हित चित चा वा॥ नो
मे जाव क स दुर क हो यो॥ नो से पुर को
मरणो ल हियो॥१८१॥ तत्त्व से न क हिय
मे हित द र डी॥ भक्ति बी ज न्ना रो पण
कर डी॥ सिखि को हृदय न्नि सि ति हि
जां नो॥ माली श्री गुरु देव ब सां नो॥१८
२॥ श्रवण की रत्न न जल सी चें त व
भक्ति बी ज उ ल हें सिखि न र त व॥
भक्ति लता को अ कुर क ड र डी॥ सि
खि के हिय प्रेम सो ब ड डी॥१८३॥ न्नि
माल ताल हें ब ड वारा॥ न्नि दिव हृद
हो इ प्रा रा॥ विरजा ब ह लोक पर ज
डी॥ परम ब्यो म ता ड मर सा डी॥१८४॥
इन लोक नि की चा ह न न्नि नो॥ यह ड
म व नि न्नि दिवो जां नो॥ परम ब्यो म ज
के त हां उ पर॥ प ड जें चै भक्ति लता स
वी पर॥१८५॥ ब्रह्म वन गो लोक
ज हां है॥ कृष्ण चरण न रु कल्प न
हां है॥ तिन सों जा म ल ताल प टा ड

नद्योपैलिविस्तारहिपाई भक्ति
लतागमकुसुमनिपाणे प्रमत्त
पफलताकैलासे १८७ तिहि
~~मोरी~~ मुरसीचौकरई श्रवणक
रत्नतरमजलहरई इहिबिधिल
तालहेविस्तारा मजलहरितवा
ढेबढवाग १८८ मत्तडुरदवैल
बन्धपागध्रा सोई राजकरैलता
कोवाध्रा बहहाथीजोलताउखा
ग मोरिमोहिधरनिपरडारे १८९
तिहिहाथीमोलेईबचाई तोनि
रविघनलतागहराई याकोताव
येहेहियेधरई १९० कायकवाचि
कमनजनधरिये बैलबदोयक
रत्नजियहरिये उपाखातबबदे
अपाग भक्तिलतानलहेबढवा
ग १९१ भुक्तिभुक्तिवांछातरम
वैलानप्रद्यावितललचावे इत्य
दिकउपाखाजानै नहिल्ल
बाधकलखितानै १९२ येउप

वि
साखावदतविचारै॥ अरु शास्त्रक
रिकाहिलिबारे॥ मुक्तिमुक्तिरुचि
मनमहोमोने॥ ईनकीप्रहालुचा
करिजानै॥ १८२॥ तबैमुलसाखाव
दिजाई॥ बृंदावनसुजायऊलराई॥
तिहिलताकैध्रमसहपा॥ फलपरि
कमुहोईअनुपा॥ १८३॥ सोईफलप
कोचमिपरिमिहई॥ मालीतिहिआ
सादनकरई॥ मालीश्रीगुरदेवप्रमा
नो॥ तिहिलताकाअवजबकतानो
१८४॥ कलचरणसुरतरुसोताई
॥ तबसोईलताजाईलपटाईकल
चरणसुरतरुतिहिसेई॥ प्रमसु
फलआखादनलेई॥ १८५॥ यहीपर
मफलमहपुरुषारथ॥ इहिममा
नकहुओरनस्वारथ॥ मुक्तिधर्म
पुनिअर्थरुकासो॥ चाखोफलम
बहोमुखधामो॥ १८६॥ प्रेमसुफल
आखादनआगे॥ हणममनुचा
चारिफललागे॥ सुखन

फल लहिहै सुचनक्ति को लहिहै
यह है १४८ अम्प वांछा चित्त नहि
धरइ आनन्दे व पूजा नहि करइ
पान कर्म मै चित्त न देइ विख पा
नि ते म्म ब सि करि लेइ १४९ के
अनु करल सकल इद्रिय गन कस
चरण अपि न करिये मन मुक्त न
क्ति रदो ह्य तोइ प्रेसा नक्ति उदय
न व दोइ १५० यद्वरादा ज्ञात्वा म
त्रो पा धि विनु मुक्तं सत्परत्वेन नि
मलं हयो केण हयो केश मेवनं न
क्ति मुख्य ने १५१ ज्ञात्वा तत्त्वा ज्ञात्वा
अहं बुक्य वा वहि ताया नक्तिः पु
रुषो त मे ॥ सालोक्य सा हिं सा मी प
सारुण्ये कत्व म प्पूत दीय मान न
प ह्म ति विना म ते मे व नं जनाः २
म एव न क्रियो गा ख अत्यति क उ
दा क्तः यनां ति वृत्त नि गुण म इव
प प द्य ते १५२ चो प द्यो नुक्ति मु
क्त ई द्या हे जो लो नक्ति उदय हि

यहोई न तो लो॥ परम प्रिया ची ईच्छा
जोई॥ बढन न देत न कि मुख सोई
॥ तनं बाकं श्लोक॥ न कि मुक्ति म्हा
यावत्॥ पिशाची हृदय ततो जावद्
कि मुख स्यात्॥ कथमममृदयो न वत्
२०२॥ चौपई॥ साधन न कि करन नि
त सोई॥ तब तिहि हृदय उंदयर तिह
होई॥ रति दीगा टहिये जु बन्नावे॥
ताको नाम मुप्रेम कहावे॥ २०३॥ प्रे
म बढे तिहि नाम मनेहा॥ सेह बढे
कहो मान जु येहा॥ मान बढे तब प्र
णय कहाजे॥ प्रणय बढे तब राग ल
होजे॥ २०४॥ राग बढे तब द्वै अनुरा
गा॥ द्वै अनुराग लहे बढे सागा॥ बढि
अनुराग जाव सरसावे॥ सावे बढे
महा जाव कहावे॥ २०५॥ बिजठिको
ने नहार ति जानो॥ तिहि ते आगे ब
जरि बखानो॥ गाडे केर मना मुठि
कोनो॥ सोरस केवल प्रेम प्रमोने
२०६॥ गुडहि ठिकोने सेह दिजानो॥

खंडिकां नैमानं वखानै ॥ गोरस
कण प्रणय विन्नागा ॥ मिता ठिकां नै
जोनौरगा ॥ १०७ ॥ मिश्री गोर कहे अ
नुरगा ॥ कंद गोर ताव हिर सपागा ॥ म
हा ताव ओला की गोर ॥ इ हिते अष्टि
क कछून ही ओरा ॥ १०८ ॥ ए नु नक्ति
अस्था ईक हिये ॥ अमृत समान स्वा
द व फल हिये ॥ जे सेंद वि मिश्री पुट्या
वे ॥ घृत मधु मरिचक पूर मिलावे ॥ १०९
कहिये ना मर साला सोई ॥ परम मधुर
आ स्वादन होई ॥ ते सें नक्ति ने दर तिजा
नै ॥ ताके पेच प्रकार वखानै ॥ ११० ॥ न।
क्ति सो निति प्रथम कहावे ॥ इति य
दा स्परति अति मन भवे ॥ नृति य मख
रति महिमा करनी ॥ बत्सल रति चोथी
मन हरनी ॥ १११ ॥ पेच म मधुर मधुर रति
कहिये ॥ सख नक्ति मे एर सल हिये
अनु तहा सखी रकराणा ॥ ११२ ॥ गे
इ विन तस ओर वर न्यो नये ॥ ११२ ॥ ऐत
सा तो रस गेण कहै है ॥ रसिक नक्ति ॥

तिजगनगहेहे॥कहे पंचरसमुख
थापिके॥तक्तनकेमनरहेब्यापिके
॥११३॥सांछो रसयेआवेजाडी॥आग
वृकसालेंदरसांड़ी॥सांततक्तनवर
जोगीकहियो॥सांततक्तसनकादि
कलहियो॥११४॥दास्यतक्तजगसा
हिअपासा॥हरिपदसरनोजानोम
रा॥सखसावदृजप्रीदांमादिक
पुरमेंअर्जुनसखसुताबिकाबि
त्सलतक्तनेददृजजसमति॥पुन
सावदृदृष्टमोहिरति॥११६॥पु
रमेंसोरिदेवकीगने॥बन्यलइंसुर
नामने॥मधुरतक्तसखजमेंगोपी
॥पनकरिप्रमधुजाइठरोपी॥११७॥
पुरमेंमहियीमधुरगोपी॥हैवेकु
ठरमापददासी॥फेरिकलरतिदो
वपुकारा॥तिहिंकोबिरनोअंवेदि
॥चारा॥११८॥इकअेश्वर्यमधुरस
मोड़ी॥इतियकेवलावरनी॥मोई
वृजमेंकेवलसुखप्रकासअ

श्वर्ज्यामकौ गंधनतामै ११५ म
धुरातथा दारिका माहो मिश्रितत
व प्रकासतहा हो वैकुण्ठमै श्वर्ज
हिया जे मदाचनुरनु ज रूप विराज
११० शुद्धारतिको यह मुना वा उरन
फुरै श्वर्ज प्रतावा ईश्वरानंद
नंदन करई ताकौ वृजत हियनही
४३६ १११ ईश्वरताकौ नैकन गह
अपने ताव माहि छुकिरई मातदा
मरति बोरजे जन तिनहि श्वर्ज
है उदीपन ११२ वात्सल्यमग्य मै
जे अनुराग प्रोमधुरमतिहि के
आगै श्वर्जतामको चनहि पाई
जानिन जाय कि तेद वे जाय ११३
व सुदेव देवकी हिय माही शुद्ध
वात्सल्यहि फल कननाही श्वर्ज
जेन वात्सल प्रकासे शुद्ध वात्सल्य
हियनहि तासे ११४ मा स्त्रो क स
कल सुख धामो मातु पितहित व
कियो प्रमाने तव दोउ निर्भर सक।

मोनी॥ पुरय प्रध्वं न कृष्ण यदजा
॥ २५ ॥ श्रीतागवनेदसप्रकधे॥ प्ल
का॥ देवकी बमुदेदम्ब॥ विज्ञाय
जादीप्यरो कृतसंबदोनो पुत्रो॥ स
खजानेन संकितो॥ २६ ॥ चौपद॥
सखतावन्नर्जुनहिदिये होतदपि
सखईश्वर्जनिये हो॥ विश्वरूपन
विसका मोनी॥ सखतावतजिम
हिमा बखानी॥ गीतायां प्लाक॥ स
खे तिमन्वा प्रसंनय डकें॥ हे कृष्ण
हयादवह सखे तिमन्वा नतामहि
मानन बेदा॥ प्रया प्रसादान प्रणये
नवापि॥ चौपद॥ रुकमणिदिया
भुरगतिबसे॥ मेण श्वर्जनिये रति
मे॥ कृष्ण किछो परिदासनजानो
विचलन ईहिये नयमानो॥ व
वलशुच प्रमजहां होइ॥ नह
श्वर्जगंधन नहिकोइ॥ कृष्ण
नेईद विवज प्ररिक्क॥ व
पुष्पलज॥ २७ ॥

मत्तिमुत्तमुखविश्वजुदेख्यो तद
पिकचनत्रैश्वर्यविसेख्यो यही
विचारकियोलवितान्ही अंगरेग
कच्चमुत्तमुखमांही ॥११०॥ कैमन्त्रम
मेरहीमको कच्चत्रैश्वर्यनगन्यो ल
जनको कृष्णविनांमखत्रिह्लात्याण
कृष्णविनांमखिद्रदअनुगण
॥११॥ सांत्तचत्तकोलकृणयहे क
सलहेसुखओरनवहे स्वर्गमुक्ति
मुखविविधिविधाना तजैइहिग
तिनरकसमाना ॥११२॥ तदहं
लोका नारायणपरांस्सर्व नकुत
श्चनविन्यति स्वर्गपवर्गनरको
वृपितुल्या धैदर्शितः ॥११३॥ प
रात्रैश्वर्यपूरणपोना होइइस
केलहेसुत्ताना पोनामैसन्नमगे
खहोई सेवाकरै कृष्ण पदसोई
॥११४॥ दास्यरसमाहिदोयगुनजा
नो सोईविविधिलिखिपरगतप्रसा
नो मुखमैद्रदविस्वासलखावे

सखाकंधपरचेदेचढावै॥२५॥कु
लचरणसेवासुखपावै॥कुलसेतेमे
वासखाकरावै॥येहेसखासका
कह्योधर्मी॥सखानक्ततेजोनेम
मी॥२६॥ममताअधिकजोनिई
हिरसहै॥यातेकुलसखसोबसहै
॥वातसत्यआपहिपालकमानो
॥कुलहिपाल्यपुनलितजानै॥२७॥
॥यामेचास्योरसगुणदसई॥नित्य
स्पर्शसुखहियहितलसई॥हिम
नमममधुरसमयी॥कुलठिसा
वारतिअतिसये॥२८॥सखध
र्मसकोचनआने॥कुलहिपरममि
त्रजियजानै॥नित्यधर्मप्रहदरस
ई॥कुलमोहिममतासरमाई॥२९॥
॥कांतजावपियकोजियेअपी॥प्रेम
रंगलितअंगसमयी॥सेवैरसनेहअ
नुगमी॥तासमओकोनबडनागी
३०॥जानैजुकोउमधुरसममी
माचुरसकेयासैधर्मी॥जिसैयेकहि

गुणश्रीकासा ॥ प्रदीपमभिगुणप
वप्रकासा ॥ २४१ ॥ नौहीजा निमधुर
साही ॥ पाचौरसतिहिमैदरसाही ॥
सैकरतजावनाउरमै ॥ कल्लवसौति
हिक्केउरपुरमै ॥ २४२ ॥ कल्लकपाति
यहरससागर ॥ आखादनकरिहेजन
नागर ॥ सकलरसनकोयहेनिकेताकी
नौरमिकजननकेहेता ॥ रसिकनकी
पदरजमिरधारी ॥ सोईदिरमकोहेन
धिकारी ॥ २४३ ॥ हेश्रीकल्लतुमजुया
जियपरकीनीकपातासुकीसरवर
जोउपकारकियोनदनदनताकोव
दलोदेनयहजन ॥ ब्रह्मातुल्यआरव
उपाई ॥ नजनकरैतौउदियोनजाई
तुमउपकारजुकियोअनतातिहिं
मरणकरिबुकिरहेसताबाहरिध
रअच ॥ रजरुया ॥ करतकपाघनस
खरुपा ॥ मत्रदेईअपनैकरिलेज
मेव्यादेतकरतअतिनेज ॥ तकि
नदेजसबिस्तारौ ॥ इहेविधिप

रमन्तु गृहधरोऽन्तरजां प्रीतिरूप
 हिकरिकैः। अपनैः प्रापति बुद्धि वि
 स्तरिकैः। प्रेमजननमनिशतिसमा
 चो॥ निजपरिहरमै निवृत्तवसाचो
 ॥ एकादशस्कंधे श्रीकृष्णचंद्रप्रति
 श्रववाक्यं श्लोक॥ नैवोपयंत्यचिति
 कवमस्तद्वेश॥ ब्रह्मायुषोपिकृत
 मृदुमुदः॥ स्मरंतः यो न बहिस्तनुत्
 नामश्रुता॥ विधुन्वन्ताचार्यचेत्पुन
 पुयास्वगतिं नानक्ति ॥ १५४॥ चोप
 द्वा॥ गीतामैकही हरिमुखवानी॥
 मोयहं लिखे चक्ति निषिदानी॥ नैव
 बुद्धिदेउ मै जाते॥ अनायासमोहि
 पायतनांते॥ यासिद्धांतसौयहजा
 नियो॥ गुरहियाच्यानकृष्णमोनियो
 ॥ गीतायां श्लोक॥ तेषां सत्तनयुक्तानां
 ॥ सत्ततोपीति पूर्वकां दृष्टमिबुद्धि
 यो गंतयेनमोमुपयानितो ॥ १५४॥ चो
 पद्वा॥ तांते करियरसिकजनसंगा
 तवराचैह हिमुखके रंगाथहर

मलीयायेयद्वरनी शास्त्रप्रमानन
थामतिवरनी ॥ २४६ ॥ मदीननति
होमतिअंधा नक्तिलेमकोनाहिन
गंधा यद्वरमिमिधुअमृतकोपारा
ताकोकैमैपाऊपारा ॥ २४७ ॥ तैमैमम
कर्णडाईआकास कवजंपारन
पावेतासू तैमैहीमैमनहिचलाये
तथाबुधितसकळ्ळकगायो ॥ २४८ ॥
रमिकनकीकीरतिरमसारा कही
जायकिमिअकथअपारा लिखो
वर्यशतदिनअमराती तौऊमोपे
कहीनजाती ॥ २४९ ॥ तौमहिमाक
ळलिषियेअरा पवढेप्रथनहिआ
वेछोरा तातैईतिइकलिखीवना
ई लीयोअपनो मन समजाई ॥ २५० ॥
जेनकेन विधियहममजीहा क
हेसंतगुणतजितगईहा रमनांपा
ईकल्लगुनगना नहीनचरेतौवि
फलनिदाना ॥ २५१ ॥ यदेकारिमन
विश्वासा हरिदिगायकैहरिकै

दासा॥ याहि हेतु तैमै जिय जांजी सा
 रचि का किय सुख घांती ॥ २५२ ॥
 बार बार इहि पटे बिचारी ॥ है सुख
 दायक अघ हारी ॥ सत प्रताप आदर
 इहि केश ॥ है हेतु प्रताप घनेय
 २५३ ॥ शक्ति प्रयो जन जिन के होई
 ॥ तैमै साधु होई ते कोई ॥ तिन के म
 न मै रुचि उपाजावे ॥ कर कुन कि
 न को नहि नावे ॥ २५४ ॥ आदर पर
 न चितवन या को ॥ कहि है सदा ब
 मल हिय जा को ॥ जिन के सुक्ति बि
 चार अने का ॥ जानन नाहिन सुन
 ग बिचे का ॥ २५५ ॥ सब दायं न हेत
 कि बिहीना ॥ तैमै ऊं नर को उंक बि
 धि कीना ॥ सो ऊं आदर कहि है इहि के
 रा ॥ सम प्रमल विहित सो बज तेरा ॥
 २५६ ॥ ठांम ठांम तै वन्दन निहारी ॥ लि
 खन किय उं मे हृदय बिचारी ॥ यह प्र
 मदे विद्या कर मो परा ॥ अब
 न करि है करणां कर ॥ २५७ ॥ ओ

ऊँ जे अमर न प्रानी प्रकृति है न हि
मुख दखवानो त्रैलोक्य निदां कर जे को
ऊँ जाच्यो तिनहि जोरि कर दोऊ ॥ ५५ ॥
बेधवसहि मांवारहि वारा देष ऊँ म
जन सुमति उदारा ॥ ५५ ॥ सकल दे
खित बहरवन दीजे इतनी बिनय
मानी मम लीजे ॥ ५६ ॥ नक्त अमी नक्त
लक्ष्मि गाय किं हिंसत संगति कल
न पाये नक्त नक्त जो स्वागवनावे ता
ऊँ कलस मद्य अपनावे ॥ ५७ ॥ अति
कृपालना मनुख नही कल देवकी
रति अति रुरी अहो क रौ अचिर ज
ग्रह ताई घात करन ईच्छा करि
ई ॥ ५८ ॥ लाई उरी जमहा विखनारी
पान करावत तत छिन नारी ॥ ५९ ॥
अधम पूतन नारी जननी गति दी
नी गिर करी ॥ ६० ॥ देहा नक्त जेय
के मात्र नै दई परम गति नाहि त्रै
लोक्य नक्त कपाल जमा शरण रहै नर
जाहि ॥ ६१ ॥

प्रतिश्रीर्जयवर्माकांश्लोक॥ अहो ब्र
कीयसनकालकदं॥ जिघांसया पय
दयसाक्षी॥ लेनेगतिं प्राप्नुयित्वा॥ लो
न्यकं वा दयालुशरणं हृजेन॥ १६२ ॥
चोपदे॥ इहिलेशरणं कृष्णकी गहई
नरकल्याणमकलतबलहृत्त्रिविध
नापन पितननक्षरी॥ सद्गतघोरसंभृ
तिडरवजरा॥ १६३ ॥ तामुतापवारनहि
तनीको॥ हरिपदजुगलवृत्रमबहोके
केवलतापमात्रनहिहरई॥ अमृतबृ
हिस्रजदिसितंकरई॥ यातेछत्ररूप
हरिचरण॥ होऊं शरणमुखप्रदमप
हरण॥ १६४ ॥ दोहा॥ छंद॥ मैप्रसति
आपदअतिजुगलवरपाहिहेकरु
णांकरा॥ ब्रजकालकोरुवपमोमै
निजकर्मबसब्रजडरवजरा॥ संचि
तअविद्यातदिवसपरितपोमैव
जबिधिविज्ञो॥ इहिहेतुकब्रजन
त्रिपितखटअरिचक्षुआदिजेप्र
पुनिकब्रजकेसैंजसांतिकिचित

नहिलेहोनेद्वन्द्वहे तुमहोशमर्णा
कृपाखुतबपदरहिततयमुखकंद
हे गतशोकसमुखओकतबपद
कंतशरणगतलह्यो बडुकरकप
डीखलअपावनतरेसबजिनजिन
गह्यो २६६ सारचंद्रिकायद
जुसुहाई ऊरनसर्वदजईजिविच्छा
ई जाकौर्जजलपाईप्रकासा संतच
कोरनितयोऊलासा २६७ सुमतिकु
मोदिनीजिहिलविपरसे उज्वलरस
मयअमृतधरसे निसरबिसुखता
सद्यनसावै दंपतिरुपअनूपदिखा
वै २६८ सबनरनारनकोमुखदाई
तक्तनकीमहिमासुतगाई अहोवि
शौरीयहवरदाजै संतसमामको
मुखलीजै २६९ देहा जिनकोहि
महारिक्तिकीमहिमाकोहोपांन
तेहीकरिहेग्रंथकोमोदपाईसन
मानै २७० हूँत अद्यादसशतति
हिकपरसेतीसजांनिये सक्तनज
नमुखदांनीयहैसबतबखानिये

मार्गशीर्षसुतमासपुरुषकुलसु
खकरनी॥ मंगलमंगलवारसुतिथि
उत्तियामनहरनी॥ यहसारचंद्रिका
रममर्द्धावेद्यमहिमाशुभधरी॥
अलौकिकशोरीगुरुदयापापमार्द्ध
पूर्णकरी॥ ५०॥ इतिश्रीसारचंद्रिका
किंशोरीअलौकिकतमपूर्णसमापति
देहा॥ अमृतसाररमचंद्रिकाह
रिजनविमलमयेके॥ स्वप्नदासके
आसयहजसलित्विहोईनिसंका
रगदिहारोरो॥ ऊईनिरसिकनकी
बलिहारी॥ श्रीबृदावननवनिकुज
मेदपित्तिकेलिअहारी॥ श्रीहरव
मीश्रीहरिदासीसर्वापरिसरासी॥
खिगलविपुजव्यामध्ववननागारी
दामविहारीनिदासी॥ श्रीनटदृष्टी
हरिदासदेवजुवमकरिशीतमा
प्यारी॥ आगनितजीवनपरकरणा
करिकियेमहात्मनिकारी॥ शक्ति
मोरीदासदासोदरबलनरसि

करोगे मरे नी तद्गाथाधरा मराय
तावानरीति सुखदेनी ४ कमल
न सुखसखी मदन दन दन दास
मरायो मूरदास श्रीमदन मोहन
जुगल हिमलै लरायो ५ माधोदा
स श्री कि सोर मूर पुनि मूर हिमस्त क
नार्क नर सोम दत्ता मो गं दिक् जेति
न की कृपा म नार्क ६ रूप मना तव
जुर मसागर गोर सोम चित दीनो प्र
गढ करोगं धन की रचनो वास वि
पुनि को कीनो ७ श्री परमानंद दा
वर्तु नु जगो बिद सखा सने हो क
नत दास चोत स्वामी जु बृज रसा
द कये हो ८ सिया रं म अति रं म
उपासक तुलसी डूब बूत लीनो रं
म प्रसाद प्रसाद पाय कै प्रगटो सु
ज मनवीनो ९ ललित कि सोरी रु
परसिक बर संत तरंगारी ली श्री
बल सी अलि जग रज जि हो य
धा सुज सर सी ली १० जे जे रसिक
उपासक तिन की पद रज मस्त क

धरौ॥ ई लीकी कृपा सुदृष्टि कि सो
री की लित के लिति हारौ॥ हौ ई नि
रसि कन मोल लियो॥ अथ तो ऊरु नि
दे कै॥ पा ल्यो निज पद द्यास कीयो॥
खेचिलियो संसार सिं॥ धुतौ श्री बन
धाम दियो॥ अधन डं धन्य कहाँ इ
कि सोरी सुजस सहिगा ईजियो॥ र॥
ई ली सार चंद्रिका सपूर्ण॥ समा पाते
॥ सत संत नख बीन तीनारी॥ दुष्ट न
छिरी ज्योरी॥ जो देख्यो लिख्यो सुमदी
सनदी जिये॥ सत सही॥ श्री प्रसादाये
नमः॥ गृह सुप्रसन्न दलि संते॥ दोहा॥ सीस
नवां उग्र चरन॥ पुनि बिनउ सब साध नि
रकार करि॥ तकि कै सो कै बुधि अगाध॥ र॥
॥ श्री प्र॥ निरकार प्रणमति नतिकी जे
रसनां ब्रमल गाय मुन जी जे॥ गुरज बंद
इ प्रमदेवा॥ नां मक बर करै हरि सेवा॥
गोरक्ष नर धरी गोपी चंद॥ धूप हलाद
सकल कुबंदा॥ प्री पाधनां सैनै दासा॥
मो आ सो म सुनौ हरदासा॥ सब करि कुं

एहो जोगीनां तो कीजै सुप्रकथा
ब्रह्मो अपनी सकृत्तां हि कुलुत्रै
सी कहि जाइ जंहे सैं तैसी ॥ उम्ह
कीजो अग्न होई जनम कथा सारं ।
जं सोई सुप्रको जनम गणन को भाष्य ।
कजावन मुंति प्रमथन हाथा ॥ चित देसु
नै ॥ संपुश्नागा ॥ असक मन सैत नस ।
मा ॥ सुप्रकले सजाहि सुप्रहरी सुप्रकी
कथा सुनै सुप्रहरी हो ॥ ऊपर सरूप
सुप्रको कहत प्राण सुप्रपाम ये सगेम
सब हरि के सुनौ सकल चित वाइ ॥ चो
पई ॥ हापर अंति तुम जें तु निब्यासा मार ।
सुर के बंस प्रकासा ॥ बुद्ध बंस बिद्या मु
न सागर ॥ व्यास प्रसिद्धि ज्ञान घन आग
राट ॥ व्यास वेद संपूर्ण ब्रह्मो नै ॥ अटह
सा सुबट गुन जौ नै ॥ नौ व्याकरन कहै
मुनि गणोती ॥ पुरा न अचार हकंठ प्रवा
ती ॥ श्री वीकार धी रहै ब्रह्म मासा ॥ अर
ध गणन सब पुर वै आसा ॥ प्रमेखर सो रहै
मरां यं न कहै अक्षर तार कल ही मायं न

४॥ बुधसहस्रश्रावप्रदाने॥ सुकृतमज
 कर्दे मुरगणेने॥ लघमी पूरणाभरेन
 पुरवासी लोपैतही काश॥ १॥ व्यास
 लबिबधिसुखधेना॥ चिताअधिक
 कविता॥ रहै उदास रै गिदिन नारी॥ वि
 धरबूजै हितकारी॥ २॥ सबगुन श्रेष्ठ
 कुबिधिप्रकाश॥ कौन चिततै रहै उदा
 ॥ रहै कौधर्म पुत्रविन कै सो॥ श्रिया पुर
 नेय है अदे सो॥ ३॥ करो उपावजा कुबन
 सा॥ पावो पुत्रज जो हरि व्यास॥ साधोक
 शैतपधाना॥ दे देह बिह्न बर पुत्रप्रमान
 ४॥ बुधत्रियोदस एक ही पाव॥ करो कष्ट
 मजे सुत आया॥ चले व्यास तपसुत कै का
 ॥ जटा संकरी आसन साधे॥ १॥ धा दोहा
 पटी तटि व्यास मुने॥ तप वैठे सुत हेत वै
 र नारद बिधे॥ रिष मिलि कहै सकै त
 १॥ चौपई॥ १॥ सोन करिष नारद कंठ स्रजे
 कंठ वन च उरद सस्रजे॥ सहस्र अवा
 वीनती करही॥ नो तम गुन त्रम ते बि
 दिही॥ १॥ नारद मानि लीया रिष वैना
 नो तम सिद्धि वैनेना॥ गुन सागर है सिद्ध
 अवधूता॥ तहां जाऊ ब्रह्मा कै पूता॥ २॥ यात

वत्तारुदुतिअलेसिद्वयस कौमद्वि
द्विमेताता अंतजप्रवततीसेनेईप
रवतीसंजकहोई १४ नारदमंडलेसि
आश्रमा मेरोसांनिदईप्रकसां अंत
देवनिमोदेताथ तवरिकथाप्रसात्रला
ए २० गोरांउमसौसिद्वयपलाकांका
जनममदिकहोकीसाता नोहंसमूही
तांउमकही तातेविद्वयप्रसूतीस्ती २१
२२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
अहि उतसंजकीनकहिवाकाहि द
कहुतामनमयअथातो काहेहककि
लीयेमगांत ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०
मयो अतोदोधनहितकरिदोषो ब
रनलावेकजोजार यविधिकहिद्विद्व
असहि ४१ तवरुसांसनिअपतिअरे स
करमेजाइगढीरही संकरलोउमसनी
हारी मगनसमदिजाइक्यंतरी ४२ ४३
ममुनिमेंहु निद्वयकरैककपजाइहिव
विधननतरी करिसतोमप्रदकनदीन
करबेजंजीरिवीनतीकाता ४४ विद्व
नाथविद्वकेअदिवारी मुनोसिद्वय
अजहंमारी निद्विद्वकसंडुतारीमे

प्रहोहिदेवतकेदेवा॥

वो॥ २६॥ जगामाभिनेनपटबोले॥ कार
नकोनमहादेवबोले॥ मेरेनुरासंक्या
री॥ ३॥ मुकुटपालप्रमनपगारी॥ २०॥ हंतोम
हाउमारीचेरी॥ निसदिनररुचरननते
नेरी॥ मोसंकहोबोलिकपाला॥ ३॥ मगलि
काहेकीयमाला॥ २१॥ श्रीमहादेवतबा
तबईश्वरबोलेपतिगोरा॥ अबलोयकु
उमलीयोनबोरा॥ अबयहबुधिकहांते
आई॥ क्यंनकहोकोनेममआई॥ २२॥ प
रवतीनुवाच॥ तबगोरांजुंयात्संकहीर
मनारदसौप्रापतिनई॥ उनबजाहोनुम
पेआई॥ मालानेदकहोसमआई॥ २३॥ म
महादेवतबाचा॥ तबेबिगसिकेबोलेईस
रेघारवतीतेरेसीसाबारअतोतरमरिमर
आई॥ ताकीयकुसुममालाआई॥ २४॥ ददसु
तामतेसंमंनयो॥ यकुतोईसअचंभोकहो
ऊप्रभुमईअतोतरिवार॥ ३॥ मुनिहचलसे
कोनअक्षरा॥ २५॥ श्रीईशुरोवाच॥ हेमनि
अलनिहचलअक्षरा॥ सेवेअबिवासीन
जिसाराप्रममुनिमेंमैरोधसन॥ गोरांनुम
गहोनगणना॥ २६॥ मननहिचलकरिलोम
नालाई॥ बिनसंमाधिविनसीफिरिआई

कंक रिसुडसत निहच
लहोई ब्रह्मसमाधिसमाजवो सोई र
ध अवागवत निहै जिहध्याना बपरा
यो सो कहौ गिया ना अउ सत्सुदेस को
हिसमाजवो अरु चंचल निहचल सोल
वो ॥ २५ ॥ दोहा ॥ जेमन लागै एक सो क
ही नई तउ तजाइ पांच पाची सो सरस सि
सहज समाधिसमाय ॥ २६ ॥ दोहा ॥ रात
तउ बजना पांच पाची संधिरि कसे की जे
ससिहर सरगहरा गति दी जे ॥ अगवत ध
रम जो मकी धरती सो सोहिक हो अउ भेती
करती ॥ २७ ॥ बिसल मये सिरि दै बिचारी
उत्तहां सुबुजो नारी ॥ अल मये अउ बिस
वके नाथा या कै दै अंम निहिहाण ॥ २८ ॥
तउ न चले अकत बिचारी बटतर बैठे स
वउ मगारी ॥ तल्ले मयी दूनु नाई सुवा
असर हो जटताई ॥ २९ ॥ नौ वं प्रताप कहै
सि वही नौ ॥ गो राहु नै हरषत प्रांन जो म
उगति सुमिर को सागा देवी सुनौ और उम
सागा ॥ ३० ॥ सतपवन मन साक विष्टीरे सुर
तिस मेरी सरवर सीरु ॥ काया कै तजि ध्या
न लगावौ ॥ अम सुनि मै प्राण समावौ ॥ ३१ ॥

साधनकहेसकसदकेरो॥ जागनसंसाधि
नजिघरहेरो॥ अतरमुफातहांबसिहेजो
देवीतहांनबापेजो॥ १४३॥ तहांअगोहे
घरअबिनासी॥ बिसोबिलेंबोकाजनबा
सी॥ अजपाजपोरंमरसपीवो॥ अवाग
वनमिटेनितजीवो॥ ४४॥ मूलसंरहरिसु
मिरणजायां॥ रहोआइहिजुगजुगकेपाम
गोरांघांनप्रमरसमाता॥ ४५॥ दोहा॥ इहां
गंनगोरांनई॥ उहांअंनतयोपोषा॥ जटप
लठिचेतननयो॥ नजनहांनसतोषा॥ ४६॥
चोपई॥ पंथीप्रगटसुनेहरिगाथा॥ कंक
नरैगोरांकेसाथा॥ तबसिबकहेरोकंनमहे
अनां॥ उगिचिपिलीयोमेरोपांनो॥ बचन
नयांनकबोलेसिवा॥ पंथीउमिलेनागोजी
वा॥ रूपसीघांनोकायोईस॥ जाननपावेव
सुवाबीस॥ ४७॥ ईसउमेसुवाकेपीछो॥ न
नेगो॥ सुवाकतईछो॥ पीछेसिबआगेसुव
नोघतनाबासतहांननत्यापो॥ ४८॥ संक
जसतउरोतनसुवा॥ उहांबासतप्रहरण
रुवा॥ बिछनदीयोवरमागीबास॥ पुत्रचा
हिकीपुरवोआसा॥ ४९॥ तपकेजो॥ रिनी
योसुतबास॥

सकह्यो क्यो ही सुत देयो जीवन जनम
फल करि लेसु ॥ ५१ ॥ गणन बिगणों त्रि
लहि जाने ॥ देह य सो सुत व्यास बंधान
जो मन बंधित सो सुत पायो ॥ जाग बंध
सो जो ता आयो ॥ ५० ॥ चर बंधि य रि आये
व्यास ॥ सुवा प्रांन बसे गर भवास ॥ पिंम सुश्रु
के पिंड सलीयो ॥ प्रांन निरंतर रस पीयो ॥ ५२ ॥
नय सस साज सदा सो देवा ॥ अपनो जानि अ
नी सेवा ॥ ग्रन के दिन पूरण के आर्द्र हरषत
बहुत पिता अरु माई ॥ ५३ ॥ आजिक काल
हियुत नम सुत होई ॥ अ बगति की गति ल
येन कोई ॥ अवधि ॥ लंघि बसे ग्रन ॥ बही
असर जनयो सबन कौतूही ॥ ५४ ॥ सुप्रश्र
मनो मन हरि सुलायो ॥ गुफा गत माता के
पायो ॥ सिव उपदेस मम कि करि लीयो ॥ मत
उर जानि मनि वदन की ॥ ५५ ॥ सुप्रलोच
॥ हृदिके चरना ॥ परमै बहुत जनम अरु म
जा ॥ ताते लो गे रहे लो माही ॥ जो री सुरित सु
देना ही ॥ ५६ ॥ आवै आदि जगत दुष आग
अवनही ॥ छडो हरि सुप्रसागर पीतिल
र अचल अंग ॥ ५७ ॥ बिन मिटै नम वकी ॥
॥ ५८ ॥ नय सस सुमरे नम लसार गदग

द्वानि करै उकारै ॥ या विधि सुगुनं
तं रक्षये ॥ माता उवाच पिता उवाच ॥ ५० ॥
सर्वकौ सोचये मनरे ॥ गुनबोधात्मा
कस्य है ॥ सुमत्त कथा सुनावे व्यास ॥ विद्य
धर मिलिबेते पास ॥ पटा सीता परदे पौनी
ने सुप्रदेव प्रोता ॥ किं कर्तव्यं कंचन जल
के अक्षर जैये ॥ सुप्रतीयां नलीयो सुप्रतेमै ॥
५१ ॥ जले व्यास कहै सुप्रगोनी ॥ तव बहै ॥
न रहे सब प्रांती ॥ सुमिरन कथा प्रमरसनीनां
रंकार सौ सुप्रलेलीनां ॥ ६० ॥ दोहा ॥ ब्रह्मदा
सबीती गई ॥ प्रमसंमाधिसमाई ॥ विमगे म सुप्र
रस पावे ॥ २ ॥ ब्रह्मलोनाश ॥ ६१ ॥ चोपई ॥ ब्रह्म
रि सुप्र निकसन को नाही ॥ माता पिता अतरे
उवाच ॥ ३ ॥ कौन न पाइ दर सुत देये ॥ त
ब्रह्म जनम सुफल करि लेये ॥ ६२ ॥ २ ॥
दोस्य सो वे व्यास ॥ चाले अरज बिष्णु के प
सा ॥ बिष्णु की प्रीति आदर विषसेती ॥ किं मर
आये म सकयती ॥ ६३ ॥ मरहे सुत्रहे उवा
ई ॥ ४ ॥ जन ब्रह्मैर हो उकार ॥ महा संत प्र
रंको ॥ सुनो व्यास नाग ब्रह्मते हो ॥ ६४ ॥ ब्र
बिष्णु महेश्वर आये ॥ सुप्रसंखचन ब्रमेव
संनृपा हो निज सुप्रदेका काहे

बांती ऊरै नैन अतनी ऊर पांती सु
नौ उर बीताती हमारी व्याकुल माता
उषी उमारा ॥ ८१ ॥ रुदन बिना पकर
तजे न मे लौ बालक जननी कै सिंग
खेलो सुने सुत जो माता उषदी जो धर्म
न फलै अरु निरक परी जो ॥ ८२ ॥ अरु
महे देव का अ॥ माता पिता तजे मै के ते
चौरासी मधि पाय ते ते जिह जिहा जो न
प्रमहं आये ताही ताकै उर कहा हो
॥ ८३ ॥ कोण कोण माता अराधं किस कं
त जो मोह किस बाधं बार बार कहं न
चेव सुनौ व्यास बोले सुष देव ॥ ८४ ॥ आ
रिषां निफिर तें उष पायो नर्म जमत ते
र आयो ताते त अरु कहै सुत मेरो सुन
न चौरासी को फेरो ॥ ८५ ॥ कीट जनम
दस बाहर तीसा न ऊल चउदस जो नि
मई सा पंख बार सत अमा जं आयो सु
रस्वान सिंघ तन पायो ॥ ८६ ॥ मग मज
याल केई बाश शंकरो क सावर अरु
शंखा सेह देह मे पाई भैंडा जरख
रज सुरगाई ॥ ८७ ॥ सर अखरं कं जर
नमयो अज मेघा वृष महिषा ययो

अजेगरप्रपदप्रधकार्ज। जलचर
 पालचरकहतनंशार्ज॥ ८८॥ चोचर
 योस्वानकेकोना॥ सुनोभासद्वयक
 होबिधाना॥ रुद्रस्वानकोतहांमेपीयो
 हजेस्वानदाततविदीयो॥ ८९॥ तरसत
 रसततरसतेहिवाहिमुवो॥ फनिअवत
 रलीधज्जकुवो॥ जोवतीकेतनदीयोव
 सा॥ सोद्वयकहंअवबुमपासा॥ ९०॥
 नयोधूधमथलागोमाता॥ तवतनमो
 कोपकस्योहाथा॥ मीडतमीनतलोरे
 हाडा॥ अजहमेहिषायगोराभा॥ ९१॥ श्री
 तरिमारद्वयतकरिमास्यो॥ पीबेनुस्नस
 लामरमास्यो॥ जरेसुप्रीवनजेनहीप्रा
 नी॥ दरेशद्वयकासुनोकोहोनी॥ ९२॥
 नाजोनिनटकतफिस्यो॥ ओरमुनोज
 हिद्वयकूपस्यो॥ असिबनसंकारनके
 पात॥ जमद्वयतनवैच्योतहांमाता॥ ९३॥
 नोकोवहतरेकीधरा॥ जमद्वयपद्वय
 केवारा॥ तहांमासतांबहुविधिपार्ज
 सोहंनुमभौकहोसुनाई॥ ९४॥ जलने
 थंजलगाइरहेस्यो॥ ऊमअवाइसोमो
 हिफिस्यो॥ तातोतेलपकडिजमपावे

दोजेगअगनिआदिमोहिआवे॥ १५ ॥
 कबरुसुरगलोकमेंपाये॥ फुननटर
 कौउडगनकेआये॥ विवधिनांति
 देवेइसजलएल॥ सुरगरमातलनमो
 नलन॥ १६ ॥ कबरुसुरगनरकगयो
 कबरु॥ तेइसमोहिआमतहेअबरु
 तातेअबबंधनहीमोह॥ तजोआसमु
 तकौअदेह॥ १७ ॥ दोहा॥ छंदीपाय
 नऊफिको॥ नांनविधिअवतार॥ न
 यअनंतमा॥ तापिता॥ नजोनसिरजन
 हार॥ १८ ॥ व्यासउवाच॥ जीपशे॥ सि
 रजनहार॥ नजोसुषआवे॥ घरहीवेता
 धर्मबलावे॥ ब्रह्मवंसउतमकलपावे॥
 जागबनेउंममरहआये॥ १९ ॥ आखे
 दसटसासउगणानी॥ नौव्याकरनअठा
 रहे॥ २० ॥ न॥ आप्रमधमेंसकलजांत॥ २१ ॥
 विद्यापाठअनंतबघांत॥ २०० ॥ श्रीगु
 षदेवउवाच॥ श्रीपशे॥ आप्रमधर्मक
 मनहीबूटे॥ विदपुरांनजगतवितलदे
 विद्यामंकीकरैजेव्यास॥ उमकंबंधी
 मोहकीपास॥ २१ ॥ व्यासउवाच॥ व्यास
 कहैसुनिमुतसुषदेव॥ षटक्रमधर्मअ॥

आदिदेव॥ हमउममिलनजैजगता
था॥ मातापितानबिछोहोसाथा॥ २॥
श्रीकृष्णदेवनवाच॥ सुनकृष्णससंगके
गाली॥ कोआयेकोजैहोसाथा॥ आदि
अंतजीवयकायका॥ जूआयेसंगयेनेक अ
शंखहरारुद्रपाशमुरप्र॥ गीदिव॥ अग
स्तनगंवागिरा॥ गजतबसिष्टरुबिस्वामं
त्र॥ मृदकंजसापिपलगायेअगनत॥ ध
नारदजसेभगनोअरजत॥ हरकासा
जमदगनगयनत॥ सांडीलौमुनिहृत्त
मुल॥ कलापबुलस्तोजातिलनहीइहां
पा॥ कसिवगरेगरेगदसंजोति॥ सहस्र
ग्रासीगरेजहोते॥ राजाधंधमारसेगये
बुधिबुजभरुनरहे॥ ध॥ दसथेगंमलभ
मणजेसे॥ नयदिलीपकी॥ जागीर्थसेसे
गयेसुग्रीवनीलहयावत॥ गजगवाधि
अंगदसुअनंत॥ गहरनकसिखरांवरण
कनेणा॥ यद्रीजीलकरावसुधेणा॥ अ
स्तकंपनकालहिवाये॥ देवाअनंतनर
अनंतबिलाय॥ ८॥ अजेपालदिइदर
जोधन॥ अगहोगयेकथं॥ कहानिनर
गदकणाकहेतचलेमुनिबामा

होपक्षरे बिलघेवचनरुप्रानडधारे को ।
लेब्यामसुनौसुरार्द्र सुतउतपनमबक
थासुनार्द्र २८ दुधदीरघदेकीयेत्याग
येकडुत्रलीयोवेराग मोहो जायनटासे ।
दरे ॥ उग्रतपइंझहरे २९ दोहा ब्यास
कहो सुरपतसों सुषतपविधिबोहार
हंमसुतउमधिरराजके सोकबुकरोबि
द्वारा २० दोपइं तबसुरपतिमनिचित ।
नई अपठराबडीबुलायरलई सुषक
कथाकहीमेंब्यास जायकरोवाकोतपन ।
म २१ कहो बसपतसुनिसुरार्द्र सुष
मंमायालिपेनकाई जनमतहीकीयो
कोलसियांनै तबरंजाकरिउठीमान
२२ पारुऊतसबकाकोल तोरिषमे
येमानऊबोल कोणतपसीमोसूरहे ।
महलोकमैरंजाकहे २३ तबसुंइंअत
रषतनयो बीराऊकमचलनकंदीयो
मधियनसीषबिनोदउचारे अपनौआ
नानांरूपसंवारे २४ एकमोहनीकीयो
सेगार तबकाकोमनरहेरार एकसि
पनीरूपावरपहरी पाइपंषपदमनीह
२५ मैनाऔरउरबसीसची दसमहंसत

केसंगिकडी॥मानुषदाजीजरीकोधे
धिरूपचबिसुरपतिचौधे॥रुद्धेचंचल
दृष्टिचपलअतिबान्नी॥तिनचबिचिल
मनअरकमधिपानी॥सुरपतिकोमनमे
हनहाश॥तिनआगेनुकहाजिघाशीर
ध॥पांचवानलेस्वरठासंधर्ष॥प्रकृपवं
मानुषरपतिवेगशी॥बममनजटितव
मानबिशो॥सरजकांतिबडोरथराजे
रुद्धिचंद्रकांतिबिबधिनगात्रांनारंजा
जोतिसमिधादसनांन॥एथरंजामिलिजो
तिबगई॥हेषतदृष्टिधैचधैजई॥२२॥
चलिआतुरआई॥बनमंजा॥तालमृद
गवजावेतजंजा॥धंदजिनेरिसंघधुनिनिक्
सी॥घंटाघोरकगोमुकंसी॥४०॥रुतिबंस
तरुगावेरंजा॥मोहेषगमगमारतथंजा॥
मुकेहरेहरेतरमुके॥सोवेंधेमविरहेकेजं
के॥४१॥तिमगीधोवंननयोजजासा॥घादस
जानमंजिप्रकासा॥चक्रतनयेसकलव
तपसी॥आसाअदभुतजोतिनदरसी॥४२॥
बसंवरनईमोहनीतरतरादेधिरूपतपस
गयेगरिगशि॥सुषकेआसनमवचलिअ
६॥भानसमाधिरहेल्योलाई॥४३॥कल

लीजतजाइ हौं सुखदेव सुख सुनौ नही ज
ओर ही राखे धुआँ ॥ १० ॥ स्वाद
न समज्यो सुख तौ ॥ रिखा को रूप निहारि श्री
रचोर कते मेखला ॥ नौ ह धन कउतहारि हं
स गवन मृलोचना ॥ कटिके हर सुख नाम
कंठ कपोत सबद पिक ॥ घटर स एक निवा
स ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ एक प्रसुक
नी दिये ॥ घट प्रसुक के तोरा ॥ उत्सक बरुन
आदरे रंजार वेस और ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥
जेतर नीटै नारिकं ॥ करं हिन रंग रस रुध
स्वाद न समज्यो जोग का ॥ तिन को जन्म अरु
थ ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सुख कहै रंभा सु
नौ ॥ तौ प्रसप्य धनि ॥ गण न मुक्ति मारागत जे
नर कर्यो तिहि संनि ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥
चोव चंदन मृगमद ॥ प्रमल रस कपूर ॥ कव
च लने न उर कत कठिब ॥ मधुकर न वेह जर
॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ चंद बदन ऊडल अर्क ॥ न कवे सलग
तार ॥ मो आगे ताहरे ॥ जानौ ब्योम सिंगार ॥ १६ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सुख कहै रंभा सुनौ व
षयन के नुम प्रांन ॥ तहां न कबु नुमारे व
ले ॥ जहां जोग सिध गण न ॥ १७ ॥ ॥ ॥ ॥
नही उबारे जोगी जती ॥ तपीर श्री सुर की ई
प करे की रेव सि पलक मे ॥ सुख ते सुने न सो

॥६॥ श्रीसुखदेव उवाच ॥ सुखकहे संजा
मुनो वै न गिउ अ न रागा ॥ हंस सो उ म गो
हिक रता ॥ लेवा लो वै रागा ॥ ६१ ॥ राज उवा
॥ ब्रह्म अहि उत प्र न ज हां ॥ पांच त त स री
रा ॥ मो आ गे जा क हे ॥ धरे को ई क्ष रा ॥ ७० ॥ न
श्रीसुखदेव उवाच ॥ ब्रह्म अहि मे हंस न
ही ॥ नां हंस त त वं धं न ॥ अ म अ गो च र म
म न ही ॥ त हां हं मा रा प्र ण ॥ ७१ ॥ राज उवा
मुनि सुख भू लो हरि लो ॥ सम ऊ र क री बि ल
सा ॥ प्र षी उ मे आ का स दि सा अं ति ध र ती के
पा स ॥ ७२ ॥ श्रीसुखदेव उवाच ॥ सह का मी
आ वै स दा ॥ नि ह कां मी नि ज ठो रा क न द ह
डि क क स ज धे ॥ वै रं जा को ई श्री रा ॥ ७३ ॥ राज
प्र वा च ॥ कर जो रि वा न ती के ॥ दि सु ख हं म
कं सां ता ॥ न ही त र पां ले जां नि हो ॥ ज ल र न
सा यो ज्ञां ता ॥ मि रे द ल अं मे मु डे मु नि सु ख मो द
स रा म त क ज्वा रें ब ड त मों ॥ च उ र का ये म ल
रा ॥ ७४ ॥ ब्रह्म विष्णु म हे म लो ॥ पा न पू र अं रा
का ॥ मु चं कं ध अ र्ध म वि षं ड अ दि अ र
७५ ॥ श्रीसुखदेव उवाच ॥ अ न न रा उ र
ज ध र क री न उ त प र चो र ॥ हं म नो ज दि
जै न रा ॥ वा दि क री वि द व ॥ ७६ ॥

अधुमेधुं बिलं मेधुं बिले वेधुं वाद वि
प्रदरा बिलं धुं धर्म सु उरी तव्यं ॥ १ ॥ सुध
राधौ वस्यं सः अधमोदसकं धकं सेव
दतसिलोकातां जतो धुमततो जयं य
रमसं वादधर्मकी वची धर्ममधो मनुस
र वेमदा सञ्चारं नकी यो सतगुरकै मग
र ॥ ३ ॥ गुरगो ब्यंद प्रथप गधकं मतिबु
ग्यां नधसं न सुधुपां क गुरप्रताप मनोहर
सा तिहि प्रताप ग्यां न प्रकासा ॥ ४ ॥ सब संत
नकी अगण मांगौ करो जदया अचलं मनल
गो ॥ सबत सत्रह सै सत होत्र माघ प्रथम पध
हे जिदिनोत्र ॥ ५ ॥ गंध उरा न न भाषालां कं म
तिउम मां न जीव संजार्क कथा अगाध बु
मंथोरा ॥ ६ ॥ संपं धी आका सन वोरा ॥ ६ ॥ दाउ
रजल निधि विधा बुजावे ॥ ७ ॥ संत्रप ते जल तो
लन पावे ॥ ८ ॥ संपट मै पड सीत समावे ॥ ९ ॥ कोरा के
सुध मेरन आवे ॥ १० ॥ सावन बुंद धर्म तया तां ॥ ११ ॥
मन मुखि कै सै गतै गुसां ॥ १२ ॥ जै सीम ति नोरा
हे मेरा कै सै कथं अंग गति तेरा ॥ १३ ॥ उम अ
गाध मै जीव अयां तां ॥ १४ ॥ जन की चक चिति जि
नि अं न सुध की नोरा चित न ही करीये ॥ १५ ॥ अंत
र को हित हिर दे धरियो ॥ १६ ॥ साधो मम अ

मुंनउममुंनछनेअंतजांमीपाव॥धेमेदा
 सअस्तुतिकरै॥सुकतौवपुराजीवाश
 दापरसमैअंतकीबादी॥मंनपुतपांनसा
 तक्षरी॥हस्तनांपुरीनपुअस्थानं॥प्रगत
 परात्मवासवधानों॥१५॥ब्रूतेराजउधेश्वर
 वारी॥ओरसहोइअगाकारी॥दापरमा
 योआयकलिरिजेपमंजाइहिवारेसीजे।
 १॥राजप्रीवतकंजबदोयो॥कलिजुगत
 हांपयांनोकायो॥ताकेवंसमांहिइकप्रंशा
 जनमेदाराजाप्रवांन॥२॥दयावंतअरु
 दातानीसकलसुबुद्धीसुधरमजीवको॥अ
 सकाहेछेगुरसेती॥कथाप्रकासकरकु
 प्रभुयेती॥१४॥यजनरदेहजीवजोपावेकै
 वनधरमप्रमेस्वरजावे॥याकलिमेंकैसेक
 रिरहिये॥दयावंतप्रह्नकैकहिये॥वेसपाय
 ननुवाच॥सुनिराजातुकेतनकेमुन॥यामें
 समुगतिद्यामुनि॥यामेंकरमधरममुंनिया
 में॥यामेंअस्थरयामेंजांमैं॥१६॥यामेंपाप्र
 निबोहरे॥याहीमेंदोरासीफिरे॥याहीमेंज
 पगारकमांवे॥याहीतनमेंधर्मनसावे॥१७॥
 दोरासीलखजीवजंतमेंनी॥सबकैटीकैध
 कुमतमातन॥जूमिलियागहैतुंमचंदन

यमलमुत्तनयेक ईशोपवततसमिन ।
 ई कण्वरनवप्रचारिवताई ईधुमै
 उधकमोमैलोहं जांमनमरनदेधले
 दोहं येकैजुगलनपांवनहाय कौनने
 दतैकरोहुविचार ॥ ११ ॥ सक
 लतउतनकैलवहृदेधरुचितनघेदघे
 मदासजांमनमरनचारिवरनकतनेद
 ॥ १२ ॥ करसांगंधबगे ।
 छागलस्वानसिंघहंसोसमिवापुलस
 बकापेब्रतेनहीकोई जीवसीवसुंअंत
 रहोई ॥ १३ ॥ अंतलवसुंआहोजेसै
 जलतैजतीतरंगा उदिकयेकदीसेद्वैज
 गा पुनिंजलमिलेअंतरनाही जीवसी
 वसमजोमनमाही ॥ १४ ॥ अंहाटककेअ
 घनकीजे कंकनपाइलअगधरीजे चं
 दीऐकगरेप्रवांती सबघटजीवमरवेदु
 जांन ॥ १५ ॥ कर्मकिसबकोनांवधरायो
 अंकमगरकोजाडोआयो नीचजबम
 वहीनैलहो लोनतैलकोबोरोअयो
 ॥ १६ ॥ सुप्रविप्रयोअंरनाही सबसुमिरे
 हरिमांहिसमाही छाडैकरमकरेहरि
 जगती नांवअतीतजातिनहीजगती

७३॥ अहं चंदनगानिका पुनि राजा ॥ पर
 ससिंलितं बकको छाजा ॥ अतीतकी
 जातिनपान्ती ॥ दयासां हिकति अंतर
 ता ॥ ७४॥ निदा करै मुनै जे कोई ॥ कृतघ
 नी सब सो गी होई ॥ अंतर करइ तपस
 मो जाती ॥ उगत सकइ को सुपच संघात ॥
 ७५॥ तं संज्या असु बेद पुरांना ॥ सुकत ह
 न बिप्र सां जांती ॥ व्याज वन ज अरु ॥ कष
 क मां वै ॥ सुपच नां म सोई दिज पावे ॥ ७६॥
 जंग न ये नृप अणकारी ॥ साधन कानि
 दानुर धारी ॥ अम सुहार छिनात न की
 मेदै ॥ सो दिज सुपच सुपच चो जेदै ॥ ७७॥
 दान कले सलेई मृत सिद्धा ॥ अस मृत क
 य रिजो जतरं ज्ञा ॥ सख धरै जीव दयानु
 वै ॥ सो बिप्र चं माल कहौ वै ॥ ७८॥ सो स न ये
 अस मट सं मेला ॥ वन मे करै अतिका मे
 ला ॥ गउ बछ कं देइ बिछोइ ॥ सो तर चं मा
 ल जगि सोई ॥ ७९॥ मुर जोही मुर निदा
 करै ॥ मुर की सेव बिमुख कै मरै ॥ मुर कानि
 दि सुनै चत लारी ॥ चं मां ल सो नर फल जाई
 ८०॥ कं न्या की अजी लेई ॥

ऊताई ॥ ११० ॥ धरमबलीजहांसतिमहा
ई ॥ अगतिबलीजहांमनलघुताई ॥ अ
धरबलीजहांसतिमहा ॥ अमृजिलंगमृजि
जेजाने ॥ १११ ॥ जोधरिआवेइरिध्यानी
हितअधरकीजेप्रानी ॥ जोजनभावप्री
तिसौंयौषूजाइअतीतनिगसीदोष ॥ ११
२ ॥ साधीतीरणवरतअनेकविधि मग
लजगिआचार ॥ सतगुरुभावअतीत
वन ॥ नफलसबसंसार ॥ ११४ ॥ चरचासु
निचांमालकी ॥ नपरहीनचोकरामुल
समदाससुरताजये ॥ बाकगयोसबअ
लि ॥ ११५ ॥ तोनूल्योबाकबलीनताछा
॥ जौलाइरिकीयोतवरजा ॥ जितीक
उपजीमनआसं ॥ ११६ ॥ मछनचाल्योस
बदनसं ॥ ११७ ॥ राजाहारा ॥ जाकीस
कतिनजोजन ॥ कथभावमजेकरि
सेवा ॥ जदिपआवावाशिअतीता ॥ के
सेआइरकीजेमीता ॥ ११८ ॥ दनद ॥ अ
विलकाबिदरांमनवेरं ॥ कंदमूलफल
दंनदं ॥ तथानजोजनसीतलिनैतं ॥ १
१९ ॥ आरनदेमीठेवेनं ॥ १२० ॥ अतीतोघा
रेतसंदत ॥ आयोजोजनकरेनिचंत

६
अकपीयो मुदा सांनि। अन्नमासमोज
बनजांनि। ११॥ विमु। अतीतजाहि स
गृहवास॥ पूजापित्रगया निवास॥ के
टिसेवा बिनसे जदे॥ हत्यावद्वलगेप
देपदे॥ १२॥ देवा अचान अरुजगकरे
कोमानसे हंसरधरउके भेदे॥ जोर अ
तीतनतरपतैकोई॥ रवांभा॥ सबन
फलहोई॥ १०॥ जोरचंमालसतरपत
याती॥ नयो अतीतत्यागउरकाती॥
सदेवजंकजेसेवा॥ नांम अतीत अ
गुरदेव॥ १०४॥ जोरउवाच॥ कथउ
नाधरममसाई॥ किंतप्रवरतकाये
इहिगई॥ अस्थोपावादेकिहधर
बिनसेधरमलागिहिहकरम॥ १०
चंमालउवाच॥ धरसतिलेउतपतिन
याप्रवरत्याजबपालीदीया॥ छिमा
लगि अस्थोपाधरम॥ बिनस्याला
गिओधकरम॥ १०६॥ दयाबिह
कथिरे ज्ञान॥ जेसोसलनबिलोया
ज्ञान॥ दयाबिहनासुमिरनकरे
सेधरमकरमअनसरे॥ १०७॥ अम
अहारपांडकंपोये॥ धरमकर

नदीनीरजसमदसाया पापदोष
जाकीमाया जोरबिप्रसगहकोई
मंत्रमहातेसुधबसोई १३५२ चक्रये
कखानदसजेसैं दसत्रकीरेकोधुज
तेसैं दसधुजबेखांसमोबखांनी दस
बखांराजासमिजांनी १५३ उचषाप
टलकायो जबगखही संकामानत्र
येनपतबही इतनीसुनतगयेदेजना
ठ बिमरगयेसबहनपाठ १५४ सावै
पाठबिसरिगयेसबहनके गयेभट
किदिजधंसबाकसुनचंमालके
चेकरहीनमांम १५५ बिप्रजाइअप
नेघरिवेसैं मानमलोराजाकोअसे
चितामानत्रयेनपभारी क्रोधवतहे
बातउचारी १५६ जगबिधंसनकीयोइ
नप्रेता अवेबिप्रगयेगृहजेता सरधा
सरबगईबिसिमेरी किहिपूजबिप्र
नमतिफेरी १५७ मातंगोआयोमति
हीनो ब्रथाजगबिधसमनकीनों आ
त्मततचितयेआपी कीनोंकरमध
मतजिपीपी १५८ चंमालअसरजाता
मैंजारू अअपसरबोलोबानी तबु

कथो गति मति तही जानी ॥ १५१ ॥ पा
पे सहे श्रयो मम धारे ॥ हृत्पा की मरी ज
ग बरारे ॥ आदम बर धम संजोग संवा सो
पल कमा हिन फल क रि मि सो ॥ १५२ ॥
॥ जामा लो गुब्ब च ॥ हम न हो पा पे छो मुन
प्रां नी ॥ ओर श्रुते क जग त में जानी ॥ मंथ
वाट कुला ट ब ता वे ॥ निहं चै सो पा पे पृ
हा वे ॥ १६१ ॥ प्र अ स्त्री सों करे स ते हा ॥ विर
था त त ग वा वे दे हा ॥ ओर कं म के का
र ज करे ॥ सो पा पे पु न र क मे प रे ॥ १६२ ॥
प्र था ती ले ध र मे ध रे ॥ लो न ला गि कं च
त वे त दे रे ॥ स्वार थ के ले जी व ध वा वे न
ह वै सो पा पि पृ क हा वे ॥ १६३ ॥ जो को ई क
रे क सी का ती का ॥ सो ओ मु न कि रि मि
त वै जी का ॥ क त य नी स व ह ॥ क न धा वे
सो पा पि पृ व ज वि ष वी वे ॥ १५४ ॥ वि न न
रे सा का रि ज को ई ॥ ता की अंत वि या
रे लो ई ॥ या त वि सा सी म र वि ष प्रां न ॥ सो
पा पे पृ ह र क ती जां न ॥ १५५ ॥ अ न दे न अ
न मु ती गु चारे ॥ अ व ता मा म न न न न
वा रे ॥ अं ति मु तां वे क रे अं च न ॥ मे
मे स हो पा प अ रं ना ॥ १५६ ॥ अ न

सुकलपटञ्जन तेलतमोलतालकोम
जन संग्रहकरै न कथथाजूवती सोपा
पेष्टकहावेजती १६ अमिउरीदृष्टमोज
नकथनां अनछायाजललीतरमथ
नां संग्रहकरै अतीमैरती सोपापेष्टक
हावेजती १५८ इधनमीक्षेमघनविच
रे बामीअनमकरै अहारे संग्रहेकरै
अनममासारे सोखरवकपापिष्टी
लार १५९ लोटतउठतअननछनपां
नी कारिजककरोकरतेप्रांनी इती
तोहरियादिनकरै सोपापेष्टिलाज
प्रहरे १६० जेसादेघातैसाकहा स्वार
यतजिप्रमाणह्य मतिब्रवतजोबोले
छोजा ताकहोसनदोजोराजा १६१ सा
धी जातिपातिबलराजको तजिहरहे
अजिमान ब्रह्मदघातब्रजमजी लवि
येआत्मज्ञान १६२ राजा १६३ उममंदे
वदेवमुनिदेवा ब्रथाजज्ञलाउमसेवा
उमदरसनसुंमुफलमुसाई नितनित
मगक्षशेइहिताई १६३ मेरीपूजाअर
वाप्रांध्र १६४ अतीतंघारउमसांध्र
किनांशइराबिह्नमंदेसं केब्रह्मना

रद रिषे सं ॥ १६४ ॥ धरमनुवाच ॥ सति क
रुसति ही उमल हीयो ॥ साक्षर सरव बिमा
रद कहि यो ॥ अहं पिता उम उत्र हं मां ॥ १६५
धरम गट जग सां ॥ १६५ ॥ साध साध उम म
हा प्र संगी ॥ जहां जनम उम मां रो धनि जग
धनि मात पिता कुल वं ॥ जाग्र उत्र उधि
धर वं ॥ १६६ ॥ राजा नवाच ॥ जन्म सुफल
दत्त की नो आ जं ॥ आ जि सुफल की नयो
मम रा जं ॥ पिता हं मां रो आये गृहं दरसन द
यो सुफल दिन ये हं ॥ १६७ ॥ धरमनुवाच ॥
साध साध सुत उत्र वं जीव ॥ सति उम मां रो सं
जं म सां ॥ सति उम मां रो अस्थल जहां उत्र
राज सति नयो तहां ॥ १६८ ॥ अ चर ज देव
लोक मे भईया ॥ सुनिक रिवा क धरम की
हीया ॥ देव लोको धरम सिधारे मं नव उत्र
धि रं जीव हं मां रो ॥ १६९ ॥ धरम सुहं ने ते बा
ध रि का रं ॥ धरम सुहिने ते गृह अपा रं ध
रम सुने ते जस से स जं ॥ धरम सुहिने ते रिप
के अत्र ॥ १७० ॥ धरम सबा द सुने जे लो शी
अठ सठ ती रण को फल हो शी ॥ धरम सबा द
सुने छित ला शी ॥ छिन व निप म का या ते
जा शी ॥ १७१ ॥ धरम सं

माकी सोनासमिबिराजै धरमसबादसु
नेसुप्रहोवै प्रहिरिपापनीदप्रसोवै १०२
धरमसबादप्रवसिकरिसुनीये आन
मछादिप्राप्तिप्रतहनिधै धरमसबाद
नेफलनारी जिसकीरतिकोजोअ
धकारी १०३ धरमसबादसुनेदेकांत
नेताजननमयानगवान्त धरमसबाद
नेकेशिप्रित मानंनजेबिसत्रमीत १
०४ यहुफलधरमसबादको मनबचरु
मनरक्षर बकतासुरताजुगलकी ले
बेलागीबार १०५ मतिजानोमंथामई
नेधैपरीअटल धेमदासबजोममें येहीन
पडीसुफल
साधी जे
कहाग्रथमें तेसीचालेचालने
कहेसुगिलीजीयो जलाहोइतताकाल
इतनासासंप्रथमहोउरकीदया॥कवीरसाहिवकी
दया॥सकलसंतमहंतनकीदया॥अथमोक्षप्रद
लिपते॥बालमीकोजाजा॥हेसाधइहजोबचनहै
सोपरमप्राप्तनहै करुकल्पाणकेकतीहै इम
बुद्धिधैप्रातिश्रद्धाकीतबजपजतीहै जबबने

पुनर्व्रजतेजनों के आनंद के होते हैं। जैसे कलप
तरु बिछे कों बने फल प्रदत्त हैं। तैसे जिसके पुनर्क
र्म के आनंद होते हैं। तिनकी प्रीति अद्वय विधे
होती है। अरु जिसको अद्वय प्राप्ति होता है। अन
यान ही प्रीति होता। एह वचन प्रमोद का कारण
है। एक सहेस्र पंचमै श्लोक है वैराग्य करण के।
हे नारायण समप्रकार नार्दजी कह्य। तब विद्या
मीन बोले। विद्या मित्र उवाच। हे सांनदांनो विधे
अष्ट रंग मजी। जो कछ जानणे जोग्या सो उज्ज जाणि
या है। अब इस ते जानणान ही रह्य। परतिस विधे वि
श्राम पावणे केन मित कछु मारजन करण है। जे
सै सुध आदि सै विधे कछु मल न ता होवै। वस को ह
र करीये तो सुध सप्रपण सता है। तैसे कछु ऊज्ज
देस की उज्ज को अपेक्षा है। हे रंग मजी उज्ज जे साइस
मगदन विद्या मजी का पुत्र सुकजी होत मया है। वज्र
मी वना बुधदांन था। जो कछु जानणे जोग्या। सो तिस
मने जाणि याथा। परु विश्राम केन मित उस को नी
अपेक्षा थी। सो नी विश्राम को पाइ करी। सो तिसांन
हवा। रंग मी उवाच। हे मगदन सुकजी के सा बुधदांन
अरु सांन गोइथा। अरु कैसे विश्राम की अपेक्षा उ
स को थी। अरु कैसे विश्राम को पाइत मया सो क
पा करि कह्यो। विद्या मित्रोवाच। हे रंग मजी अंजन के

पर्वतकीनां ईजिसका अकार है ॥ श्रीमाजोनात
नव्यासदेवजीस्वरनकेसिंघासनपरिविराजमां
नहै राजादसर्थकोपासबैठा है ॥ अरु सरजकीनां
ईश्वरकासदांनजिसकीनांत है ॥ तिसका पुत्र सुक
जीथा ॥ अरु सरबसा स्रहंका बेताथा ॥ सति कौ
सति जाणदां ॥ अरु अ सति कौ ॥ असति जाणियं
था ॥ जो आत्मा सां तरूप है ॥ परमो नंदरूप है ॥ अवि
श्यां प्रकृतपादतमया ॥ तद्वगसं कौ बिकल्पगति
या ॥ जो जिस कौ मै जाण्य है सो न होवै गा काहे तै जो
मुज कौ आनंद नही मोसता है ॥ रामजी इस संसे कौ
पाइ करि एक काल मो व्यासजी सुमेर परबतकी
कंदरा द्विषे बैठे थे ॥ तिन कौ निकठि आया अरु क
ह कहत मया हे भगवत न इह संसार अहंवर कहा सं
उपज्या है ॥ अरु निरवृति कौ सै होवै गा ॥ अरु आगे
किनु का निरवृति हं बा है ॥ अरु कौ सै निरवृते ह
दा है सो कहो हे रामजी जब इस प्रकार मुखजी क
हा ॥ तब विदित बेद जो बियासजी है सो तत का उपदे
सु कर्त मये ॥ तब मुखजी कहा हे भगवत जो कबूतु मो
कहा सो तो मै आगे ही जानता हूं ॥ इस करि मुज कौ
सां तन ही प्राप्त होती हे रामजी इस प्रकार सुकजी
कहा तब सर्वगि जो व्यासदेवजी है ॥ सो विचारत म
या जो मेरे बचनौ करि कौ सां तन प्राप्त होवै गा काहे

जो षडहैं तो षडही रहें ऐसे जे षीयूं ता प्रकहा

ते जो इस कौं पिता पुत्र का सनबंध ना सता है ऐसे
बिचार करि कै कहत मया है पुत्र मैं अति अतंत
तत प्रनही ताते तं जा जनक के निकटि गवन क
रु ब्रज सब तत मृहै। अरु सांत आत्मां हें। उस
सौ ते रा मोह बिबल हो जावै गा हेरां मजी ज ब्र
म प्रकार व्यास देव जी कहें। तब मुकजी उहां सौ
चला। तब बिदेह ना जा जो मिथलानगर आराज
जनक का तिस बिधै आया। आइ करि राजा के उ
दास रह्यो तब जा। तब जे सटी कौं जाइ करि कह
जो व्यास देव का पुत्र मुकजी आया प्रडा है। तब रा
जा जानत मया। जो जगिया सा है इस कौं तब कहा
तब सप्त दिन मडे ली बिदी त मये। तब राजे ब्रज डि
पूछा जो मुकजी प्रडा है। तब राजे कहा आगे ते आ
वै। तब आगे ते आगे। सम्यो दी बिधै नी सप्त दिन बि
दी त मये। तब डिग जे पूछा मुकजी था। जे सटी कह
प्रडा है। तब राजे कहा अंत हपुर बिधै। ते जा वक्त
अरु उस कौं सुंदर भोग भोगावै। तब अंत हपुर क
इस्त्री मजुं बिधै सप्त दिन रहा। तब राजे पूछा अब
तिस की क्या दि सा है। अरु आगे क्या दि सा थी। मनो
कहान आगे निरादर करि सो कदा न हंथा अरु
न नौ गो करि कै प्रसन्न हंदा है। अह अमिष्टि जे प्रे
कम मान है जे से मंद पवन करे

अथ वा ग्या है तब जे षी कहा प्रडा है

नमही होता तेसे बह बड़े भोगों करि नर निरा
दर करि बलाइ मान नही होता जे संप्रदी है को
मेघ के जल बिन नदी यों के जल की इच्छा नही हो
ती तेसे उस को नर बर किसी प्रकार की इच्छा
नही तब राजे कहा इहां ले आ दो जब मुक
जी आया तब राजा जनक उपदेश द्या आ
रुद्राणां मकी या नर रुद्रो नो वै विगये तब राजे क
हा हे मु नीश्वर तुम किस निमित्त आये हो तुम को
क्या बांछा है जो कछ बांछा है सो कहो नर
रुति मकी प्राप्त जाणो हकी वाचा हे गुरो इह
संसार नर नंदर के सें उत प्रकटा है नर रुद्र के सें सा
त होता है सो तुम कहो हे राजा जी जब इस प्रकार
मुक जी कहा तब राजे जनक उपदेश की द्या जथा
सास्त्र जो कछ व्यास देव जी कहा था सो ई कहा त
ब ब्रज डि मुक जी कहा हे राजा जन जो कछ उमो
कहा है सो ई पिता जी कहा था नर रुद्र सो ई सास्त्र क
हत है नर रुद्र विचार करि कमें नीश्वर से जानता हो जो
इहि संसार चित के इस मंद विषे उत प्रति होता है
परु विश्रामु क को नही प्राप्त होता जनक उपदेश
हे मुनि स्वरो कछ मैं कहा है नर रुद्र जाणता है इ
म ते उपगत जाना जा कछ नही नर रुद्र कहणानी
नर रुद्र कछ नही इह जगत चित के संवेदन करि

कैलसाहो जबचित फुरणो ते रहत होताहो तबम
मैनी निरिदरत होजाताहो अरु अत्मा ततनि
तसुधहो अरु परमांनंदसरूपहो केवलचेतन
हेति का अभास करुत बहं विश्राम कों प्रावेगा
अरु हंसुक्ति सरूपहो काहेतें जो तेरा चित अत्मा
की दोरहो तिसां की दोर नही तां तें तंबांगद्वार
आत्माहो हे मुनी अरु व्यास तें अधिक जाणिक
रिं मेरे पास आयाहो अरु तें मेरे तें भी अधीकहो
कहेतें जो हमारी छेष्टा बाहज दिष्ट नरावतहो तुम
री बाहज घेष्टा भी नही दृष्टि आदती अरु अतरे
ईश्वर हमारी भी नही तुमारी भी नही हे राम जी ज
ब इस प्रकार जे जनक कहात वसुक जी निह
संक निरजतन अरु निरभे हो करि चले सुमेरप
र्वत की कंदरा बिघे निरबिकल्प समाधित गाई
दसहजार वर्ष निरबिकल्प समाधिर स्थित रहो व
कुडि निरबांण हो गये जैसैं सनेह बिना दीपका
नरबांण होजाताहो तैसैं निरबांण हो गये जैसैं सं
प्रविष्टे बंदली न होजातीहो तैसैं लीन हो गये जैसैं
सूरज का प्रकास संधिया काल में सूरज बिघे लीन हो
जाताहो तैसैं कलनां रूपी कलंक कों तिघाग करि
के बुल प्रद कों प्राप्त हंये ॥ १ ॥ इति श्रीम मोक्षप्रक
रणो मुक्त निर्वाणवरनननांमसः ॥ विस्वा

हेराजादसर्थे जिम प्रकार सुकजी सुधबुधधे तैसे
रांमजी है जैसे उसको सांत केन मिति कुछ कम
राजन करत बिधा तैसे रांमजी को विश्राम केन
मित कुछ कम राजन करत बहै काहे तैजो आ
वरन करने हारे मो गेह मोति नों तै ईछा इनकी
नर बिरत नई है अरु जो कबू जानो जोगथा
मोजा गिया है अब हमों करि कुछ जुगति कर्णी
है तिस करि कै इसको विश्राम होवेगा जैसे सुक
जी को थोड़े मारजन करि कै सांत की प्राप्ति नई है
तैसे इसको भी प्राप्ति होवेगी हेराजन अब रांमजी
को भोगों की ईछा मपस नही कर्ती जैसे ज्ञानदा
न को अध्यात्म आदिक कुछ नही मपस करत
तैसे रांमजी को भोगों की ईछा नही मपस कर्ती भो
गों की ईछा मपस को दीन कर्ती है भोगों की ईछा क
राहि सी काना मबंध है अरु भोगों की वासना
काहे कणी इसी काना ममो कहै ज्यो ज्यो भोगों
की ईछा करता है त्यों त्यों लघु होता है अरु ज्यो ज्यो
भोगों की वासना छे होती है त्यों त्यों गरिष्ठ होता
है जब लग इसको आनंद प्रकास नही होता त
ब लग विषियों की वासना हर नही होती जब
आत्मानंद प्राप्त होता है तब विषे वासना को कुं
प ही रहती जैसे मारुथल विषे बली नही उतपति
गती है जैसे ज्ञानदान को विषे वासना नही उत्पति

होती है साधे ज्ञान वां न जो विषे भोगों का त्याग क
ती है सो किसी फल को धार कर नही करती सुजाव
कही ज्ञान वां न की विषे वां सना चलती रहती है ॥
जैसे संरज के उदेंद्र में अंध का की सुजाव कही न
भाव हो जाता है सो राम जी को किसी भोग प्रदर्थ
की वांछानही अब विदित वेद रुदा है परु विश्र
म की अपेक्षा आहता है ताते में कहता हूं जो सो
ई कर हूं जिस क शिनि श्राम वां न हो दो हेराजन
इह जो भगवां न व सिद्ध है इन की जुक्त करिके सं
त वां न हो दें गान्तरु आगे नीरुध वं सकल के पु
र है इन के उपदेस उदारा आगे नीरुध वं सी ज्ञान
वां न हूं ये हैं कैसे हैं भगवां न व सिद्ध जी जो सर्व जि
हैं ॥ अरु साधी रूपी हैं ॥ अरु त्रिकाल जे हैं ॥ अरु ज्ञान का सूरज
हैं ॥ इन का उपदेस करि राम जी आत्म पद को प्राप्ति हो दें
गा ॥ हे ब्रिष जी गोह ब्रह्मा जी का उपदेस तुम्हारे स्मरण
विषे कहे ॥ जो जब तुम्हारा दमारा विरुध रुदा था
निषं द्रा चल प्रवत विषे ॥ कैसे था निषं द्रा चल प्र
वत जो है ॥ सो सर्व रुषी स्वरो करि अरु विष्टों क
रि पूरन था ॥ निषं द्रा चल प्रवत विषे निगाध पर्व
त है ॥ निगाध प्रवत विषे ब्रह्मा जी आई करि संस
र वासना निरवृत के निमित्त उपदेस की था था
अरु अरु वरज

देसकीयाथा अरु दोही उपदेस रामजी कौ
उमकरह रहनी अरु निरमल ज्ञान का पात्र
है अरु ज्ञान भी वही है विप्रिग्रह भी वही है
अरु नीरमल भी वही है जु गति जो सुख पात्र वि
धै अरु पात्र होवै अरु पात्र विना नही सो भता
जिस विधे सिध पावना होवै अरु बिकृत तान
होवै अरु मा जो अरु पात्र पुरष है तिस कौ उपदेस
करणा वि अरु य है अरु जो बिरक्त होवै अरु
सिध पावना न होवै तब मान करै दो नौ क
रि संजु गति होवै तब करै पात्र विना उपदेस वि
अर्थ है अरु यह जो उपदेस भी अरु विन्न हो जा
ता है जैसे गज का इध बहंत पवित्र है परिस्नान
की उच्छा विधे नारीये तो वह भी अरु विन्न हो जाता
है तैसे अरु पात्र विधे उपदेस करणा अरु विन्न हो
ता है हे मुनी अरु जो सिध वैराग करि कै संपन्न
होता है अरु उदार आत्मा है सो उपाय उपदेस
कौ जो गहै अरु तम कै मेहो जो बीतराग हो अरु
रुको धर्त रहित हो परम सांतरूप हो सो उपाय उप
पदेस का इह पात्र है वातनी को वाचा है भारदा
ज जल इम प्रकार विद्या मित्र कहा तब नारद उवा
च व्यास आदि कुरु कहा जो साध साध अरु य इह
जो भला कहा है अरु मही जधारण है तब राजा दश

रथके पास सबने प्रकाशकों धारें जो वे वेथे बुद्धाजी के
 पुत्र बसिष्ठजी तिनोने कहा ॥ हे मुनी स्वामी जो कछु उ
 भौं आजा करी ॥ सोह भौने मानी ॥ ऐसा समर्थ को ऊं न ह
 जो संतों की आजा निवारन करे ॥ हे साधो जे ते राजा
 समर्थ के पुत्र है ॥ तिन समर्थों के रिदे विषे जो है तम रूपी
 तम सांन सो भै जांन रूपी सरज करि निवारण करों गा ॥ जे
 सें सरज के प्रकाश करि अधकार हरि हो जातौ है ॥ हे मु
 नी प्रवर जो कछु बुद्धाजी उपदेस कीया था सो मुक्ति को
 तम बंड तम सरण है सोई उपदेस करों गा ॥ तिस करि रां
 मजी निहस सै पद को प्राप्ति होवै गा ॥ बालमी की बाल्य
 हे नाराज जज ब्रह्म प्रकार बसिष्ठि विस्वामित्र को ज
 ब कहा तिस के अनंतर ब्रह्ममाण मो छुपाइ संघट
 कहा ऐं कौं रां मजी के मन मंडप सो सावध न होत मय
 ॥ इति श्रीम मोक्ष प्रक रे हि विस्वामित्र ब्रह्म ननां मसर
 गद ॥ हतियो ॥ बसिष्ठो ब्राह्म ॥ हे रां मजी जो कछु कंमल
 ना बुद्धाजी मुक्ति को उपदेस कीया हो ॥ जी दो के कल
 णन मित सो मले प्रकार करि मेरे समर्न विषे आवता
 हो ॥ ब्रह्म उक्त को कहिता हों ॥ रां भो ब्राह्म ॥ हे मगवन
 कछु कप्रसन करणें का ओ सरपाया है ॥ तिस संवे
 मो छुपाइ जो संघटा है ॥ सो तो उम

बिदे

वानविद्यासदेवजीसोसर्वज्ञहैं। सोविदेहमुक्तिकि
ऊंनरुदा। विसिष्टोवाच॥ हेरामजीजैसेसृजकीकि
एहंविषेनिमरेखहोतीहै। नरतिनकीसंघाकबु
नहीहोती। तैसेपरमसृजकीसंवेदनरूपकिर
णैविषेजोत्रिलोकीरूपीनिमरेणहैसोअसंघहै
तिनकीशंघीभीकबनही। अनंतहीहोइकरिमि
दिगईहैअनंतहीहूइहै। अरुअनंतहीत्रिलोकी
यांब्रह्मसमुद्रविषेहोइहैगीयांतिनकीसंघाकबु
नही। रांसेवाच॥ हेमगदनआगेबिदीतहूइहै। अ
रुजोआगेहोवैगीयांतिनकीसंघाकेतीहै। अरुव
र्तमानकोतौजाणतेहैं। विसिष्टोवाच॥ हेरामजीअ
नंतकोटित्रिलोकीअहंकैगणउपजतेहैं। अरु
मदिगोहैअरुकईहोवैगीयांकईहूइयांहैं। ग
एनेकीसंघाकबुनहीकाहेतेंजोजीवअसंघहैं। अ
रुजीवजीवप्रतिआपणीआपणीशिष्टहैंजबइ
जीवमृतहोताहै। तबउसीमथानविषेअपणो
अथवाहकसंकल्परूपीछिद्रविषेइसकोबांध
नासआवतेहै। अरुउसीमथानविषेपरलो
कनासआवताहै। अरुत्रिथबीअपतेजबाई
अकासपांचैभूतनासआवतेहैं। अरुनांनंप्र
कारकीशिष्टअपणीअपणीसामनांकेअनु
सारनासआवतीहै। बहूदिउहातेमृतहोता

है नवदोही सिसदां बज्जुड भास आवती है। नांम
रूप संजगति दोही जाग्रत रात हो करि पं डी भा
सती है। बज्जुडि जब गृहां तें मती है तब नमपं
च भूत क शिष्ट का अभाव हो जाता है। अवर
भास आवती है। अरु तहां के जो जीव होते हैं।
तन कौं जी इस प्रकार अनमन हो तो हैं। इस प्रकार
कारण एक एक जीव की शिष्ट होती है। अरु मिति
जाती है। तिन की संख्या कबु नही। तो बुद्ध विषे
शिष्ट की संख्या कैसे होई। जैसे पुर घफेरा देता
है। अरु तिस को सर्व प्रदाय। तमें ते दिष्ट आव
ते हैं। अरु जैसे नग का बिघै बें बें ह्यें नदी तट को
बिछ बल ते दिष्ट आवते हैं। जैसे नेत्रों के दोष
करि के अकास बिघे मोती जू की माला दिष्ट आ
वती है। जैसे सुपने बिघे सिंहा भा
सती है। जैसे जीवों को परलोक अरु इह लोक नम
करि के भासता है। वासतव ते जगत कबु न प्रजा
नही। एक अद्वैत प्रमात्मा तत अपणें आप ही बि
षे स्थिति है। तिस बिघे दैत नम। अबिदियां रि के
भासता है। जैसे बालक को अपणें पड छावें बि
घे बैताल भासता है। अरु जैसे को पावता है। तैसें अ
पानी को अपणी कल्पना ही जागरूप होइ भा
सती है। गंजी इह व्यास देव बती।

वानविद्यासदेवजीसोसर्वज्ञहैं। सोबिदेहमुक्तिकि
ऊनरूपा। विसिष्टोवाद्या। हेरांमजीजैसैसर्जकीकि
एहंविषेनिसरेवहोतीहैं। अरतिनकीसंघाकबू
नहीहोती। तैसैपरमसूरजकीसंवेदनरूपकिर
णैविषेजोत्रिलोकीरूपीनिसरेणहैसोअसंघहै
तिनकीशांघीनीकबनही। अनंतहीहोइकरिमि
दिगईहैं। अनंतहीहूइहैं। अरुअनंतहीत्रिलोकी
यांब्रह्मसमुद्रविषेहोवहैगी। यांतिनकीसंघाकबू
नही। रांमोवाद्या। हेमगहनआगेविदीतहूइहैं। अ
रुजोआगेहोवैगी। यांतिनकीसंघाकेतीहै। अरुव
र्तमानकोतोंजाणतेहैं। विसिष्टोवाद्या। हेरांमजीअ
नंतकोटित्रिलोकीअरुहंकेगणउपजतेहैं। अरु
मदिगएहैं। अरुकरईहोवैगी। यांकरईहूइयांहैं। ग
एनेकीसंघाकबूनहीकाहेतेंजोजीवअसंघहै। अ
रुजीवजीवप्रतिआपणीआपणीप्रिष्टहैं। जबइ
हजीवमृतहोताहैं। तबउसीमथानविषेअपणे
अथवाहकसंकल्परूपीछिद्रविषेउसकोबांध
वनासआवतेहैं। अरुउसीमथानविषेपरलो
कनासआवताहै। अरुप्रिथ्वीअपतेजवाई
अकासपांछोंमृतनासआवतेहैं। अरुनांनाप्र
कारकीशिष्टअपणीअपणीनामनांकेअनु
सारनासआवतीहै। बहुदिउहांतेंमृतहोता

है तब दोही सिमटां बज्जु नाम सन्नादती है। नाम
 रूप संजगति दोही जाग्रत रात हो करि पं डी भा
 मती है। बज्जु डिज बगुहां तें मती है। तब गुमपं
 चरत कश्चिष्ट का अनाद हो जाता है। अवर
 नाम सन्नादती है। अरु तहां के जो जीव होते हैं।
 तन कौं नी इस प्रकार अनन्य होतु है। इस प्रकार
 कारे एक एक जीव की श्रिष्ट होती है। अरु मिति
 जाती है। तिन की संख्या कबुन ही। तो ब्रह्म विषे
 श्रिष्ट हूं की संख्या के संहो दे। जैसे पुरुष फेरी देता
 है। अरु तिस को सर्व पदास्थ। तमें ते दिष्ट आद
 ते है। अरु जैसे नग का विधे वै ठे हों नदी तट को
 छिछ चल ते दिष्ट आद ते है। जैसे नद्यो के दोष
 करि के अकास विधे मोती जकी माला दिष्ट आ
 दती है। जैसे सुपने विधे सिंहां भा
 मती है। तैसे जीवो कौं परलोक अरु इह लोक तमें
 करि के नाम ता है। वासतव तें जगत कबुन मजा
 नहीं। एक अर्थ प्रमात्सत तन अपणें आपणी सि
 घे स्थिति है। तिस विधे है तन में अविधि भासते
 नाम ता है। जैसे बालक को अपणें आपणी से
 घे बैता ल नाम ता है। अरु जैसे को पक्ष ता है।
 ग्यानी को अपणी कल्पना ही जात रूप में
 सती है। गंजी इह व्यास देव नाम सत्संग में

हैं जैसै जो पुरष दिन दुक्त कीयां होवै अगले
दिन मुक्ति करिऐ तब दुक्ति दूरि होजाता
है जो अपणै हाथ करि चरना मत भीनही लेस
कता अरु पुरषार्थ करैतौ दोही प्रियी के पं
पं करणै को समर्थ होता है ॥ इती श्रीम
वृष करणै पुरषार्थ उपक्रमो वरन न संसरी
॥ वसिष्ठो वाच ॥ हे राम जी जो चित्त कबुवा
करता है ॥ अरु साख के अनुसार पुरषार्थ न
ही करता सो सुखो कौन पावेगा ॥ उसकी उन
मत देखे ॥ अरु पुरषार्थ भी दो प्रकार का है
एक साख अनुसार है ॥ एक साख विरुद्ध है जो
साख अनुसार कौ त्याग करि अपणी इच्छा के
अनुसार बिचरता है सो सिद्ध कौन पावेगा ॥
अरु जो साख के अनुसार पुरषार्थ करता है ॥
तिस करि कै सिद्धता कौ प्राप्त होवेगा ॥ अरु
भी भीन होवेगा ॥ जो अनभव तें सिद्ध होती है
अरु सिद्ध तें अनभव होती है सो दोनो इस
करि होते है ॥ देव तो कबुन क्वा हे राम जी
वर देव को नही ॥ इसका कीया इसको प्राप्त
होता है परु जो बलिह होता है ॥ तिसके अनु
र बिचरता है ॥ अपूर्व काम साकार बली होता
त्यो उसी कीजै होती है ॥ अरु जो बिदमान पु

र्थबलीहोताहै। तबउसकोजीतलेताहै। जैसे
 कपूरधकेदोछत्रहोतेहैं। अरुतिनकोलडावता
 है। तिदोनोविषेबलीहोताहै। तिसीकीजिहोतीहै
 तोदोनोउसीकेहैं। जैसेदोनोकमईसीकेहैं। जंपू
 रबलासंशकारबलीहोतीहै। तोउसीकीजिहोती
 है। अरुइहप्रजतनबलीहोताहै। तोइसकीजि
 होतीहै। हेरांमजीइहजोसतसंगकरताहै। अरु
 सतिमानविचारकरताहै। बज्जडिबिषिरुकीवो
 रदावताहै। तोपूरबलासंशकारबलीहोताहै।
 तिसकरिइसथिरनहीहोसकता। न्हेसंजाणक
 रिउकपूरधप्रजतनकात्यागनहीकराणा। जो
 पूरबलेसंशकारतो। न्ननथानहीहोतान। पूरब
 लासंशकारबलीनीहोते। संतसंगकरै। अरुस
 तमास्त्रोंकादिउअरुआसहोते। तोपूरबलेसं
 कारको। पुरधप्रजतनजीतलेताहै। जैसेपूरब
 लेदिनविषेउकतकीयाहै। अरुअरुगलेदिन
 मुकतकीया। तोउसकाअरुआवहोजाताहै।
 तैसेपुर्वप्रजतनतेहोताहै। सोपुरधार्थक्याहै।
 अरुतिसकरिसिधक्याहोताहै। सोअरुएक
 रूजांनदानजोसंतहै। अरुसतमास्त्रजोब्रह
 बिदिग्राहै। तिसकेअर्थअनुसारप्रजतनका

प्रावैणो जोगान्त्रमाहै जिस करि संसार ममुद्र के
पार होवै हेरां मजी जो कबु सिध होवै दाण है इस
को अपण पुरधार्य प्रजत न करि होण है अ
वर देव को उन ही अरु जो सास्त्र के अनुसार
पुरधार्य को त्याग करि कहिते है जो कबु क
रण है सो देव करेगा सो मन धौ विषे गरव है
तिन का संग जी न करै उन की संगति करण दु
षों का कारण है इस पुरध को प्रथमतो इहिक
रत बिदे जो अपण वरन आश्रम विषे मुन आ
चरण को गृह्य करण अरु अमुन का त्या
ग करण ब्रजड संतो का संग अरु सत सास्त्रो
को विचार करण तिन को विचार करि अ
पण गुण दोषों को विचारण जो दिन अरु रा
त्रि विषे स मुन किया करता हो अरु अमुन का
करता हो आगे दोष अरु गुणों का साधी भूत
हो करि गुण को जो संतोष धीरज वैराग्य वि
चार अत्याम है तिन को बधावण अरु दोष
जो बिप्र जे है तिन का त्याग करण जब असे
पुरधार्य को अंगीकार करेगा तब परमानंद
रूप आत्मा तन को प्राप्त होवैगा ताते हेरां म
जीवन के घाइल ह्ये निर्गामी न्याई नही हो
वैगा जो घास निण के पात को रसीला जाण कर

पडाछाताहै। तैसैइस्त्रीपुत्रधनादिकंविधेमग
नहोइरहण। तैसानहीहोवण। ईनतैबिके
होवण। अरुदंतोंसाथदंतोंकोचबाइकरिसं
सारसंमुद्रकोंपारहोवण। काजतनकरण। अ
रुबलतैबंधनकोंतौ। करिनिकसिजाण।
जैसैकेसरीसिंधबलकरिकेपिंजरैसोंनिकसि
जाताहै। तैसैनिकसिजाण। पुरघार्थकरिके।
हेरांमजीजिमकोंकछुसिधताकिसीकीप्राप्त
हईहैसोअपणपुरघार्थकरिहईहै। पुरघार्थ
बिनांनहीहोती। जैसंप्रकासबिनांप्रदार्थका
ज्ञाननहीहोता। जिनोंपुरघोंअपणपुरघार्थत्य
गियाहै। अरुदेवकोंआश्रेक्येहै। जोहमारा
कलियाणदेवकरेगा। सोनहोवैगा। जैसंप्रधरो
तैतेलनिकास्याचाहै। तोनहीनेकसतातैसंगन
काकल्याणनहोवैगा। हेरांमदंइतुमतोदेव।
काआप्रात्यागिकरिअपणपुरघार्थकोंआ
श्रेकरो। जिनोंअपणपुरघार्थतिथाग्याहै। ति
नकोंसुंदरकांतलक्ष्मीतिथागिकरिजातीहै। उ
नकीकांतलघुहोजातीहै। जैसैबसंतरुतिकी
मंजरीबसंतरुतिकेगा। तैबिरसहोजातीहै।
तैसंगनकीकांतहोजातीहै। तिनोंपुष्पकुंजसै
निश्वेकीयाहै। जोहमारेपालणवालादेवहै।

जब इस प्रकार ब्रह्मिणी कहा तब संभ्राता
का संभावा सप्तमना इस नान के नमित्त उव
श्रेष्ठे संघे परम परम मस्कार करि को अपणे घ
रो को गोये ब्रह्म डि सरज की किरणों सहित अ
नन स्थित होये ॥ श्री श्री ममो व प्रकरणी पुर
पार्थिव र्त्तनं नाम सगैः ॥ ब्रह्मिणी उवाच ॥ हे राम जी
इस का जो को ऊं पूर्व ला की या पुरघार्थ है इसी
कानां मदेव है ॥ अ देव को ऊन ही ॥ जब इस
सत संभ्रारु सत सास्त्र विचार द्वारा पुरघार्थ
करै तब प्रबल संसाकार को जीत लेता है ॥ जि
म जिस सास्त्र द्वारा जिस इमट के प्रादण को इह
जतन करैगा ॥ तेसा अदम मेदा देगा ॥ अपणे
पुरघार्थ ते अनया मिध कछु नहीं होता ॥ न संघ
हैन हो देगा पूर्व ज्ञ को ऊपाप की या होता है ॥ तिस
की प्राप्ति हों ते जब मार गाता है तब प्रबल कह
ता है हा इ देव हा इ देव को ऊ कहता है हा इ इ
हा इ इ देरां मजी इस का जो पूर्व ला पुरघार्थ है
मही कानां मदेव है ॥ अ देव को ऊन ही ॥ औ
र जो को ऊ देव कल्पते है ॥ ते प्रबल है प्रबल जन
मुक्त करि आया होता है ॥ वही मुक्त सुख हो
करि दिष्टा ई देता है ॥ जो पूर्व ला संशकार बली
होता है तो उस ही की जै होती है ॥ ऊ पूर्व ला ऊन

रही होता है। अरु इहां सुभ का पुरषार्थ क
गहो। सत संग अरु सखा सौं का विचार अरु
करता है। तौ पुरबले संसकार कौं जीत ले
गहो। जै सें प्रथम दिन प्राप की प्राहो वै अरु द
रे दिन बड़ा पुन्य करे। तौ पुरबला प्राप निवर
त हो जाता है। तै सें इहां दिह पुरषार्थ करै तौ पु
बले कौं जीत लेता है। ता तै जो कछु सिधता है स
करि जतन करणं इसी कानां सु पुरषार्थ है। जि
स का जतन इक न भव हो करि करेगा। तिस वें
अवस मेव पावैगा। जो पुरषु ओर देव कौं जाण
करि अपणां पुरषार्थ तियागि देवे। तें इ प्रते
ष कौं पावैगा। सत वां न क बरु न होवैगा। हेरां म
जो प्रिया देव के अरु कौं त्याग करि उम अप
णां पुरषार्थ कौं अश्रे करे। जो सत जन अरु
सत साखों बचनौं करि अरु जुगती साथ जत
न करि कै आत्म प्रद के अन्यास करि प्राप्त
वणा। इसी कानां प्र पुरषार्थ है। जै सें प्रकास
रिपदारथों का ज्ञान होता है। तै सें पुरषार्थ
करि कै आत्म प्रद को प्राप्त होती है। जो क
पाप होता है पूर्वला की प्रा अरु इहां दिह
रषार्थ करता है। तौ उस कौं जीत लेता है। जै
कामे घ होता है अरु तीस कौं प्रद ननां सका

है अरु जै सें बर घटिन का धे त्रप का होता है अरु
रुग दगति स कौ ना स कर छाता है तै सें श्रव
ला सं सकार पुरष प्रजत न करि ना स करी ता है
हेरां मजी स्त्रिष पुरष ते ई है ति नौ सत संग अरु स
त मा सत्र उवाग बुध कौ ती प्रण करि के संसार
सं मु हतरणें कौ पुरधारथ की प्रा है अरु जि नौ
जि नौ सत संग अरु सत मा सत्र छा रा ती प्रण बुधि
करि नही अरु पुरधारथ त्यागि वै वै है तें मूरय
नी च ते नी च रा त कौ प्राप्ति हो वै हिग अरु जो श्रे
ष्ठ पुरष है तें अपणें पुरधारथ करि के परमां नंद
अनंद पद कौ प्रा वैग जि स कौ प्रा इ करि बज्र उ
उघी नही हो दी ता अरु जो दे मणें करि दी न हो ते
थे अरु सत संग अरु सास्त्र के अनुसार पुरषा
रं जिन की प्रा है ते उत म पद कौ प्राप्ति हो ते दृष्टि
आ ऐ है हेरां मजी जि नौ पुरषों पुरष प्रजत न
की प्रा है ति न कौ स भ स पदा ज्ञान प्राप्ति ई
है अरु परमां नंद करि पूरन हो रहत है जै सें र
त नौ करि स मुद्र पूरन है तै सें दो ह परमां नंद क
रि पूरन हो तै है ता तें जो श्रेष्ठ पुरष है तें अपणें पु
रषार्थ दारा संसार के बंधनो ते नि क सि जा ते है
जै सें के मरी सिंध अपणें बल करि पिंजरे सो नि
क सि जा ता है तै सें दो अपणें पुरषार्थ करि संसा

रकेबंधनतेनिकसिजाताहै हेरांमजीजोइहि
रखऔरकछनकरैतौइहकरैजोअपणैबरन
रुआश्रमकेअनुसारबिछरैअरुसारपुरधारथ
रैजोसंतअरुसास्त्रोकाआश्रैहोवै॥तिसकेअनु
रपुरधारथकरैजबअसेंकरैगातबसबबंधनोते
मुक्तिहोवैगा॥अरुजिसपुरषअपणैपुरधारथव
त्याउकीयाहै॥अरुकिमीअवरदेवकोंमानि
रिक्कहताहै॥जोकमेराकल्याणकरैगा॥सोजन्म
अरुमरनकोंप्राप्तिहोवैगा॥अरुसांतकोंननो
वैगाहेरांमजीइहिजीवहैइसजीवकों संसारस
पीबिसूचकारोउदे॥तिसकेहरिकरिणकाउ
पाइमैंकहताहोंसंतजनअरुसास्त्रोंकेअर्थ
येदिठनादनाकरणी॥जोकछतिनोतेमुण्ड
॥तिसकाबारंबारअभ्यासकरै॥अबरसभक
नांकाभ्याउकरै॥इकत्रहोइकरिचितवनाव
रे॥तबइसकोंपरमपदकीप्राप्तिहोवै॥अरुदेत
मनिरवरतहोजावै॥अदेतरूपपुडाभासैइ
कानांपुरधारथहै॥इतिशीमताकप्रकर
अरुपुरधारथवरननामसरनाबिधिसेव
॥हेरांमजीअणपुरधारथकरिकेइसकोंअ
यात्मप्रादिकरोगआनप्राप्तिहोतेहै॥तिसक
केइहसांतकोंनहीपावता॥उमजनेरोगीन

ही हो वणा अपणे पुरधारथ द्वारा जन्म मरन ज
के बंधन ते मुक्ति हो वणा अपणे पुरधारथ द्वारा
सार के बंधन ते मुक्ति हो वणा जिन ज पुरधारथ
ए पुरधारथ त्याग की प्राप्ति है अरु और किसी देव
को मान करि तिस प्रमाण कहै है तिन का ध
रम अरथ काम नष्ट हो जाता है अरु उर्ध्व ते अरध
गति को प्राप्ति हो ते हरी देगं मजी सुध चैतन जो इस
का अपण आप्र है अरु वास तव रूप है तिस अ
श्रै जो आदि चित संवेदन फुरती है जो अहं अम
तव मन हो करि फुरणें त्यागता है ब्रज डि इ प्री फुर
ती है जव इह फुरणें संत अरु सास्त्र के अनु
सार होवै तव पुरधारम सिधता को प्राप्ति होता है
अरु जो सतमा मत्र के अनुसार न होवै तव वास
ना के अनुसार भाव अभाव रूप जो भ्रम जाल है ति
स विषे पडानटकता है घटी जंत्री की निघाई सा
तवां न कब हन होवै देगं मजी जिस कि से कौं सिध
ता प्राप्ति नई है सो अपणे पुरधारथ करि हं ई है पुरधार
थ बिना सिधता को न प्राप्ति होवै गा जो किसी प्रद
रथ को बट हण करण होता है अरु किसी देव को
प्राप्त हो वणा होता है जव भुजा प्रसारी हित बट
हण होता है अरु किसी देव को प्राप्ति हो वणा हो
ता है तव चल करि जाईये तो प्रजु चिये अनथ

नही होता जो कौं ऊ कहता है देव करेगा सो होवे
शा सो मरख है हेरां मजी और देव को ऊ नही ॥
म के पुरधारथ का नाम देव है ॥ वह देव सब द
मरख जं का परचा वा है ॥ किमी कष्ट साधि दुष
पायाति म को कहिये देव का कीया है ॥ और देव
को ऊ नही ॥ हेरां म जं जो अपणें पुरधारथ त्या
ग करि देव के आश्रे हो रहेगा ॥ तो सिधता को न पा
वेगा ॥ काहे ते जो अपणें पुरधारथ बिना सिधता
किमी को प्राप्ति नही होती ॥ अरु ब्रह्म पति जो
जो दिव पुरधारथ कीया है ॥ तब संपूर्ण देव ति
जं केरां जे इंद्र का पुरु कू वा है ॥ अरु सुकजी अ
पणें पुरधारथ दारा सब देवों का पुरु कू वा है ॥
रु अवर जो समान जीव है ॥ जिस पुरधारथ जतन
कीया है ॥ सो पुरधारथ कम कू वा है ॥ ताते जिस को सि
धता बिना त प्राप्ति नई है ॥ सो अपणें पुरधारथ क
रि नई है ॥ अरु जिनी पुरधारथ ने संत जं अरु सास्त्रों
के अनुसार पुरधारथ त्याग है ॥ ते मेरे देव ते देव ते
बने राज अरु राजा अरु धन ते अरु बिना तें य
ग हो गये हैं ॥ अरु नर को बिषे पड़े जल ते है ॥ जि
स करि कै ऊ अरु अरु सिध होवे तिस का नाम पुर
धार है ॥ अरु जिस करि अरु अरु को प्राप्ति होवे ति
स का नाम अण पुरधार है ॥ हेरां म जं

करत बिहारी है जो सत सास्त्र अरु संतों का संग
करि बुध कौं तीषण करै अरु सुज गुण कौं पु
ष्ट करै दया धीर ज अरु संतोष अरु वेरा प्र के
अभ्यास करि कै बुध कौं तीषण करै अरु ती
षण बुध करि कै इन कौं पुष्ट करै जैसे बने ता
न ते मेघ पुष्ट होते हैं वज्र डि बरषा करि कै उस
कौं पुष्ट करते हैं ते से सुज गुण कं करि बुधि पु
ष्ट होती है अरु उष्ट बुध करि सुज गुण पुष्ट हो
ते हैं हे राम जी जो बालक अवस्था ते ले करि
अभ्यास कीया होता है तब ऊंस कौं सुध ता प्रा
प्ति होती है अरु इह जो दिव अभ्यास करि कै
सुध ता प्राप्ति होती है अनिधान ही होती ज्यों
कसी देस अथवा तीर्थ जाणं होवै इस तब ना
ग करि निरन्नाल सहो इच्छा जावै तो जाइ पंऊं
वैगा अरु बुध तब निवरत होवै गी जब भोजन
करै गा अनिवरत न होवै गी अरु पावत बस प्र
ष्ट होवै गा जो मुख द्विषे जिह्वा सुध होवै गी इह
संप्राप्त नही होना ताते जो कछु कारजु सिध
होता है सो पुरधारथ अरण्य करि सिध होता है
उस नीहोर हेतु कारजु सिध कोऊ नही होता
अरु समग्र ही वै वै है इन कते प्रष्टि देखि अ
गो जो तेरी इच्छ है सो कर अरु जो मुक्त सो प्रष्ट

तो सर्व सासनों का ॥ सिद्धांत कहता है ॥ जिस करि सि
 धता कों प्राप्ति होवे ॥ हेरां मजी संत जो है ॥ ग्या न दां
 न पुरष अरु सत्त सा ॥ जो है ॥ ब्रह्म विद्याति न
 के अनुसार संवेदन अरु मन अरु इंद्रियों का ॥
 ब्रह्मा नि होवे ॥ अरु मन ते विरुध होवे ॥ तिस ते ब
 रजित होव ॥ ॥ तिस करि के तुज को संसार का रा
 ग द्वेष म प्रेम मन करे ॥ सत्त ते निरले प हो रहे ॥
 जैसे जले ते कमल निरले प रहता है ॥ ते सें निरले
 परहे ॥ हेरां मजी जि नों महां पुरषों ते सांत प्राप्ति
 होवे ॥ तिस की मली प्रकाश से दर्शना करीये ॥ काहे ते
 जो उन का ब्रह्मा उपकार है ॥ जो संसार सत्त ते नि का
 सत्त ते है ॥ हेरां मजी संत जननी को ही है ॥ जिस को
 ब्रह्मा अरु संगति करि संसार ते चित्त उपरंत हो
 वे सुख का उपार्ज्य ही है ॥ अद्वय सत्त कल प्रनां को
 तियाग करि अप्रण पुरधारथ को अंगीकार क
 री ॥ तब जन्म अरु मरण का भेद निवृत्त हो जावे
 हेरां मजी जिस की इच्छा करता है ॥ अरु तिस
 के निमति दिव पुरधारथ करता है ॥ तब अद्व
 य सत्त तिस को प्राप्त होता है ॥ अरु जो बने ते ज अरु
 विभूत कर के संपन्न तुज को दिष्ट आद ते है ॥ अ
 रु सुखी ते है सो अप्रण पुरधारथ करि रहते है ॥

हिष्टि आवते हैं ॥ तिन अपणें पुरधारय तियाग
कीया है ॥ तब ओं से हाणें है हेरं मजी अपणें पुरधा
रय को ओं ओं करी नही तो मरप अरु कीट आदि
कनी छजोनी को प्राप्ति होवै ॥ जिनो पुरधो अप
ण पुरधारय त्याग कीया है ॥ अस्मिन् अपवस्थ
वका आशा धार है ते महा परध है ॥ काहे ते जो इ
ह बाराता बिवहारा बिषे नी प्रसिद्ध है ॥ जो अप
णें गुदम कीये बिना किसी प्रकारय की प्राप्ति न
ही होती ॥ तो परमारय की के से प्राप्ति होवै ॥ ताते
देव को त्याग करि के से तजन अरु मतमा स्त्रो के
अनुसार जनन करे ॥ परमपद कं पावणें का से
धुधौ ते मुक्ति होवै हेरं मजी जनारदन जो बिस्म
जी है ॥ सो ओं तारधारि करि देत ऊं को मारता है ॥
अरु अवर अेषा नी करता है पर पाप का सपर
सति स को नही होता काहे ते जो अपणें पुरधार
य करि के अक्रिय पद को प्राप्ति होवै ॥ उमनी
पुरधारय का आस रा करे अरु संसार संसुद्ध को
तरि जावै ॥ ७ ॥ इति श्रीम श्री कृष्ण प्रवारा पुरधा
रय उपमा वरननतां मसरमः ॥ दिस हो वा द ॥
हेरं मजी इह जो देव सब उहै ॥ सो मरयो ने कल्पि
या है ॥ जो देव हमारी रक्षा करता है ॥ हम को तो दे
व का अकार दिष्ट नही आवता ॥ न को ऊं देव

का काल ही है न दे कछु करता ही है पूरख लोक व
देव पडे कहते है अवर देव को ऊन ही इसका
पूरख लाकर मही देव है। हेरां मजी जिनों पुरख
ज अपण पुरखारथ त्याग कीया अरु देव परा
पण देव है। जो देव हमारा कल्याण करेगा ते पू
रख है। काहे ते जो अग्नि ने बिछे जायी पडे अरु दे
व इसको आन नि काम लेवै। तब जाणियो को ऊ
देव भी है सो तो नही अरु जो देव करता है तो इह
इमान दान भोजन आदिक को त्याग करि ब्रह्मा
होइ बैठा आये देव करि जावेगा सो भी नही होता
इसके कीरे बिना ताते अवर देव को ऊन ही अप
ण पुरखारथ ही कल्याण करता है हेरां मजी जो
इसका कीया कछु नही ता। अवर देव करणो हा
रा होता। तऊ मास्त्र अरु पुरो का ऊप देस भी नही
ता। अरु संत मास्त्र के ऊप देस करि के अरु अप
ण पुरखारथ धारु इसी को ब्राह्मण प्रद की प्राप्ति हो
ती है। ताते और जो को ऊ देव सब देव सो बिग्रथ है।
इस भरम को त्यागि करि के संत अरु मास्त्र के अनुसार
अपण पुरखारथ करै। तब ही उद्यो ते मुक्ति होवेगा
हेरां मजी अवर देव को ऊन ही इसका पुरखारथ जो
है इस पंद सो ईनां मुदेव है हेरां मजी जऊ अवर को
ऊ करणो हारा होता। तो इह जब

अरु सरीर सब हो जाता है ॥ कथा सरीर शौ कबू हो
ती नही ॥ काहे ते जो चेष्टा करण हारा त्याग जाता है
तो सब सरीर में चेष्टा करावता सो चेष्टा कबू नही
होती तो ते जाणीता है जो देव सब द बिश्व है ॥ हे
राम जी पुरधारथ की तो बारता अग्नियानी जी दे
कों भी प्रत घड़े ॥ जो अपणे पुरधारथ बिना होता
कबू नही गोपाल जी जाणता है ॥ में गादां को चरा
वोनही तो न्यौ मरहि ॥ नाते और देव के आश्र
तो वेठे नही रहता आपही चरा इत्यावता है ॥ हे
राम जी और देव की कल्पना मरम करि कै पदे
करते हैं ॥ अरु देव तो हम को दिष्टि को जूनही
आवता हस्त पाद सरीर देव का कोऊ दिष्टि नही
आवता ॥ अपणे पुरधारथ करि सिधता दिष्टि अ
वती है अरु ज्यों कोऊ कावते रहत देव सब द
कली पीछे ॥ तो नही बणता काहे ते जो निराकार
अरु सकार का संजोउ कै सैं होतें ॥ हे राम जी अरु
देव को जूनही ॥ अपणा पुरधारथ ही देव रूप
है जो राजे भासते हैं ॥ अरु सिध जो सिंधी संजुग
भासते हैं ॥ सो भी अपणे पुरधारथ करि हूँ ऐहो
राम जी ॥ इहि जो बिस्वामित्र है ॥ इन देव सब द
रे का त्याग कीया है ॥ पुरधारथ करि कै घनी तेव
ण हूँ ऐहो ॥ सो अपणे ही पुरधारथ करि हूँ ऐहो ॥

रुओरबनेबडेबिस्ततवानहूँऐहैं। सोअपणेपुर
धारथकरिदिष्टिआवतैहैं। हेरांमजीजोदेवकिमी
कौपढेबिनांपंडितकरै। तोभीजाणीयेदेवकीया
सोपढेबिनांपंडितकैहूँनहीहोताअरुजोअरु
जांनीजांनदानहोतेहैं। सोभीअपणेपुरधारथक
रिहोतेहैंअवरकरिनहीहोते। तातैंओरदेवको
ऊनहीमिथ्याभर्मकोत्यागकरिसंतजनअरुसा
स्त्रोकेअनुसारसंसारसंमुद्रतैतरणैकाप्रजत
नकरै। तैरेपुरधारथबिनांओरदेवकोऊनही
अरुदेवहोताबिद्वहारक्यादातेभी। आपणी
हयाकोत्यागकरिसोइरहतेआपदेवहीप्रडाक
रतांसाअमेतौकोनहीकतोतातेआपणेपुरधारथ
बिनांमिधिकबुनहीहोता। अरुजोइस्काकीया
कबुनहोतातौपापकरणैहारागरकिनजाता।
अरुखुंन्यकणैहारास्वरगनजातासोपापकणै
हारेनरककोजातेहैं। अरुखुंनकणैहारेस्वरगको
जातेहैं। तातैंजोकबुप्राप्तिहोताहैसोअपणेपुर
धारथकरिहोताहै। हेरांमजीजोकोऊओरदेव
कर्ताहैतौइस्कासिरकाटिये। अरुदेवकोआ
श्रैजीवतागहै। सोतोजीवताकोऊनही। तातैंदे
वसबदकोमिथ्याभर्मजाणिकरिसंतजनअ
रुसतसास्त्रोकेअनुसारअपणापुरधारथकरि

आत्मापदविषेऽस्थितिहोवो॥८॥इति श्रीम
नोबुप्रकरणोपर्युदकाधिपदवतनामसर्गो
॥रांमोवाच॥हेभगवन्सर्वधर्मोकेवेतानुप्रक
हतेहोश्रौतदेवकोकनदी अरुदेवजोहेमा
प्राणापुरघार्थहै॥ब्रह्मणभीकहतहै जोदेवका
कीयासनुकछुहोताहै॥अरुमुषउषकादिगा
हारादेवहै॥इहलोकविषेप्रसिधहै॥वशिष्ट
वा॥हेरांमजीमैनुजकोअसैकहतहै॥जोतेरा
नमैनिर्वतहोजावेइसहीकासुभअथवाअसु
नकर्मकीयाकहाहै॥तिसकाफलअदममेव
जोगाणाहै॥सोदेवकहीणपुरघार्थकहीणअदम
देवकोकनदीअरुकर्ताकर्मआदिकोविषे
तौदेवकोकनदीश्रौतकोकदेवकाइस्थान
नहीरूपनहीतोश्रौतदेवकाकहीणहेरांमज
पुर्षककेपरचावणनमितदेवसबदकहाहै
तुमैआकाससुनहैतुमैदेवभीसुनहै॥रांमोव
च॥हेभगवन्सर्वधर्मोकेवेतानुप्रकहतहै
देवकोकनदीअकासकीन्याईसुनहै॥सोउ
प्रारकहणकरिभीदेवसिधहोताहै॥जोउप
कहतहैइहकेपुरघार्थकानामुदेवहै॥अरु
जगतविषेभीदेवसबदप्रसिधहै॥वशिष्ट
वाच॥हेरांमजीमैअसैनुजकोकहतहै॥

जिसकरि देव सब दते रीति सो उ विजावे। जो अर्थ
संन हो जावे गावे वनां प्रपणो पुरधारथ काहे
अरु पुरधारथ नामु कर्म काहे। अरु कर्मनां मुखा
सनां काहे। अरु वासना मन ते होती है। अरु मन
रूपी पुरुष है। जैसी वासना करता है सो इस को प्रा
प्ति होता है। जो पण्डित को प्राप्ति हो एकी वासना
करता है तो गिरांत को प्राप्ति होता है। अरु जो गह
वन की वासना करता है तो गह वन को प्राप्ति होता
है। ताते और देव को नही पुरवला जो को कदि
द पुरधारथ की माहे। सन अथवा असुन तिका
प्राणम सुप्र अरु दुष जो अदम हो दाण्ड है। तिस
ही कानां प्रदेव है देरां मजी वी चारि करि देषु॥
जो अपणो पुरधारथ करम हूतें भिन तो सुष दुष दे
रो हार अरु ले पणो हारा देव तो को कनही हवा कूद
जो पाप की वासना करता है। अरु साप्र विरुध कर्म करता
है। सो किस किस करती है। परब जो इस कादि द पाप कर्म
है। तिस करि ये पाप कर्म करता है। अरु जो पूरवला पुं
न्य कर्म की या होता तो इस मुन मारा विषे बिरता है रा
जो बाधा है मुनी श्वर जो पूरवली दिव वासना के अनु
सार इस विचरता है। तो मै क्या करे मुज को पूरवली
इहे वासना नें दी न की या है। अरु बमुज को क्या करत वा

स्मादिह हो रही है तिसके अनुसार इह विचारमा
दे अरु जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं सो अपणें पुरधारथ क
रिके पुरख ले मलीन संसकार कों सुध करत है
तिसकी मै तु हरि हो जाती है सत सास्त्रों अरु गिय
नदां नौ के बचनो अनुसार दिह पुरधारथ क
रो तब मलीन दास ना हरि हो जावैगी हेरा मजी
रख ले मलीन पाप कों सें जांणियहि अरु सुध कों सें
जांणियहि सो अदण करु जो चि बुद्धि धिज
की दो डक्षावै अरु सास्त्र बिरुध मारा की गोरज
वै अरु सुभ की दोर न धावै तब जांणिये जो पुरख
ला करन को इमली न है अरु जो सत जनो अरु
सत सास्त्रों के अनुसार चेष्टा करै अरु संसार मा
ग बिरक्त होवै तब जांणिये जो पुरख ला करन सुध
है तातें हेरा मजी उर कों दो नौ करिके सिध तावै
जो पुरख ला संग कार सुध होवै तो तें राक्षित सीध
ही सत संग अरु सत सास्त्रों के बचनो कों रहण
करि लेवैगा अरु सीध ही उर कों आत्म पद की
प्राप्ति होवैगी अरु जो तेरा छित इह सुभ मारा बि
षे नही इमं थिर हो सका तातें दिह पुरधारथ कर
जो संसार मनु इतें पार होवै हेरा मजी उंचै तन
है जड तो नही अपणें पुरधारथ का आश्रय करो
मेरा मी इही असीरवाद है जो उमारा छितु सीध

ही मुने आचरण विषे इ स्थिति हो वै अमु ब्रह्म वि
द्या का जो सिद्धांत सार है ॥ तिस विषे इ स्थिति हो व
॥ हेरा मजी श्रेष्ठ पुरष भी वो ही है जिस का पुरव
ता संसकारा कर मज दप मली न नीया ॥ परु संत अ
रु मास्त्रों अनुसार दिह पुरधारथ का आश्रया की
या है ॥ अरु सिधता कौ प्र प्रि ह प्रे है ॥ अरु जो मर
घ है तिनो ने अ पण पुरधारथ त्याग की या है ॥ ता
ते संसार ते मुक्ति न ही हो ते पुरव ता जो को कं पाप
कर म हो ता है ॥ तिस मली न ता करि के पाप को धा
व ते है ॥ अरु अ पण पुरधारथ के त्याग ॥ ते बिसे
ष करी धाव ते है ॥ जो श्रेष्ठ पुरष है तिन को इह क
रत बिहो प्रथमि तो अ पण पांचो इंद्री बसि कर
णी मास्त्र के अनुसार तिन को बरता वण जो मु
न वासना दिह करणी अरु बिरुद्ध का त्याग कर
ण ॥ ज द पि त्याग ॥ दो नो वासना है ॥ परु प्रथ
मे मुन वासना को एक वा करण ॥ अरु अ मुन
का त्याग को ॥ ज द मुध वासना करि के ॥ कषा
इ प कहो वै ॥ अरु इह अंत ह करण जो मुध हो
वै ॥ तिस बिचार धारा रि दे बिषे संतो अरु मास्त्रों
का जो है सिद्धांत तिस का बिचार गुत्पति हो वै ॥
तिस बिचार धारा करि जु क को आत्म ज्ञान की प्रा

गी॥ वज्रदुःखपाशानकाभीत्यागुहोवैगा केवच
मुधञ्चैतरूप॥ अपण्ण॥ आपसेषनासेगाता
तेहेरामजीअदरुकल्पनांसनकोत्यागकरि
संतजनअरुमास्त्रोंकेअनुसारपुण्यकार्यकरि
॥ ॥ इतिआमनोद्वयकरणेप्रमपुण्यकार्यव
र्तननांसर्वा॥ वशिष्टोवाच॥ हेरामजीमेरेवचन
कोटहणकरो॥ कैसेवचनहैजोबन्धवहैबन्ध
वकहीअहिजोतेरेपरममित्रहोवैगाअरुबुद्धोते
तेरीरक्षाकरहिगो॥ हेरामजीअहिजोमोछुपाइ
बुझकोकहतहोतिसकेअनुसारपुण्यकार्य
करि॥ तबपरमअर्थतेरासिधहोवैगा॥ इहचित्त
संसारकेभोगोंकीदोरक्षवताहै॥ तिसंभोगोंरूपी
गरतबिघेचित्तकोगिडनेमतिदेइभोगजुको
बिरमजाणकरित्यागोत्या॥ गुतेरापरममित्रहो
वैगा॥ अरुत्यागभीजैसाअरुजोबुद्धिमो
जुकाटहणनहोइ॥ हेरामजीअहिजोबुद्धि
कैसेहैसंघताहै॥ चितइकाटकरिइसकोअ
वणकरु॥ तिसकरिपरमानंदकीप्राप्तिहोवैगा
प्रथमेसमअरुदमकोधर॥ संअरथअहिजो
संप्रनसंसारकीबासनाकात्यागकरि॥ अरुउ
दारताकरिकेत्रिपतिरहण॥ अरुदमअरथ
इहजोबाहजइंशीजुकोबसिकरणा॥ जबइस

उत्तमिहोवेगा तिसबिचारबवेकधाराप
दकीप्राप्तिहोवेगी जिसपदकोपाइकरिब
उषीकदाचितनहोवेगा अबिनासीमुप्रअ
उजकोप्राप्तिहोवेगा तातेजोकरुइहमोह
इसंघताहै तिसकेअनुसारपुण्याथकर
आत्मपदकोप्राप्तिहोवेगा पूरवजोऊछबुन
जीहमको उपदेसकीयाहैसोमैंउजकोकहत
॥रांमोबाबा॥हेमुनीस्वरउमकोजोब्रह्माजीउ
पदेसकोयाथा सोकिप्रकारगाकरिकीयाथा
अरुकेसैंउमधरा सोमुजकोकहौ॥बशिहो
बाबा॥रांमजीमुधचिदाकासोकहै अनंतहै
अरुअबिनासीहै परमानंदमरुपहैचिदा
नंदमरुपहैब्रह्महैतिसविषेजोसंबेदनइस
पंदरुपहुईहै सोबिसनरुपहोकरिइसधि
तहुईहै सोबिष्णुजीकेसोहै जोइसिपंदरु
रुअसपंदविषेगकरमहैकदाचितअनंथ
भावकोनहीप्राप्तिहुवा जैसैंसमुद्रतेंतरंग
उपजतीहै तैसैंमुधचिदाकासतइसिपंदक
रकेबिसनउत्पतिहुवा तिसबिसनजीकेह
वतकिर्नकानाभकवलतेब्रह्माजीप्रगट
या तिसब्रह्माजीकपमुनीस्वरसहैतइथ

वरजंगमप्रजाउत्पतिकरी ॥ जैसेमनोरजकरिके
अक्षररश्मिबेदे ॥ तैसेमनोरजकरिब्रह्माजी ॥ ज
गत्कौउत्पतिकीप्रातिमजगत्कीकौइसिधेमो
जबंदीपमरथपहनहैं ॥ तिसबिषेमनुष्यकौउष
करिआउरदेषा ॥ देषकरिब्रह्माजीकोकरुण
प्रजतमईजैपुत्रोंकौउषीदेषकरिपिताको
करुणप्रजतीहै ॥ तबतिनकेमुखकेनमित
ब्रह्माजीतपकौउत्पतिकीया ॥ जोमुखीहोवेंअ
रुअज्ञांकरीजोतपुकरा ॥ तबजीवतपकरतेमो
तेमतपकरिस्वर्गाआदिकको ॥ जाइप्राप्तहो
ऐलागे ॥ तिनमुखोंकोमोगकरिकेरिगिडें ॥ तोस
ोहीनरहै ॥ जैसेब्रह्माजीदेषकरिमतवाकध
मकीप्रतपादनाकरतमये ॥ तिनकोमुखकेन
मितअज्ञांकरीतिसधरमकीप्रतपादनांकरी
मुखलोककुंकोप्राप्तिहोऐलागे ॥ तहांकेताऊ
कालमुखमोगकरिबकुडिगिडें ॥ बकुडिउषीके
गीरहै ॥ बकुडिब्रह्माजीनेदानतीरथआदि
कपुंनक्या ॥ उत्पतिकरिकैतिनकोआज्ञाक
जोइनकेसेवणैकरि ॥ उममुखीहोवोंगे ॥ तब
जजीवतिनकोसेवणैलागे ॥ तिससेवणैकरि
देपुंनलोकोकोप्राप्तहोऐ ॥ अरुतिनकेमुख
प्राणैलागेकेताऊकालअपणैकमैकुके

अनुसार भोग करि बज्र डगि डै। तब त्रिहं करि
कै बज्र मुख ब्रह्म रूपे। अरु ब्रह्म करि करि आनुर
रूपे। तब ब्रह्म जी देखत भया। जन्म अरु मर्ने के
ब्रह्म करि दीन हो ते हैं ताते सोई उपाय करि हो। जिर
करि जनका ब्रह्म निरंतर रहो वै। हे राम जी ब्रह्मा ज
बिचारत भया। जो जनका ब्रह्म आत्मज्ञान बिना।
नवरत नही हो ताता ते आत्मज्ञान को उत्पतिक
रि। जो उह मुषी हो वहि। इस प्रकार बिचार करि
कै। ब्रह्मा जी आत्मतत्त्व का ध्यान कर्त नया। आ
त्मतत्त्व के ज्ञान का संकल्प कीया। तिस ध्यान के
कर्म करि कै। मुद जात तब ज्ञान हो। तिस की प्रेर
ति होइ करि प्रे प्रगट भया सो मे कै सो हो। जो मे ब्र
ह्मा जी के समान हो। जे मानुन के हाथ बिप्रे कर्म
डल है। जे मा मेरे हाथ बिप्रे कर्म डल है जे मे ने न
के कंठ बिप्रे रुद्राक्ष की माला है ते से मेरे कंठ बि
प्रे रुद्राक्ष की माला है जे मे गुन के ऊपरि मृगछा
ला। ते से मेरे ऊपरि मृगछा ला है। इस प्रकार ब्रह्म
जी का। अरु मेरा समान ही अकार है। अरु मेरे
पमेरा मुख ज्ञान सरूप है। जगत मुकें कब न भो
मुख प्रतिवत्त मुकें जगत भा मे था। तब ब्रह्मा जी
बिचार कीया जोई सकौ मे जीवों के। कत्याण न
मित उत्पतिकीया है। अरु उह तो सु

पहै॥ अरु ज्ञान की उपदेस भाग्य तब होवै॥ जो व
बुद्धि मनुष्य तब होवै॥ अरु तत्त्व मिथ्या का विचार
रहोवै॥ हेरां मजी जीवों के कल्याण न मिले॥ मु
कों गोद विषे बैठाया॥ अरु सीस परिहाथ फेर
तिम करि सीत बहो गया॥ जैमें चंद्रमा की कि
रण फेरि सीत बहो दीता है॥ तैमें मै सीत त
मया तब बुद्धि मजी मुक्त कों कहा॥ जैमें हंस को
हंस कहै॥ हे पुत्र जीवों के कल्याण॥ जना में त
कमल रत पर जंत हं॥ अज्ञान कों अंगीकार
करु॥ श्रेष्ठ मनुष्य अर्ध के न मिले मी अंगीकार
करते आये है॥ जैमें चंद्रमा तब जल निरगत है॥
अरु म्यां मता कों अंगीकार कीया है॥ हेरां मजी
इस प्रकारि मुक्त कों कहि करि बुद्धि मजी आप
या॥ जो त्र अज्ञानी होवैगा॥ तब मै बुद्धि मजी की
अज्ञाना नि करि आप कों अंगीकार कीया॥
तब मेरा जो मुख आत्म तत्त्व आपण आपथा
तिम तैमें अन्न की न्याई होत मया॥ आपणी मु
ख अर्ध स्थामुक्त कों बिसरण हो गई॥ तिस्का
बिसरण होवैगा॥ अरु मेरा मन जागि आया
भाव अभाव रूप जात मुक्त कों भासने लागे॥
अरु आप कों मै बसिष्ट जानता मया॥ अरु बु
द्धि मजी का पुत्र आप कों जानता मया॥ अरु नां

कैपदरथहंसहिता॥ जगतकों जानत नया॥
प्ररुतिनकी और चंचल होत नया तब मैं संसार भ्र
न जालकों उपरुप जालि करि ब्रह्माजी के पास प्र
वृत्त नया॥ हे भगवत हंस संसार कैसे उत्पति हंदा
है॥ अरु कैसे लीन होता है॥ हे राम जी ब्रह्म प्रकाश
नै प्रिताजी को प्रलम्ब कीया॥ तब भले प्रकारि मुक्त
कों उपदेस कर तां नया॥ तिस करि मेरा अज्ञान
निवर्त हो गया॥ जैसे मूरज के उद्वेग्यो॥ तम नि
वर्त हो जाता है॥ तैसे मेरा अज्ञान निवर्त हो ग
या॥ तब मैं मुक्तता को प्राप्ति नया॥ जैसे आदर शा
को मार जन करिता है॥ अरु सुख होइ आदता है
तैसे मैं सुख हंदा हे राम जी मैं कैसे साहो॥ जो ब्रह्मा
जी तैनी अधिक होत नया॥ तब मुक्त को परम
ब्रह्माजी ने अज्ञा करी॥ हे पुत्र तू ज बंदी पन्नरथ
बंद विषे जाइ तुफ को सुख पर जत॥ अधिक अ
धिकार है॥ तहां जाइ करि जीसों को उपदेस का
जो संसार के सुख को चिते है॥ ऐसी इच्छां जिन को
देगी॥ तिन को कर्म मार का उपदेस करना॥ तिस
करि स्वरगादिक सुख भोगहि गो॥ अरु जो संसार
तै बिरक्त होवै गो॥ जिन को आत्मपद की इच्छा
होवै गो॥ तिन को पान उपदेस करना॥ ततै तै
ब्रह्म भिक्षो क विषे जावो॥ हे राम जी ह

अरुधमेकीमरजादाथी सोसमनहहोगई १७
मेराउपदेसदेना॥अरुनुपजणहूँवाहे अरुधम
कारिमेराआवणहूँवाहे॥इतिश्रीममोक्षप्रका
शेज्ञानब्रह्मसूत्रसंख्ययोगसंन्यास॥१०॥बसिष्टे
वाच॥हेरांमजीमैइसप्रकारि॥पृथ्वीविष्टेआव
नप्राहौ॥ज्ञानहीबांछितहै॥तिसकौतिसकरि॥ब
्रह्माजीमुक्तकौउत्पतिकरतमया॥रांमोवाच॥व
मगद्वनतिसज्ञानकेउपजणैकरि॥अनंतरज
द्वौकीबुधकेसैहोतमईसोकहौ॥बसिष्टेवाच
हेरांमचंद्रसुधआत्मतत्त्वहै॥तिसकासुभावर
पसंबेदनफुरीहै॥सोब्रह्मारूपहैइकरिइस्थि
तमईहै॥जैसेसंभूइअपणइवदनाकरिके॥तर
गरूपहूँवाहै॥तैसेब्रह्माजीहोतमये॥ब्रह्मसंभू
रणजगतउत्पतिकीयाहै॥अरुतीनोंकालउ
त्पतिकीये॥जबकालकालब्रह्मदीतहूँवा॥अरु
कलिजुगआयातिसकरि॥जीद्वौकीबुधिमचिन
होइगई॥अरुपापविष्टेबिचरनेलागे॥साम्रवे
दकीअज्ञाकौमाननैतैरहिगये॥इसप्रकारिध
रमकीमरजादाछिपनहोगई॥अरुपापप्रगट
मयो॥जेतीकछराजकीमरजादाथी॥अरुअ
पणैअपणैइंवाकेअनुसारजीवबिचरणेला
गे॥तबकष्टपावणलागे॥तिनकोदंष्ट्रिकरिब्रह्मा
जीकौकरुणउपजी॥तिसदयाकौधारिकरिभू

मिलोकविषैमुक्तकोंजेन्य॥ अरु कदाहे पुत्र
 जाइ करि उमधर्मकी प्रजादा सथापन करौ
 अरु जीवोंको सुध उपदेस करौ॥ जिनको मो
 पाकीइ छाहोवै॥ तिसको कर्मकांडका उपदे
 स कर्ण जपत पलान जसा दिक जो कर्मका
 डका उपदेस॥ सो उपदेस करमा अरु जो संसा
 र विरक्त हूए है अरु संसारी हूए परमापद
 पावए कीइ छाहै तिनको तिनको ब्रह्म विद्या
 का उपदेस करण देरा मजीन जिस प्रकार मुक्तकों
 अजा करी इश लोक विषे जे जते भए तै सैंही संनत
 कनारा दिक कोंजी कहित भये॥ अरु नारदादि
 क कोंजी कहित भये॥ तब ह म प्रह्वरिषी श्वर एक
 ठे हो करि विचार करत भये॥ जो कि सप्रकार जग
 त की प्रजादा होवै॥ अरु जीव सुमाराग विषे वि
 चरै तब ह म हं ने इह विचार कीया॥ जो प्रथम रा
 जो कों स्थापन करीये॥ जो जीव तिनकी अजा अनु
 मार विचार है॥ प्रथम सैं हं करतारा जे स्थापन क
 रै है तब ह म हं ने राजे स्थापन कीये॥ देस हं के के
 से राजे बने ही राजदान॥ अरु बने ते जदान॥ उदा
 र आत्मा सो राजे दोत भये॥ तिन राजों को ह म अ

परमप्रदकौ प्राप्ति होत भये ॥ जो परमानंद रूप अ
विनासी प्रद है ॥ तिस बुद्ध विद्या का उपदेस ति
न कौ मया तौ सुधी हूं ॥ ए सकारण ते बुद्ध वि
द्या का नाम राज विद्या है ॥ तब हम महुं न वेद मा
स्त्र समती पुराण करि ॥ धरम की मरजा दा स्थाप
न करी ॥ जो जप तप जज्ञ दा न रमाना दिक क्रिया
कौ प्रगट कीया ॥ जो और जीव कुत्र मरन हूं के सें
दण्ड करि कै सुधी होवै हूं ॥ तब तिन कौ दण्ड ला
गे ॥ कै सें सें दण्ड लागे ॥ जो फल कौ धारि करि तिन
विषे कौ क बिरतानि ह कां मरि दे सुद्ध के नि
मित्त भी करे ॥ हेरां मजी जो प्ररष्ये कां मनां फ
ल हूं की करी है ॥ अरु सें महुं कौ सें व है ॥ घट
जं न की न्याई न टकते फिरते है ॥ अर्थ कौ मी अ
रु अर्थ कौ मी ॥ अरु जो निस्कां म करि है ॥ तिन
का हिदा मुछ होवै ॥ वज्र ड बुद्ध विद्या के अधिका
री होता है ॥ तब गुन कौ उपदेस धारा ॥ आत्म प्रद की
प्राप्ति होवै ॥ इस प्रकारि करि कै कर्ष जीव मुक्त हूं
ये ॥ कर्ष राजा वेद विद हूं ॥ हेरां मजी इस प्रकारि
रिग जहूं कौ परंपरां ह मारे उपदेस धारा ॥ ज्ञान
कौ प्राप्ति होत भई ॥ अरु इह राजा दरथ मी ॥ ज्ञान
दां न हूं दा ॥ अरु हूं मी राज कुमार आनि प्राप्ति

हंदाहै। सो तं सभतं श्रेष्ठ है। जो मां वं विरक्त आत्मा
है। तै मा आगे कों नही हंदाहै। हेरां मजी तं सुभाद
क विरक्त हंदाहै। किमी काण्ड करि नही हंदा सु
भाव करि दे सुध करि हंदाहै। इस कारण तें हं श्रेष्ठ
है। जो कों क अनिष्ट दुषा प्राप्ति होता है। तिस करि
विरक्तता उपजती है। सो उक्त कों श्रेष्ठ नही उपजी
उक्त कों सभ ईश्वर के विषे मी विद्या मान हों। तिन
के दो ते जो वैराग्य उपज्याहै। उक्त कों तें हं श्रेष्ठ है
हेरां मजी ससाण्ड दिक्क कष्ट के स्थान हों। तिन कों
देधी करि सभ कों वैराग्य उपजताहै। जो कछ नही
रिजाण्ड है। अवर जो मूर ग्रह है। सो विषे प्रहं विषे
आसक्त हो जाते हैं। ताते तिन कों अकारण वैर
उपजताहै। सो श्रेष्ठ नही हेरां मजी जो श्रेष्ठ पु
ग्रहें सो अपण वैराग्य अरु अग्यास के दल करि
संसार के बंधन तें मुक्त हो जाते हैं। जे सैं हं स्ती बंधां
तो रि करि निकस जाते हैं। अपण बल सों त बस
होताहै। तै सैं ही वैराग्य अरु अग्यास के दल
बंधन तें मुक्त होताहै। हेरां मजी इह संसार बंध
रथ रूपी है। जिनों पुरषों ने अपण पुरधारथ व
इन कों नही तो स्या। तिन कों राग अरु द्वेष
निपटी जलावती है। जे सैं संके त्रिण कों अ
ग्यास कों राग अरु द्वेष जलावती

अरुजिनोपुखौनेअपणेपुखारथकरिके॥साख
रुपुगैकेप्रमाणकरिके॥ज्ञानमाध्याह्ने॥अरुउद
पदहंकौप्राप्तिहुरेहै॥तिनकौअध्यात्मकअ
देवकअधित्तकतापजलाइनहीसकते॥जैसे
वरषाकालबिघैजोबहूतवरषाकेहोते॥वनकौ
अग्निकीलाटजलाइनहीसकतीया॥तैसेजानी
अध्यात्मअदिकतापकष्टनहीदेसकती॥हेरांम
जीजिनोश्रेष्ठपुखौनेसंसारकौबिरसजाणकरि
जाहै॥तिनकौसंसारकेप्रदार्थगिडाइनहीसक
॥अरुजोमरघहैतिनकौगिडाइदेतेहै॥जैसे
धेरीजाहै॥तीकृपापवनकावेगसोअवरवृत्त
हंकौगिडावताहै॥परकल्पवृक्षकौगिडाव
गोकौसमर्थनहीहोता॥हेरांमजीश्रेष्ठपुखौने
उहीहै॥जिसकौसंसारबिरसहोगयाहै॥केवल
अत्मतत्वकीइच्छाकरतेहै॥अरुतिमपरमा
नहुरेहै॥ब्रह्मविद्याकाअधिकारभीतिनहीकै
है॥अरुनत्मपुखौनेउहीहै॥हेरांमजीहमीतैसे
उजलपानहै॥जैसेकौमलपृथ्वीबिघैबीजबोइता
है॥जैसेमैअबनुफकौनुपदेसकरताहै॥अरुजि
नकौमौगोंकीइच्छाहै॥अरुसंसारकीओरजतनकर
रतेहै॥तेपसुवतेहै॥श्रेष्ठपुखौनेइहै॥जिनकौसंसार
रतरनेकाप्रयार्थहूदाहै॥हेरांमजीप्रसन्नीति॥

नही तब तिससो प्रथम न करिये अरु जो उत्तर देणों में
 मही सो करीये। जो जाण्यो मेरे प्रथम के उत्तर देणों
 को समर्थ है। अरु जो देखीये मेरे प्रथम के उत्तर देणों
 को समर्थ देखिये। तिसके बचन द्विषे आसक्त भाव
 ना न होवै। तब प्रथम उप प्रति न करिये। काहे ते।
 जो द्वंद्व करि प्रथम करण पाप ही होता है। अरु
 गुरुजी उपदेसति मही कों करें। जो संसार ते बिर
 न होवै। अरु केवल आत्म परायण जिसकी श्रु
 त होवै। अरु आस्तिक भाव होवै। ऐसे पात्र को
 देखि करि उपदेस करें। पात्र द्विना उपदेस न करे
 हेरा मजी गुरु सिष्य दोनौं तुल्य होते हैं। तब बचन
 सो न ते हैं। सो तृती उपदेस का मुख पात्र है। जते क
 ल गुण सास्त्रों द्विषे बरनन कीये हैं। सो मही सुभ
 गुण तेरे द्विषे पाई ते हैं। अरु मैनी कहिये उपदेस
 देणों को समर्थ हैं। ताते कारज सीध ही होवैगा।
 हेरा मजी सुभ गुणों साध्या तेरी बुरी निरमल हो रही
 है। मेरे जो सिद्धांत का मार बचन है। सो तेरे हरि दे
 विषे प्रबेस करि जावैगा। जैसे गुजल बस्त्र को के स
 रकारा। सीध ही बहि आवता है। तैसें तुज को उ
 पदेस लग जावैगा। जैसें मुरज के गुदे रूपे। मूर्ज म
 री कदल घिड़ आवने हैं। तैसें तेरी बुरी सुभ गुण

प्रवेसकरिजावैगी जैसैजलजलविषैप्रसक्तकीकांतप्रवे
तादे तैमेतेरीबुद्ध
धैतेरीबुद्धसीआत्मततविषैप्रवेसकरजावैगीमु
रुताकरिके हेरामजीमैंउमारेआगौहाथजोडिबै
प्रारथ नाकरताहों तिसविषैतंआसक्तिकमाद
कर जोउनहूबचनोकरिमैराकत्याएहोवैगा
अरुजोबककौधारणनहोवैतौप्रसक्तहीमतिक
जिसमिष्यकौमुंरुकेबचनोविषैआसक्तिमाद
नाहोतीहै तिसकासीघ्रहीकत्याएहोताहै ता
तैमेरेबचनोविषै आसक्तमादनाकरु अरु
जसकरिहंआत्मपदकौप्राप्तिहोवैगा मोमैंकति
ताहोंप्रथमजोइहकरुजोअज्ञानीजीवोविषये
असक्तनामतीकबुद्धीयांकासंगत्यागे अरु
मोक्षदारेकेजोच्यारीधारपावहैं तिनकोमि
मादनाकरु जबतिनसौमीत्रमादकरैगा तब
मोक्षदारेकेअत्रपंचचाईदेवों तबआत्मद
शनचक्रकौहोवैगा धारपावोंकानामअदणव
रसमअरुसंतोषअरुविचारसंतोकीसंगति
दद्याम्योधारपावहैं जिनपुरुषोइनकोबशि
कीप्राहै तिसकोयेदसीघ्रहीमोक्षरूपीधारके
त्रकदेतेहैं हेरामजीजोसमहीबसनहोवैतौत्रि
होवै अथवादोहीहोवै अथवाएकहीहोवै तं
भीद्वारोंआवैगे इनद्वारोंकापरमपरमनहहै
जहाएकभीआवताहै तहांद्वारोंस्थितिहोत

है॥ जिसने ये कसांथ सनेह कीया है। ते सुधी मये है
अरु जिन हं रन को त्याग कीया है ते सुधी है॥ हे राम
जी जद्यपि प्राणों का त्यागि होवै। तो भी ऐक तो बल
करि को बस करिये॥ एके को बस हं ये चारों बस अ
वै॥ अरु तेरी बुद्धि विषे सुप्रपुण्ड्र हं आशु निदा
स कीया है जैसै सरज विषे प्रकास आइ हं दा है ते
सै सत सास्त्रों अरु सै तों करि जो निरमल पुण्ड्र कहै है
ते सन ही तेरे विषे पाई ते हो॥ हे राम जी अब नूं मेरे बच
नो को अधिकारी हो॥ जैसै तं दी के स्वप्न ने को अं
दोरा अधिकारी होता हो॥ अरु सुप्रपुण्ड्र करि तेरी
बुद्धि विड आइ है॥ जैसै चंद्रमा के नंदे दृश्ये॥ चंद्र मुषी
कमल विड आव ते हो॥ हे राम जी सत सास्त्र अरु संता
की संगति दारा॥ बुद्ध को ती प्रण की है ते सी घड़ी आ
त्म तत्त्व विषे प्रबेस करती है॥ ताते प्रेष पुरुष ते ई
है॥ जिन हं संसार को बिरम जाण करि त्यागि कीया
है॥ सत सास्त्र अरु संतो के बचन दारा आत्म पद प्रावे
ए का जतन कर ते हो॥ अरु अविनासी पद को प्राप्ति
हो ते हो॥ अरु जो सुप्रपुण्ड्र को त्यागि करि संसार की
और त्यागि है॥ ते महा मंथ अरु जड है जैसै जल जड
ता करि को गडगू हो जाता है॥ ते सै गह अज्ञानी दृढ
मंथ ता करि को आत्म मंथ को जड हो जाते हो॥ हे

मरपरहिताहै॥ कदाचित्मांति कौनही प्राप्तिहोत
अरुआसाकरिमद्यसुकचारहिताहै॥ जैसेअ
निविधैमांसपायासुकचिजाताहै॥ हेरांमजीआत
पदकेसाक्षात्कारविधैविसेधआसाहीआवरण
है॥ जैसेसरजकेआगेमेघकेआवरणहोताहै॥ ते
मेंआत्मपदकेआगेधराआवरणहै॥ जबउर
मारूपीआवरणनिदरतहोवै॥ तबआत्मपदक
साक्षात्कारहोवै॥ अरुआसातबहरहोवै॥ जोम
तोंकीसंगतिअरुमतमास्त्रोंकाबिचारहोवै॥ हेरा
मजीसंसाररूपीएकबडाबृहदहै॥ तिसकोबोध
रूपीघडगकरिकैबैदज॥ जबमतमास्त्रअरुमत
संगतकरितीकाएबुधहोवै॥ तबसंसाररूपीबृह
नष्टहोवै॥ जहांसुप्तगुणहोतेहैं॥ तहांआत्मजानमी
आनिविशजताहै॥ जैसेजहांकवलफलहोताहै
तहांमदरेमीआनिस्थितिहोतेहै॥ हेरांमजीगु
णरूपीप्रदनकरिकै॥ जबइंकारूपीमेघनिदर
तहोताहै॥ तबआत्मरूपीछंदमाकासाक्षात्कार
होताहै॥ जैसेछंदमाकेगंदेइंसेआकासमोम
माहैतैसेआत्माकेसाक्षात्कार॥ येतेरीबुधमोम
गी॥ इति श्रीमत्तोहप्रकरणोविक्रताअसत्वरन
नतांमर्माः॥ १॥ बसिष्टोवाच॥ हेरांमजीअबइं
मेरेबचनोंकाअधिकारीहै॥ काहेतेंजोतप्रदेराग

विचारसंतोषश्चदिकजोसुखगुणसाखौंअरुसं
तहूजोकहेहो॥सोसमहीतेरबिषेपाईतेहो॥ताते
मेरेबचनोकोसुण॥परिकिसप्रकारिसुणजोरा
जअरुतमगुणकोत्यागिकरि॥सुखसांतभाव
होकरिसुण॥राजसजोहेबिषेअरुतामसजोहेल
होजाणनिद्राबिषे॥तिनदोनोंकोत्यागकरिकेसु
णजेतेकबूजजासीकेगुण॥सास्त्रहूबरननकीये
हो॥तिनकीयांप्रगतितेरबिषेपाईतीहो॥अरुजेति
कबूगुणगुरोंकेसास्त्रबरननकीयेहो॥तिसअब
लीपंकतकरिमैसंपन्नहो॥तैसैसमरतहूकरिसम
दसंपन्नहो॥तैसैसंपन्नहो॥तातेमेरेबचनोकाअधि
कारीहैतं॥अरुमरघोंकोइनबचनोकाअधिका
रनही॥हेरामजीजैसैचंद्रमाउदेहोताहो॥तबचंद्र
क्रांतप्रणिप्रदीप्तहोतीहै॥अरथइहजोतिस्तेअ
मृतश्रवताहो॥अरुजोपत्थरकीमिलहैतिनहू
तैनहीश्रवता॥तैसैजहांजजासीहोताहो॥तिसकोप
रभारथबचनलातेहो॥अरुअजांनीकोनहील
गते॥हेरामजीजोमिथ्यमुखपात्रहोवै॥अरुगपदे
सकरनेहा॥ज्ञानदाननहोवै॥तबभीनुसमिष
कोआत्माकासाक्षात्कारनहीहोता॥जैसैचंद्रमु
षीकमलनीनिर्मलभीहोवैपरचंद्रमानहोवै॥तब
भीप्रफुलतनहीहोता॥तातेचंद्रमोक्षपात्रहो॥अरु

अथैकरोजो ते रागिदा पुष्ट होवे। अर्थ इह जो बल
इतनुड संसार के इष्ट अनिष्ट विषे चलाइ मा
न होवे। हेरां मजी जिनों पुरखों को। इस प्रकारि
तपस की प्राप्ति भई है। सो परम आनंदी भये है।
सो कह करत है न कबू जाचनां करत है हेरां मज
हे प्रेरु उपदेये तै रहित। परम सां तरूपी आ
त करि पूरण हो रहै है। हेरां मजी नह पुरुषनां
प्रकरि की चेष्टा करत। भीष्ट आदत है। परम
बुनही करत। जहां मन के मन की बत जाती है।
हो आत्म सताही भासती है। आनंद आरि पूरण
रही है जै सैं पूरण मासी का छंद मां अमृत करि
ए होता है। तै सैं ज्ञानदांन परमानंद करि पूरण हो
है। हेरां मजी इह जो भैंतु क को अमृत रूपी बत
ही है। इस को तब जाणैगा। जब बुझ को आत्म त
कामात्मा त्कार होवेगा। तब इस को आत्म ज्ञान की
प्राप्ति होती है। तब समुद्र नष्ट हो जाते हैं। जै सैं
ता के मंजल विषे। तपस नहीं होती। तै सैं ज्ञानी को
मन होता। अरु अज्ञानी को सांति कबूं नहीं होती।
सो कबू क्रिया करता है। तिस विषे दुष ही पावता
सुप्र को नहीं पावता। जै सैं की करि के बहक सों
कपड़े उत्पति होत है। तै सैं अज्ञानी सो दुष उत्प
न होत है। हेरां मजी इस की जो प्रथता करि के वे

। धन्यति हो ते है । श्री मा दुष अद्रुत क का सी को

। हो ता । अदर श्री श्री मा दुष को ज नु ही ।

। अरु चंडा ल दू के ग्रे ह की नि के पाई

। हे रां म जी इ ह मो क गु पा रा प्र म बो ध का

। अरु य इ ह

। अरु मो क गु

। जे से

। ते सा श्री र त्रि लो

। नां नां प्र करि के दृ षां त हं स ह त

। त हं स क थ है । तिस को ज ब इ ह बि चारै गा । त व

। अरु अ ज्ञा न रु पी ति

। अरु जे । जे से अ ध

। ते से अ ज्ञां को इ ह मा ल

। हे रां म जी तिस प्र का

। मो थ व ण क रा । म रु जे

। ज्ञा न दान है । सो से स्र का उ प दे स करि । अरु अ प

अनुभव हो ॥ जब पुरुष अरु सास्त्र अरु अपनी
बुद्धि नो ऐक वे मिल है ॥ तब इस का कल्याण
होवे ॥ जब लग्न अकृतम आनंद को प्राप्ति प्राप्त
ही ॥ तब लग्न हट अभास्क है ॥ तिस अकृतम आ
नंद के प्राप्ति करणे हारे हम पुरुष है इस जीव के
हम मित्र है ॥ ऐसा मित्र और कोऊ नही ॥ जैसा हम
मित्र है ॥ हमारी संगति इस जीव को ॥ आनंद कर
णे हारी होती है ॥ ताते जौ कह्य मैं कहिता हों सो त
कर ॥ हेरां मजी यह जो संसार के भोग है ॥ सो धिण
क है ताते इन का त्याग करि सुध धिण है ॥ अरु प्र
म विषे अनंत दुख है ॥ इन को विश्वरूप जाणि का
त्याग ॥ हम सारथी ज्ञान वां नो का संग करि ॥ अ
हमारे बचनो को विचार ते तेरे दुख नष्ट हो जावे
॥ हेरां मजी जिस पुरुष हमारे साथ प्रीत करी है ॥ ति
को हम आनंद प्रद की प्राप्ति करि है ॥ तिस आन
को पाइ करि ब्रह्मादिक आनंदी भए है ॥ अरु
द्वर ज्ञान वां नभी आनंदी भये है ॥ तिस निरदोष
द को प्राप्ति होता है ॥ जो हमारे साथ प्रीत करता है
रां मजी श्रेष्ठ पुरुष तेई है ॥ जिसने संतों का संग अ
सास्त्र के विचार श्रम हठा को अदृश्यता को प्र
कीया है ॥ अरु निरभये हये है ॥ आत्मा का प्रमा
इस को दीन करता है ॥ अज्ञानी का हिंदू रूपी क

जबलगात्रकांर

हेरांमजीजिनोपु

द अरुसमारको

नपोनादिका। नो गौ विषे मगन हूये हो। तिनको तप

रुसा सौ का विचार करिके। तिस तेन जल घन हो नाव
अरु परमानंद को प्राप्ति हो ता हो। अरु जो समार
मुद्रक सन मुष हूवा हो। सो उघाते कुषु पद को प्राप्ति

जाणो जो इह विषे हो। अरु रुस को पान करे तो विषे
उत्को नास करता है। जै सै जिनां पुरघां समार को अ
सत जाणो हो। अरु वक्रु डि सें सा के पदा गयो को अ
रु जतन करते हो। तिमृत्प को प्राप्ति हो वेगा हेरांम
जी जो पुरुष आत्म पद ते वे मुख है। अरु आप को
कल्याण रूप जाणते हो। अरु आत्म अस्यास को
त्याग करि ससार की और भावते है। सो क्या क
रते है तै सै किसी के गेह विषे अति जागे। अरु
प्रहमी नरा हूका हो दो। अरु

हंकीसज्याकरिकेसैनकरिरहेतौनासकोप्राप्ति
होवैगा॥ तैसेंउहभीजन्ममृतकोप्राप्तिहोवैगा॥ अ
रुजिसंसारहंकेप्रदार्थोको॥ देखिकरिगावै
यहांनहोतेहैं॥ सोसुखउपनैसहैं॥ जैसैविजलीक
वमतकारहोताहै॥ अरुमिटजाताहै॥ इस्थिरन
हीरहितातैंसैंसंसारकासुखउपआगमापाईहै॥
हेरांमजीइहसंसारअविचारकरमास्ताहै॥ अरु
चारकीप्रेतेंलीनहोजाताहै॥ तौउमभीविचारकरो
सोतौविचारकीप्रेतेंलीनहोजाताहै॥ इसीतेंपुरुष
रथकहीताहै॥ जैसैंहाथविघैदीपकहोवै॥ अरु
धरूपविघैगिडैतौमूरघताहै॥ तैसैंसंसारभ्रमनि
रणहार॥ सास्त्रभीविद्यामानहोवै॥ अरुतिसकीस
एनजावैतौमूरघताहै॥ हेरांमजीजिनोपुरुषोने
संतोकीसंगतअरुसतसास्त्रोकेविचारधारा॥ आ
पदकोंप्राप्यहै॥ तेपुरुषकेदयकेदलभावकोप्राप्ति
येहैं॥ अरुयहजोसुखतैतनकोंप्राप्तिहैयेहैं॥ अरु
संसारभ्रमनिनकानिदतैहोगयाहै॥ हेरांमजीहैंस
रमनकेसंमरणेतैउत्पत्तहैं॥ तौइसकाकल्या
बांधवोकरिनहीहोए॥ अरुधनकरमीनहीहो
प्रजाकरिमीनहीहोए॥ अरुतीरणहंठाकरधन
करिमीनहीहोए॥ अरुनअपणीयांभुजानअव
ऐश्वर्यकरिहोए॥ हैएकमनकेजीतणेकरिकल

हे राम जी तिस कौं ज्ञानी परम पद कहते

निरल परहिते है ॥ तिस कौं संसार का भाव अभाव रु
पम परम कबू नही करता ॥ जैसे आकाश बिधे सरज
उदे होता है ॥ तउ जगत की कथा होती है ॥ अरु जो अ
दृष्ट हो जाता है ॥ तब कथा भी जगत की लीन हो जाती
है ॥ जैसे तिस कथा के दो वण ॥ अवर न होणे करि
अकास ज्यों का त्यों है ॥ तैसे ज्ञान वां न सदा निरले
प है ॥ तिस आत्म ज्ञान के नृत्पति का नृपा इह म
रा मातृ श्रेष्ठ है ॥ हे राम जी जो पुरुष इस मोरु न
पाये कौं प्रधास जुगति तिस दिन पढने सुगाने ल
गो ॥ तिस दिन इस कौं मोरु नापी जाया है ॥ अरु मे
रु के चार द्वारा पाल में नृत्पति कौं कहें हैं सो इन ह
विधे एक नी अपणो बसि आये ॥ तब मोरु द्वार
विधे इस का सीधु हो प्रवेस होवे ॥ ८

विस्तार अवश्य वांछनीय है। हेरां मजी इह मप्र इमको
मविश्राम का कारण है। अरु इह संसार जो देयीत
सो प्राकृतिक की नदी बत है। तिसको देखि करि प्र
प्र अज्ञानी रूपी जो मृग है। सो सुख रूपी जल को जां
करि दोड़त है। पर सांत को नही प्राप्ति होते जब म
रूपी मेघ की बरषा होत है। तब सुखी होत है अरु अ
था सुखी नही होता। हेरां मजी मप्र ही परमांत है।
रुस मही परम प्रद है। अरु संमही मवि प्रद है। जि
म प्रयस मको प्राप्ता है। सो संसार ममुद्र तै पार कृत
है। अरु तिसको मत्र नी मित्र हो जाता है। हेरां मजी ज
हा चंद्रमा आग न उदे होता है। तहां अमृत की किर
णां पडी फुरती है। अरु सी तलता होती है। तै में तिम
के रिदे बिघे। मप्र रूपी चंद्रमा आग न उदे होता है। त
मकी सर्वत पत मिट जाती है। अरु परम सांत वां
होता है। काहे तै जो मप्र रूपी अमृत करि न प्रिदे। हे
रां मजी अमृत समान है। इह देव तत्त्व को अमर क
रता है। इह परम अमृत है। हेरां मजी मप्र करि कै
मको परम सां जा होती है। तै में प्रणामा सी के चंद्रमा क
कांति परम नुजल होती है। तै में मप्र को पाइ करि
इसकी नुजल कांत होती है। तै में विष्णु के दो रिदे
है। एक अणु मरीर बिघेर हिता है। इमरा संतौ वि
घेर हिता है। तै में इस के दो रिदे होता है। एक मरी

रखिये इसरासमभी इसकारिदा होता है। हेरांमज
ऐसा आनंद। अमृतको प्रांनकी ये नहीं होता।
अरु रुक्मीको प्राप्ति हूए भी नहीं होता। जैसा आ
नंद सम करि होता है। हेरांमजी प्रांन हूंतें भी कि
सीको अधिक प्यारा होवे। अरु उह अंतरध्यान
हो करि फेरि प्राप्त होवे। तैसा उसको आनंद नहीं
होता। जैसा सम दानको आनंद होता है। तिसके
दरमन करिके आनंद होता है। अरु ऐसा आनंद
राजाको भी नहीं होता। जो बाज अष्टमजी होता है।
अरु अंतरपुर उद्भवां होती है। जैसा आनंद सम स
पन पुरुषांको होता है। हेरांमजी जिष्ठ पुरुषको स
मकी प्राप्ति भई है। मो बंधनां करनेको जो गांवे। अ
रु पूजने पड़े। तिसको समता प्राप्ति भई है। तिसतें
लोक उद्देश ही पावता। अरु लोको तें भी उद्देशान
ही पावता। उसकी कथा अमृतरूप है। अरु बचन
भी उसके अमृतकी न्याई को मत है। जैसे बंधन मांकी
किरण। सीतल अरु अमृतरूप है। अरु समको
हिरदै आगम है। तैसे संतजनों के बचन है। जिस प
रुषको सम प्राप्ति हूई है। जब इसजीव को उसकी
संगति प्राप्ति होती है। तब प्रमानंदी होता है। हेरांम
जी जैसे बालक माताको पाइ करि आनंद दान हो।

ताहै॥ जिसको सम की प्राप्ति भई है॥ तिसकी संगति सम
 को प्राप्ति होती है॥ सो बाल तेरी आनंद वां न होता है॥
 जैसे किसी का बांधव मूढ़ा हूदा॥ फिर आदौ उसको
 आनंद प्राप्ति होती है॥ तिसमें भी अधिक आनंद सम
 संपन्न के संगतें पुरुष होता है॥ हे राम जी जैसा आनंद
 चक्रवर्ती राजा के पाए तै नही होता॥ अरु राजा त्रिने
 की का पाए तै भी नही होता॥ जैसा आनंद सम के पाए
 तै होता है॥ जिसको सम की प्राप्ति भई है॥ तिसके सम
 भी मित्र होते है॥ तिसकरि के उसको प्रय नही रहिता॥
 अरु संप्रका मय भी नही रहिता॥ मीह का मय भी नही
 रहिता॥ अरु भी किसी का मय नही होता॥ मरबदा
 सांति रूप है॥ हे राम जी जो कोऊ कष्ट आन प्राप्ति होवे
 अरु प्रत्येका तकी अनि अनिता॥ तौ भी चत्वारि मा
 न नही होता॥ मदा सांति रूप रहता है॥ जैसे सीतल चं
 द्रमा विधे स्थित होती है॥ तैमें जो कछु मुन पुण्ड्र अरु सं
 पदा है॥ सो सम ही संपन्न पुरुष के रिद्वे विधे अनि स्थि
 त होते है॥ हे राम जी जो पुरुष अध्यात्म आदिक ताप हं
 करि पडा जलता है॥ अरु उसको रिद्वे सम की प्राप्ति हो
 वे॥ तब ताप मिट जाति है॥ जैसे तप्त पृथ्वी वरषा करि म
 तल हो जांती है॥ तैसे उसका रिद्वे सीतल हो जाता है॥
 जिसको सम की प्राप्ति भई है॥ सो सम कथा विधे भी आ

रूप है ॥ तिसको द्वेषकोऊ सपरस नहीं करता ॥ जैसे
जमीन को बाँझ नहीं बंध सकता ॥ तैसें जिन हं प्र
सम रूपी कदच पहन्या है ॥ तिनको अध्यात्म कथा
देता प्रबोध नहीं सकता ॥ उह सर्वदा सीतल रूप रहि
ता है ॥ हे राम जी तपी श्वर पंक्ति अरु जज्ञ कर दो दाता
अरु धन दाता प्रजापति करण को जो प्रहै ॥ पर जिस
को सम आधिपति सो सम ते उत है ॥ अरु मन न हं को
जनें जो प्रहै ॥ उसको मन की हति है सो आत्म तत्व को
हण कर्त है ॥ अरु सम करि पूरण है ॥ अरु सुप्रसन्न
बोध मो न ता है ॥ जिस पुरुष को सबद सपरस रूप सम
ध्यांद्रियों के हृदय निष्ठ बिष्ट ॥ राग दोष नहीं तिसके
सांति आत्म कहिते है ॥ हे राम जी जो संसार के मणी क
प्रदार्थ बिष्ट ॥ बंध मो न नहीं होता ॥ अरु आत्म का
नंद करि पूरण है ॥ तिसको सांति दान कहिते है ॥ जो
तदा न है सो संसार के सुप्त अरु सुप्त करि मल न न
होता सदा निरले परहित है ॥ जैसे अकास सप्त प्रदा
याते निरले परहित है ॥ तैसें सांति दान पुरुष निरले
हित है ॥ हे राम जी जो सा जो पुरुष है सो सम न बिष्ट
की प्राप्ति बिष्ट संतुष्ट हर्ष दान प्रीति हृदय वता है ॥

देता नही॥ अपने आप विषे सदा परमांनंद रूप है॥ जै
सै सरज के उद्वेहें अंधकार नष्ट हो जाता है॥ तैसै सांति
के पाए तैसम उपनष्ट हो जातै है॥ अरे सै जो निरबिकार है
सो सांतिदान कहित है॥ हेरांमजी उह पुरुष सनचेष्ट
भी करतै दृष्ट आत है॥ परमदा निरगुण रूप है॥ को
ऊ क्रिया उस्को सपरम नही करती॥ जैसै जल विषे क
प्रल निरले परहिता है॥ तैसै सांतिदान सदा निरले प
रहिता है॥ हेरांमजी जो पुरुष बहेरांन संपदा को पाई
करि॥ अरु बही आपदा को पाइ करि॥ दोनो विषे जो
कातोरहिता है॥ अरु सांतिदान कहिता है॥ हेरांमजी
जो पुरुष सांति तै रहित है॥ तिनका छित विन विषे ग
गईष्ट पडा छेदीता है॥ अरु जिसको सांति की प्राप्ति
हूई है॥ सो अंतराधार तेसी तत्व है॥ अरु सदा एक
रम है॥ जैसै हिमाला परबत सी तत्व होत है॥ तैसै उह
पुरुष सी तत्व होत है॥ अरु मुख की क्रांति भी बकुंत
मुंदर हो जाती है॥ जैसै निहकलंक चंद्र मां होत है॥
तैसै सांतिदान की निहकलंक क्रांति होत है॥ हेरांम
जी जिसको सांति प्राप्ति हूई है॥ सो परम आनंद है॥ अ
रु परम तान तिसी को प्राप्ति भया है॥ अरु जानी तिस
को परम पद कहित है॥ अरु पुरुषार्थ कहिण है॥
सो उही करण है॥ जिस करि इसको सांति की प्राप्ति

होवै॥ तातें हेरां मजी जैसैं सैं कहा है तिस क्रम क
रिके सांति कौ प्रदण कर जात ब्रह्म सार समुद्र
के पार कौ प्राप्ति होवै॥ इति श्री भोक्तृ प्रकाश
भूमि निरूपण भाग मर्मा॥ ७॥ ब्रह्म होवा च॥ हेरा म
जी अब विचार कानि रूपण भुण॥ जव रिदा मुद्रा
होती है तब इस कौ विचार उपजती है अरु सा
ख के विचार द्वारा॥ जव बुद्धती घणा होती है तब
सी घृही आत्म पद की प्राप्ति होती है हेरा मजी अब
विचार रूपी जोवन है॥ तिस विषे आपदा रूपी ब
ली उत्पति होती है॥ तिन कौ विचार रूपी प्रडा क
रिके काट जा॥ तब सांत आत्मा होव जा अरु मो
हरूपी हस्ती है॥ अरु जीव हं कौ रिदै रूपी कमलौ कौ
घंघ्रं पडा करता है॥ अरु अह जो इष्ट अनिष्ट प्र
दार्थौ विषे राग द्वेष करि प्रडा छेदीता है॥ जव विषे र
रूपी सिंघ प्रागै॥ तब मोहरूपी हस्ती कौ नास करै॥ अ
रु इह सांति आत्मा होवै॥ हेरा मजी जिस कौ सिद्धता प्रा
प्ति भई है॥ सो विचार अरु पुरुषार्थ करि भई है॥ अरु
जो राजा होता है॥ सो प्रथम विचार करिके पुरुषार्थ करि
होता है॥ तिस करिके राज कौ प्राप्ति होता है॥ तब अरु
बुद्ध अरु तेजा॥ अरु चतुर्थ जो प्रथम का अंग मन अरु
पंचम प्रदार्थ की प्राप्ति होती है सो इह पांचूं की भी विचार

तस्यं अरु बुद्धं अरथ इह जो आत्मा को विद्या प्रणी
 अरु तैज अरु पदार्थ का आगमन अरु प्राप्ति वि
 र करि होती है। हेरां मजी जि नो भे विचार का आ
 ली प्रा है सो ह द विचार करि के जिस की बांछा करत है
 तिस को पावत है। तांते विचार इस का प्रम मित्र है
 जो विचार वां न पुरुष है। सो आपदा विषे प्रम नही
 होता। जै में तं बरा जल विषे बुडती नही। तै में गेहे अ
 पदा विषे बुडतानही हेरां मजी विचार संजु गति ने
 कछू देता है लेता है। कपा करता है। सो सप्त सिद्धता
 का कारण होता है। धरम अरथ कांम मो कृदा चो पद
 रथ विचार की ह द ता करि के सिद्ध होत है। विचार रू
 पी कल्प ह कहै। तिस विषे जिस का अम्या म करता
 है। सो ई प्रदाथे सिद्ध होता है। हेरां मजी सुख बुद्ध का
 विचार प्रवण करजुं। अरु आत्म ज्ञान को प्राप्ति
 होवो। जै में दीप ग करि प्रदाथे ज्ञान प्राप्ति होता है
 जिस पुरुष विचार करि के। सत असत को जीण दे
 अरु असत को त्याग करि। सत की और जतन कीया
 है। सो विचार वां न कहती है। हेरां मजी संसार रूपी
 म सुंद विषे आपदा रूपी तरंग है। जो विचार वां न प
 ह्य है। सो संसार के भाव अथवा अभाव विषे कष्ट
 गन नही होता। जो कछू विचार संजु गति प्रा होती
 तिस का प्रमाण सुख होता है। अरु विचार विनांचे
 ति

होती है। तिसकरि उषप्रति होता है। हेरांमजी
विचाररूपी कंरंजे का हटा है। तिसमें उषरूपी कं
कपडे होते है। अविचाररूपी रात्रि है। तिसविषे त्रि
मंरूपी पिशाचनी आनी बिचरती है। जब विचार
रूपी सूरज उदे होता है। अविचाररूपी रात्रि। अरु
त्रिभारूपी पिशाचनी नष्ट हो जाती है। हेरांमजी ने
राइही आसीर बा द है। उषारे रिदे सो अविचाररु
पी रात्रि विचाररूपी सूरज करि नष्ट होवे। अविचारि
करिके संसार उष उदे होता है। अरु विचार की प्रे मे
संसार उष नष्ट होता है। जैसे बालक अविचार करि
को। अथपणे प्रड छांवे बिषे। बिताल कल्प करि मये
को पावत है। अरु विचार की प्रे ते मये नष्ट होता है।
तेमें अविचार करिके संसार उष को मये देता है।
अरु सत सा लौ की जुगति करि विचार की प्रे तो सं
र मये नष्ट होता है। हेरांमजी जहां विचार है तहां त
उष नही रहित है। जैसे जहां जहां प्रकाश होता है
तहां तहां अंधकार नही रहता। तेमें जहां विचार
तहां संसार मये नही रहता। अरु जहां विचार नव
हां संसार मये रहता है। अरु जहां आत्मा विचा
ति होता है। तहां सुष के देणे हार सुभ उण आ
स्थित होते है। जैसे मानसरोवर बिषे क प्रलय

रुजहां बिचार नहीं। तहां उधों का आगमन होता है
हेरां मजी जो कछु अविचार करि कै कथा करता है
सो उधों का कारण है। जैसैं हरा जो घड़ को देखता
अरु मृत का निकसता है। जहां ऐक ठी करता है
तहां मृत का तें थली उत्पत्ति होती है। तैसैं अविचार
करि कै इह पुरुष मृत्यु का रूपी उधों को ऐक ठी
करता है। तिस तें आपदा रूपी बली निकसती है।
अरु अविचार रूपी घुण का घाया मुकाबल है। तिस
तें सुख रूपी फल चाहै तों नहीं निकसतै। अरु अवि
चार किस कानांम है। जिस करि कै मुक्त किया न हो
वै। तिस कानांम अविचार है। अरु जिस करि कै सा
स्त्र के अनुसार किया होवै। तिस कानांम विचार है
हेरां मजी बबे करूपी राजा है। अरु विचार रूपी ध
जा है। जहां बबे करूपी राजा आगमन करता है। त
हां विचार रूपी धजा नी साथ है। अरु जहां विचार
रूपी धजा आवती है। तहां बबे करूपी राजा भी आव
ता है। जो पुरुष विचार करि कै संपन्न है सो पूजने
जाय है। तिस को सभ को कर्म स्कार करता है। जैसैं उ
तीया के वंश मां को सभ नमस्कार करते है हेरां मजी
हमारे देखतें। अल्प बुद्धी भी विचार की दृढता तें मो
क्ष पद को प्राप्ति हूं प्रै है। तातैं विचार इस का प्रमति
त्र है। जो विचार दांन पुरुष है। तिस का अंतर बाहर सी

तल हो जाता है। तैसे ही माला पर बंध अंतर तैसी सी स
त है। अरु बाहर तैसी सी तल है। तैसें उह नी सी तल
हो जाता है। विचार करि कै असे पद कौ प्राप्ति हो ता
है। जो पद नित्य है अरु सुख है। अरु अनंत है परमा
नंद सरूप है। तिस कौ प्राप्ति करि। न किसी के त्याग
की इच्छा होती है। न किसी के दहण की इच्छा होती
है। इष्ट अनिष्ट विधे समान हो जाता है तं रा के जै सें उ
गुणे विधे। अरु लीन हो गे विधे। समुद्र समान ही र
हिता है। तैसें बदे की कौ इष्ट अनिष्ट विधे समता हो
ती है। अरु संसार प्रम मिट जाता है। अधर ध्य तैर
दत केवल अद्वैत तत्व गुरु कौ भास होता है। हेरां म
जी रह जगत अपणे मन के मोह तें उपजता है। अरु
सुपन के विचार करि कै दुष दर्श भासता है। जै सें अ
विचार करि कै बालक कौ बैताल भासता है। तैसें ज
स कौ संसार भासता है। तब ब्रह्म विचार की प्राप्ति हो
ती। तब जगत भ्रम नष्ट हो जाता है। हेरां म जी जिस घट वि
धे विचार उपजत है। तहां समता आनि उपजती है।
जै सें विज तै अंकर निकस आवता है। तैसें विचार तै
सम उपज आवती है। अरु विचार दान पुरुष जिस
ओर देखता है। तिसी ओर आनंद दिष्ट आवता है।
दुष कहं नही दिष्ट आवता। जै सें सूरज कौ अधकार
नही दृष्ट आवता। तैसें विचार दान कौ दुष नही दृष्ट

आवता ॥ अरु जहां अविचार है तहां दुष है ॥ अरु
जहां विचार है तहां दुष नही ॥ जैसैं अंधकार विषे व
लक कों बैताल सामंता है ॥ अंधकार के अभाव
में बैताल का भी अभाव हो जाता है ॥ अरु मय भी न
ही रहता है ॥ तैसैं विचार की ये तें दुष हू का अभाव
हो जाता है ॥ हे राम जी संसार रूपी दीर्घ रोग है ॥ तिस
के नास करने कों विचार बड़ा औषद है ॥ तिसके
विचार की प्राप्ति नई है ॥ तिसके मुष की क्रांति भी
उजल हो जाती है ॥ तैसैं प्रणामी के बंध मान
जल क्रांति होनी है ॥ तैसैं विचार दान के मुष की उ
जल क्रांति हो जाती है ॥ हे राम जी विचार करि के
इस कों परम पद की प्राप्ति होती है ॥ तिस करि अ
र्थ मिछ हो वैसो विचार करीये ॥ अरु तिस करि अ
नर्थ कों प्राप्ति हो वैसो ॥ अविचार है ॥ अविचार रू
पी मंदरा है ॥ जो इस कों पान करता है ॥ सो उन मत दे
ताता है ॥ तिस तैसुन आचार कों ऊन ही हो आव
ना ॥ सास्त्र के अनुसार जो कछ सुन किया है ॥ सो ति
तै होइ नही आवती ॥ तातैं अविचार करि के
र्थ मिछ नही होता ॥ हे राम जी इकारूपी रोग
॥ सो विचार रूपी औषद करि के निरदरति है ॥
॥ तिनो पुरुषों ने विचार द्वारा परमार्थ मता
प्राप्ति की पाई ॥ सो परम सांत हो जाता है ॥ अरु

ये उपपादेय बुद्धि न की जाती रहती है। अरु ह्य
को साक्षी भूत हो कर देष्टे हैं। अरु संसार को ना
रु अमोह विधे जो रहित है। अरु उद्वेग अस्तंते रहित
नेह संसार रूप है। जै से समुद्र जल करि पूरा है। ते
प्रविचार वां न आत्म तत्त्व करि पूरा है। जै से अंधे क
प्रविधे गिद्धा हंदा। हस्तों के आश्रय निकसता है। जै
संसार रूपी अंधे क प्रविधे। गिद्धा विचार के आश्र
हो करि। विचार वां न निकस एको समरथ होइ सक
ता है। हेरां मजी विचार को आश्रय करि। संसार समुद्र
हंते तिरों। जो को ऊगो गी होता है। सो एतारु दं न नदी
करता। जे तारु दं न विचार ते रहित पुरुष कर्ता है। अ
रु जै संको को क कष्ट प्राप्ति होता है। सो भी एतारु दं न
नदी करता। जे तारु दं न विचार ते रहते पुरुष कर्ता है
हेरां मजी सो पुरुष विचार ते मून्प है। सम ही आपदा
तम को अनि प्राप्त होती है। हेरां मजी की चका कीट
भी होइ प्रमत्ता है। अरु अंधेरी बिल विधे सरथ होइ
प्रमत्ता है। पर विचार ते रहत होइ प्रमत्ता है। जो
पुरुष विचार ते रहत है। अरु नो गों विधे पडा धावता
है। हेरां मजी विचार ते मून्ब न कष्ट को प्राप्ति होता है
ता ते एक निमिष भी विचार ते रहित न होइ। दृढ हो

दृष्टकात्यायकगण्ड। हेरांमजीजोपुश्यविचारदांन
हेसोसंसारकेमोगोंविधैनहीगिडता। अरुसतवि
धैस्थितहोताहै। विचारजबहठहोताहै। तबति
सतैतत्त्वज्ञानहोताहै। अरुतत्त्वज्ञानतैविश्राम
ताहै। अरुविश्रामकरिके। चितगुपसमहोताहै
अरुचितकैगुपसमहोताहै। समहुंयोंकानामहोताहै
॥ इतिश्रीममोउपकरणविचारनिरूपणेंनामस
र्गः॥ १४॥ बसिधोवाचा। हेरांमजीअविचाररूपीमत्र
केनांप्रकरताजिसकौसंतोषप्राप्तिहोताहै। सोपर
मानंदीहोताहै। अरुत्रिलोकीकाऐश्वर्यतिसकौ
कीनाईतुंछनासताहै। हेरांमजीऐसाआनंदत्रिलो
कीकेराजकरिनहीप्राप्तिहो। अरुअमृतकेपांन
कीऐतैमिऐसाआनंदनहीहोता। जैसाआनंदसं
तोषदांनकोहोताहै। हेरांमजीइंछारूपीरात्रहै।
रुदिरूपीकमलकोसुकचाइलेतीहै। जबसंतो
षरूपीसरजगुंढहोताहै। तबइंछारूपीरात्रका
भावहोजाताहै। जैसेहीरसमुद्रगुंढताकरिके
मताहै। तैसेसंतोषदांनकीआतिसोमतीहै। हेरां
मीजोत्रिलोकीका राजहै। परइंछानिवर्तनहीहो
तबदृष्टिहै। अरुजोनिधनहैपरसंतोषदांनहै।
तबसर्वकार्यश्रदेसोसंतोषकिसकानांप्रहैसो
दृष्टकरु। जोअप्राप्तिवस्तकीइंछानकरै। अरु

महं ईदृश अनिष्ट विधेया वैधन करेति सकानाम
तोषेहो अरु संतोषकानामपरमपद है संतोषदा
मपुरषमदा आनंद रूप है अरु आत्मस्थिति करि
त्रिसप्तप्रदो तिसको अदृष्ट कब नही फरती अ
रु संतुष्टता करि के न समझा सिद्धा प्रफुल्लत हो रहा है जे
से सूरज के उदेहो सूरज प्रसी क मत प्रफुल्लत हो ता है
ते से संतोषदा न करि द्या प्रफुल्लत हो ता है जो अप्रति
वस्त है तिस की इच्छा नही करता अरु जो अनीछत प्र
प्त नई है तिसको जथा सास्त्र कर म करि के ग्रहण क
ता है तिसको संतोषदा न कहिते हो जे से प्रणामा सी
का चंद्रमा अष्टत करि के पूर्ण होता है ते से संतोष
न संतुष्टता करि के पूरा होता है अरु जो संतोषते
हित हो तिसके रिदे रूपी बन विधे सदा उग्र अरु ते
रूपी फल प्रदेव्यति हो ते है हे राम जी जो चित्त स
ते रहत है तिस विधे नाना प्रकार की इच्छा प्रडी न
होती है जे से संतुष्ट ते नाना प्रकार के तरंग न
ता है अरु जो संतुष्ट आत्म है सो परम आनंद है
को जगत के प्रदार्थों विधे हि प्ररु न पादे ये बु
होती है राम जी सो सा आनंद संतोषदा न को हो
सा अष्टसिध के अर्ज प्रपे ते नी नही होता अरु
न की ऐत नी नही होता संतोषदा न सदा सांति रूप

संतोषरूपी ब्रह्माकरितिसकी सांति हो गई है ॥ इसी कारण
एतें निर्मल है ॥ हेरांमजी संतोषदांन पुरष सभ को पा
रा ला ग ता है ॥ जैसे परपदा फल अंब का सुंदर होता है ॥
अरु सभ को पा रा ला ग ता है ॥ तैसे संतोषदांन पुरष सभ
को पा रा ला ग ता है ॥ अरु उत्तुति करने जो पढ़े ॥ जिस
पुरष को संतोष प्राप्ति प्रया है ॥ तिस को प्रमत्तानंद दा है ॥
हेरांमजी जहां संतोष है तहां इच्छा नहीं रहित ॥ अरु जो
विघेदी न नदी रहित ॥ वह उदार आत्मा है ॥ अरु सदा
नंद करि निप्रति रहित है ॥ जैसे मेष पद न के आये ते न
हो जा ता है ॥ तैसे संतोष के आये ते इच्छा नष्ट हो जा ता है ॥
अरु जो संतोषदांन पुरष है ॥ तिस को देव ते रिषी अरु सभ
प्रकार करते हैं ॥ अरु धन धन करते हैं ॥ हेरांमजी इस
संतोष को धारो गत वर सभ सो जा पावेंगे ॥ इति श्री मते
ह्य प्रकरणे संतोष निरूपणें नाम सप्तमः ॥ १५ ॥ अत्रि
प्रोवाच ॥ हेरांमजी अद्वैत के कबूदांन तीरथादिक सा
न है ॥ तिनो करि के आत्मपद की प्राप्त जैसे नही होती ॥
जैसे साधसंग करि के आत्मपद की प्राप्त होत है ॥ साधसं
रूपी एक है ॥ तिस का फल आत्मज्ञान है ॥ जिस पुर
ने इस फल की रक्षा करी है ॥ सो अनुभव रूपी फल को
देगा ॥ हेरांमजी आत्मानंद ते रहित है ॥ सो संतो के संग
विज्ञान को पाए ते अमर हो ता है ॥ अरु जो विप्र तो करि
उघा है सो संतो के संग करि संपदा को पाव ता है ॥ आपद

रूपी कमलै कौ ना सकती ॥ संतों का संग गढ़ है ॥ संतों

गति करि इस के रिद्वै बिषै ज्ञान रूपी दीप कर्ज गता है ॥
तिम करि के अज्ञान रूपी तमन ह हो जाता है ॥ अरु ब
जै श्रेष्ठ धर्म कौ प्राप्ति होता है ॥ बज डिकि मा भोग प्रद्वारथ
की इच्छा न ही रहिती ॥ अरु बुद्धि दान होता है ॥ अरु सब
तेज संपद बिषै विराजता है ॥ जै सै कल्प वृक्ष के निक
टि गये तै ॥ बांछित फल की प्राप्ति होती है ॥ तै सै संतो
के सा करि बांछित फल की प्राप्ति होती है ॥ हे हे राम जी स मा
रूपी स मन्त्र तै पार उतारने के लै सत जन हो ॥ जै सै की व
र न द का करि के पार करता है ॥ तै सै सत जन जुग
त करि के स मा र स मन्त्र तै पार करत है ॥ अरु मोद
रूपी मेघ काना सकरता संतो संग पद न है ॥ जिन
का देहादिक अनात्मा बिषै सनेहन नष्ट नया है ॥ अरु
सुख आत्मा बिषै इ स्थिति नई है ॥ तिम करि त्रिपि
नो है ॥ बज ड स मा र के इष्ट अनिष्ट बिषै चलाइ
मान न ही होता ॥ सदा स मन्त्रा नाव बिषै स्थिति है ॥ ते
सत स मा र स मन्त्र के पार उतारने कौ पुल है ॥ अरु
पद रूपी वली कौ ॥ पि न ज ड स मन्त्र ना सकरत है ॥ हे

दार्थकी प्राप्त होती है परन्तु अप्राप्ति
नहीं तेनी च होती है तिसको प्रदार्थकी प्राप्त ही हो
ती जिन्में पुरुषों ने सत संग का त्याग कीया है ते नरक
रूपी अनिर्विषैल कड़ी होकर रिजलैगी अरु जिन्में
पुरुषों सत संग कीया है तिनको नरक रूपी अनिर्वि
नास करता साध संग होवै मेघ की न्यां ई हेरा मजी सत
संग रूपी गां गा है जिन्हें सत संग रूपी गां गा का मान
कीया है तिनको ब्रह्म डिंदी मत प्रादिक साधन साध
का प्रौजन है उह साध संग करिके परम प्रातिकों प्रा
प्ति होवैगी ताते और सत संग प्रादों को त्यागि करि सत
ग को छो जिये जैसै निरधन चिंता मग्न आदिक धन को
छो जता है तैसै ममोही सत संग को छो जै अध्यात्मादि
कतीन तां प्रों करि जो प्रडा जलता है तिसको सीतल
करने हारा संतों का संग है जैसै तपी हूँ ईश्वरी मेघ क
रि सीतल होता है तैसै संतों के संग करि रिहा सीत
ल होता है हेरा मजी मोह रूपी दृष्टि का संकतो सत सं
ग रूपी ऊहाडा है सत संग करिके उह पुरुष अविना
सी पद को प्राप्ति होता है तिस पद के पाए तै ब्रह्म नि अवर
क रूप पावण की इच्छा नही रहिती अरु सर्व ते उत्म होत
है जैसै सर्व अपहृ रां तै लक्ष्मी उत्म है तैसै सत संग क
तो सत ते उत्म है ताते अपण कल्याण के नमित सत स
ग करणं तु मको जो प है हेरा मजी इह चार जो मोह के घा

रपासबजकोंमेंकहेहैं॥जिनोपुरुषोंइनहूँसाथप्राप्ति
 करीहै॥तेसीघहीआत्मपदकोप्राप्तिहोहै॥अरुजोई
 नकीसेवनहीकरतेसोमोक्षकोप्राप्तिनहीहोतेहेरां
 मजीइहोंचारोंविषेएकजीजहाआवताहैतहांसंतोष
 अरुबिचासांथसमजीआवतीहैजिसेंजहांसमुद्रहोता
 है॥तहांसर्वनदीयांआवतीहैं॥तैसेंजहांसमहोताहै॥त
 हंनौवरजीतीनोंआवतेहैं॥अरुजहांसाधसांहोताहै
 तहांसमसंतोषबिचारजीआवतेहैं॥जैसेंजहांकलहृद
 निकटिहोताहैतहांसबलहीआनिअस्थितहोतीहै॥
 अरुजहांसंतोषहोताहै॥तहांसमबिचारसाधसांजी
 आवताहै॥जैसेंहरणमासीकेवंदमांविषांपुणकलमन
 एकठीहोतीहै॥तैसेंजहांसंतोषआवताहै॥तहांतीनों
 जीआवतेहैं॥अरुजहांबिचारआवताहै॥तहांसंतोषउप
 समअरुसाधसांमजीआवताहै॥जैसेंअष्टमंत्रिकरिलह
 मीराजविषेआनिअस्थितहोतीहै॥तैसेंजहांबिचारहोता
 है॥तहांअवरजीतीनोंआवतेहैं॥तोतेहेरांमजीचारोंआं
 निएकठेहोवैतबतौपरमअष्टहै॥अरुजोचारोंनहोवें
 तोएकआदिगातोचरोंआनिअस्थितहोवैमोक्षके
 प्राप्तिहोवैणोंकोइहपरमसाधनहैअवरउपावकरिमु
 क्तकीप्राप्तिनहीहोतीसंतोषपरमलानसतसांपरमा
 तिबिचारपरमज्ञानसंमपरमबुधहेरांमजीइहपरमक
 ल्याणकेकरतेहैं॥जोइवोंकरिकेसंपनहैं॥

सादिकजीउत्तुतकरतैहैं। सातैंदंतोंसाथदंतचबाइ
 करिकेंइन्कोंआश्रेकरिकेंमनकोंबसकरु। हेरां
 जीमनरूपीहस्तीबिचाररूपीअंकुसकरिकेंबसले
 ताहैं। अरुमनरूपीबनबिधैवासनांरूपीनदीबल
 तीहैं। तिनकेसुमअसुमदोकिनारेहैं। अरुपुरुषार
 थकरनांइहहैं। जोअसुमकीओरतेरोककरिसुम
 कीदोरछलावण्ण। जबअंत्रमुषीआत्माकेसुनमुषब
 तकाप्रवाहहोवैगातबतंपरमपदकोंप्राप्तिहोवैगा।
 हेरांमजीप्रथमपुरुषारथकरना। इहहैजोअबिचा
 ररूपीउजाडिहरिकर्ण। जबअबिचारदीबाहरहो
 वैगा। तबआपहीप्रवाहहोवैगा। हेरांमजीद्विपकीदो
 रजोप्रवाहहोतताहैं। मोबंधनकाकारणहोताहै। अरु
 जबआत्माकीदोर। अंत्रमुषप्रवाहहोताहैसोमोक्ष
 काकारणहोताहै। आगेजैसेतेरीइच्छाहोइतैसेकरु।
 वृत्तिश्रीममोक्षप्रकरणेसाधसंगमउपांसाबननन
 समी॥६॥ बसिछोवात्रा॥ हेरांमजीइहजोमेरेबच
 नहैसोपरमपावनहै। जोबिचारदांनमुखअधिकारी
 है। तिसकोंइहबचनजोपढ़ै। कैसंबचनहैजोपरम
 बोधकाकारणहै। जोउरप्रसुखपात्रहै। सोइनोंबच
 नोंकोंपाइकरिसोभताहै। अरुबचनजीउहांसोभा
 पावतैहैं। जेसैमेघोंकेअनावहूं। सुरतकाचबिधै
 चंद्रमांअरुअकाससोभापावताहै। मुखअकास

सबदंशको॥ अनादंशं चंद्रमा सोमताहै॥ अरु ब्रह्म
 लों के अनादंशं चंद्रमा करिके अनाकाम सोमताहै॥ तैसे
 जहासी अरु निरमल बचन की प्रेम माहोती है॥ हेरा प्रजी॥
 त्पार प्रणव है॥ अरु मेरे बचन परम उत्तम है॥ इह जो प्रहारा
 मायेण मो कृपाये साख है॥ सो आत्म बोध का परम का प्रम
 कारण॥ अरु परम पावन वाक्यं की महताहै॥ अरु जुगता
 रण वाक्य है॥ अरु नां नां प्रकार के दृष्टांत कहै हैं॥ अरु जिनके
 ब्रह्म तेज मों के पुनः आनि एक वे होतैं हैं॥ तिनका कल्याण
 कहोताहै॥ अरु फलें कबि किय दुताहै॥ तब तिसको
 इह साख प्रवण होताहै॥ अरु जो अधम नीच है॥ तिनको इ
 सका प्रवण नहीं प्राप्ति होता॥ उनकी वृत्ति इनके प्रवण बि
 धे नहीं आवती॥ जैसे जो धरमात्मा राजा होताहै॥ तिसकी
 इच्छा न्याय साख बिधे होताहै॥ अरु जो पापात्मा राजा होत
 है॥ तिसकी इच्छा नहीं होती॥ हेरा प्रजी जैसे पुनः वांन की इ
 च्छा प्रवण बिधे होतीहै॥ अरु अधरमी की इच्छा नहीं होती
 जो पुरुष इस प्रहारा मायेण मो कृपाये साख का धेन करे
 ण वा निह काम के मुषेतें प्रछा संजुगत प्रवण करे॥ अरु
 आदितें ले करि अंत परजंत बिचारे॥ एक व्रजावहो इकरि
 तब तिसका संसार चम निवर्त होजावे॥ जैसे जे वडी च
 तें प्रपन्न रहि होजाताहै॥ तैसे आत्म तत्व अद्वैत व
 णेतें॥

मवैरागप्रकरण है। सोवैरागका प्रमकारण है। हेरांमजी मार
 रुथल बिषै बृद्ध नहीं लागता। परबड़ी बरषा होवै तब त
 हांती बृद्ध उत्पति होलावता है। तैसें त्रुंजी कारिद रूप
 जो मारुथल है। तिस बिषै वैरागरूपी बृद्ध नहीं उपजता
 परइस साधरूपी जो बड़ी बरषा है। तिस के रिदे रूपी मारु
 थल बिषै वैरागरूपी बृद्ध उत्पति होलावैरा। तिस का ए
 क संहस्र पंचमो श्लोक है। तिस के त्रुं नंतर। मुमो ह बिद
 हार प्रकरण है। तिस बिषै परमानिरमल बचन है। तिस क
 रि को प्रम निरमल होता है। जैसें मल न रूई मणि मारजन
 की ये तें उजल होलावती है। तैसें इस के प्रवण तें इह निर
 मल होइ लावता है। त्रुं बिचार के बल तें त्रात्म पद पाव
 णे को समरथ होता है तिस का एक संहस्र श्लोक है। तिस
 के त्रुं नंतर उत्पति प्रकरण है। तिस के पंच संहस्र श्लो
 क है। तिस बिषै बड़ी सुंदर कथा दृष्टांत रू संहत कही है
 सो कैसी उत्पति कही है जिस के बिचारे तें। जगत का सत
 त्व जाव मन तें चलता है। त्रुं ये ह जो जगत का त्रुं
 तं ता जाव जाणीता है। हेरांमजी इह जगत मनुह देवता
 देति परबुं नदी या देस लोक पृथी त्रुं पतेज वायु त्रा का मा
 दिक स्थावर जंगम जासता है। सो त्रुं ज्ञान करि जासता है
 त्रुं इस की उत्पति कै सैं नई है। जैसें जे वड़ी बिषै सर्प उत्प
 ति होता है। त्रुं रूपी बिषै रूपी उत्पति होता है। त्रुं रू
 मूरज की किरणा बिषै जल जासता है त्रा का म बिषै इस

रावें प्रमाणासता है। जैसै मांघर बनावराजासता है। मनोरंज
की मृष्ट होती है। संकल्पका पुर होता है। स्वप्न नगर होता
है। मवरंन बिषै नृषन बद्धत होते हैं। समुद्र बिषै तरंग हो
ते हैं। अकास बिषै नीलता होती है। जैसै नवका बिषै बेटे
तों। किनारे के वृक्ष पर्वत चलते दृष्ट आदता है। बद
लौ के चलते चंद्रमा धावतानजर आदता है। तैसै क
था के अर्थ भास आदते हैं। अरु अर्थ बिषै प्रतली
यात्रा बिषै तिनगर तै आदिले करि असत्प प्रदार्थ
है। जैसै असत्प प्रदार्थ सतरूप होय भासते हैं। तैसै
ही सभ जगत का सक्र पदो। अर्थ का जं कबन
ही। अरु जो अर्थ रूप भासता है। सो अज्ञान करि
भासता है। अज्ञान करि नृत्यति होता है। अरु ज्ञा
न करि लीन हो जाता है। जैसै निद्रा करि के स्वप्न
की मृष्ट नृत्यति होती है। अरु जागते निवर्ति हो
जाती है। तैसै अविद्या करि के जगत नृत्यति हो
ता है। अरु सप्रक ज्ञान करि के जगत निवर्ति हो
जाता है। सो अविद्या नी कच्छ बल नही सर्व ब्रह्म।
चिदाकास। पुष्ट स्वरूप है। सो नित्य है अनंत है।
परमानंद सक्र पदो। तिस बिषै जगत नृत्य प्रज्जा
देन लीन हो दणा है। ज्यो का त्यों आत्म मृष्ट उपा
आप बिषै दृष्टि त है। तिस बिषै जगत नृत्य प्रज्जा

इतनी उतरी है। पर हरे बिना नाम सती है। तैसैं इह सृष्ट
प्रन विधै इ स्थित है। वास्तव तै कबू बखानही। सभ
आकासरूप है। जब चित संवेदन इस पंदरूप होता
है। तब नां नां प्रकार का जगत हो करि नाम सती है। अ
निसंपद होती है। तब जगत मिट जाता है। इस प्रकार
उत्पति प्रकरण विधै जगत की उत्पति कही है। तिस्वे
अनं त्र इ स्थित प्रकर्ण है। तिस विधै जगत की इ स्थि
कही है। सो कैसे कही है जैसैं इ धनुष आकासरूप
है। अरु अविचार करि कै तिस विधै आस्त कमाव
होती है। जैसैं मूरज की करिणें विधै जल नाम स होता
जैसैं जे बडी विधै सर्प अमम कहि करि प्रतीत हो
है। तैसैं अज्ञान करि कै जगत की प्रतीत होती है। जै
मनोरज करि कै जगत रच लेता है। उत्पति सो कबू
ही हंदा। तैसैं इह जगत भी संकल्प मात्र है। जैसैं जव
मनोरज है। तब लगन नगर होता है अरु जव
मनोरज को अभाव हंदा। तब नगर का अभाव हो
ता है। तैसैं जव तगा अज्ञान है तब तगा जगत होता है।
वसंकल्प लै ह्दा तब जगत का अभाव हो जाता है।
सै इह ब्रह्मण के पुत्र हंकी। दस सृष्ट संकल्प करि
इ स्थिति नया सो संकल्प करि कै उत्पति नया। अरु
कल्प ही करि कै इ स्थित नईया। तैसैं इह जगत भी है
कपटारथ अरथ रूप नही हे राम जी इस प्रकार इ

तत्र कण्ठविषे कहा है। तिसके तीन सहस्र शोक है।
तिसके विचारने करिके। जगत सता जाती है। तिसके
अनंतर उपसप्रप्रकर्ण है। तिसके पंच सहस्र श्लोक
कहे। तिसके विचारें। अहंत्वं आदिक वास
नालीन हो जाती है। जैसे स्वप्न के जोगों में स्वप्न की
वासनालीन हो जाती है। तैसे विचारवान की अहं
त्वं आदिक वासनां जाती है। काहेतें जो उसके निषे
विषे जगत नही रहता। जैसे एक पुरुष सोया हो
ता है। तिसके सुप्ने का जगत भासता है। उसके नि
कटि जो जाग्रत पुरुष बैठे है। तिनको उसके सुप
न का जगत आकास रूप है। तैसे विचारवान के
इह जगत आकास रूप है। जब आकास रूप ही
रूपा तब वासना के सें रहें। जब वासना नष्ट
इतब मन भी उपसप्रप्र होता है। तब देखने मात्र उस
को सन्न चेष्टा होती है। पर उसके मन विषे अर्थ रू
पी इच्छा नही होती है। जैसे मृता की अग्नि देखा
मात्र होती है। अर्थ कारण नही होती। तैसे उसको
चेष्टा होती है। हेरां मजी जब मन विषे इच्छा नष्ट
होती है। तब मन भी निरवान होता है। जैसे म
ने रहतें रहित दीपक सहित ही निर्वीणा होता है।
तैसे इच्छा तें रहित मन निर्वीणा होता है। तिसके
कारि उपसप्रप्रकर्ण है। तिसके

बाणप्रकरण है जो से घर हा मोई ॥ १५५०० ॥ शोक है
तिम विषे पर्म निर्वाण दचन हं गे है ॥ विचार की एते
अज्ञान करिके ॥ जो चित्त न अरु चित की संबंध है
सो निर्वाण हो जाते है ॥ जै सै मर्त का ल विषे मेध के अ
भाव ते मुश्क आकास हो ता है ॥ ते सै पुरुष विचार करि
के निरमल हो ता है ॥ हेरां मजी अहंकार रूपी पिशा
च है ॥ सो विचार करि नष्ट हो ता है ॥ जे ती कछु इच्छां फु
रती है सो निर्वाण हो जाती है ॥ जै सै पथर की मिला फु
रण ते र हित हो ता है ॥ ते सै इच्छां ते र हित हो ता है ॥ जे
ती कछु जगत की जात्रा है सो तिम की हो इच्छु कता है
जो कछु करनाथा सो करि चुकता है ॥ हेरां मजी मरीर
के हो ते ही ॥ ओही अर मरीर हो जा ता है ॥ अरु नाना प्र
कार का जगत उस को नही नास ता है ॥ जगत की नेत ते
उह अंध हो जा ता है ॥ अरु अहंत्व आदिक जगत मम
ति स को नही नास ता ॥ जै सै सृज को अंध कार नही द
ष्ट आदता ॥ ते सै उस को जगत नही नास ता ॥ अरु अ
संपद को प्राप्ति हो ता है ॥ जिस्के किसी प्रमाण विषे ज
गत सर है ॥ जै सै ममेर पर्वत के किसी कोण विषे क म
ल हो ता है ॥ तिम के ऊपर मंदरे इ स्थित हो ते है ॥ ते सै ब्र
ह्म के किसी कोण विषे जगत सर है ॥ उह पुरुष अचेत
चिन मान है ॥ अरु रूप अ लोक मन स्कार तिम को ॥ आ
कास रूप हो जा ता है ॥ हेरां मजी जिस पद को उह प्राप्ति

हूँ हैं। तिसपदकी उपमा ब्रह्मा बिलरुद्र अने कक
 हते हैं। तों जी करने कों समर्थ नहीं॥ जो ज्ञेसा अर्थ
 ह जो इस के सदृश कों ऊनहीं॥ इति श्री महा रां म प्रो
 मोक्ष उपाये म मोक्ष विद्यार प्रकाशे सत सहस्र सह
 तीयां बालमी को वाक्य देव हूतो उपकत प्रकाशे विना
 गवर्न न नां म सर्गः ॥ १७ ॥ बसिष्ठो वाच ॥ हे रां म जी इह प
 रम गतम वाक्यं हे इस्को विचारनें हारा गतम पद को धा
 ति हो ता ह। जे सें गतम के त्रिषे गतमी ज पाइ तें गतम
 लही गति उत्पति हो ता है। तें सें इन के विचारने वा ला
 गतम पद को धा ति हो ता है। के सें वाक्य हे इह जु गत रू
 प वाक्य है। हे रां म जी जु गति तें रहित वाक्य अर्थ मी हो
 वें। तों तिन की त्याग करीये अरु पौषे वाक्य गत सहित
 हो वें। तों तिन कों अंगीकार करीये। हे रां म जी ब्रह्मा के
 वचन जु गत तें रहत हो वें। तिन कों मी संके विष्णु की
 न्यां इत्याग करीये। अरु बालक के वचन जु गति पर
 बक हो बहिन वतिन हूँ कों अंगीकार करीये। ज्ञे सें न
 करीये जो पिता का रूप हो वें। तिस विषे धारा जल हो
 वें। अरु निकटि निष्ठ जल हो वें। तिस कों त्याग करि
 नांम के निप्रति धारा जल प्रांन करीये। पिता का जल
 करि धारा जल प्रांन करीये। नीचता है तें सें ब्रह्म
 देका विचारन करीये। जो जु गत परबक ब्रह्म है।

शरब कहें॥ अरु सो धर्म को पम काई है॥ जो पुरखे का
प्रहो करि॥ इस सास्त्र को आदिते ले करि अंत पर
जंत प्रदे अथ दा प्रदिते सो अरण करि को बिचारै॥
तब तिस की बुद्ध संसारी होवै॥ अथ मदे राग प्रक
के बिचारै तै इस को बैराग प्रजना है॥ जे ते कछु सं
र के मण्डि क मो ग प्र दारथ है॥ तिस को हिर म होवै॥
अरु किसी प्र दारथ की बांछा न रहै॥ जब मो ग प्र द
थ द्विषै बैराग होता है॥ तब सा तरु प्र आत्म तत्व वि
धे श्री ति उ त्य ति होती है॥ तब बिचार करि बुद्ध संस
री होवैगी॥ तब सास्त्र का सिधं त बुद्ध द्विषै आनि उ
स्थिति होवैगी॥ अरु संस्तार के विकार रूखित बुद्धि न
मल होवैगी॥ जैसे सरत काल विषे बंदलों के लूजा वहेण के
रि लू का म सरब दोर तै सब होता है॥ तैसे बुद्धि निरमल हो
वैगी॥ बज्र डित्ता ध्या व्या ध्या की पीडा उस को न होवैगी॥
हेरा मजी ज्यो ज्यो बिचार दह होवैगा॥ त्यों त्यों मांति लू त
होवैगा॥ ता तै जे ते कछु संसार के जत न है॥ तिन को त्यागि
करि इस सास्त्र को बिचारै इस को बार बार बिचारने करि
तन सता उदे होवैगी॥ ज्यो ज्यो चेतन सता उदे होवैगी॥ त्यों
त्यों लो न मो हादिक विकार नष्ट होवैगो॥ जैसे मूरज उदे ज्यो
ज्यो होता है॥ त्यों त्यों लंघन नष्ट होता है॥ तैसे विकार
नष्ट होवैगो॥ बज्र डिति स की प्राप्ति होवैगी॥ जिस के पाये तै
संसार यो न मिट जावैगो॥ जैसे सरत काल विषे मेघ नष्ट हो ज

तैहैं॥ तैसैं संसार के षो ज मिट जावेंगे हेरां मजी ज्ञान वांन पुर
ष कों॥ संसार के राग द्वेष बिधन ही सकतें॥ जिस पुरुष क वच
प हरा है॥ तिस कों बाण न ही बिधन ही सकतें॥ तैसैं तिस कों
राग द्वेष रूपी बाण न ही बिधन सकतें त्रसु जोगी की इच्छा न ह
रही॥ जो बिषे नो ग द्विदामान प्राप्त करानि होतें हैं॥ तो नीति न
कों बुद्धि बिषे बिजत करिके न ही ग्रहण करते हैं॥ अर्थ जा
एिक रिवाह जन ही निकसती॥ अंतरात्मा ही बिषे स्थि
ति रहिती है॥ जैसैं पतिव्रता द्रष्टी रूपेण अंतरह पुरतैं बाह
जन ही निकसती॥ तैसैं बुद्धि अंतरतैं न ही निकसती हेरां म
जी बाहिजंतो उह जी प्रकृति जनन रुंकी न्याई दिष्ट आवा
त है॥ जो कच्छ अविद्यता प्राप्त होता है॥ तिस कों जोगाता है
अरु करता दृष्ट आवाता है॥ परु अंतरतैं तिस कों राग
द्वेष न ही पुरता हेरां मजी जेता कच्छ ज्ञात की उत्पत्ति क
रुष ले काषोई हो सो ज्ञान वांन कों कष्ट देन ही सकती
जैसैं उस मूरत की लषी बली कों आधी चलाइ न ही स
कती॥ तैसैं उस कों ज्ञात का कष्ट न ही होता॥ अरु स
सार की दोरतैं जट हो जाता है॥ अरु ब्रह्म की न्याई
अरु समुद्र की न्याई गंभीर होता है॥ अरु पट्टे की
न्याई स्थिर होता है॥ अरु सचेन्द्र प्रा की न्याई त
ल होता है॥ हेरां मजी आत्म ज्ञान करिके जैन पद
कों प्राप्ति होता है॥ है॥ जिस के पाए तें ब्रह्म ज्ञा
ने जोग कछु न ही रहित॥ सो अ

मेरा मोक्ष उपाये साख है कैसा साख है ॥ जो नां नां प्रकार के
 दृष्टांत इस विषय कहें हैं ॥ दृष्टांत इस कानां प्रहे सो सुण जो
 वस्तु पर छिन्न होवै निरुद्ध होवै ॥ विषय न लावै ॥ तिस
 की न्यां ॥ जो दृष्टांत विषय लावै ॥ तिस के दृष्टांत कसि मजि
 ऐ पूर्वक जो मजि किये तिस कानां म दृष्टांत है हेरा मजी ॥ इह
 जगत का कारज कारण रूप है ॥ त्रुत्तुत्तां क रजकार
 एतै रहित है ॥ त्रुत्तां त्रुत्तुत्तां की ऐकता के सैं होवै ॥ ता
 तें जो म दृष्टांत देवों गा ॥ तिस का येक देस त्रुत्तां की कारण ॥
 प्रब देस करि त्रुत्तां की कारण नहीं कारण ॥ हेरा मजी कारज
 त्रुत्तां कारण की ॥ त्रुत्तां त्रुत्तां करी है ॥ तिस के निषेधने
 त्रुत्तां म सुपन दृष्टांत कहों गा ॥ तिस के म मजि ने करि तेरा म
 त्रुत्तां नाव होवै गा ॥ दृष्टांत त्रुत्तां का ने द मरुत्तां की नासता
 ॥ तिस के इरि कारण त्रुत्तां नी सुपन दृष्टांत कहों गा ॥ ति
 के विचारनं करि मिथ्या बिना कल्याण का त्रुत्तां नाव
 होवै गा हेरा मजी त्रुत्तां कल्याण का नां म करता मेरा इह
 ॥ ख है ॥ जो पुरुष त्रुत्तां दि तैले करि त्रुत्तां प्रजंत इस को बिचा
 गात बंधित तै सहित संसकारी होवै गा ॥ जो पदारथ को
 ॥ त्रुत्तां त्रुत्तां होवै ॥ त्रुत्तां इस को बिचारै तब दृष्टांत म तिस
 नां म हो जावै गा ॥ इस म मजि के बिचार बिषय ॥ त्रुत्तां वर किसी
 ॥ रथत पदं नादिक की त्रुत्तां पे दान ही ॥ जहां म थां न होवै
 हां बैचै ॥ त्रुत्तां जैसा जो जन ग्रह बिषय होवै तैसा करीये ॥ त्रुत्तां
 बार बार इस का बिचार करिये ॥ तब त्रुत्तां न न हो जा

वेणा। अरुत्तात्तपदको प्राप्ति होवे। हेरां मजी इह साख्य
का सं रूप है। जैसे अंधकार बिषे पदार्थ हृष्ट नही ग्रावता।
अरु दीप के प्रकास करि अरु चक्र सहित पाईता है। ते
सै साख्य रूपी दीपक बिचार रूपी नेत्रों सहित होवे। तब ग्रात
मर्क की प्राप्ति होवे। हेरां मजी अरु तजान बिचार विना व
र सराप करि प्राप्त नही होता। जब बिचार करि हृदय ग्रा
स करि तब प्राप्ति होता है। ताते मोक्ष उपाय जो प्रमपा
वन साख्य है। तिसके बिचार कीये तें जात गुप्त न रहवे। जा
वेणा। जात के देयते देयते जात नाव मिट जावेणा। जंभ
सरप की मूर खलिये होती है। अरु बिचार करि तमने लंगण
ईता है। अरु जब बिचार करि हृदये तब सगुण न रहवे।
ता है। सर्प का अकार नी हृष्ट ग्रावता है। परन्ति मरुत के
न रहवे जात है। तैस इह जाति यद्यदि बिचार करे तें न रहवे।
जावेणा। अरु जन्तु मरण का तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
न मरण का चो वडा तये है। पत्तन के तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
हो जात है। अरु जन्तु के तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
माता के पुत्र के तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
बिचार वान्तु मरण का तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
सख्य का तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
रण का तमने तें न रहवे। तैस इह जाति
वा है। तैस इह जाति
तैस इह जाति

हैं कौं इच्छा निष्ठ विषय की प्राप्ति विषय इच्छा दैय नही कती
सदा एकर सरहित है। तू रूमन के संकल्प तै रहित सांत
रूप होता है जै सै मद्राचल परबत के निकसे तै धीर संभ
इ सांति न पड़े तै सै संकल्प विकल्प तै रहित इह पुरुष
सांति रूप होता है। हेरां मजी न्द्र कर जो ते ज होता है सो दाद
क होता है। तू रुजां न रूपी ते ज जिस घट विषे न दे होता
है। सो सांत स सांत रूप होता है। ब्रह्म डिति स विषे संसार का
बेकार कोऊ नही रहित। जै सै कलि जग विषे उपद्रव क
मी। सिधा दादा ताग न दे होता है। सो कलि जग के अनाद
हो नही न दे होता। तै सै ज्ञान दां के चित विषे बिचार न
ही उत्पति होता। हेरां मजी संसार भ्रम। आत्मा के प्रमाद
करि न दे होता है। सो आत्मा के पाद ए विषे जतन बिना
सांति होता है। फल पत्र काट नै विषे नी कछु जतन न हो
ता है। पर आत्म के पाद ए विषे जतन कछु नही। कांहे
जो बोध ही करि जां एता है हेरां मजी जो जी वृष्ण मां
ज्ञान म रूप है। तिस विषे इ स्थिर हो वृणा क्या जतन है
आत्मा मुह अद्वैत रूप है। अरु जग त भ्रम मां न है जो
रव अपर बिचार की ऐतै जिस की सतान पाई है। तिस
जो भ्रम मां न जाणी है। अरु पूरव अपर बिचार की ऐतै
त होवे। तिस कौ सतरूप जाणिये सो इ सजग त की स
तान आदि विषे पाई ती है। न अंति विषे पाई ती है। ता
स्वप्न वत है जै सै स्वप्न आदि विषे नही पाई ता। अरु

स्वबोधकापरमकारणहै जोमुहुबुहुदानपुरुष
 कोप्रदासंयुक्तविचारैगा तिसकोभीघहीआत्मपर
 कोप्राप्तिहोवेगी तातैंइसमोहउपायेकाजतीप्रका
 रिअन्यासकरौ॥इतिप्रो॥॥समनिकषण
 नांमसर्गः॥मोहप्रकरणसंपूरणसंभातेः॥साधकवी
 रमाहिबकावावाजोप्राहिंवकेयोदासजूकाशिष्यजेरामद
 सजीतिसकेदसतका॥तिनकामकांनमोतीउंमरी॥तैंने
 प्रथसंपूरणकोया॥सतनामाकवैरसादेवकीदुप
 नरधग्रंथहृरचंदसतल्लिखते॥तिहामो
 बिंदपुरकोनितितेमा॥मोभक्तसबसाधुत
 प्रसादजसगचरौ॥हरचंदसतनारा॥१॥चाप
 ॥॥नारंगतिअलखननाहदभारा॥उपतिनष
 प्रतिमहाभुधसारी॥नामतवांमगांबकहाकहीये
 नगमनगाधमाधसंगलहोये॥२॥रूपनरेषनेषन
 हीकोई॥द्वानीरहनबषानीयेसोई॥पापनतापन
 हीसंसारासीतजगतैरहतनिनारा॥३॥कैसीता
 तिकीपाक्याकहीये॥आमैईहांनदेरालहीये॥
 वाकैतेजपुषप्रकासै॥ततपदनामजातिहैज
 म॥४॥चाकीदृष्टबाहजिकंनई॥इच्छासक्तिकह
 द्वेसोईतान्त्रंसासबदमहीप्रकासा॥महततनहं
 ज्ञानिअमासा॥पतवह्वोअहंकारउदारा॥जि
 मकोनांमकहैकरतारा॥ताकीसक्तिहोइतुमजा
 नो॥विद्याएकअविद्यामानो॥६॥प्रमात्मविद्यानि

तिराजै॥ मयसरखअविद्याजोवदिराजै॥ सो
 हैसुधनहीउनहारै॥ केचुवासनांजगुबिस्ता
 रै॥ ७॥ तान्नागैईचरदिषरापो॥ जलसाईनारं
 पनगापो॥ तातैतीनसक्तिबिस्तारी॥ रजत्मस्त
 इहबिधीअनुसारी॥ ८॥ सातिकबिअरजब्रह्मा
 रुखा॥ सोतांमसतीनोगुणजवा॥ प्रयेतरंगअसी
 पदहीसमानां॥ बाहजदृष्टकरतजुगनांना॥ ९॥ ति
 तपांचूमिलिमिष्टिउपाशी॥ योंसंसारद्वंद्वोहेअई
 प्रथमसबदआकासहिआये॥ तापाछेंतिनपौन
 चलापो॥ १०॥ तिजततमपोतान्नागैआईजलका
 रजदीसतहैसाई॥ जलपृथीतातेंघटहूवा॥ पिंऊब्र
 ह्मंडगिनंजिनजूवा॥ ११॥ हिरापममनांममतिब
 नौ॥ सुतकासिबकासिबकरिजानौ॥ ताका
 करिमिष्टिउपाशी॥ तेराइ : :

एकवारबोवतजोयेती॥सप्रचारबुनिप
फलदेती॥१६॥बबोन्नसराजाकेआवेरेत
प्रीकोईनसताये॥पुत्रसमानैरेतिकुंजाने॥दि
समानैरेतिनृपमाने॥१७॥चोरनहीजूवामदस
ला॥प्रकोचीवतनहीकोवाला॥बडीमायन
लीसमांने॥लघुकंत्यासमकरिमाने॥१८॥आम
प्रमयेनजीवसतावे॥दयाभावसबकेमनभावे
ममकोदेवाराहनकोई॥बिनेगुनेकाकुंम
होई॥१९॥घरिघरिकथासाधहरिपूजा॥तिह
नानधरमनहीइजा॥मनरुपारषददेहीभीरी
तिलेलीजपुरीहीसारी॥२०॥राजासिधिरसिध
नकाई॥सबहीधर्ममक्तिउरआई॥नृपतिबाग
बडोएकलायो॥सरपरफलधरोसधनायो॥२१
वननंदनजांनौननमाना॥उपमानोरगगो
कोनाना॥फलेफलेबहुतप्रकारा॥तामैवनी
आरहारा॥२२॥ताकेफलतयसीरिषयाही
साधुचंदरहेतामांही॥कथाकोरतनहरिगुनगा
ई॥मुनेपारषदपुरगपहुंचावे॥२३॥सुरपति
प्रादिजहांअजनाया॥सुरतेतोसकोडिसबाया॥ब
ीसमाचरचाईआई॥हरचंदकोअस्तुति
गई॥२४॥हरचंदबडोसतीजगमांही॥सबकुंद
करतुहीनांही॥सततोलनकुंमैवबनायो॥

एकदेवसंकर कैआयो॥२५॥ विष्णुमित्रकृते
 उनमांही॥ सततोलनननेजोइहगंही॥ इहव
 नआपरध्यानलगायो॥ रह्योअप्रहमजोशा
 नपायो॥२६॥ सुकरआइविप्रीतिउवाही॥ उर
 मसबपारिउघारिगिराई॥ बकुतमांतिराघत
 कंकस्यो॥ बागदांनतापेनहीडस्यो॥ रथारिति
 जातिहरीनहांनांही॥ मोदेसूरमूरबनमांही॥
 चोथोअसमोदिहिडस्यो॥ नृपअमोसोजाइपुक
 स्यो॥२७॥ नृपसंकलीहकीकततबही॥ सुकरख
 गउघारिोसबही॥ सतजुगनृपतिमकारनहीत
 राजामोचकोयाअनसोती॥२८॥ रांभीमुनोअ
 धिकउषपायो॥ धरमतहांअधरमकितन्यायो॥
 साधरहतबागकेमांही॥ मोदेतोरसाधरमिजांही॥
 उ०॥ तबराजासाबसायबुलायो॥ चढोसिकारिस
 रराकआयो॥ अबराजाबुध्याजीवहिमारे॥ सवारधन
 पसिकारिबिचारे॥२९॥ हरिचंदरायचढोतिहि
 ई॥ दलवलधडासूरकेताई॥ हाथाजोडिहसोहि
 मकीनां॥ बांशाबंदकसाजपसबलोनां॥३०॥ जासमां
 ऊइऊनीकरिजाई॥ तिहित्यागारीकीजैमाई॥ चक्र
 दिसाहलकारोहीई॥ निकस्योसूररउइमधिसोई
 ३१॥ होतोतहांदिहिमोआयो॥ निकस्योतह
 ननहीपायो॥ ज्युअमैदांमनिप्रकासे॥
 दिष्टिहसरेमां

मोमधिगपोमोचदहआवे घोडोहाकिपूठितका
दीपौ मारिमारिपोछैतैकोपोइया लारौलारइ
लगआपो रिषदममैतहांबैठेपायो रिषकंदेविष
रसंगत्यागोपो न्द्रस्वतैउतरिआयेप्रगलागोपो उद्ध
जोरैहलअरुगिराउचरै राजाप्ररोबीनतीकरै मैव
मागककुअबेलीजै मेरोमदनपदित्रकीजै ॥ ३९ ॥
रिषउदादै ॥ कहैरिषीपुसुनिहोराई कूंमांगौसोदी
पोतिजार्थियाडैंकाजजाचिक्काकोजै कूंमांगौसोमोके
दीजै ॥ ४० ॥ नजाउदादै ॥ राजाकहैसबैककुतेरोबे
अंछालीजिमैचरो दुमरीमेटिसबैककुधरिआ नना
नधनसमरपनकरिहं ॥ ४१ ॥ रिषउदादै ॥ सगलो
राजधरासबपांक अंतद्वयआमोंसबटांक जलसंक
लफारीकरिलीला नमकरित्यागिअोरकेकुकीका
ध ॥ लाप्रतीनकोबोतबुलायो जलसंकलप्राछैकर
दापो दीकोदांतचढनअस्वआपो रिषकहैपो
हमपोपरापो ॥ ४२ ॥ सबधनक्षमबोलमैआए ॥ अम
वसत्रअखजांनिसबाए ॥ राजातहैपयादोधा
पो रिषअस्वचटिनबटहीचलापो ॥ ४३ ॥ कोम
लपगोपेजारछिनाई चुटकीउरीरिषचलेपोपुला
है नृपतिचलेपोप्रीछातैआवे ॥ चुमैसूलगोघरु
डिजावे ॥ ४४ ॥ बसरहेट्टिवनमांही ॥ नृपतिम
निकछुछापैनाही ॥ नगरीनिकटिपडैतेआ
है ॥ तवरिजवा रिषवरिपहपाई ॥ ४५ ॥ मत्रीअर

असक्तं लाणे॥ विष्कं हे प्रहमो हि च दाणे॥ सवरज वा
रिको पहि कीये॥ राजा कहै च न में दीये॥ ४५॥ चो
ल प्रव्य जीवन कहु नां ही॥ प्रतिदूषो सारे मन मां ही
मो चमयो सारी रज वा रै॥ कृत्री वे स परो हत ही सारै॥ ४६॥
रे ति कृषी सो कृती सुधारी॥ छां मन कहा बाट ही पारी
मुनि मुनि विप्र ह से मन मां ही॥ राजा न दो छो फि ह म ज
ही॥ ४७॥ राजा उ बा चै॥ न पति कहै ये बे न न आयो
तु प्रसाध म म धर म ही राखो॥ कौन कौन की जी भग
हों ऊं रो स न करो बे प्रबलि जां ऊं॥ ४८॥ तुम सब के म
न की गति जो नो॥ सब के जीव एक मति मानो॥ नारा
प्रकृति नि नि नि नि कृत ज वा ता नै जग ना ना व न द द
४९॥ अग्रा देहरा द रै जां ऊं सुन बिन ता ते रै दिग
लां ऊं अग्रा दर्श ल म तिला दो॥ तीन बाध को मन दि
म नां दो॥ ५०॥ राजा च लिर न वा सहि जाई॥ सुतरु
ता संग हे प ग अ रै पि छली छात न पति कहि दी की॥ सु
रु ह ता स स बै मुनि ली की॥ ५१॥ रां नी मुनि मारी सुप्रपा
यो॥ ध निरा जा रां नी म लि जा यो॥ प्रह क्षर परिके ते न प क
पि॥ ध र त जित जित स ग रे ही मू यो॥ ५२॥ मुनि न प न्यो र कृदि
जे के ते॥ तुम कलि मां हि अ म र ज स ले तो ही ल करो जिन
परि सा चै॥ पहि न्यो सर ब क र्यो क च आ चै॥ ५३॥ सुत
रु हित स मुषी अति सोई॥ तुम बि न द मी कौ न पै होई
चले म च न त जिल गी न चारा॥ स्तर स ती स म म त चित
धरा॥ ५४॥ नां डा सं व त स ती व ब ला जे चाली जल रा

होतहमवाजे॥पतिवरतातारासमकोहै॥सुतर
तासचिनेमंगसोहै॥१॥ सोचकरैतोधरमनसाई
तामनमैधरेनकाई॥आनंदसहितहिप्रपैआये
तराजोरानीसिरन्वाये॥२॥ एकगांवकोधणीक
चै॥ताकीबामनबाहरिआचै॥इकचक्रवतीभुग
धरसारीदेघोलोकलाजजुंमारी॥३॥ नैसीक
निकरैगाकीई॥हरिचंदसमदातानहीहोई॥विप्र
कहेदरसबममही॥आपेएकबोलमेंसबही॥४॥
तापडाकलिऊँकोदीनो॥टूकटूकतीनांकरिली
नो॥जुंपुष्टमाहिबटपारातटिहि॥तागादमीकबुन
दिबूटिहि॥५॥ नैसीजातिविप्रकोआ॥कलपे
नौरकहाउषदीया॥कहैअपनिमेरोकबुनाही॥६॥
धामधनआयाइनमांही॥७॥ मोसमअबइनहीव
रिमांनो॥मेरोबोलसाचपहजानी॥राजामरेऔर
तेआवै॥तषतराषिटीकोकरिवावै॥८॥ इहदि
ष्टातमेरोकरिजांनो॥मोसमानबांननकोमांनो॥रा
जाछतैकोनइहमावै॥होतबइसोलोगडघपावै॥
९॥ रिषगवाच॥अवरिषकहैदांमदैभाई॥मालम
डारनछेड्याजाई॥हरचंदऊँतोचक्रवतीभासी॥ए
कैअत्रभुगतैधरसारी॥१०॥ अबपतनीबांननके
भाई॥पहधरनजोदांमदैभाई॥कैअपनोबोलछि
टकावो॥तोमैजाऊँमतिउषपावो॥११॥ राजा
वाच॥सुतबनितारैचोतनमेरो॥दांवणगीर

रणीमैतेरोऽधिष्ठुवाचऽधस्मेरिदेवनद्योना
नीजाइहि कोशैरेधरमांहीऽ॥६५॥ राजाववाच
तवराजादिष्टांतदिष्टापोऽपहिन्नस्तिहासन्ने
रहीआपोऽएकपुरीकैलासपवाइऽशिवप्रसाद
भवैमिधिपार्श्वऽर्द्धऽशिवन्नरुनगतजुदेप्रतिजा
तोऽसाहिवसाधुएककरिमांनोऽसाहिवसाज्यामु
क्तैजापऽचैऽसोईऽनिमाधसंश्रावोऽ॥६७॥ नजैसह
कामसुरगातिहोईऽधरफेरिआवतनुप्रजोदोऽए
कपुरीकैलासरहोईऽपहिउतगईपहिइतआई
॥६८॥ द्विष्टनवांशभरिपहोपवाकैऽतातेनांमवार
णारसीपावोऽकामीकूकैलासरहांनीऽमुक्तिहेन
ताहीमैजानीऽ॥६९॥ तातेपतीभूप्रिमैनाहीऽमा
नोवचनवैचिंहिमांहीऽतवनागातीनूकरिली
याऽचेतापडवैवणकोदीयाऽ॥७०॥ निजपुरतजि
कैकीयोपयानोऽलोकसकलहाहाकललानोऽराम
विदोऽश्रुचोउममांहीऽजोहरसबलमयोतिहवां
॥७१॥ कहैकंनकहतांनहीआवैऽकथाबधैजोका
विसवगावैऽवातैऽअवधोरीकरिगाईऽजोचबूभई
सेनसमजाईऽ॥७२॥ जोमदनग्रचलोहैसाथाऽतादा
रह्यजोरिदोऊहाथाऽअपनेअपनेधामसिधवोऽह
भरसंगकाहेउपपावोऽ॥७३॥ सोचधनोमदहनिकोई
कापराजैसरसोचतेजुवाऽसराननबितबाननहो
ईऽकापरदानकरैगाकोईऽ॥७४॥

नमस्कर है॥ धरमकरनकोय किजिसर है॥ देहद्विच्छे
मंवापन होई॥ सतबडधरमनजोमति कोई॥ ॥ ॥ ॥
हमनजेकहाजगजीया॥ पहिचिचाररूदेतबकीया॥
रकांनीचोदयाहेसारा॥ नीनरह्यापथमेंनारा॥ ॥ ॥
वप्रमाद्यमध्वन्याधिदिषावे॥ नैसीचालपुरिकबन्या
चलोसिताबिचारनहीहोई॥ चारुतपैतेजरबिमोई
॥ ॥ ॥ ॥ रुतिग्रीधममध्यानचलाप्रा॥ पगंप्राइतएक
कराया॥ सरिजसरिषवचनचरत॥ अधिकतेजक
हेनबिस्तारत॥ ॥ ॥ ॥ तपसीबडोडुरैमुरमारा॥ तवरि
तेजजुलमबिस्तारा॥ प्रलेकालनरगतिबिस्तारी॥ के
मलदेहनप्रजनप्रजारी॥ ॥ ॥ ॥ कोमलकंदरपरसौध
माई॥ रांनीसहांमुरछागतिनारी॥ ब।तलापातेबो
ननारी॥ नारबिनांरांनीप्रपावे॥ ॥ ॥ ॥ राजारह्योत
टिगबेसी॥ बांजनकह्योटीलपहकेसी॥ नरबथा
मेंआइरहांती॥ इनकेमुषदुकचोबोपांनी॥ ॥ ॥ ॥
निसमरेअगतिमोहोई॥ मुषजलचोपमरेगमो
ईतनीकहतराजाहूगिह्यो॥ बांजनतबहीसाचम
ह्यो॥ ॥ ॥ ॥ कंडनरीजरीइनकीजाही॥ बिप्रलीपो
पात्रमोही॥ पहिलेलेरुहनासदिषायो॥ पीयोनही
वसीसहलायो॥ ॥ ॥ ॥ मातापितापासेमपीऊतो
तेदिनजगमेंजीऊ॥ राजारांनीजाइपिताबो॥
पीछेमेरीटिमल्याबो॥ ॥ ॥ ॥ तबजललेसज
गकीमो॥ जलपात्रोमेरीरणादीको॥ तबनयकहेर

आप्रा॥ बासो लैन गौर कं आप्रा॥ ॥ ॥ ॥ निमाई रित
की प्रीत जालो॥ बां मन क ह्यो घास कं चालो॥ बां धि
रो टा न्या रा की नी॥ एक एक तीनां मिरदी का॥ ॥
॥ की ये नि कां स घरे ले साई॥ ल्यो कोई मोल जा मे गो
ई॥ सगलो लोग तमा सो जो दै॥ न्ये सी मनी प्र मोल को
वै॥ ॥ ॥ दे घौ कौन बिप्रा ति ह आई॥ इसा म लूक
व क त है भाई॥ बिप्र क ह क हारि न तेरो॥ इ चर ज
म ही ब्रजु त इन के रो॥ ॥ ॥ दे प्रे इ ह मो लि को ले है
मां थै मार नारि म न मो है॥ को म ल क व र न रो टी नां
॥ ॥ ॥ मा ता पि ता हो कु ग हि हा थै॥ एक मार रा
मिर ली प्रो॥ ता स्म स ती कौ न ब ल बी प्रो॥ प्र नि का मे
लि ले न कं आई॥ पू र ति षा क नारि मु नि धाई॥ ॥ ॥
प्र नि का उ वा चै॥ बि प्र हि क ह्यो पा ही ह ले कं॥ पां
मो ल ले है मो द ह॥ बां मन उ वा चै॥ बां मन क ह्यो
ला ष एक ले मू॥ ना रि सा थि उ फ रे क रि दे मू॥ ॥ ॥
॥ रु हि ता स उ वा चै॥ त व रु हि ता स म ह्यो म न मां
कौ न गौर मा ता ले जा ही॥ इ हि सो च रा जा जी व न्या
न ली गौर रा नी न ही पा यो॥ १०१॥ रा जा उ वा चै॥ न्ये
क म ब हो त घ रा इ न के रो॥ बि प्र मां नि व च न इ ल
मे रो॥ प्र नि का उ वा चै॥ त व म नि का प्रि जी व च न
व यो नै॥ अ प स री व न्यो र ही जा नै॥ १०२॥ मां ग य नी

सकतिहंकीजे॥ चिप्रापुत्रमो लिच्छवीजे॥ कर
वतलेदनारिसुतकाजे॥ ततिनकंदेचनहेन्याजे॥
१०३॥ रैतेपुषदोइकाकीपो॥ पुत्रनारिसेचनचि
तदोपो॥ रैसोपुत्रदेषोहिजीजे॥ ताकेसटैकेहाधन
नीजे॥ १०४॥ राजाबवाच्य॥ नकटीराडजाइकूनाह
राजाइधिकंद्योमनमांही॥ बांदरणकसहरकेमांही
बूढो॥ रहैधनीकोईनांही॥ १०५॥ गतिकानाकतो
रिलेशपो॥ सबकाहनरपाथरहपो॥ रैसीविधितहां
कोतिगहोई॥ द्वेघिन्रचंभाकरैसबकोई॥ १०६॥
दोहा॥ सतमासन्नादिसही॥ बचनसहजमिषहोई॥
ध्यानदासंन्रहंकारयहि॥ मूलनमांनोकोई॥ १०७॥
सोरठा॥ धरमपुषकरिजांन॥ मिजराजाहरचंदक
ह्यो॥ ध्यानप्रहिनरन्नानिवाइकमुषसुंनकथो॥ १०८॥
कलिश्री॥ लहचंदस्तंशमायाप्रकटाध्या॥ १०९॥ दात
धरमरहेतैसबरह्यो॥ धरमगयेसंखजाई॥ धरम
ताकोपसं॥ सोकोपमुक्तिपदपाइ॥ ११॥ चौपरी॥ पा
न्रतिहासमुनोत्रुमनाई॥ यतनीगोरकोपमुषिपाइ
सीतघटैकोई॥ नकिछुडावै॥ इहवीचिन्तरापक
तै॥ १२॥ मनकादिकबैकुंठपक्षरे॥ हारपालइहीबच
नउचासो॥ नगनकहांन्रावतहोमांही॥ नानोडगज
नदेनोही॥ १३॥ येइसनकन्रतिन्रकुमाने॥

तहें जानें रुकी गइ ज्यूसी सहलावें मनमै पदा
हो होइ जावें ॥ ८ ॥ दरसन दीक्षित राघव नारायण
कछो नम्र सुरमोई तन पापो ॥ कथा बंधे कचा रूक
ही ॥ सप्रसन्न कथमधि है सब ही ॥ ९ ॥ सम करषी सुर
तप की लो ॥ ध्यान समाधि भाहि मन दीनो ॥ पहली
सब तीरथ करि जापो ॥ विधवत्त ज्युं वेदन भोग
॥ १० ॥ सथ लणक लह्यो मुख मां री ॥ जहां जोग
ललाई तारी ॥ ध्यान धरत इंद्रासन कंठ ॥ तब
र प्रति नम्र चलन संक ॥ ११ ॥ जाइ छरी जहां रख
निद्वर ॥ न्याय भां रर है ज्युं न्यस्थर ॥ वा के तप
द्याथ दरानो ॥ मेरो लोक भरत है मानो ॥ १२ ॥ नम्र
लाक हो ॥ हरे न मुनावें ॥ मुनि सराप वोर कि तपा
तब सुर प्रति बोली ॥ पद दानी ॥ नैसी संक कहा मा
नानी ॥ १३ ॥ साध सराप मुक्ति जी दपावें ॥ नम्र
ता चतै घाव निपावें ॥ ऐ मुनि बचन रंजात हो
ई ॥ रिष न्यस्थान तहां चलि आई ॥ १४ ॥ प्रग न्य
बहो विधि कुन कारा ॥ सकल मिगार बने न्यो न्य
सार ॥ बीज न ज्युं न्य नै डरि भाई ॥ दमकत बदे
न काम नि निभाई ॥ १५ ॥ काम कबै न बहोत
धि बोली ॥ मुनि न डिगै नेचन दी घाले ॥ तब रंजा
क भेष बनायो ॥ बेल चढी न्यरुतन बटलायो ॥

॥१२॥ नेत्रनीनससिलकलिलाट॥ सीमजलनैसो
 करिधाट॥ करिचित्तलमवसिवसोहे॥ दानीजो
 तासमनमोहे॥१३॥ लागीमुंरतिनि कटितहांआ
 जागवचनमुनिअतिरुचिपार्श॥ तापीछेचिपबदन
 हकीनो॥ सहतसिगारनऊरसनीनो॥१४॥ छूटिसम
 धइमुनिकेरी॥ नारिसरसैखीपोउनफेरी॥ जगीक
 मनाबचनबषान्यो॥ फेलिसरापठगोमुनिजान्यो
 ॥१५॥ हूंधीज्योबोरेउनदारी॥ पहलीबातनलधीउ
 मारी॥ कलहकालनीपहकहाकीयो॥ स्योसखाधरि
 रुंठगिलीयो॥१६॥ रंजा॥ बाबै॥ हूंधीसरापनारियो
 न्यो॥ सीसचरनधरबचनबषान्यो॥ उमरोबचनअट
 नहीटरे॥ मोरुक्षरसमफिकनपरै॥१७॥ दहली
 नादै॥ देसकनोजराइहैमोई॥ जाकेजाइकन्याइहो
 प्रथीराजजातिचौहांना॥ तोरुंआइबरैगोरंजा॥१८॥
 मांनससरभरैगोभारी॥ कलहकालनीबचनउचार
 आंगैकथानाहीबिस्तारी॥ नकिहिनांसकेपउचार
 ॥१९॥ आंगैमुनिफिरिधानहीलागो॥ मयोह्यांतिव
 पमनभागो॥ नकिकाजप्रसंगपहलापो॥ रंभा
 रिमुरगापुरपायो॥२०॥ जखनहिंकह्योउधारबन
 वौ॥ तबहीरिखबोलेगतिपावौ॥ म्पंहरिचंदहो
 मतीमोन्ह॥ धरमघटतकोपमलजान्त

॥ विप्रविजैराजासंभा ॥
 ॥ राजानं रुकीगैवनेतिसेहलाहै ॥ युद्धे ॥
 ॥ अहरेसारा ॥ मोलिलनमदकाइनन्यावे ॥ कलज
 ॥ कहिकहिबतलावे ॥ २२ ॥ नकटीकह्यानाकवि
 ॥ कीनी ॥ गतिकाचलीनारिनहीलीनी ॥ भीचमोल
 ॥ कोघरघाले ॥ कैकवकहैमगनहीमाले ॥ २३ ॥ जं
 ॥ वकहैमोईकैजाई ॥ पा ॥ ॥ मोघरिकहानलाई ॥
 ॥ मनकहैबचनमुनिमेरो ॥ यहांमोलकोदेतनते
 ॥ २४ ॥ चचनवृद्धिकरिअंमैंजाऊं ॥ करैराजजा
 ॥ निजबोऊं ॥ राजागवावै ॥ नृपतिकहैमुनिवीनत
 ॥ री ॥ सकलहोइसिद्धकृपातेरी ॥ २५ ॥ बांननवज्जव
 ॥ निअकसायो ॥ हेरैसंगिबंदिह्नायो ॥ गाइजीत
 ॥ जाइहु ॥ हं ॥ विप्रवतनहीकोयोअमनायो ॥
 ॥ राजावचनमतिकरिलीनो ॥ मैघामनकअतिउ
 ॥ दीनो ॥ करुनाअतिराजाजीवआई ॥ करुनामै
 ॥ हरिजीसुषदाई ॥ २६ ॥ निकस्यौतहांऔररिषअ
 ॥ ई ॥ अतिमुसरमानांमकदाई ॥ विप्रबडोबुद्ध
 ॥ नवतारी ॥ याहीकारनिदेहीभरी ॥ २७ ॥ ताहिदे
 ॥ घराजानुतिधायो ॥ नगोपाइमुनिमीमहलाया ॥
 ॥ हं ॥ रमगिअपवडनांमी ॥ ताकोविपतिपरीक
 ॥ अनी ॥ २८ ॥ विप्रवातराजासंभा ॥ पी ॥ यदिनाव
 ॥ राजागोदायी ॥ कहैकवीस्वरसुनोनुवारा ॥ सी

नारकाहेतुमधरा॥ दयासाजोउलाहे॥ देनकह्यो
शिदांनदीयो॥ बिद्यामित्रबेचनोकीयो॥ सकलरा
नसुधाबितक्षम॥ अखहाथीपसुअरपेवांम॥ ३९
मीनलाप्रतापीछेनोरामकल्पकह्योदेनहीवोराम॥
प्रौरकरुकबसूकतनाही॥ मानसबिदेकंदम
ही॥ ४०॥ रांनीकंदरतिकासैअ॥ सीमघासबेचनक
या॥ जायोदोसपैकौनमुलावे॥ टिगभेरीबांनत
प्रयावे॥ ४१॥ हमतोडुघीक्रमकेमारे॥ परिहतपं
बांननयेडुघारे॥ कौनमोललेहमअपरधीअनि
मोनीहरिनकिनसाधी॥ ४२॥ अग्निमुसरमांउला
॥ अग्निमुसरमांकहे॥ (बिचारी)॥ अल्योमोलितोर
तनारी॥ सुप्रमांसीतोहिदिवांका॥ दकलिया
मोरघरजांका॥ ४३॥ मानसमोलकरैजोकोई॥ ताको
पापबकतसिंहिहोई॥ नरदेहीक्यमोलिबिकावे॥
जातनधस्यांमुक्तिपदपावे॥ ४४॥ तनधरिअकिकर
तनहीकोई॥ ताकोतनसिंहिलिहोई॥ द्विपक
ह्योरामसुप्रयायो॥ मेरोमाजिइहांलंकायो॥ ४५
प्रननारिसंजोआहिलियाई॥ डेटलाप्रदेमहि
काई॥ अग्निमुसरमांमांघोई॥ इतनेबहाई
तकिनलेक॥ ४६॥ राजाजबाहे॥ मंदजलो
थदेलोई॥ ४७॥

न जो शिर सरई मेरी बडतुम नी ड चुकाई
 साटि मिली सो बचन करली नी ॥ बिश्वामी
 ती उनही नी ॥ बिप्र कहै श्यामो पै डटला
 मांगत हुनो पै ॥ कनकी बात राजा कहै प्यारे
 न ॥ अति सारथ संग पक्ष से ॥ बिछरन धिर ह मन प्री
 ति नारी ॥ पीव बिछोह स है कानारी ॥ धर ॥ पुत्र
 ॥ सुतरु ह ह म प्रेम अकुलाव ॥ पिता पहा एक
 लोर हावै ॥ टहल करन कनकी कोई ॥ डटला प
 मांसि रिसाई ॥ कम हीन काहे क जायौ ॥ बुरै
 क माई ॥ आयौ ॥ पांच बरष के दिग तिल धी
 मात मांत छुष बिछरन बसेषी ॥ क बरष पति
 की टहल मन की नी ॥ अबै कस्ता नै सी गति दी नी
 दहि सुपति बुधि अधिकारी ॥ गरमैं बाह धरि रोये
 री ॥ फटै हीयो मुख बोलन आवै ॥ सुतरु दि
 म नय सुमा ॥ क वर सोचत निमति उष पावै
 देह को ॥ बिछरन आवै ॥ राजा उवाच ॥ का
 पाइ ॥ जे आवै ॥ कोई काल बिछोह कर
 एक बाह माता गलि डारी ॥ इ जीवो ह नयन
 ॥ माता पिता बिछोह न भावै ॥ रोवै क वर
 समझावै ॥ रहौ पुत्र जीन करो बिषाध ॥ माक
 ले करे सोई साध ॥ पुत्र उवाच ॥ तुम बि

नहमै कौन प्रतिपाले॥ कौन बिबिध धिउषन॥
 कौन चले॥ काहे कंजीयो जगमांही॥ मै मति
 हीन मूवो क्य नाही॥ ध्या॥ रानी कृष्णा च॥ रानी क
 हेर रुसंग तेरे॥ कै से रहना नही मेरो॥ मै मदमा
 गनी पति उष देषे॥ पुर दया पन्था पने लेषे॥ कं॥ प
 तिकै संग बिपति कबु नाही॥ मां गिनीषण कचौ
 ररहांही॥ राजा एक सो चमन अकैरो॥ अब लाकां म
 सकति कमि जांनै॥ ध्या॥ दारीषट हल मोल क
 लीनी॥ गां ठियो लिमाया गिनि दीनी॥ गांच बरष के
 बालक मानै॥ सो सुत कहाट हल की जाते॥ ग॥
 देव देव करिकी न बिछोहू॥ रानी कवर न धति कै मो
 हू॥ बिपुजा इअ प्रमै धरि राघे॥ कब चन नूंक दे
 नही माये॥ ध्या॥ जो जीय सरै हल करि ब्यावै॥ मति
~~पुनः पुनः~~ कां डय पावै॥ बिपुसा जो भिन धरहा
 वै॥ साइ सनय सव गतिक पावै॥ ध्या॥ बिपु बडो व
 ला अबतारी॥ वाक सव दसिध है सा॥ लाय डेट की
 कौन चलावै॥ वाकै सहू मेर धरि ब्यावै॥ ध्या॥ जे को
 ई कहै दयो क्य नाही॥ नयति सती लेत है नाही॥ छ
 तो राजा जिन दीयो त्यागी॥ सो क्यूले पन्थो रे पागी॥
 ध्या॥ बिपुसा भिन्न कहा बितलीयो॥ अग्नि सुसरमा
 कहा गिदीयो॥ बेच मोल सो बोल बुलायो॥ दीयोः

कहो कहो वह आधो ॥ ५६ ॥ वरुन कपार जो पे
शली दो नो जसो यो राहा ॥ विष्णु मित्र ब्रह्मा ॥
नारद करार न पई उचारै ॥ ५७ ॥ काम की पो
नृप का दो आई ॥ आधी दर्श का मन ही आई ॥ मा
ल ॥ ५८ ॥ लोभ रिलीज ॥ कैतो नृप आ पनो पक
लजि ॥ ५९ ॥ कहो नृपति धीरज धरि स्वामी ॥ सब
देय गोश्रत ॥ गोमी ॥ सकटि पस्यो सरनि जिह केरी
धनी राधि है ॥ अजि मति मेरी ॥ ६० ॥ काहि बिगडि
पको दे सोई ॥ आप बिक्वा पीछे हदि होई ॥ मर्ष मदे
त ॥ ६१ ॥ देयो मत इतर जय ह आवे ॥ ६२ ॥
गाधि धाति करि अजि माने ॥ नै सो कोई कहा करि म
नो ॥ राजा कहै बीनती मेरी ॥ शिषरी मत जो सर ॥
तेरी ॥ ६३ ॥ अरज करी साहिब मुनि पाई ॥ फफरौं
मफै निकस्यो आई ॥ कंकवक संगहि सारा ॥ नीले
रन देह उतहा रा ॥ ६४ ॥ कंकर मनि दू देत है फेरी ॥
राजा मैत्र कज ॥ तिह बेरी ॥ राजा देखि मधो बोला
क्या ॥ ६५ ॥ धले कंगामोला ॥ ६६ ॥ बचन सुनत नारी
उर लागे ॥ ऊमो आह राइ कै आगे ॥ सगला साथ ॥
कउन हारी ॥ बसुधी आइ देह जम धारी ॥ ६७ ॥ कि
र सहत श्री नस्यो आई ॥ हरि चंद का ज देत है म
री ॥ तब ही मम रिष बचन सुनावै ॥ योह मोही देज

लेहसोनावे॥६॥रिषगवाच॥याकौमो लबकन
रिषभावे॥परिमोहिहिरिमिरडेहलीलाये॥६॥
ऊफरौकूमहुवाच॥नरमगरमकहिऊफरौबी
लो॥मुहमांग्योकंप्राप्तमोलें॥६॥
उवाच॥कहैरिषीवरबोलनटाऊडेहलायमेव
टिनपास॥टांकीरहैकिटांकबिकारै॥दिमरीघादि
लेननहीजाई॥६॥जलीबादऊफरौकहैआई
रजतहांबितगितेनकाई॥नृपकैपाहिजाइजब
बोलें॥होताकौलेताहौमोलें॥६॥टहलबहोत
आसंगकेआई॥गलौरहनदेऊजाई॥राइकहै
तबइछांतेरी॥करिसुंदहलसकिजोमेसी॥६॥
ऊफरौकहैदामगिनिलेऊडेहलायतुमभायो
प्रेछा॥बिसर्योइयमुषबाहोपायो॥रिषमोकहै
मालंबपायो॥७॥ऊपाकरौनृसीसदेमोईम
रौज्यमांवेत्यहोई॥बिप्रकहैकारजसिंधतोही
मानसबेचिदीपौबितमोही॥७॥आप्रबिकेयो
गाबोलनटास्यो॥सतबहोततोहस्योतटास्यो
ऊफरौकूमराप्रघरिल्यायो॥समरीरैतनीरनर
वायो॥७॥दिनमरहटमैराधैमोई॥नवेजारौ
देवैसबकोई॥मुषमतिदेखोकसकरिलीज्यो॥ते
मानसजालनहुमदीज्यो॥७॥मेरचरणज्यो

नहे तेरे हर चंद के हे धना मेरे जब करै ब्रज
चावन लागे एक क्षीत प्रसे मुह लागे ॥ ७४ ॥
मोक है ब्रज त दिन के रो हर चंद के है रज का
कुतने गो चावे नूँ के लीहि पायो ॥ रहे बिधि सकल
द्वी सखी कुलायो ॥ ७५ ॥ ब्रज रिशमंदिर स्थ
है जहां रानी कंदर रहै सोई ॥ सिगध हर बरुहा ता
उल्लाखै ॥ सुरभी प्रकट करै ब्रज न पावै ॥ ७६ ॥ कु
समुरै रानी जल के रो ॥ नरु ब्रज मांति बुद्धा रे डै
द्वी कौट पपर ह डोछानै ॥ सुतरहि ता स देखि मना
नै ॥ ७७ ॥ अनदेषा विनत जै जु प्रांना ॥ ज्योत्स्ना री निज
पूजित जाना ॥ करै हल रिशमंदिर मांही ॥ चा
त कस गधे लनै नीही ॥ ७८ ॥ सेवा करि रिशमोगला
गावै ॥ पातर दो ब्रज नरुं पुर सावै ॥ म्हा प्रसाद साध
कर करै ॥ माग होइ पावै त देखै ॥ ७९ ॥ संत गु
नां मही न सुर चारै ॥ देव भोग न जिन किनि बाह
गहवीन ती नमरा पुर लीजै ॥ संत चरन करुना
मदी जै ॥ ८० ॥ फविन घां हिर है घर चरे ॥ होइ प्र
गदरां मजी तेरे ॥ पापूवन कंज जनि ति गावै ॥
धीत हां मुख देखव तावै ॥ ८१ ॥ कहै परी कृत बा
सुत सेती ॥ म्हा प्रसाद दोष मांजे ती ॥ तब कं मु
ना गोत सुनायो ॥ म्हा प्रसाद म्हात्म गायो ॥ ८२ ॥

परतसिरह्योपरायोः॥ अगौअबजगदीसुरजाने
हारह्योसिरचलेपीराने॥१००॥ अरुमेरामनकीह
लेसी॥ अोरजन्ममेंसकलभरिदेसी॥ अरुमेरबंदन
मकहीयो॥ अबरुहितामउहांहीरहीयो॥१०१॥ मो
कुतेमांताप॥ परीयो॥ उमहीडोसाहबहुतकरीयो
कहीयोमुषहोतब्रयोहूवो॥ सुतरुहतामउसावनमूवो
॥१०२॥ कछअपडावहीलाई॥ होतबइसोमूवोवन
गंही॥ अनिसुसरमांविप्रबडेरौ॥ हीडीमतिछाडोशन
केरौ॥१०३॥ मोमरनेकोमोचनकोई॥ मातामोरबडे
उषहोई॥ मोबिनमाताअनुमाई॥ रुवालोबारही
हिराई॥१०४॥ प्रितामोरउठैउषणोवि॥ मयरांति
सनीरनरावे॥ कहीकहाबलचलेनहोई॥ हमेंम
चखेसीबिधिहोई॥१०५॥ आवोमिलोपरैफुनिकीये
हमनुमधनीबिछोहोदीयो॥ तुम्हारेसंगमहासुषण
यो॥ अबकहाकरुंअंतहीआयो॥१०६॥ नैसीबिधि
रहितामपुकारा॥ छातीकटिपस्याधरसारा॥ ज्य
रहितामत्यंवेसब्रुवा॥ घरीचारसाराहीमूवा॥१०७॥
रसनांरामरुहितामउचारै॥ जीवनतहीमरन
मनक्षरौ॥ सबैउठिजिनसुरतिसंगरी॥ बहोरिलंगेव
रनेमनकैरी॥१०८॥ तुमप्रायेहमक्यकरिजांही
रुसुतासबैहैनांही॥ कहेरुहितामसुनोरै

मेरी जाई मन की संकला न उपाई ॥ हरि कर ग
न प्रवसति हला गौ ॥ होत वर चौ विधता का गौ ॥
निरुहिता सब प्रवेष्टेरी ॥ हंतो गुलां मन प्रभु म किम
कोरी ॥ वर कौ धनी करै सो छजे ॥ उम फि रिजा
हं धि रौ न बजा जे ॥ बा दो भूत मो ल को ली गौ ॥ मै धनी का ज
म सत म ही दीयो ॥ ॥ तब सारे मन ब्रै सी आई ॥ हम
हिता स लार है भाई ॥ पाये जहां बने मै अंधि पारे ॥ प्रज
म लन कं वि चरे सारे ॥ ॥ ॥ चलो रू वरु हिता सब के
॥ ॥ ज तो प्रज प्रहा य त हा मे ला ॥ त हा प्र प त र व र प र
होई ॥ ति ह सो ड सो प सो धु सो ई ॥ ॥ ॥ प्र प ड सो र
र तौ गि सो ॥ ॥ च लो हा य डार धु प सो ॥ ॥ म ग रे ब ल
ने त हा आई ॥ ॥ क हो रु हिता स को न ग ति पाई ॥ ॥
॥ ॥ र हिता द मि सु स व रे वै ॥ ॥ चि न रु हिता स न के
॥ ॥ हो वै ॥ ॥ या त न पी र बो ल न ही आ वै ॥ ॥ पु नि रु हिता
॥ ॥ व धा स म फा वै ॥ ॥ ॥ ॥ का रै प्र प ड सो कर मेरी
॥ ॥ त व र सौ जी व र हि के रौ ॥ ॥ ला गी चो ट मो र त न म
॥ ॥ प सो र रि तै गि र त म फा री ॥ ॥ ॥ ॥ म ति रु
॥ ॥ करे ह रिता म उ चो रौ ॥ ॥ इ ऊ अ वै चो स र हे धा र
॥ ॥ नि सु स र म स पौ क ही पौ ॥ ॥ अ व उ म ल ज ह म
॥ ॥ र ही यो ॥ ॥ ॥ ॥ दी को माल को मन ही आ यो ॥ ॥

परत सिर हो प्र रा यो ॥ अगै अब जगदी सुर जा नै ॥
 हार हो सिर चले पीर नै ॥ १०० ॥ अरु मेरा मन की ह
 ले सी ॥ और जन्म में सकल भरि दे सी ॥ अरु मेरा बदन
 मक हो यो ॥ अब रुहिता सग हा ही र ही यो ॥ १०१ ॥ मा
 कुते मांता य ॥ परी यो ॥ उम ही डौ साहि ब हित करी यो
 न हियो मुख होत ब यो ॥ रुचो ॥ सुतरु हता स ड स्या बन म हो
 ॥ १०२ ॥ कछ अप डा ट ही लाई ॥ होत ब र सो म वी बन
 ग ही ॥ अनि सुसर मा वि प्र ब डे रो ॥ ही डौ मति छा डौ न
 के रो ॥ १०४ ॥ मो मर नै को सो चन को ई ॥ माता मोर ब डे
 ब डो ई ॥ मो बिन माता अ न म ई ॥ रुचा ल्यो वार ही
 दे रा ई ॥ १०५ ॥ पिता मोर उ ठे ड व पो वि ॥ म य रां ति २
 म नी र न रा वे ॥ क हो क हा ब ल च ले न हो ई ॥ हमें मी
 व र सी बि प्र हो ई ॥ १०६ ॥ अचो मिलो प्रै फु नि का पी
 हम बु म ध नी छि छो हो दी यो ॥ तुम्हारे स ग म हा सु ध रा
 यो ॥ अब क हा क रुं ल त ही अ यो ॥ १०७ ॥ नै सी बि प्र
 रुहिता स पु का रा ॥ छा ती क टि प र्या ध र हारा ॥ ज्य
 रुहिता स तू वे स ब रु चा ॥ ध री चार मारा ही म वा ॥ १०८
 ॥ र स नां रां म रु हिता स उ चारै ॥ व न न ही म र न
 मन ध रौ ॥ स बै उ वि जिन सुर ति सं नारी ॥ ब हो रि लं गे क
 र नै म न कै री ॥ १०९ ॥ तुम पायै ह म क क र जि गं ही य
 ह रु ॥ स व नै है ना ही ॥ क हे रु हिता स सु नौ रे म

ई॥ इहां रहो मतिरं महु हार्द ॥ ११० ॥ नेत्र मरि को
कहिली नी ॥ तब सा रूप कर मां दीनी ॥ करि प्रणाम
उग रिध रिचाले ॥ देखो दई को न घ रया ले ॥ १११ ॥
की माइ ब्रज ज ब पावै ॥ कही ऐ कहा सो चइ हि न्यावै
बन मणि प्रचले जं सारे ॥ माता घर प्रथु कोरे ॥
सब बालक देखा सुत नां ही ॥ रां नी सो च की जो मत
ही ॥ जं चौ पै कर ह्यो हि ठि न्यावै ॥ त्यं रुहि ता स न
डो धांवे ॥ ११२ ॥ पुत्र नदी मै ई खर उ प्रदी को ॥ अ
सा मरा नी त बली को ॥ न कै धर नां न न मुष केरी
गवंत कहा कहै गटेरी ॥ ११३ ॥ बालक सम टि निव
म ब्रह्मा ॥ रोइ कह्यो रुहि ता स हि न्यावै ॥ रां नी न
बोल नै पाई ॥ अरन परी मर छा गति न्याई ॥ ११४ ॥
न द्वि वोग क दन कूं नां ही ॥ यो रो सो च ल्यो इ म ग
कहा द्वि वोग कह्यो न ही जावै ॥ नी बर ब हो त क
न ही न्यावै ॥ ११५ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म बान लागे जु ठ रि
मर गइ गिराई ॥ मर दन करि बालक कहै ॥ अ
बोल कु माइ ॥ ११६ ॥ तब बोली रिष सुत न सं ॥ मुष
ब्रह्म न उ चार ॥ कहा भयो क्यौ करि भवो ॥ वीर क
बो हार ॥ ११७ ॥ तब बोले बालक सकल ॥ अपल
कर न्याइ ॥ पीछे दर घत नार ॥ नो मि प र्यो भु नि म
॥ ११८ ॥ जो रुहि ता स कही कती ॥ नी त ब्र च न के

माला तापी छै बंदन सबै करि मारग लागे बाल ॥ २२० ॥
२२० ॥ इति श्रीहरचंद्रमत्तग्रंथ ॥ नाथा संती पुत्र कृत प
तिहि दोष वेचनो नाम उत्ती पो ध्याय ॥ २१ ॥ दोहा ॥ कंद
नकसनी बकुम है ॥ कांचम है नही बीरा ॥ तो पुरष डे
जो आपदा सत छा डत नही बीरा ॥ २१ ॥ चौपड़ा ॥ फिर
बालक एक मुधि आई ॥ बकु रौ कंधा कही सवाई
नैरे पुत्र माता यो आषी ॥ बालक सकल मायि हेमाषी
॥ २२ ॥ रिषसे ती प्रनाम कहाया ॥ अतरि बकु तराधि
जो छाया ॥ तुम सब चनक द्यो मुनि माई ॥ रिषकी रह
ल छोडि मति आई ॥ २३ ॥ नृप आदि जो बचन उचारी
सो सब कही सम मिल्यो सारी ॥ उठि चली माता बनवारी
चलत बतायौ कृती तागोरी ॥ २४ ॥ सुत कहता सपे स्ये
तिहि पायो ॥ लीयो गोदि में बोला बुलायो ॥ बोले पुत्र
का हा नयो तोही ॥ अजगह रना ही कहूं मोही ॥ २५ ॥ सब
मुख गयो परे बंदि आई ॥ दीन अन्याय चले तजि माई
प्रस्यो गोद में सीसन वायो ॥ माता तब ही कंठ सोलायो ॥ ह
॥ तब रुं हिता सब त एक आषी ॥ माती दई अकेली र
षी ॥ मै पापी कछु रहल न कीनी ॥ करता अति अमीग
ति दीनी ॥ २७ ॥ चलते प्राण कहूं नही पायो ॥ राम कहत उ
चकी संग ध्यायो ॥ मृतक नयो मात बिल लावो ॥ हजो संग
कौन ग्रहं आवो ॥ आबुनि अकेली मृतग सुत पांसे ॥ रि

कहसीदोकमपानासे॥ सोचएकश्रौरमनआवे॥ सु
 जैदागमोरकरपावे॥ ११॥ नचैनहीबूझतहठकीयो
 न्याहाथबांधिगहिलीयो॥ मृतगमारहतैहैमारी॥ बड
 तडधमरिचलीलेनारी॥ १२॥ देवदवकरिमरहटश्र
 यो॥ यहूडधसकाजनहीहैगायो॥ बहोतबोवोगकहै
 आही॥ कौनकवोरबनतहैनाही॥ १३॥ मरहटधर्यो
 तबईधननाही॥ बैसंदरनहीतिहिगाही॥ बरवैमेहव
 जतडधरुवो॥ श्रैसोकष्टजानिसुतमवो॥ १४॥ चुनी
 कटकलीमरहटकेरी॥ श्रौरश्रानिपुनिल्याईफेरी
 पंथीछाककरीमधमाही॥ श्रौरमनिषतहांजोनाह
 ॥ १५॥ फसबालिजबलापीदीयो॥ श्रौलेबलतबहो
 नडधदीयो॥ मेघवरसंतबास्योतहांआनी॥ चीरश्र
 रनौउपरितानी॥ १६॥ पाकैसगश्रौरनहीकोई
 प्ररुगकैवनवसत्रतनहोई॥ दाबालेवोजाइबु
 जई॥ श्रैसीमांतिदिनगयोबिहाई॥ १७॥ देखिधू
 मराइतहांदोरै॥ पंजांम्यैकोईफूकतचोरै॥ ला
 मालन्हइमारोभाई॥ पडच्योतहांदोरीयोआई॥
 ॥ १८॥ सबदेखोरुहितामहिमवो॥ मनिजान्योरांनडि
 रुवो॥ मूरजबंसबांसईआयो॥ यो कहिरांजाम
 षपायो॥ १९॥ मायामोहगिनौमतिकोई॥ धर्मसो
 पुरखंतहोई॥ भक्तमरतसोचकेआवे॥ सोईमोव

मक्तं मरिपावै ॥ १० ॥ जे कोई कहै साधक ब्रह्म वा ॥ का
रज भिन्न कारन है जूबा ॥ कारन साधन वा को ना
ही ॥ कारन देह फूट है ताही ॥ ११ ॥ देह धर्यो भक्ति
कै आवै ॥ सो तन गयो सो च मन पावै ॥ तातें सो च न चि
तहि होई ॥ सुतरुह तास मक्त हो सोई ॥ १२ ॥ भैमा रौमा
गत रूपारा ॥ रांनी कहै दे प्रियौ दारा ॥ एकौ बस न ह
स रौना ही ॥ बांभन ना जदेत तब बांही ॥ १३ ॥ ह्याम
धरम की कथा सुनाई ॥ भैमा राबिन दागन साई ॥ ब
खरक संग रैही गाता ॥ रिष आगै मुख कहा दीघात ॥
१४ ॥ आक्षेपी रफारि देगे ही ॥ तो सुत जालन देरु तो
ही ॥ तब फारि चीर आक्षेप ले दीयो ॥ प्री छे दग कर
त है कीयो ॥ १५ ॥ देप दाग गंगा में डार्यो ॥ होत बरसे
दीन्यां मन धर्यो ॥ भैमा रौले राजा जाई ॥ तब रांनी रि
ष मंदिर आई ॥ १६ ॥ तब रिष कहै बिलंभ कहा होई ॥
रांनी पाई परी श्ररो ॥ सुतरुहि तास मर नहि कीयो ॥ ल
गी बारादाग में दीयो ॥ १७ ॥ बालक नात कहै सोई ॥ ते
सब सई बी प्रउ प्रहोई ॥ सेवग बडो सुत होत रौ ॥ का
रज मक्त करत हो भैरौ ॥ १८ ॥ धरम दाहि साधन सु
प्रहोई ॥ स्वारथ यहि मम को मत कोई ॥ रांनी तपो
बरह ल्यो हीना ॥ कम बसात और उबदीना ॥ १९ ॥
कासी राई और थाहा ॥ छरी बडौ नही संत पूजा रि

रानी का इहार कंठ डाल्यो ॥ ५ ॥ चोरी लुपुष
गरे संचाल्यो ॥ ६ ॥ जो लोमा मज डीले सोई बह
नी नीर भरन कंठ्याई ॥ तन सुधन ही हार गल मे
देयो कंठ दीयो उन हे लो ॥ ७ ॥ सवा कोरि कोह
जुलीयो ॥ बांदा गुला मां मारि छव दीयो ॥ देखत हार
हो उन जाई ॥ सभा मां हि बैद्यो तवर गई ॥ ८ ॥ लीयो
कमारी कोई ॥ राजा कह्यो ने ददे सोई ॥ बांदा लीयो
बिपकी हारा ॥ तुम औरै मारे हो बिचारा ॥ ९ ॥ गली
बांन लेन कंठ्याया ॥ देयो हार मारना लाया ॥ औद
दी बाधिति हिलीनी ॥ तब कंठ रिषी स्वर आडन दी क
३२ ॥ चोर द्यदि पुनि देत न कोई ॥ वा कै संगि चोर बहि
होई ॥ जाइ राइयो लै गुद राई ॥ हार सुथो क्य कहि स
मजाई ॥ ३३ ॥ नव काज औरै ह म मारा ॥ भूनी रं क मु
थो क्य हारा ॥ सरति पाक इ सो तन पायो ॥ चोरी मां हि
कहा मत लायो ॥ ३४ ॥ संगति साधल गीन ही काई ॥ रि
आश्रम रही तंसाई ॥ तब उन कह्यो बात एक प्रांनो
गोबी मति बिपन की जानो ॥ ३५ ॥ गुनै पस्यो मरे गनि द
॥ ३६ ॥ मारे इ नै बड त छव दावो ॥ ३६ ॥ चोरी फेरि करै
ही कोई ॥ राज करत ते जत पब ड होई ॥ हार का हि
पनो उन लीयो ॥ पीछे मारि बड त छव दीयो ॥ ३७ ॥ च

लेमारतेमरहटकांनी सुतरुहिनामनभलेरानी
हतहांतनघबरिनकोई जानैहमारऔरैकैलाई
उचासतप्रथरीकरतेसंगध्याये। बकुललोकमरह
टलोंआहो। राइकुतौमरहटप्रथवारी। मोचोबकुल
देखिकेनारी। उरणी। अतमारतयहिक्योंलयाया। क
हागुनैक्यमुसौप्रयाया। यातौमहामुषिथीमोई। सुत
मूचांभिष्टिमतिहोई। ४०। क्यमारौअबलाहैसाई
दोरीकरीराइकीमाई। सवांकोरिहोहारहिरायो। य
कैगलेदेषनीआयो। ४१। राजाकह्योतोरिइनडारौ
हममसकीनकहाहैमारौ। पुत्रसोगनहीनिदोबुभ
मारौ। राजाकह्योमलौसतहारौ। ४२। घरमवीर
हतासनबीजे। तोहारमुस्याकेलाजुगजीजे। कही
कांतिऔरैनजरमाई। रानीकह्योस्वनीपौआई। ४३
कमुबसातहोइसबआवै। पौरानीराजासमजावै।
काटिषडगमारनकलीयो। कोलेनारिहतेजिनव
पौ। ४४। याकेहाथिषडगयहिदीजे। पौहमारैमेरी
गतिकीजे। मनमैकहैमृतिहैआई। प्रतिकेहाथि
मरुमैसाई। ४५। लोककहैतेरीकहालागे। तेरेह
थिप्रानइहत्यागे। हरिचंदकहैसुनौरेभाई। याके
जीवऔसीहीआई। ४६। बकुललागदेखांडरआ
वै। मेरेहाथिमीचमनभावे। हरिचंदतबहीषडग

करि लेई ॥ तीनां लोक कं पां ने सेई ॥ ४८ ॥ सबै ब्रह्मा
सब है हेरुं वा है हेरुं ॥ देव जघि जू वा ॥ जू वा नाग
कमै होई ॥ जू वा मनिष क है सब कोई ॥ ४९ ॥ हर च
षड ग बाहन कं जाई ॥ ब्रह्मा विष्णु ग ह्यौ कर
ई ॥ ब्रह्मा विष्णु ग ह्यौ कर आई ॥ महा देव आ प्रण
बोल्या ॥ सब देवां तेरा मत तो ल्या ॥ ५० ॥ विश्वामित्र
तारह मारा ॥ कफ रोमूं मज्ज क हि पारा ॥ अग्नि
रमां अज तन लीयो ॥ सु करह म मुरा ए ति कीयो
व्याम आइ अती तन धा ल्यो ॥ से रौ व रौ ली यो ति
सारो ॥ कामी राइ ना रिड प दीयो ॥ सब देवां मिलि
त न कीयो ॥ परा गनिका रूप सक्ति ही साई ॥ तो मत
नीच ली घि साई ॥ जित ने क हू दर स तो पायो ॥
तन स जा नि स्तायो ॥ परा बटे विवा न देव ता आ
ते जो मई मरी र स वा पा ॥ प्रज प वृषा म वृ ज होई ॥
धुनि तीन लोक में सोई ॥ ५५ ॥ म मू को छि तै की न
ल्या ॥ तो संगि ति रे प ह ह म जां शा ॥ गंगा म धि
हिता सब हायो ॥ जल दो ति र ॥ दिष्टि सो आयो ॥
राजा प्रग पुतां म क राई ॥ माता मिली सी त ल
आई ॥ अग्नि ता प तै कं च न का ठे ॥ सुत रु हि
म रूप इ ह का ठे ॥ ५६ ॥ ध प्र दी प्र आ र ती मं जोई ॥
प्रति सह त कर त है सोई ॥ बडौ सती सारे जग म

नोउपरांतिहमरोनांही॥५॥मांगिमांगिबोलैभुर
तारे॥तेरेकाजआइतनधरोतबहरिचंदकहैबि
धिअसी॥मांगनकीरवासनांकैसी॥५॥तबभुरक
हैकबूतोलीजो॥पीछेदोसहमैनहीदीजो॥तबहरि
चंदकहैदेऊबरयेजा॥असोकैएकाऊजिनदेऊ
पुआदेऊधसेमुनिबिहममहेसा॥ब्रह्माकहैपायाव
रअसा॥तीनलोकतेरीजैहोई॥अंतरीषराषतहै
मोई॥द्विआपनसोहरिचंदकरिलीनो॥अंतरी
षलोकअोररचिदीनो॥हरिसंआमानसबाहेसि
धनोनाथमिलैहैसांहे॥द्वि॥मोथैहाथतासकैदीपा
अजरअमरतिरमैकरिलीया॥तारुतिसीसतीन
हीकाई॥प्रतिबरताऊंमांसमिगाई॥द्वि॥सुतर
हितासतिमोसुतकौनो॥जोफिरिदंडैतीनमोनैती
नोमिलिपरनमुषपायौ॥भगतिदानमैजानिसदा
यो॥द्वि॥कमपधेनहीभक्तिजगावै॥सातिगकमहे
इनहीआवै॥कमकरैफलआसनकाई॥अरु
आपोदेवैछिटकाई॥द्वि॥मेमेरीकरतुतितमानै
फलवासनाबिचिनहीआनो॥भगतिमिमाभगवं
तहीजानै॥हरिउदेसकमनकंठनो॥द्वि॥देतक
सोटीइधेनांही॥पछिमक्तिहोतघटमांही॥उपजै
धेमतेमनवत्यागो॥भगतिआइअंतरजोजागो॥द्वि॥

गहगहाइ प्रेमउरमाये ॥ द्वै रौ मांचलता सुखआसे ॥
 पहलीवनसीसीतजरवे ॥ पीछेमहाबसंतरुनआवे ॥
 दैदी ॥ पहलकसोटीहरिचंदीदीनी ॥ तापीछेताकी
 गतिकीनी ॥ साधकसोटीसहनउहैली ॥ मांआबिना
 नगतिकितमेली ॥ दै ॥ साधसंगतिसबकोईगावै ॥ मा
 ग्यांमुहमेंलाकैजावै ॥ छत्रीसरसतीहोइकोईसाध
 सबदरागिहैसोई ॥ दैतीतातैहरिचंदमतीबखाना
 नावमक्ति कौअर्थहीजाना ॥ सोगबिदोआमोगछिट
 कावै ॥ तापीछेकोईगतिपावै ॥ दैरी ॥ मोहप्रोहम
 तछिटकायो ॥ मरनबन्योपनिसतनडीगायो ॥ नद
 ररतनजाकैसुतहवै ॥ हरिमगताहरिमजिजग
 मवै ॥ ७० ॥ विश्वाभिरश्वापयोअषी ॥ अजोध्याद
 ईनलीपाराधी ॥ हरिचंदकहैकामनहीआवैनि
 रमाइलकोराजकरावै ॥ ७१ ॥ मैत्याग्याओरनकंदी
 जै ॥ दीयोराजकहाफिरिलीजै ॥ तवरिषरुहितास
 समजावै ॥ पुत्रराजअजोध्यापावै ॥ ७२ ॥ नहिवात
 सहितासबखानी ॥ मेरौमोहनटैमतिआनी ॥ देऊ
 आप्रजबनहीलीरो ॥ राइकहैकपाकरिदीये ॥ ७३
 पितामीघरिषअगामानी ॥ अजोध्याराजकह्योन
 नआनी ॥ कीयोराजनहीमनमायो ॥ तबगुह्या
 वरुहितासबसायो ॥ ७४ ॥ पीछेअमरमयोहैमे

जागबडौतिहिदरसनहोई। उनहीदेहहरिचंद
मिष्टकवा॥ मतिजांतौउनमेकोईसूवा॥ ७५॥ न
जनांतदेहमिष्टिपाई। सदासुखपावैकपामाई
काछेनेषमनीमतआनै॥ सोहरिचंदराजाकरि
जानै॥ ७६॥ सोषधस्यांकछुमक्तिनहोई। सतमे
मगतिजांतिलेसोई। जिनश्रौगनकंदेहधराई
सबकोश्रौगनलेताजई॥ ७७॥ श्रीसुखचनबो
लीपाबानी॥ श्रौगनकाढैताकाआनी॥ तोमे
रीकहि कौनचलावे। घाटिबाधिकबुबोलनी
आवै॥ ७८॥ जेकोईकहनजानैसोई। तोकंउचि
तकहनकंहोई। तोमेकरूंमुनोतुमआनी॥ सिम
कोखचनतोतरीबानी॥ ७९॥ पूरैश्रौगनतांदिनआ
नै॥ अक्षरैमरमकहोतैजानै॥ बचनबचनमे
गुनगानै॥ सतकाबचनकृतकरिमाना॥ ८०॥ घरेघ
रोमरैमौनहीजई। जितनीसमझीसोमैगाई॥ ध
रिधिसोमेरीमतिसारे। उनकोश्रौगनमतिकोई
धरैगा॥ ८१॥ दोहा॥ उदधिदोतकरिलीजिमेले
षनभारअठार॥ ध्यानदासबसुखलिषे॥ अगदं
तमक्तिअपारा॥ ८२॥ जोलघिनकाजमुरमति
लौ॥ सबपंजितकलिमांदिहरोमसमांततलि
षिमके॥ तोहरिचंदसततांदि॥ ८३॥ ध्याइती

[illegible]

मोहिजकाटीणा॥अपनीकिपाक्षर॥०॥श्री
गुरुवाच॥सोरठा॥चितविथाकहिमोहि
रममसैमयातोहिघणा॥जिनतैकादंतोहि
पूछैजोकच पूछैणा॥अविद्यतवाच॥मुनि
सिधपुरकेवेन॥पादगदमपछेमसौ॥रमरम
मपचैन॥तबबोलेपिबप्रक्षपह॥एप्रिगुरप्र
मपन्यता॥ब्रनकृतमपदअर्थकौ॥जैसेमन
राति॥तैसेमोहिस्मकाइ॥१०॥श्रीगुरुवाच
च॥सोरठा॥मुणोसिधधरिकान॥ततपदके
उमअर्थकौ॥करौमकलबिख्यातगीतामे
जैसेलिख्यो॥११॥ततपदईश्रुमोकहै॥अजु
प्रत्यनगवान॥ततमसीकेअर्थकौ॥ततपदई
श्रुरजानि॥अमहावाक्यमैपौलिख्यो॥तत
मसीकोशान॥सोईअमममजोसनय॥जैसेम
योबिख्यानि॥१२॥ततपदईश्रुमोकहै॥अपदके
हिंजेजीवा॥असीपदबुझकहावही॥जीवईस
कीसीवा॥१३॥अष्टगुणमहतजोईमहै॥अटवि
कारसोहिजीव॥गुणाविकारसौजोपरै॥बुझ
रूपसोहीपीदा॥१४॥अथईश्रुकेअष्टगुणवर
नन॥ज्ञानश्रीबुद्धताया॥जमबिद्याबलजे
ई॥अष्टगुणजहोपाइ॥ईमुकहावेसो॥१५॥

[illegible]

मोहिजकाटीण॥अपनीक्रियाधर॥॥॥प्रमे
गुरुवाच॥सोरवा॥चित्तविश्रामकदिमोहि
रममसैमयातोहिघण॥निनतेकादंतोहि
पूछेजोकच पूछैणा॥अतिव्यतवाच॥मुनि
सिधपुरकेबेना॥पादगदमपछेमसौ॥रंमरुम
अपचैना॥तबबोलेसिधप्रक्षपह॥ए॥प्रोगुरप्र
मपन्यता॥बुनकंतमपदअर्थको॥जैसेपुनर्म
राति॥तेसैमोहिस्मकाइ॥१०॥प्रोगुरुवाच
वा॥सोरवा॥मुणिसिधधरिकांत॥ततपदके
उमअर्थको॥करौमकलबिद्यांतगीतामें
जैसेलिखो॥११॥ततपदईशुभोक्तहै॥अजुन
प्रतामगादांत॥ततमसीकेअर्थको॥ततपदई
श्रुरजानि॥अ॥महावाक्यमैपौलिखो॥ततम
मसीकोज्ञान॥सोईत्रिमसमकोमनया॥जैसेम
याबिद्यानि॥१२॥ततपदईमुरमोक्तहै॥तपदके
हिंजोवा॥असीपदबुद्धकहावही॥जीवईम
कीसीवा॥अष्टगुणमहतजोईमहै॥अष्टवि
कारमोहिजीव॥गुणविकारमोंजोपरै॥बुद्ध
रूपमोहीपीव॥१३॥अथईशुकेअष्टगुणवर
नन॥ज्ञानश्रीबुद्धतांत्या॥जमविद्याबलजे
ई॥अष्टगुणजहोपाइ॥ईमुक्तहावेसो॥१४॥

जाका नाम कहिए जगदीश ॥ ताहि जाहि उग्र
कोईस ॥ मम लोक है जाकी मालि ॥ पग ताके सत
वैपा नालि ॥ ३१ ॥ दसंदि सा जो श्री न कलवै ॥ मम
ममं जा उदम मावै ॥ बना मपती जो नृवा रहे ॥
रमावती कहिए सो जात न मफार ॥ ३२ ॥ सकल
नदी जाके प्रसेद ॥ ताकौ किन रुंत पाया मेद ॥ र
बिससि जाके नेत्र जा न्य ॥ पवन पचासी ताके
प्रांन ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ नृप दताहि सहं श्रद्धे ॥ लोचन
सहं श्रद्धा ॥ सहं श्रद्धा मम तमावही ॥ बाण
बेद विचार ॥ ३४ ॥ नृप हिरण्यगुर्वर्नन ॥ हि
रण्यगुर्वर्जा सो कह्यो ॥ तामै पहं पहंचा निउ
न्यति प्रलेण लना ॥ तीनों कथा निधन ॥ ३५ ॥
मुन नृत्मांता मते ॥ मुन कार नृकार हिरण
गुर्वर्को नृथ यह ॥ सब बिस मुच मफार ॥ इती हि
रण्यगुर्वर् ॥ नृथ नृविक्रवर्नन ॥ नृति मुचि
नृति सब लहै ॥ नृविक्र प्रकृत नृस्थूल ॥ ती
जाव पजा सो कह्यो ॥ नृरे सीष मम श्रद्धा ॥ तत
पद नृथ जो चरनीया ॥ इष्टु कोटिका संग ॥ ३६ ॥
इती तत पद निरमै मला बाका प्रचान ॥ सिद्ध
उदाच ॥ श्री पुर प्रम निधन ॥ महा पुरुष नृति
तहौ षोडस प्रह्न च बाणा ॥ सो मोहि नृक है

२५॥ कौन है मुक्त कौन है बंधा कौन है माया कौन है
 बुद्धा कौन है चेतन कौन जटबुद्ध कौन है धैर्य
 कौन धैर्य ॥ ४० ॥ कौन है सार कौन असार कौन
 न है पुरुष कौन है नारिक कौन है नृबाची कौन
 बच नृथी ॥ कौन है नृलक्ष कौन लक्ष वे नृथी ॥ ४१ ॥
 कौन है नृनव कौन नवितरथ ॥ कौन है मेधरा कौन
 न नृव मेध ॥ कौन है विष्णु मिष्ट है कौन ॥ कौन है
 गुण विगुण कौन ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ विक्त नृवक्त क
 हो कौन है ॥ चितामी नृजिनामी कौन ॥ विद्या
 नृविद्या सब कहौ ॥ बचन नृबाची कौन ॥ ४३ ॥
 इन षोडस मै प्रथम है ॥ इन कौन तर देऊ ॥ जै मै है तै मै
 कहौ ॥ बुधो बांणी मेऊ ॥ ४४ ॥ श्री गुरु बाच्य ॥ मले प्र
 थम पूछे जमताता ॥ गुण गुन चंचित देवाता ॥ पहला ते
 रा यह प्रथम है ॥ बंध मुक्ति को कारन मन है ॥ जब म
 न मां हि वासनां धरी ॥ तब मन बंध पिछा हो बरी ॥
 जब हि मन निरवास हो जाय ॥ तब ही मन पि
 रि मुक्ति कहाय ॥ अकार रूप सो जांणौ माया ॥ निरा
 कार सो बुद्ध बतयाया ॥ बुद्ध चेतन माया जटबु
 द्ध ॥ बंध है धैर्य जी बंधे नृणा ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ सार बस
 प्रमात्मा ॥ जट नृात्म सकल असार ॥ चेतन बु
 द्ध सो पुरुष है ॥ मूल प्रकृत सो नारि ॥

हसोहिअसाचीजाणु॥ वाचाअर्थमरुपहवा
णु॥ दोयहंपनमैमोअतषकहाचै॥ लघ्याअर्थ
वपमिनामुहावै॥ धर्चेदेहगुणालेअतैवैकह्यो
वित्रेषगुणनतैन्यासरह्यो॥ मेधवदनकव्यारस
त॥ अरवसेषणकीमहमांअनता॥ धर्ण॥ अतिवि
म्भीरहणिचिष्टकैसार॥ सुमिष्टविमैतरहैनदाम
निरगुणसुद्धिसश्रगुणअस्थल॥ गुणाअतित
मोहैनिरमूल॥ ५०॥ दोहा॥ दिष्टिमुष्टिमेविक्रदे
अविक्रमोअविभावा॥ अमितामीमोअघटक
ह्या॥ नांसरुपघटकहाय॥ ५१॥ अज्ञान॥ अवि
द्याजाणिले॥ विद्याआत्मज्ञान॥ सबदविचार
मोवचनहै॥ सष्टअतिततिरनाम॥ ५२॥ मनबच
परैमोअनरबच॥ तहांनवांणीवाक्य॥ मोसित
तरारुपहै॥ अंकिटकाणमैताक्य॥ ५३॥ होमिष
अमैजातिमा॥ प्राजटहैलोहवत॥ अकिप्रवृत्त
प्रहवांति॥ कनैकरांनतैरहतहै॥ ५४॥ योउसर
प्रमउतरकहै॥ साखवाक्यप्रधान॥ पूछेजोकव
पूछणा॥ होमिषचउरमुज्ञान॥ ५५॥ विष्टवाच
बुद्धजोउमअकिपकह्या॥ मायाकहीजटार
प॥ जगकैमैकरिनयोहै॥ श्रीगुरप्रमअनूप॥ ५६॥
श्रीगुरवाच॥ जगउत्पानिमिषअवनकरिबरत

सकीरीत। अहप्रकारजगहैमयो॥ सोमुनिचितदे
 मीना॥ ५॥ जगउत्पत्तिश्रवणमुमकरो॥ वेदवेचन
 लेमनमैधरो॥ वेदमाहिसिधजैसैकह्यो॥ सोपेमे
 वजगउत्पत्तिमयो॥ ५॥ जैसैअग्निउपतुआपु
 ५॥ पनज्यौररखिकेप्रताप॥ रखिइपनजबमया
 संजोग॥ उपज्यो॥ प्रावकमहजबिघोग॥ ५॥ योम
 याबल्लभिलेसिधजबही॥ उपज्यो॥ जगमुनावतेत
 बही॥ मायाबल्लकेमिलेमंजारा॥ प्रावकरूपउ
 पज्यो॥ संसार॥ ६॥ दाहा॥ नांकछइच्छाआरसीन
 कछइच्छाभांन॥ अनइच्छतहीमेलाजया॥ उप
 ज्यो॥ अग्निप्रक्षन॥ ६॥ नांकछइच्छाबल्लके॥ नांक
 छइच्छामाये॥ अनइच्छतमेलाजया॥ जगतउपन्यो
 आ॥ ६॥ जगप्रावकमयोआपते॥ इपनसरमिला
 त॥ जगउपज्योआपते॥ मायाबल्लप्रताप॥ ६॥ ५
 इतीजगउत्पत्तिरनै॥ वेदकाप्रवांन॥ ६॥
 ॥ गिधवका॥ श्रीगुरुजीपेखिनतीसुनीजे॥ यासंका
 कोउतरदीजे॥ अनइच्छतजोबल्लमुमकह्यो॥ ता
 हीतैमनससैमया॥ ६॥ जोकछबल्लकेइच्छाना
 थि॥ काहेकवेदमाहियुकाथी॥ वेदमाहियैसैकह्यो
 न॥ योमैकह्योबहोतसोजाना॥ ६॥
 मैकरिकह्यो॥ ताहीतैमोहिसंमैमया॥

तामकरीजै॥ जथाकथाकचूर्णतरदीजै॥ ६६॥
श्रीगुरुवाच॥ शाधिबेदकी॥ दोहा॥ होसिष्यजैसैज
नि॥ ब्रह्मसदाश्रमईछहै॥ वेदजकीयाबधान॥
ब्रह्मजीतसोब्रह्महै॥ ६७॥ ब्रह्मकहावैसोइत
मैंसबदनपाईया॥ सहघटांतैहोये॥ घाटादिव
मायासबै॥ ६८॥ ब्रह्मसदाचेतन॥ मायाजठ
लोहचत॥ तामैकचूर्णनेदन॥ योसंसैशिष्यप्रहरो॥
६९॥ श्रीगुरुवाच॥ श्रीगुरुजीयेबिनतीहमारी॥ ब्रह्म
क्रियाजुमहमपक्षरी॥ ब्रह्ममायाकीबातजना
है॥ सोजैकहैसंक्यामनआई॥ ७०॥ मायाजोतुमज
ठवतकही॥ सोकैसंकरिचेतनमई॥ जठचेतनके
सैनयोमेला॥ कैसैब्रह्मनिरंतरिबला॥ ७१॥ कैसेब्र
ह्मनियाराधरहै॥ सबेबियापीकैसैअह॥ कैसैचेतनसु
न॥ प्रकास॥ कैसैघटघटकीपेवास॥ ७२॥ जठचेतनक
बातजनावै॥ जैमैहैतैसैसमकावै॥ ७३॥ श्रीगुरुवाच॥ स
सिष्यजैसैजान॥ मायाजोचेतनमई॥ सकलकरो
अध्यान॥ अ॥ ब्रह्मकरैउमसिष्यही॥ ७४॥ अथजठ
गत॥ दोहा॥ अंचुबककीसनास॥ जठ॥ लोहाउवि
यो॥ तूंचेतनकीसनास॥ मायाचेतनम॥ ७५॥ अथ
चेतनहिष्टत॥ जालोहापावककैगयो॥ तूंमाया
ब्रह्ममिलानमयो॥ अ॥ जठलोहातुंजठमाया॥ च

चकप्रावकचेतनमाया॥८५॥ अं लोहामैप्रावकधा
 या॥ त्प्रायांमैब्रह्मसमाया॥ अं जलजीवरदीप्ततार
 योमायांमैब्रह्मनिपाया॥८६॥ अं पावकेश्वरविभुत
 प्रकाश॥ त्प्रांहीब्रह्मनेजकीरासि॥ अंब्यापकहै
 गनिश्रयं॥ नांब्यापकब्रह्मसकलबिहमं॥८७॥
 ८८॥ दोहा॥ अं जलघटभैरविलसै॥ हैरविमविश्र
 काम॥ त्प्रांमायांमैब्रह्महै॥ रचितैमैप्रकाश॥८९॥
 इतीब्रह्ममायानिरूपणवेदवाक्यप्रवाणसंप्र
 न॥ शिष्यवैवाचं॥ परब्रह्मविश्वकारांघ्रिरूपसरीरका
 योडसप्रथमकारा॥ सोकैसैबपधेनहै॥९०॥ श्रीगुरुवाच
 ॥ सोरठा॥ मुनिसिष्यबपवित्तारा॥ जैमैहैतैसैकत्वातत्त्व
 तह्निरकारावर्तपचप्रचकां॥९१॥ अं नंदरसंगपजी
 चाया॥ त्प्रांहीब्रह्मसंगपजीमाया॥ अंधिरनंदरका
 याचलरूपा॥ त्प्रांहीब्रह्मथिरमायात्रमकण॥९२॥
 ब्रह्मसताचेतनमर्माया॥ तिनहीघेहप्रधंचम
 नाया॥ मूलप्रकितगुणात्मात्मकहीये॥ रजसत
 तमंगुणातीन्यंतहीये॥९३॥ ब्रह्माविष्णुमिवत्रि
 गुणसरूप॥ पंचतततैरचैश्रवण॥ विष्णुजलश्रे
 रपावकयोना॥ पंचगगनिकीयामतिमहान्॥९४॥
 दोहा॥ पादुकेप्रपचयेह॥ त्रिगुणतत्त्वसुखदि
 शिमिशिमैजोनया॥ प्राकृतजाकोद्वेद

अस पंचतत्त्वैः॥ तिनको नयो सरीर॥ सो अब च
 न करत हूँ॥ निन्य भिन्न रेखीर॥ १०६॥ अथ ब्रह्म
 रत्न॥ प्रिथी अस शरीर है॥ अस चरम और म
 म॥ महा कवोर नि नाव पेह॥ फिरि प्रिथी मै बास
 १०७॥ जल का अस लौह क ह्या॥ पावक जाये मु
 च॥ जल नाई घट मै फिरै॥ छेद बहे बहि जाण॥
 पावक अस सो ते जहै॥ ना नित लै है बास॥ सबै
 हार निछ न करै॥ न्यल गै फिरि नास॥ १०८॥ च
 य अस घट पौ न है॥ तीर सुखा वै सोय॥ फिरि फिरि
 पा सन गावही॥ आवत जाव जो पे॥ १०९॥ अका
 स अस घट पौ लि है॥ मुन्य धर्म तेई जाणि॥ आल
 स निशान ये करै॥ जटः अकार गति गंनि॥ ११०॥ सुने
 सिधद मशं दीया॥ सकल करौ विषांन॥ तान ईदीया
 कम ईदीया॥ पंचपंच प्रतांन॥ १११॥ पांचतत्त्व ते दस
 मई॥ कम ईदी और जान॥ सो अब चर न करत हूँ
 सुनि सिध चउ सुजान॥ ११२॥ प्रिथी संये दोनई नासा
 गुदा सो बीर॥ जल की ईदी ये करू॥ जिन्हा लिंग सरी
 र॥ ११३॥ नेत्र चरन कहे अगनिके॥ हाथा उचा उचा
 बाये॥ बाणी सरोत्र अकास की॥ देद मई दीया बताये
 ११४॥ कप्रद बाणी तीन॥ गुदा लिंग पंचम पुबीन॥ क
 म ईदी यो की ही पांच॥ इनका कीया नुगता वैसा च॥ ११५॥

१०॥ इति क्रम इति ॥ चक्षुःसरोऽभिप्रायिहाणा ॥ उवा
 र्त्तपचमप्रचाना ॥ ज्ञान इति पापेकं हीपां चार्त्तनाकाकि
 प्रभुगता वैसाचा ॥ १०॥ रूपरसगंधसौमिजाणा ॥ सबद
 सपरीपंचमप्रधाना ॥ कामकिरोधलोभमोह अहंका
 रपंचमजो सोहा ॥ १०॥ तनमाशपांचविधैव ॥ वेदात्म
 हियलियेहो ॥ सोरठा ॥ रूपहिर्गपज्योलोभ ॥ मोहजगप
 ज्योसबदत्तै ॥ रसतैजपज्योकिरोध ॥ काममप्रमहीव
 द्यौ ॥ १०॥ गंधमयो अहंकार ॥ विधैपांचइतकेकहे
 इतकेधरमप्रकार ॥ कहतबिहारीललअब ॥ ११॥
 रूपकोग्रहकचबहै ॥ जिन्यारसकोखादापांचइति
 एनासाकरै ॥ बांणीसरोऽन्नादि ॥ ११॥ येमप्रसतु
 प्रहचांनिहै ॥ सीतर्गभजो ज्ञान ॥ सबदन्नादिक्रम
 इतिपांसकौवनप्रसराना ॥ १२॥ पांचततदसइतिपां ॥ वि
 धैकहेतुनमीता ॥ अतःकरणचतुष्टय ॥ बरनईनक
 रीति ॥ १२॥ संकल्पविकल्पजातेउठे ॥ सोहीमनप्रद
 चांनि ॥ अभिनधरममनकाकह्या ॥ प्रांनैमानप्रमा
 ना ॥ १३॥ निश्चैकारजजोकरै ॥ अधिकहावैसोये ॥ ब
 वेककरैसबदत्ताका ॥ ताहीतैसबहोय ॥ १४॥ मली
 चातचितायेदे ॥ चितकरिराधैवान ॥ चित्ताचारजे
 चितवनी ॥ सोहीचितहेतान ॥ १५॥ अहंधरमजि
 सकाकह्या ॥ अहंकरैहैसोये ॥

जीवई नूँ मै होये ॥ ११७ ॥ बीस चारि न तये कहै ॥ नो
र प्रकृति प्रचीस ॥ यो सै ना म ब ज टः म द्र ॥ जीव चेत
बी चि ई स ॥ ११८ ॥ चौबीस जाग्रत कहै ॥ अस्थिर
प है सोये ॥ म नः को अवबर नीये जा का सुपना होये ॥
११९ ॥ पहला ब प्रवर न न किया हुआ कहें ब्रह्म न
लिंग म रूप जा सुक ह्या ॥ सुक्ति म जा को नां म ॥ १२० ॥
च पवन द म इंद्रीया ॥ सुन बुध म न ह त त्व ॥ सुमं सरूप
जा सुक ह्या ॥ सुक्ति म ब्रह्म की गति ॥ १२१ ॥ तीजा ब्रह्म
सुक ह्या ॥ सुप्रोपति है सोये ॥ मूल प्रकृत मायाये ह ॥
म न ह श्रौर चौबीस जा तै दोये न भा स द ॥ एक जा गे
ग दी स ॥ साधी नूत प्रची स वा ॥ १२२ ॥ तीजा ब्रह्म जा स
क ह्या ॥ जटः को कारन मूल ॥ ताही संये दो न ई सुब
म ब्रह्म अस्थिर ॥ १२३ ॥ तीन कहै मरी र ॥ श्रौर शिष्य
या जीव के ॥ जब लगत जैन बीर ॥ तब लग प्रकृति न
पाईये ॥ १२४ ॥ चौबीस जाग्रत न जे म न ह सुपन न हो
ये ॥ सुप्रोपती कारन न जे ॥ तुरीया सीमा है सोये ॥ १२५ ॥
जाग्रत की अ मिमित न जे ॥ सुपन न व्यापे रैन ॥ सु
प्रोपती म ह जे मिटे ॥ तुरीया प्रकासै चैन ॥ १२६ ॥ अ
जीयां चंत त सौ काया देह रुचा ॥ जहां आत्मा रां म
नै ब्रास की तां ॥ जटाकार की संगति पाये कै जी ॥ ज
द आ प्रमै आ प्रभु लाये दी तां ॥ १२७ ॥ इ स देह कंते ॥

सतमानिलीपा॥ जिनसतकंठादिअसलीकां
तनमनकंतजिकैरूपलघे॥ सबैकपसाशकदि
दीकां॥ १२॥ ततप्रदयोडसप्रमजो॥ जगजतप
तिप्रपंच॥ ब्रह्ममायासमादयेह॥ सकलजुवरनेम
च॥ इतीनिधबेद्यतमायापांविहारीकितप्रथमे॥
प्रभावः॥ अथउत्तीपोप्रभाववरनना॥ सिधुतवाच
॥ मोर्गी॥ धन्यश्रीगुरदेवजिनश्रेयोसंशोहस्यो॥ जी
वनयोजिहमेवसोमोहिबरनिमुनाईये॥ १॥ श्रीगुरुजी
प्रेकरोबधनां॥ ऐकब्रह्मकैसैमयोनां॥ जीवस
जोकैसैकरिपाई॥ सोबितांतकहोसमकाई॥ २॥ बदे
किपाकरिपाविधकहो॥ प्रबविद्यापीकैसैअहो॥ ३॥
कैसैचेतनमुतःप्रकासा॥ कैसैघटिघटिकीयोबास
४॥ कैसैसबहरहैनिपारा॥ जैसैकहोसकलवितार
कैसैजीवमयोधेनग्रा॥ जैसैबनौगुरुसबिग्रा॥ ५॥
श्रीमुक्तबाच॥ दोहा॥ मुनोसिधतुमप्रवृणकरो॥ दि
तरितधीतिलगाये॥ जैसैहैतैसैकहो॥ सबदनरम
देहनसाये॥ ६॥ सोरका॥ जूंमूरजहैरोका॥ तूंब
हमीप्रेकहो॥ जलघटमूरअनेक॥ तूंब्रह्मघट
घटबिधै॥ ७॥ अंरविमुतःप्रकासा॥ मुयंप्रकासतूं
ब्रह्महै॥ अंरविघटघटकास॥ तूंहीब्रह्मप्रतिवि
बघट॥ ८॥ जैसैगगनिअधंडहै॥ व्यापकहैस

बगये॥ तैसैबह्यअवडहे॥ व्यापिरह्योसबमाहि॥
 च॥ सबतैन्यारसबबिधै॥ जैसैकह्याअकास॥ जैसै
 हीयेहबह्यहे॥ न्यारप्रबनिवास॥ १०॥ अह्यसि
 दिसातगयोला॥ ज्यसिमपरतगगनमे॥ प्रितिबिब
 जलमाहि॥ मारुतसुंजलहलनहे॥ त्यसिमबीह
 तदिद्याये॥ १०॥ ज्यसिमअस्थितनमबिधै॥ त्यबह्य
 थिरप्रहचानि॥ प्रितिबिबजलहलनहे॥ अद्विया
 संगिअज्ञान॥ ११॥ ज्यसिमअज्ञितदेयीये॥ जलमारु
 तकेसंगि॥ त्यअज्ञितजीवआत्मा॥ चित्तओपाधि
 केअंग॥ १२॥ घटैबटैसिमकीकला॥ बह्यकलान
 रयूर॥ समदिधीसमदेप्रही॥ घडितमानकर॥ १३॥
 बसतबसुधिफिटकिहे॥ निमलज्यआकास॥ त
 निमलअधआत्मा॥ निमलअधेप्रकास॥ १४॥ सो
 रग॥ लालस्यामओरपीत॥ बस्तवरंगनफटकहे
 ओरोप्रतंगहीपीत॥ ज्यआरोपतिजीवनयो॥ १५॥
 ॥ सोरग॥ जवरंगलीयोउवाये॥ फिटकिअन्यास
 हीसुधवत॥ त्यजीवअधकहाये॥ संगतितजै॥ जी
 जठकी॥ १६॥ ज्यफिटिककहाबोलात॥ संगतिर
 गुणपाधिकी॥ त्यजीवआत्मतात॥ संगतिअंतःक
 रणकी॥ १७॥ अंतहकरणमकार॥ प्रितिबिबजीव
 आत्मा॥ मनअधिचित्तअहंकार॥ ज्यगिउगधिबिब

चारिकरीतबदसजरी॥ दीप्तैर्गवीपचीस॥ पचीसनेजी
तबकितलगी॥ कितमुंयवीरीस॥ शरीजैसैसरजके
उंदै॥ योगकरैनितकिता॥ सैसैजीवप्रकासमुं॥ तसइंदै
नकीबित्पा॥ २०॥ ज्यंमरजेदिलोकसना॥ रैनडनी॥ रहैसो
यो॥ सैसैजीवबिनइंदीयां॥ रहैजोम्रितगहोयो॥ २१॥ जो
बिनामबजतमझै॥ सैसैम्रितकहोयो॥ जीवसतामुं
जागही॥ ज्यंमरजगतिहोयो॥ २२॥ जीवसतामुंजाग
ही॥ ततइंदैमनप्राना॥ आपनीआपनीकितका
सबहीकौनप्राज्ञाना॥ २३॥ सुणोंसिधउमजीवकथा
जैसैनयोमुजीवा॥ जहप्रकारिवरननकरै॥ जैसीमं
ग्यालीव॥ २४॥ प्रमहंसप्रमात्मा॥ पारब्रह्महैजो
ये॥ मायाभाऊअभासतै॥ इसरकहादेसोये॥ २५॥
इसअंसजीवआत्मा॥ प्रितिविबवपमांही॥ जीव
रूपकेऔतरो॥ ज्यंदीपकघरमांहि॥ २६॥ जैसै
पीवकपेकहै॥ घटिघटिदीपकजोति॥ सैसैब्रह्मजै
येकहै॥ घटिघटिब्रह्मगहोता॥ २७॥ ज्यंरविप्रितिवि
बनीरसै॥ निरकाईथलमाहि॥ सैसैजीवपहचांद
निले॥ ससैकोईनांहि॥ २८॥ ब्रह्म
इसअंसजीवजानि॥ जीवलस्योमन
नबुधिवपलीयोमांनि॥ २९॥

वगये। तैसैबहुअष्टहै॥ व्यापिरह्यैसवमाहि॥
 ८॥ सवतैन्याससबविधै॥ जैसैकह्याअकाम॥ जैसै
 हीपेहबहुहै॥ न्यासप्रबनिवास॥ १०॥ अष्टवि
 दिष्टात्मा॥ ज्यमिमप्ररतागनमै॥ प्रितिबि
 जसमाहि॥ मारुतमुजलहलनहै॥ त्यमिमबीह
 नदिषायै॥ १०॥ ज्यमिमअस्थितनमविधै॥ त्यबहु
 थिरप्रहचानि॥ प्रितिबिजलहलनहै॥ अष्टवि
 संगिअज्ञान॥ ११॥ ज्यमिमप्रकितदेधीये॥ अलमारु
 तकेसंगि॥ त्यप्रडितजीवआत्मा॥ चित्तओपाधि
 केअंग॥ १२॥ प्रटैवहैमिमकीकला॥ बहकलान
 रद्वर॥ समदिष्टीसमदेष्टही॥ प्रडितमानकर॥ १३॥
 वसतवसुधिफिटकिहै॥ निमलज्यआकास॥ त
 निमलसुधआत्मा॥ निमलसुधैप्रकास॥ १४॥ सो
 रग॥ लालस्यामओरपीत॥ वस्तवरंगनफटकहै
 ओरोप्रतंगहीपीत॥ ज्यआरोप्रतिजीवनयो॥ १५॥
 ॥ सोरग॥ जवरंगलीयोउवाये॥ फिटकिअन्यास
 हीसुधवत॥ त्यजीवबहुकहाये॥ संगतितजै॥ जी
 नठकी॥ १६॥ ज्यफिटिककहाबोलात॥ संगतिर
 गउपाधिकी॥ त्यजीवआत्मतात॥ संगतिअंतःक
 रणकी॥ १७॥ अंतहकरणमजार॥ प्रितिबिजजीव
 आत्मा॥ मनउधिचित्तअहंकार॥ ज्यगिउगीप्रितिबिजै॥ १८॥

चारिकरीतबदसऊरी॥दीप्तैर्गरीपचीस॥पचीमनेगी
तबकितलगी॥कितसुंउपचीरीस॥थणोसैमहरजके
उदै॥लोगकरैनितकित॥तिसैजीवप्रकासमुंससइंद
नकीबित्ता॥२०॥ज्यंमजेबिलोकसना॥रैनडनी॥रहैमे
यो॥तिसैजीवबिनइंदीयां॥रहैजोमिन्नगहोयो॥२१॥जो
बिनामचजहप्रदा॥जैमैमिन्नकहोयो॥जीवसतामुं
जागहै॥ज्यंमहरजगतिहोयो॥२२॥जीवसतामुंजाग
है॥ततइंदीमनप्राना॥आपनीआपनीकितका
सबहीकौंमपाताना॥२३॥सुणोसिधउमजीवकथा
जैमैमयोमुजीवा॥जहप्रकारिवरननकरै॥जैसीम
णालीव॥२४॥प्रमहंसप्रमांत्मा॥पारब्रह्महैजो
यो॥मायामाकअभासता॥इसरकहावेमोयो॥२५॥
इसअंसजीवआत्मा॥प्रितिविबबपमांही॥जीव
रूपकेऔतसो॥ज्यंदीपकघरमांदि॥२६॥जैमै
पीवकपेकहै॥घटिघटिदीपकजोति॥तिसैब्रह्मज
येकहै॥घटिघटिब्रह्मगहोता॥२७॥ज्यंरविप्रितिवि
बनीरसै॥निराईथलमाहि॥तैमैजीवपहचांद
निले॥ससैकोईनांदि॥२८॥ब्रह्मअंसइसरकह
इसअंसजीवजांनि॥जीवलस्योमनअधिमे॥म
नबुधिवपलीयोमांनि॥२९॥ब्रह्मावतंसुंधीरूपहै

जलसंगतिकीयो जीव॥ असंगतिके प्रसादते॥ अ
ममत्पदपीव॥ ३०॥ सौम्य॥ जल॥ केजे ते धरम॥ जी
आरौपे आपमे॥ जीवनयो जह कम॥ आपमाहि
रपनकीये॥ ३१॥ धरम कम जो धेने के॥ धेने पलीने
मानि॥ तब ही जीव कहारो॥ जल संगति अस्तान
३२॥ आत्म बुद्धि सो बीस स्यो॥ भूल्यो आत्म ज्ञान॥ अ
संगतिके प्रतापते॥ सो भयो अस्तान॥ ३३॥ जल क
संगति प्रापे के॥ जीवनयो जल रूप सतचित्त आनंद
धेने करि॥ पस्यो अंधे रे कम॥ ३४॥ सिपत नयो म
हो मोहते॥ कियो बिधे मद्यान॥ अहंता वमद
मुच्छिको॥ अलिग सो सत ज्ञान॥ ३५॥ घट ऊरमी के
दसि प्ररो॥ होये गयो अति दीन॥ जे सै न प्रति रैन मे
निज दासी बसिकी न॥ ३६॥ न प्र अ धारी रैन मे॥ अ
यो यो वरी धारि॥ बाधिलियो निज चा करन॥ हाव
कर पुकार॥ ३७॥ दस सान न मे प्रे क प्रिया॥ ज्ञापते
उर दोर॥ अपने अपने लो भहित॥ धेने अपनी तो
३८॥ रनी॥ जमन इंडी खान ता॥ धेने त आपे आप
मगनाई बिचि आत्मा॥ प्रावे अति सताप॥ ३९॥
सिप उवाच॥ घट उरमी कहौ कौ न है॥ मो कौ
हो बतये॥ उम दिन को सै से हरे॥ श्री गुरु मनी

परराये॥४॥ श्रीगुरुवाच॥ घट्टेरमीसिधप्रवन
 करि॥ वारमौईनकीरीति॥ घट्टविकारमोजीवके
 घेघट्टकरमीते॥५॥ सुषडधमोहमानअप्रमान
 बुध्यानिषाजनमस्त्रितजानि॥ सीतउधहरध
 श्रीरसोका॥ घेघट्टेरमीजीवकेरोश॥६॥ ईनका
 कारनजटअज्ञाना॥ मूलअविद्यायेहीपिछानि
 अविद्यासक्तिजीवजबलई॥ तबसुधिवुधिसबईम
 कीगई॥७॥ अविद्यासक्तिबाधजबलीयो॥ तब
 हीजीवमजबगोकीयो॥ तबघट्टकीयोमृयाजंत
 तबहीनयोजीवघनता॥८॥ दोहा॥ अविद्याकेबा
 सहोयेके॥ कीकेकमअकम॥ कमफांसिमैआपे
 को॥ लागेजुवनीभूमा॥९॥ अविद्यावाक्सिबल
 जबपरी॥ तबनिजबुधिसबईसकीहरी॥ सतिचित्त
 ज्ञानहमल्यो रूप॥ सोतोपल्योअरमकेकपा॥१०॥
 जलसरूपलियोऊनमांनि॥ सतचित्तबिसर्योत
 बहीरांन॥ हाफचाप्रविष्टकीदेह॥ सोतोकहैमेर
 हैयेहा॥११॥ श्रीरीहहरजहैमेरो॥ गयोमराज्ञानमयो
 अवेरो॥ देहअनिमानजबेदेहकीपोवरनआसर
 प्रमांनितबलियो॥१२॥ सोको॥ वरनआसरमली
 योमांनि॥ जहईनमांतो॥ आपमै॥ तबहीनयोअ
 रान॥ मैमेरीममतालरी॥१३॥ दोपई॥ मैहोव

मरुमैहौं चनी मैरुं बाह्य शांमै बह्य चारी
दाता मैरुं निधारी ॥ ५० ॥ मैरुं जनी जोरी सत्यां
वैरागी सदा उदासी ॥ मैरुं पंडित बडा गियांनी ॥
मरुं कहुत जानी ॥ ५१ ॥ मैरुं सोचि सील न्य का
मैरा मरुं मेरी है नारी ॥ मैरुं तिबोर मैरुं तिसा
मैरुं तिबोर मैरुं तिकांशा ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ मैरुं
ता मैरुं कता ॥ मैरुं चर मैरुं प्रवीना ॥ मैरा जा मैरुं
मैरुं धन कलीना ॥ ५३ ॥ मैरुं जेत मम भिम सुंदरी ॥ म
नी चम बन मैरुं ॥ मैरुं गोरा सुंदर स्यां म मैरुं धनी
मैरुं वही दाम ॥ ५४ ॥ मैरा लिदरी मैरुं तिदीन मैरुं
दहा प्रश्राक्षीना ॥ मैरुं बाल कहुन ज्वांत ॥ मैरुं
तिमोटा निबल निक्षंत ॥ ५५ ॥ मैरुं तिगगा मैरुं ति
बोरा ॥ मुजिम म नलानदी मैरुं ॥ मैरुं तत बुधिम
दात तदरसी गंगा गो मती मैरुं तिप्रसी ॥ ५६ ॥ मैरुं
धन मैरुं ध्यो ॥ कैसै बूंद देव मैरा पी कवनां कीया
हाला कार करेव ॥ ५७ ॥ प्री मुत दार म मही मैरुं गिना
रह्यो ॥ नहि द्या कियो आक्षीना ॥ जीव संगों कापे कै
बेरी नयो मति हीना ॥ ५८ ॥ निज मरुं ज बहू लीयो
मठ की संशति पाये ॥ तेसै सिध बेली नयो ॥ बेली संश
ने न्याये ॥ ५९ ॥ केहर सुत ये कवन बिधे ॥ धेत
पन धाला ॥ न्या पावत है न्याये ॥ राधो बेली नहि

ॐ॥ नित ही सिंधवन जाये है॥ फिरि घरी आये सोये
 छेली संग छेली जयो॥ भुजबल ही नौ घोये॥ देखनि
 नुसरूप अवलिये॥ अजा रूप लीयो भानि॥ तितहा
 संगि बिचरौ करै॥ त्रै सो भयो अज्ञान॥ द्वि॥ ये कहि
 न ता कं बन बिधे॥ सिंध मिलौ ये क आये दो नौ देखे
 आये॥ दो नौ रहै रसाये॥ दृ॥ तब उन ई न सुं धं क ह्य
 न रे क म ति क हा की न्य॥ आया आया गवाये कै॥ छेली
 संग तिली न्य॥ दृ॥ ऐह तो तेरा नष्ट है॥ न ने क ही गज
 दिषाये॥ तब के हर सुत ग र जीयो॥ छेली ग ई प त्या ये
 दृ॥ ना हर संग ति ज ब करी॥ तब ही भई सं जार॥ हर
 प्र भ यो त ब सिंध सु ता॥ अजा पा ल ली यो म रि॥ दृ॥
 ॥ सिंध ब च न॥ पह ले ते न बि ग ङी यो॥ प्री छे मा र्यो
 तो हि नि ज क ल संग ति ज ब करी॥ तब सु धि य जी
 मो ही॥ दृ॥ श्री गुरु बा च॥ ते सै ही अज्ञान मन॥ जी व
 बि ग ङी आये॥ ई॥ ये न की संग ति क री॥ ज ग ब न
 में न र माये॥ दृ॥ ज ब पा क को ये गुर मिलै॥ सिंध
 चां त करै प्र मो धा॥ तब पा क नि ज ज्ञान होये॥ देखे
 आया सो धि॥ दृ॥ तां ते पा क चा ही ये॥ गुर सं स
 ति को पा र्य॥ गुर प ता प वि ज्ञान होये॥ चिं च रे श
 ई मारि॥ ७०॥ अब ही जाये जी व न त मे॥ पा वै अ प
 ना रूप॥ ते सै सं ध पि छां नो पो॥ अ प नां रूप म रूप॥ ७१

तातै जीव नै करै ॥ गुर के सर नै जाये ॥ हाथ जोड़ि
उपमां करै ॥ रहै चरन लपटाये ॥ ७१ ॥ सुने हाथ न
इये ॥ कब ने लहे जाये ॥ तन मन धन अरपन करै
जो कब गुरु मै पाये ॥ ७२ ॥ जो गुर कहै सो मांति
कपट न राखै चित ॥ गुर से छात त प्ररहै ॥ सावधान
सिध नित ॥ ७३ ॥ गुर प्रभु करि जानीये ॥ तिन को द
ये जग्यास ॥ गुर की अश्रु मर है ॥ सावधान हो प्रेदास
७४ ॥ अथ गुर प्रख्यामहा पुरष अंति सात्विकी ॥ स
क्तिवानमति क्षीर ॥ प्रने पगार उदार मन ॥ दया सि
धु गीतर ॥ ७५ ॥ नै सै गुर सु प्रखीये ॥ सुख जग्यासी
सीध ॥ श्री गुरु जी मोहि दी जीये ॥ सरूप ग्यान की
नीध ॥ ७६ ॥ सिधु उवाच ॥ बिन तीकरु कर जो रिखै
मन का कदा हेतांत ॥ गुर दिख्य मोहि दी जीवये
मदतिरवे को तांत ॥ ७७ ॥ श्री गुरु वाच ॥ जब गुर सि
ध प्रदया लहाये ॥ प्रथम कह्यो बैराग ॥ हो सिध मा
या मोहत जि ॥ सब ही का क करित्याग ॥ ७८ ॥ या हे
मत्त बैराग जो ॥ अति निरमल सुख दाये ॥ सो गुर त
हि डिटावही ॥ मदतिरवे को गोपाय ॥ ७९ ॥ या ही
को ह अरथ है ॥ यह जानि ले मोधि ॥ मंत्र अरथ
प्रलोक सुख ॥ दोनौ त जो असीधि ॥ ८० ॥ यह प्रथ
मे लोक सुख ॥ सो ही प्रिया जानि ॥ मंत्र अर्थ प्रलो

कसुष॥ मिथ्या वही पदचानि॥ ८२॥ बिलोकलोक
 तेन्यादिले॥ अरुनागापताल॥ बल्ललोकवैकुण्ठ
 सुष॥ येसमजानोकारा॥ ८३॥ बल्लाविल्लतेन्यादि
 ने॥ औरचौदहबिहमंडा॥ येसबमिथ्यारूपहै॥ इन
 कालकांडा॥ ८४॥ येसबमिथ्यारूपहै॥ नामदत्तमि
 प्रपेहा॥ सुषनांदीयेहउषहै॥ इनकातजोसनेह॥ ८५॥
 ॥ चौप्रशयेजोदीयेचौदहमवना॥ इनमेंफिरिफिरिअ
 मगवना॥ जोबुभकहैनिजनिग्याम॥ तोसबसुष
 जानोनिजफांस॥ ८६॥ जोबुभचाहोनिजकल्याण
 कार्यानिग्यामसमबसुषजाना॥ जबलगईतका
 करैनत्याग॥ तबलगहोयेनद्विद्वैराग॥ ८७॥ द्वि
 नवैरागमुक्तिनहीताता॥ द्वैरागविनांसबज्जीबात
 वैरागसमाननहीसाधनऔरा॥ जातेनिजगतिपावे
 और॥ ८८॥ दोहा॥ जबहीजायेजोजीभूतता॥ सबदिव
 होयेवैराग॥ सुतद्वाराधनधामतजि॥ सबकाकरिजि
 यत्याग॥ ८९॥ वैरागर्णदेसगुरसिधसुंकरै॥ जिग्या
 सीलेमनमैधरै॥ उपदेसगुरुकासत्यकरिजानै॥ पंच
 उपचअनित्यकरिजानै॥ ९०॥ जबजिगसीगहवैर
 ग॥ जीवनकारकरैसबत्यागायाप्रकारितंपदक
 तजै॥ असीपदबिल्लनिरंजजै॥ ९१॥ तंपदतजै
 तत्त्वपदसमावे॥ ततप

जगप्राप्ती जैसे करै। गुरप्रसाद भवसाग्रतिरै।
दोहा जीवमिटे जब इस होये। इसमिटे ब्रह्म
घट अकास-जो मिते। मरुकास महाकास
या प्रकारि जीव ब्रह्म होये। घट मरुकी जोरीति। त
द्वारा घजो बनीया। जो तुम पछोमीति॥ एधय
कार जीव मुक्ति होये॥ घट मरुजां दिष्टांत॥ तत
दत्त पद बरनीयो॥ जैसे लिखो बेदांत॥ एधय
गवाच॥ धरम रूप बरनन करै॥ श्री गुरप्रमक्रिण
ल॥ जाके किये जीव मुक्ति होये॥ आवा मिटे जजा
॥ १०० ॥ गुरवाचा॥ सी गो॥ प्रमधरमये हजां नि॥ स
हसो चितवन रूप की॥ आवा की होये हानि॥ जम
ममरण का मर मिटे॥ ए० प्रमधरमये हजां नि॥ जम
सत सतोष अहिसा दया॥ सब छिनिये हस मानि
चार सुनौ बिसार सु॥ ए० अथ सत बरनन॥ दै
॥ सत्य सुनना सताप घना॥ सत्य ही सब दनुवार
सत्य की चितवन नितिर है॥ जाका हिरदा मजार
॥ इती सहेत्ता ह॥ अथ सतोष बरनन॥ धो
॥ घण जो आप जु है॥ ताही प्रेम सतोष तहमा अधिक
भरही॥ ताकी रज सु मोक्षि॥ १००॥ इती सतोष
अहिसा बिबुजित बरनन॥ मन करि घातन
मोना॥ तन करि डूबे न कोये॥ बांणी बांशुन

मांरीये॥ घातनकाहोये॥ १०७॥ इतीहिंम्याविबु
 जत॥ अष्टव्यावरनन॥ अष्टव्याकचदेवशां॥
 वशीदयाजीवजाणि॥ उष्याकीअन्यापालना॥
 अथासक्तिकेवदंन॥ १०८॥ इतीदयानिरनै॥ च्यारिया
 वकहैधरमके॥ सबकौयेहअधिकार॥ धरममल
 वरननकीये॥ अष्टव्यायेहच्यारि॥ १०९॥ सिधउवाच
 कौनकमकनाअवसा॥ किनकाकरैजोत्याग॥ क
 रमअकमधिकरमजो॥ निनमिनकरौविभाज
 ॥ ११०॥ श्रीगुरुवाच॥ मुनैसिधचितदेकथा॥ जैसैक
 मप्रकारा॥ जोईसधितिकरनेकहै॥ सुरनिसमृद्ध
 सिमतसारा॥ १११॥ वरनअष्टमधितजोकहै॥ येस
 वक्रमजचारा॥ अवसामेवसोकीजीये॥ जैसैइवअ
 धिकार॥ ११२॥ अष्टमानादिकमुधता॥ दातिदेवनां
 द्यादासज्यादिकसत्यक्रमजो॥ हरिसेवासुरसिपाट
 ११३॥ नित्यनेमिताजोसुरतिकहे॥ जिवलगदेहअ
 मिमाना॥ तबलगकरनाक्रमयेहा॥ अरपनश्रीमग
 तांना॥ ११४॥ सत्यकरमनिहकांमकरिबोछ्याधरे
 नकोये॥ मिमलहोयेअरपनकरै॥ मिमपदप्रापति
 होये॥ ११५॥ इतेकरमकरयेकहे॥ जबलगदेहअ
 मिमाना॥ अज्ञाप्रानैवेदकी॥ करैक्रमनिहकांम
 ११६॥ इतेक्रम॥ अनापीनांसोदना॥

त्रिपात्याग नैव न वैव न क्षं वनां इनसुं हं प्रतिला
१११ ये सरीरके कम है सदा स ईच्छित होये इन
सुख मग्यारे र होये ह न्या प ही होये ॥ ११२ कहना
सुनतां पेषना सीतु मसन का शांत गंध शुद्ध मय ह
चां नना प्रतिक्षरो अग्नि प्रांत ॥ ११३ ये ईश्वर के
कम है इन सुं र हो जिले सुजात कनन होये जात
होये ह ज क हो स छेप ॥ ११४ इती प्रकार तो कम है
सुरतिक हे उचारि विक्रम सुनौ अक्षि प्रउम सो
हो लोकाचार ॥ ११५ लोकाचार जो लोक प्रति क
लाचार कतरीन स्वारथ हित ये की जीये वेद
बहोत विप्ररीत ॥ ११६ जवा है सांप सुहं प्रद्वारा
मद पांन ये विक्रम कहा वही स्वारथ हित जो तानि
११७ निदा चुगली ररषा सदा ये राई तात ईनै
रो जन ना परे सदा स मन संघात ॥ ११८ काम को
मद लो न मोह ये है सिद्ध विक्रम इन की ये नै पाप
ये छटि जाये निज धरम ॥ ११९ सिद्ध उदा न इन
सुके सै सुक्ति होई ये स म न्य सु म जो कम नो गे विम
म च्छट ही इन का ये ह जो धरम ॥ १२० कै प्रकार के क
म है के सै इन का मरम इन का मोहि वे तर कहै
प्रम फ्रि दे प ह न रम ॥ १२१ कम सकल सुगत बां
हे न ग व न प्र मे स गीता मै जो प्र म कहै अर जु न प्रि

त्वत्पदमा १२२॥ पाठो ॥ अथ स मे वसुगमवा ॥ कि
 नकर्ममुनश्चमुनजो ॥ ईनमौमुक्तिहोपेकवा ॥ जे
 मेहैमैकहो ॥ श्रीगुरुवाच ॥ १२४ ॥ दाहा ॥ मुनोपि
 यद्यवक्रमगति ॥ जेमेवेदबधाति ॥ संचित और प्रा
 लबधिकर ॥ कृपावांननीपेजानि ॥ १२५ ॥ चौपदी ॥ नि
 प्रकारिसिधईनकीरीत ॥ सोमुममुनोचितदेमीत ॥
 प्रथमसंचितमुणिलोतात ॥ पूरवजन्मकरेकन
 आपा ॥ १२६ ॥ जेमेगृहेमैअनलोधरै ॥ बहोतकालनक
 संग्रहकरै ॥ राखतराखतमयापुशनां ॥ छेचनलागा
 नाहिबिकानां ॥ १२७ ॥ तबेधीनीमनमाहिबिचोरा ॥ ता
 अनमैमशाएकनिकारा ॥ जबपेहमनकरिरैहैअ
 हारा ॥ तबफिरिअनलेखोरनिकारा ॥ १२८ ॥ दोहा
 जोजोअनपाछेरहै ॥ सोसोसंचितजानि ॥ जोजोतामुं
 नोगदी ॥ सोमुगतव्यप्रवांन ॥ १२९ ॥ मुगतव्यक्रमज
 मुकहो ॥ प्रालबधिसोहीजानि ॥ क्रियावांननासक
 ह्यो ॥ जोअवकरैबीक्षंन ॥ १३० ॥ मुगतव्यक्रममसोमो
 गदी ॥ जबलगरहैसरीरा ॥ संचित और क्रियावांनस
 जानीमुकताबीर ॥ १३१ ॥ जबलगमोगसरीरका तब
 लगमोगमोग ॥ मोगरहैजबबपगिरै ॥ हैप्रतिछग ॥

हैवानवेगमिहैतबसरगिरै ॥ त्रहीगतबपजानि ॥
 १३२ ॥ वेगमिहैजबसरगिरै ॥ त्रंज ॥

सुमुक्तिज्ञानी कह्यो ॥ लहे प्रमगति गोहा ॥ विषय
ज्ञानी ॥ अथ प्रबन्ध संध्या ॥ सौरवा ॥ येक संका नई
हि ॥ उमज कह्यो गुरवात ॥ येह ज्ञानी मुक्ति मोये ॥ संचि
और क्रियावां न सो ॥ १४४ ॥ दोहा ॥ सो कै सै करि मुक्ति
श्री गुरु देहो बताये ॥ यो अचरज मन भासही ॥ कै सै
कि कह्यो ॥ १४५ ॥ श्री गुरुदास ॥ बहोत घास को जो
सिध ॥ ज्यधरी पत घर भाहि ॥ जोर चक पाव क नंदो ॥ स
क न घास जरि जाहि ॥ १४६ ॥ त्यों हो ज्ञान प्रकास ते ॥ सच
क त सब जरि जाये ॥ क्रियावां न सयूं मुक्ति ॥ अहं विन कै
जताहि ॥ १४७ ॥ अहं धारिक ब की जीये ॥ सो अदमि भगत
ब ॥ ज्ञानी ती नो दो प्रहो ॥ ज्यधी रहो मिह च ॥ १४८ ॥
जीवन मुक्ति ज्ञानी कहा ॥ जा कै ज्ञान प्रकास ॥ बल
ज्ञान प्रकास ते ॥ जीवन मुक्ति बिलास ॥ १४९ ॥ प्रारवधि
क्रम सब भोग वै ॥ ज्ञानी तास मुक्ति ॥ जानै भोग सरीर
का ॥ करै बवै क की जुगति ॥ १५० ॥ दो प्रहो ॥ संचित और
प्रारवधि हि जाणि ॥ येहो मुक्ति सो ज्ञानी बछाणि ॥ सचि
त जरि ग्यां न प्रकास ॥ जै सै न रे पुरां नो घास ॥ १५१ ॥ प्र
लबधिक्रम सो भोग सरीर ॥ तास र हो ज न्या रां बीर
क्रियावां न सो धरै न स मता ॥ तास मुक्ति कहा बुधिवत ॥
१५२ ॥ उदासी न हो प करनी करै ॥ अथ अहं ग न ता मै
रे ॥ सुयना कार गति बरतै सोये ॥ देखै कौतिक साधी होये
१५३ ॥ दोहा ॥ ग्यां नी सबै ते मुक्ति है ॥ यां मै सै नाहि

ग्यानविशानप्रकासते॥ श्रीरवबेकवलमादि॥ १४५
बुधिवेकवलजोरसौगानीरहैअसंग॥ सावधानहै॥
येनिनिरेकरिवैरागअसंग॥ १४६॥ वैरागयुग
धरैसदा॥ जानीग्यानप्रकासा॥ सावधानहैयेवचि
रहै॥ फदेनमायाफारि॥ १४७॥ इतीग्यानकगविपा
कसप्ररणा॥ शिषउवाच॥ बसेषजोगकेअरथको
मैनहिजांमोमीता॥ मोकोबरनमुनाईये॥ जोकछई
नकोरीता॥ १४८॥ श्रीगुरुवाच॥ विद्वानांमहैदोषके
माकेकरैजयेका॥ जुगमजुगगजोयेकके॥ सोहीजो
गविसेया॥ १४९॥ प्रानअपानदोअयेकके॥ मनबुधि
येककेजाये॥ रविसिसिंदोनोसंगचले॥ धरणिगिग
नयेकजाये॥ १५०॥ आत्मप्रमात्मशिले॥ सुरतिनि
तियेकहोये॥ जोगअरथयेजानीये॥ दोमिलियेके
होये॥ १५१॥ बबेकअरथविचारहै॥ बिनविचारगर
अधा॥ जीवकाधरअबबेकहै॥ जांमैमुक्तिनिरबध॥ १५२॥
तीजानेअबबेकहै॥ नीअबाहरिमासा॥ बिनबबेकाजे
कछकरै॥ सोहीबधनफास॥ १५३॥ जोकछकरैवि
चारकरि॥ सोसुषरूपनधानि॥ बबेकसहायेकजी
वका॥ तांमैअरचनहानि॥ १५४॥ राजकियोजनका
दिकौ॥ करिवबेकविचार बिनविचारजगदुख
ही॥ अपैनरकमकारा॥ १५५॥ इतीवसेषजोगवि

॥ १४३ ॥ साधनजोग श्रम्यासके ॥ श्रीगुरुदेह
वताये ॥ जिनकेकीयेमुक्तिहै ॥ जोगजुगतिकेपा
॥ १४४ ॥ श्रीगुरुदेह ॥ जोगसाधनसिद्धिअचन
रो ॥ आवजोगकेअंग ॥ सोअखबरननकारतह ॥
नोआवप्रसंग ॥ १४५ ॥ आणाप्रमनवलीक्रम ॥ प्रि
त्यअहारजमनेम ॥ आसनधानेसमाधिगति
ऊसाधनधेत ॥ १४६ ॥ करमजोगयेहकहतह ॥
ताजलमतभाहि ॥ समाधननिजसूयके ॥ सुखस
धिदरसाये ॥ १४७ ॥ दोलासमदमततईव्याज
नवसाधनचारि ॥ अधमगतिअराधानां ॥ ज
न्यधिचार ॥ १४८ ॥ साधिजोगयेकहतहो ॥ त
मुजिहोये ॥ कमजोगनौकठिनहै ॥ ऐहअथ
ये ॥ १४९ ॥ तीर्थीश्रीगुरुप्रमक्तिपाल ॥ ऐहअ
ननकरो ॥ नित्यनित्यअरथाये ॥ जथाकथाक
वकहो ॥ १५० ॥ श्रीगुरुदेह ॥ मुनिशिषईनके
थको ॥ सबहीतप्रितिलगाये ॥ जिनके
होये ॥ तनप्रमात्मपाप ॥ १५१ ॥ पहलैसम
थमुनि ॥ अंतहकरणाहैचारि ॥ ईनकीअ
मकरै ॥ मनबुधिचितअहंकार ॥ १५२ ॥
दवनकरैदसईहीयां ॥ ऊमारगजानन
अरथयेहीकहा ॥ दसवसिकरिलेये ॥

ततकोइच्छानितिरहै॥ ततइच्छा कहीयेस
इच्छाबिनऔरजो॥ चाहनगपजैकोये॥ १६॥
इच्छा॥ कामकिरोधजोउपजही॥ ताकोफिरिहम
प्रचनसोबिबोलेसदा॥ यहउपमनिजमाधि॥
॥ उपसम॥ वेदेवचनऔरगुरवचन॥ ताद्वयम
॥ भावधीतिसंभानिलै॥ अथायेहएहचोदि॥
॥ अधा॥ सरवणभजनविद्याश्रमा॥ हनिदेव
॥ ता॥ सतसंगतिगुरकीदहला॥ नवधर्म
॥ इतीनवधा॥ पटनपत्नवनहकिटाई
॥ हरिधान॥ समरुमगदगदवचन॥ उमरु
॥ इतीनकि॥ पादकेप्रपंचयो॥
॥ इतिमुष्टिमैजोनया॥ प्राकितरु
॥ रमजाकाजहमया॥ कारज
॥ रूपनकासमै॥ नमन
॥ त्याविचारयेहाबिनआन
॥ नेसदा॥ मलअविद्यावै
॥ साआत्मविचारजो
॥ अजजमनामीआन
॥ सतपप्रमात्मा॥
॥ दीपवत॥ तेजउ
॥ यमो॥ सुपुष्ट

कह्यो॥ मुनिविषयचसुजान॥ १०॥ ईती कात्
 विचर अथासांघिजोग॥ कपलवचनप्रवा
 विषयवाच॥ बाणीचारिजोकोनहै॥ श्रीगुरदेह
 वताये॥ सबदकहातेउपजै॥ फिरिकहाजयेस
 ये॥ १०॥ श्रीगुरवाच॥ परापसंतीमधिमा॥ बेषड
 बाणीचारि॥ तिनकाअर्थअवनकरौ॥ नितानित
 प्रकारि॥ १०॥ परापसंतीहैमांनिमै॥ पारबिसहै
 न॥ अथमसबदतातेउठे॥ स्वासबायेसंगप्रान॥ १०॥
 पसंतीपूछनहीरही॥ बासाहिरदैअस्थान॥ गोपि
 नजागुपतहै॥ नरमसमैकीहानि॥ १०॥ मधिमांर
 वतीकवमै॥ करतीसदाविचार॥ पसंतीजोकछुगे
 ना॥ सोहीलेतीसुधारि॥ १०॥ बेषडीबासावाकादे
 बाहरिसहप्रकास॥ जेतीबाणीजगतमै॥ बेषडीक
 रेनिवास॥ १०॥ अथअंनविप्रान्त॥ बहकबह
 कला॥ रचकलागैआगि॥ कोनीसोगोलीचले॥ स
 सौहोयेअवाज॥ १०॥ धुनिउपजैनामितै॥ पह
 सबदजोआदि॥ हिरदैकवसोहोयेके॥ मुखसोक
 अवाज॥ १०॥ बाणीबेदजोसात्वकी॥ औरजवा
 णीहोये॥ अणमोबाणीआदिलै॥ बेषडीप्रगटेसो
 १०॥ मधिमांदिधैसोउपजै॥ बेषडीकरैप्रकास॥
 रथज्ञानसबबेषडी॥ जामैसबवनिवास॥ १०॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ इत्युक्तं नैवेद्यम् ॥ वाणी चारि
 करी ॥ निम्न निम्न कियो विनाग ॥ इत्युक्तं
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ जज्ञासी प्रतिबोध ॥ प्रह्वते नरे
 ॥ आत्मनिरनै सोधि ॥ अथा कथा करि उचरे
 ॥ उक्तं वाच्य ॥ श्रीगुरुकरो वधान चारि नमः ॥
 नहे ॥ हज कौना ही ज्ञान ॥ क्रिया सिधिरुच
 ॥ ॥ १८ ॥ श्रीगुरुवाच्य ॥ दोहा ॥ करु सिध मुनि नृ
 ॥ उमे ॥ चारि करु वधान ॥ जागृत मुप नमुषे
 ॥ चौथी उरी पा जानि ॥ १८ ॥ प्राचन तते नृ
 ॥ श्रीरघु किन पचीम ॥ जामै सब जागृत रहे
 ॥ ता कौईम ॥ १९ ॥ जागृत वासा च छे मे ॥ नृ
 ॥ जहां नृकार ॥ नृम मा नीरु जमत हा ॥ नो
 ॥ थल नृपार ॥ १९ ॥ जागृत मै जो कित कर
 ॥ सो मुप नीरु रूप धरि ॥ बोधे बो
 ॥ १९ ॥ इती जागृत विस नृ वरुण ॥ मने त
 ॥ वासा के व नृवार ॥ मई ज नृ
 ॥ नृछिर तहां उठे वकार ॥ २
 ॥ नो गत हां नो गी पा ॥ बुधादिक सब
 ॥ ॥ नृरी पा मु नो मुषा

कह्यो॥ मुनिसिषचत्रुजान॥ १०५॥ ईतीकृत
 द्विचार॥ अष्टांसां प्रिजो॥ कपलवचनप्रवांन
 शिष्यवचन॥ बाणीचारिजोकोनह॥ श्रीगुरुदेहो
 बनाये॥ सबदकहांतेउपजै॥ फिरिकहांआयेसम
 ये॥ १०६॥ श्रीगुरुवाच॥ परापसंतीमधिमा॥ वैषड
 बाणीचारि॥ तिनकाअर्थप्रवतकरौ॥ नितानित
 प्रकरि॥ १०७॥ परापसंतीहैमांनिमै॥ पारबिसहैसा
 न॥ प्रथमसबदतांतेउठे॥ स्वासबायेसंगप्रान॥ १०८
 पसंतीप्रवतहीरही॥ बासाहिरदैअस्थान॥ गोपि
 नजागुपतहै॥ नरसमसैकीहांनि॥ १०९॥ मधिमांर
 वतीकवमै॥ करतीमहाविचार॥ पसंतीजोकछोप
 ना॥ सोहीलेतीसुधारि॥ ११०॥ वैषडीबासाबाकादे
 बाहरिसद्वृत्तास॥ जेतीबाणीजगतमै॥ वैषडीक
 रेनिवास॥ १११॥ अरजंनदिपंत॥ बरकब्रतन
 कला॥ रचकलागैआगि॥ कोनीसोगोलीचले॥ सुप्र
 सोहोयेअवाज॥ ११२॥ धुनिउपजैनामितै॥ पहल
 सबदजोआदि॥ हिरदैकवसोहोपेके॥ सुप्रसोकरे
 अवाज॥ ११३॥ बाणीवेदजोसात्वकी॥ श्रीरजवा
 णीहोये॥ अणमोबाणीआदिलै॥ वैषडीप्रगटेसोये
 ११४॥ मधिमांदिपेसोउपजै॥ वैषडीकरैप्रकास॥ अ
 रथज्ञानसबवैषडी॥ जांमैसबवनिवास॥ ११५॥

॥ इतीवांशो ॥ सोरवा ॥ बुद्धिजगन्नेधरा
वरननकरी ॥ निन्दानिन्दकियोदिना
कैश्वर्यको ॥ सोरवा ॥ जजामो धृतिवो
पदेसका ॥ आत्मतिरनेसाधि ॥ १०५
श्चमिधुवेवाच ॥ प्रोपुसकसेचयान
स्याकौनदे ॥ हनकौनादोजान ॥
सबहो ॥ श्चवाप्रोपुसकाच ॥ चोदा
वस्याउमे ॥ आदिंकसेचयान
पते ॥ चोथाउगपाजानि ॥
दिले ॥ न्प्रोपुसकिनपचाम
उत्साताकोइम ॥ शो ॥ १०६
छिजवांनका ॥ १०७
गवस्यखनपा ॥ शा ॥ १०८
नाताकमनपा ॥ सो ॥ १०९
धनपार ॥ ११०
वकीच ॥ १११
निमनी ॥ ११२
पुंममवेतोमचिवांता ॥ ११३
मन ॥ ११४
नि ॥ ११५
म ॥ ११६

कह्यो॥ मुनिविषयचमूजान॥ १०५॥ इतीत्यादि
विचार अष्टांशप्रियोजा॥ कपलवचनप्रवा
शिववाच॥ बाणीचारिजोकोनहै॥ श्रीगुरुदेह
बनाये॥ सबदकहांतैउपजै॥ फिरिकहांजयेस
ये॥ १०६॥ श्रीगुरुवाच॥ परापसंतीमधिमा॥ बेध
बाणीचारि॥ तिनकाअर्थप्रबनकरै॥ निनानिन
प्रकारि॥ १०७॥ परापसंतीहैमांनिमै॥ पारबिसहै
न॥ प्रथमसबदतातैउठै॥ स्वामबायेसंगप्रान॥ १०८
पसंतीप्रबनहीरही॥ बासाहिरदैअस्थान॥ गोपि
नजोगुपतहै॥ नरमसमैकीहांनि॥ १०९॥ मधिमांर
वतीकवमै॥ करतीसदाबिचारा॥ पसंतीजोकब्रज
ना॥ सोहीलेतीसुधारि॥ ११०॥ बेधडीबासाबाकहै
बाहरिसहप्रकास॥ जेतीबाणीजगतमै॥ बेधडीक
निवास॥ १११॥ अजंनदिहंत॥ बरकब्रजतज
फला॥ रचकलागैआगि॥ कोनीमैगोलीचले॥ सु
गोहोयेअवाज॥ ११२॥ यंनुनिउपजैनामितै॥ पह
बदजोआदि॥ हिरदैकवमैहोपेकै॥ सुप्रमैकरै
प्रजाज॥ ११३॥ बाणीबेदजोसात्वकी॥ औरजवा
होये॥ अणमैबाणीआदिलै॥ बेधडीप्रगटैसो
मधिमांदिमैउपजै॥ बेधडीकरैप्रकास॥ अ
रतानसबबेधडी॥ जामैसबवनिवास॥ ११४॥ इती

॥ इती वाणी ॥ सोरवा ॥ ब्रह्म ज्ञान वैराग्य ॥ वाणी चारि
वरन न करी ॥ निन्य निन्य कियो बिनाग्य ॥ ब्रह्म माया
के नरथ को ॥ सोरवा ॥ जज्ञा सी प्रतिबोधा ॥ प्रह्न उतर
पदे सका ॥ आत्म निरनै सोधि ॥ अथा कथा करि उचरे
॥ सिधु उवाचा ॥ श्री गुरु करौ वधान ॥ चारि नव
स्था कौ न दे ॥ दम कौ नाही ज्ञान ॥ क्रिया सिधि नव
सब है ॥ १८ ॥ श्री गुरु उवाचा ॥ दोहा ॥ करु सिधु मुनि न
वस्था उमै ॥ आरु करु वधान ॥ जागृत सुपन सुष
पनी ॥ चौथी उरी पा जा नि ॥ १९ ॥ पांचतन तन्या
दिले ॥ सोरव किन पचीस ॥ जामै सब जागृत रहे
ब्रह्मा ता कोईस ॥ २० ॥ जागृत वासा च छे मै ॥ न
छिर जहां नकार ॥ नृम मा नीरा जस नहा ॥ मो
ग नृस्थल नृपार ॥ २१ ॥ जागृत मै जो किन कर
ना नाक म नृपार ॥ सो सुपन दो रूप धरि ॥ बोधे बो
ध नृपार ॥ २२ ॥ इती जागृत बिस नृवस्था ॥ सन
सका जहां धनिया ॥ वासा कंठ नृवार ॥ सई ज नृ
जि मानी बिस नन हा ॥ नृछिर तहां उवकार ॥ २
३ ॥ मन वै मो गत हां मो गीया ॥ बुधा दिक सब
तन ॥ सुपन नृवस्था एक ही ॥ उरी पा सुनौ सुष
पि ॥ २४ ॥ महा धोर ज वसा तहां ॥ सके क बून नो रात
म ॥ गुण रुद्र सा देवता मख माया को वीर ॥ २५ ॥ नृ

कह्यौ॥ मुनिसिष्यचत्रपुजान॥ १०५॥ रीति कृत
निवार अष्टासां धिजोग॥ कपलवचनप्रधान
विषयवाच॥ बाणी चारिजो कानहे॥ श्रीगुरुदेहो
वताये॥ सबदकहां तैउपजै॥ फिरिकहां ज्योपसम
ये॥ १०६॥ श्रीगुरुवाच॥ परगपसंतीमधिमां वैषड
बाणी चारि॥ तिनका अर्थ अवनकरौ॥ निना निन
प्रकारि॥ १०७॥ परगपती है मां निमै॥ पार विहस है श
न॥ प्रथम सबद तां तैउवे॥ स्वास वाये संग प्रान॥ १०८
पसंती प्रह नही रही॥ बासा हिरदै अस्थान॥ गोपि
न जागु पत है॥ नरम समै कीहां नि॥ १०९॥ मधिमां र
वती कवमै॥ करती सदा विचार॥ पसंती जो कछु उ
नां॥ सोही लेती सुधारि॥ ११०॥ वैषडी बासा वाकदे
बाहरि सद् प्रकास॥ जेती बाणी जगनमै॥ वैषडी क
रे निवास॥ १११॥ अजंर दिष्टा॥ बरक छटत ज
कला रंच कला गै आगि॥ कोठी सो गोली चले॥ सुष
सो होये अवाज॥ ११२॥ धुनि न पजै ना निते॥ पहल
सबद जो आदि॥ हिरदै कठ सो होये कै॥ सुष सो करे
अवाज॥ ११३॥ बाणी वैद जो सात्वकी॥ और जवा
णी होये अणमो बाणी आदिले॥ वैषडी प्रगटे सोये
११४॥ मधिमां द्विये सो उपजै॥ वैषडी करै प्रकास॥ अ
रथ सो न सब वैषडी॥ जांमै सबद निवास॥ ११५॥

॥ इतीवांशः ॥ सोरवा ॥ ब्रह्मसांनंदेराग ॥ बाणी चारि
वरनन करी ॥ निन्य निन्य कियो बिनाग ॥ ब्रह्ममाया
के अरथ को ॥ सोरवा ॥ जसायी प्रतिबोधा ॥ प्रह्न उतर उ
पदेसका ॥ आत्मतिरनै सोधि ॥ अथा कथा करि उचरे
॥ सिध उवाच ॥ श्री गुरु कसै ब्रह्म न चारि नद ॥
स्था कौन है ॥ दम कौन नाही ज्ञान ॥ क्रिया सिधि न ब
सब है ॥ १८ ॥ श्री गुरु उवाच ॥ दोहा ॥ करु सिध मुनि न
वस्था उमे ॥ आदि करु ब्रह्म न ॥ जागृत सुप न सुष
प नो ॥ बौधो उरी पा जानि ॥ १९ ॥ प्रांचत त ते न्या
दिले ॥ श्रीरथ किन पचीस ॥ जामै सब जागृत रहे
ब्रह्मात्मा कोईस ॥ २० ॥ जागृत ब्रह्माच चक्षु मे ॥ न
छिर जहां नकार ॥ नृम मां नीरा जस नहा ॥ नो
ग नृस्थल नृपार ॥ २१ ॥ जागृत मै जो किन कर
नां नाक म नृपार ॥ सो सुप नो दो रूप धरि ॥ बांधे बो
ध नृपार ॥ २२ ॥ इती जागृत ब्रह्म नृवस्था ॥ मन त
तका जहां धं निपा ॥ ब्रह्मा कंच नृधार ॥ मई ज नृ
निमानी बिस नन हां ॥ नृछिर तहां उदकार ॥ २
३ ॥ मन वै नो गत हां नो गीया ॥ बुधादिक सब
तत ॥ सुप नो नृवस्था ऐक ही ॥ उरी पा सुनो सुष
प ॥ २४ ॥ महाधोर ज ब्रह्मा तहां ॥ मूकै कचन नो रात
म ॥ गुण रूपा देवता ॥ मलमाया को वीर ॥ २५ ॥ नृ

[illegible]

वत॥ जांशौरं कनरावा ॥ २४ ॥ पंचभूतनात्मकीति
 शि॥ त्रिगुणतमजोदेह॥ निजसरूपविननांसमव
 द्वादिप्रियायेदेह॥ २५ ॥ उरीप्रानोमिकातासक
 जनेतधुनिप्रकाश॥ प्रप्रवृत्तसोवृत्तदे॥ चेतन
 तत्सर्वज्ञनाददगाजो॥ प्रधुजानमोमिकावसिष्ट
 सनेसनेतामैमतदीजो॥ २६ ॥ गुरदेवप्रताप्रादिपु
 रवहमरेप्रभूतदेहोपेसर्वप्रकाशैकहीजोसम
 नो॥ २७ ॥ श्रीमुहूर्तदेहोमुद्रासकलप्रवृत्तकरो॥ सक
 लकरुविद्यानाप्रहलेईनकांममुनि॥ पीठेश्वर
 यन्योनो॥ २८ ॥ दोहा॥ प्रेचरीमूचरीचाचरीनमो
 चरीउतमनीपांचा॥ महामुद्रावृत्तवैकूण॥ पाताज
 लमतसांच ॥ २९ ॥ प्रथमप्रेचरीकोमुनिनूरथ
 विदांतसिधांतमैहोपेसमरथ॥ बेदवाक्यगुरकीप्र
 तीत॥ नूपनीनूनमोमोतेमीता॥ ३० ॥ गुरप्रतीत
 मंनोयेकरै॥ फिरमनसमैकोईनहिधरै॥ जांनम
 सिकंडितनूतजहै॥ ग्याननूडितकरिपायेमलद
 है॥ ३१ ॥ चेतनब्रह्मतवहोपेप्रतापजोगीनित्य
 करैनूभास॥ ग्यानजोगकोईजोडीजहै॥ तांमैस
 मेलसनरहै॥ ३२ ॥ दोहा॥ प्रेचरीमुद्रामुद्रबसोद्वि
 प्रदीकरैनूभास॥ जोगीनूननवहोलीये॥ बेध
 डीकरैनिवास॥ ३३ ॥ प्रतीप्रेचरी॥ मूचरीनांसांमैरहै

नका नावमुनि॥ प्रीति नरथ वधानि॥ ४५॥ सत्य चि
तना तंदरु है ता नृज नृक्रिये नृचल नृनं ता मु
धब्रह्म कुरु सहे॥ नृात्म सदा मुंतता॥ ४६॥ नृथ
सति निरुणै॥ सति नां वजी ते क ह्यौ॥ नृप्र नै सत्य
नृधर॥ सति सति मुलोक सवा॥ चाटे शि शनि मंज
रा॥ ४७॥ चेत नृनां वजा ते क ह्यौ॥ मुयें मे व च त नृ
ज ब दिक चेत न कीये॥ जा ते चेत न म न्या॥ ४८॥ नृ
नंद ना वजा ते क ह्यौ॥ औ है ति ज नृ नंद॥ आ के नृ
नंद ले स स॥ नये त्रि लोक प्रथमा॥ ४९॥ नृदे त नां वज
ते क ह्यौ॥ जा मै ह जा नां हि॥ नृा प्र नृा प्र मै नृा प्र ह्ये
ज्यं जल बो ला मां हि॥ ५०॥ नृज नां वजा ते क ह्यौ॥
नम रण संहि ना॥ नृज नृभि नां सी जा वंता॥ नृा प्र
नृा प्र मै ली न॥ ५१॥ नृक्रिये नां वजा ते क ह्यौ॥ ता
मै क्रि प्र नां हि॥ करण क रं वृण तै रह ता॥ क्रिय
दिक जिम नां हि॥ ५२॥ नृचल ना वजा ते क ह्यौ॥
सदा नृचिंत नृरत॥ चल नां म मां प्रा क ह्यौ॥ नृा त
है नि ह चल॥ ५३॥ नृने त नां वजा ते क ह्यौ॥ नृा प्र
र मे व प्र था न॥ सुर त र मु नी बि द्या दिक॥ निति न स व
शानि॥ ५४॥ मुध ब्रह्म जा ते क ह्यौ॥ औ मै क ह्यौ जो
नां न॥ मुयें प्र का स प्र का स है॥ व्या प्र क प्र व स थो
न॥ ५५॥ कुरु न रूप नै सा क ह्या॥ जै मै नृ

ये ॥ जंकात्तु नो तमससा ॥ घटैव हेतु ही कोये ॥ पदे
 न्यात्मनां वजा ते कस्यो ॥ आप न्याप मै न्याप ॥ जैम
 मैनेसा नया ॥ देसाही रस्यो व्यापि ॥ ५० ॥ सुत तना वजा
 ते कस्यो ॥ काक कस्य न होये ॥ आप न्याप ते गपजी
 या ॥ कस्या हस्या न ही कोये ॥ ५१ ॥ ईती उवाच सना
 ॥ ५२ ॥ नैसा जो प्रमात्मा ॥ पारब्रह्म चिद रूप ॥ सब क
 सायी ज्ञान वत ॥ मोहिं प्रनेरा रूप ॥ ५३ ॥ जुराव
 तपन जन्म मिति ॥ देह धरम पहजां नि ॥ लो न मे
 ह गुण वन है ॥ बुद्ध्या विषा प्रो न ॥ ५४ ॥ सकल प्रबिक
 ल प्रपा प पुन ॥ राग दोष हरष सो ग ॥ ये सब मन के
 धरम है ॥ तनिर वैर न्युरोग ॥ ५५ ॥ मां न न्याप मां तने
 न्या दिले ॥ लोर मुन न्य मुन जो क्रम ॥ इन मै तेरा न
 ही कव ॥ ये सब मन के धरम ॥ ५६ ॥ मन की न्या व
 बुधि है ॥ तिन काम न ग जीर ॥ जा सं सब सं चै करै
 सो लो मन है वार ॥ ५७ ॥ निश्चै कार ज जो करै ॥ ब
 हा दो सोये ॥ सो नी त बुधि नां कव्या ॥ बुधि बि
 मै होये ॥ ५८ ॥ नूली बान चिता पदे ॥ चित क
 व सोये ॥ सो नी त चित नां कव्या ॥ चित चित मै है
 ५९ ॥ ६० ॥ न ह धरम जिस का कव्या ॥ जो है न नि न
 हंकार ॥ तं न चित चित वन परे ॥ निमं चि न हंकार
 ६१ ॥ तं न चित चिद रूप है ॥ सदा नित्य निरचा है

मेहमातेरीक्याकहं॥ तूगं नीर न्याहा॥ ६०॥ न
 नदकरणचतुष्टये॥ इनकीसकलउपाधि॥ ये जट
 मायातत्त्वै॥ चेतनउहीन्यागाध॥ ६१॥ ये जो माया
 ईश्वीया मिथ्या सकल न्यासा र इनका तमाही सदा
 सबरुजां न नहारा॥ ६२॥ सत्त्वित न्यामद रूपत्वा
 राते परै न्याय॥ ये सैनां सब जट मई चेतन त्व बिन्धि
 न्या॥ ७०॥ बंधन तो कै ये ही है॥ फिरि फिरि माने दे
 हा देह धेह होये जायेगी॥ तेरा रूप न रेहा॥ तेरा रू
 प ज्ञान है॥ मुक्ति रूप निरबंधा॥ बधि मुक्ति ते ब
 हिरा॥ संत चितानंद मुकंद॥ ७१॥ सब उपाधि
 ते रहित है॥ बाकी सब की जोये मत बच पर सात
 तगं॥ शिर सरूप त होये॥ ७३॥ सुप्रसुध उरी प
 तही॥ सुप्रकास प्रकास॥ अनरहा कि नृ स्थित
 सदा॥ सुप्रतिष्ठान सुप्रशसि॥ ७४॥ निरमोह निरले
 मरे॥ निरबिकल प्रतिज्ञांता॥ नारायण निरवे
 रत॥ नितानांद निज ध्याना॥ ७५॥ निरप्रपंच नित
 कामं॥ निरविकार निरक्षर॥ नित्य निरजन
 निरगुणा॥ निरमेत निरभार॥ ७६॥ निरमासक
 नही कौधत॥ निह न्यछर निरमान॥ नृ केवल
 निकल्पत॥ निज सरूप निज ध्याना॥ ७७॥ निर
 रमक निज बोधत॥ नेतानां प्रकटांश नंतर बां

रिभजनविन॥ कबनत्रावेहाथ॥ १२॥ क
रसंगीदोयजना॥ येकबैसनयकरांम॥ वैदा
मुक्तिका॥ वैमुमरावेरांम॥ १५॥ कबीरबनव
फिस्था॥ कोरनअपनेरांम॥ रांमसरीषाजम
ले॥ निनसारसबकांम॥ १५॥ कबीरसादिननि
ला॥ जादिनसंतमिलाय॥ अकनरंभरिनेदि
पापसरीरांमजाय॥ १६॥ कबीररांमरांमरदिवोव
निमदिनसाधनसग॥ कहोजीकोनबिचारते॥
होनेनूलागतंरग॥ १७॥ मनदीयाकरुऔरही॥ त
साधकसग॥ कहकबीरकौरागजी॥ केमलाउ
रांम॥ १८॥ कबीरसाधिशबदबहुमुन्या॥ मिद्य
नमनकावाग॥ सगतिमेंमुक्षस्थानही॥ तोकाब
माअभाग॥ १९॥ कबीरसगतिसाधकी॥ जोकरिजा
नेकोय॥ चंदनतेबनचंदनमया॥ वासमनचंदम
होय॥ २०॥ कबीरचंदनकेद्वारे॥ बंधाआकपल
स॥ आपसरीषाकरिलिया॥ जोहोतेउनपासि॥ २१॥
कबीरमलीयागरकोवासमें॥ बिछरहेसबजोय
काहेगुनचंदनभागे॥ पैमलीयागरनहीकोय॥ २२॥
कबीरमलीयागरकोवासमें॥ बंधातकपलासब
मनकबहुबेधीया॥ जोरहेजुगेजुगपास॥ २३॥ क
बीरमलीयागरकेपेस॥ सरपरहेतपदाय॥ रंम
हमबिपजीनीया॥ अमनकहासमाय॥ २४॥ कबी
रचंदनजैसासंतहै॥ सरपजीसाससार॥ वाकैत्र
लपद्यारहै॥ भागेनहीबिकार॥ २५॥ कबीरचं
गुरदेकसुनसै॥ प्रतिरबिगारेवास॥ सुगरा
रपैनिगुरसै॥ पूजगसुनपेदास॥ २६॥ कबीर
रीकीआधीधरा॥ भावनकिमेंभाग॥

पलहीचनीममकायकानमोपनिषाकबीरजा
पलदरसनसाधका। तापलकोबलिहारिरामना
वरसनाबसे। नीजेजन्मसुखसि। २४० कबीरतेदिने
गयेकरकारणी। संगनिमईनसंता। प्रेमबिनांपस
जीवना। नकिबिनांमगदना। २४१ कबीरजाघरमे
किनही। सतनहीमिफसाना। ताघरिजमूडेरदी
याजीवतअप्रेममाना। २४२ कबीरप्रिधिसिधिमार्ग
नही। हरिउमयेमोगप्रदा। नितप्रतदरसनसाधका
कहेकबीरमोहिदहा। २४३ कबीरमेरामनहंसारमे
हसागगनिरहाया। बुगलामनमानेनही। धरिऊंगन
फिरिजायउर। कबीरतासोसंगकरि। जोरनूजेदेरा
पराजारांमोब्रजपती। रामबिनांदेकांम। २४४ कबी
ररामबुलावाजेजिया। दीयाकबीररोय जोसुधसाध
संगमे साबैकंठेनहोय। २४५ कबीरयाईकोटका। प
नीपीवेनकोय। जायपरैजबगंगमे। प्रबगंगोदिकहे
या। २४६ कबीरमनपंथीभया। मनमानेतहांजाया। जो
जेसीमगतिकेरो। सोतैसाफलयाय। २४७ नंग। २४८
। साधी। २४९ प। २५० अथन्रसाधकौन्रगा। कबीरजेतामी
ठाबोलना। तेतासाधनजानि। पहलीयादटिछायके
न्रवैदेसीन्रानि। २५१ कबीरऊजलदेखितधीजिये। छ
गज्जमांजैध्यान। धोरैबैठियेदिमी। धुलेहूडेन्रघान
२५२ कबीरजेधन्रतीनका। करततिरैन्रपराधाबाह
रिदीसेसाधगति। मांहीबडा। २५३ साध। २५४ कबीरबा
बीकहेबावरो। सरपनमास्याजाया। मूरप्रबवईना
ऊसे। सरपजगतकोषाया। २५५ कबीरसोमनहधका
टपकेकीयाबिनांस। २५६ काटिकाजीभया। २५७
नकाताम। २५८ कबीररेनिउ। स

समंजीदोयजना॥ येकबैसनंयेकरांम॥ वैदाता
मुक्तिका॥ वैमुमरावैरांम॥ १५॥ कबीरबनबन
फिर्या॥ कारनअपनेरांम॥ रांमसरीषाजमकि
ले॥ निनमारेसबकांम॥ १५॥ कबीरसादिननिरा
ला॥ जादिनसंतमिलाय॥ अकमरेभरिजेदिपा
पापसरीरांमजाय॥ १६॥ कबीररांमरांमरविबोक
निमदिनसाधनसगा॥ कहैजोकोनबिचारतेन
हीनैनुलागतंरंग॥ १७॥ मनदीपाकहूऔरही॥ तन
साधकैसगा॥ कहैकबीरकौरीगजी॥ कैमैलागे
रंग॥ १८॥ कबीरसाधिशबदबहुमुन्या॥ मिट्या
नमनकादाग॥ संगतिमैमुधस्थानही॥ लाकाब
नाअनाग॥ १९॥ कबीरसंगतिसाधकी॥ जोकारिजा
नैकोप॥ चंदनतेबनचंदननया॥ बासमनचंदम
दाय॥ २०॥ कबीरचंदनकैबिरे॥ बिद्याआकपल
म॥ आपसरीषाकरिलिया॥ जोहोतेउनपासि॥ २१॥
कबीरमलीयागरकोबासमै॥ बिछरहेसबजोय
काहेगुनचंदनभागे॥ पैमलीयागरनहीबोय॥ २२॥
कबीरमलीयागरकोबासमै॥ बिद्याकपलासाब
मनकबहुबेधीया॥ जोरहेजुगजुगपास॥ २३॥ क
बीरमलीयागरकैपेस॥ सरपरहेलपटाप॥ दूंम
हमबिषजीनीपां॥ अहूनकहांसमाय॥ २४॥ कबी
रचंदनजैसासतेहै॥ सरपजीसाससार॥ दाकैअ
लपट्यारहे॥ भागेनहीबिकार॥ २५॥ कबीरचं
दंमरदेकसुनसै॥ मतिरविगारैवास॥ सुगरा
रपैनिगुरसै॥ पूजगसुनरपैदास॥ २६॥ कबीर
रीकीआधीधरी॥ भावनक्तिमैजाय॥ सतसंगति

पलदरमनसाधका॥ तापलकीवलिहारि॥ रामना
वरमनाबसे॥ नीजेजन्मसुधारि॥ २४॥ कबीरतेदिने
गयेनकारणी॥ संगतिमईनसंताप्रेमबिनापस
जीवना॥ नकिबिनामगदना॥ २५॥ कबीरजाघरमे
किनही॥ संतनहीमिऊमांना॥ नघरिजमडेरादी
पाजीवतअपेसमाना॥ २६॥ कबीरपरिमिषिमाग
नही॥ हरिउमयेमागपहा॥ नितप्रतदरमनसाधका
कहेकबीरमोहिदहा॥ २७॥ कबीरमेरामनहंसारमे
हसागगनिरहाया॥ बुगलामनमानेनही॥ धरिऊंगन
फिरिजाय॥ २८॥ कबीरतामोसंगकरि॥ जोरनूजेदेरा
जाराजामोहचपाते॥ रामबिनावेकांमा॥ २९॥ कबी
ररामबुलावानेजिया॥ दीयाकबीररोय॥ जोमुयमाध
संगमे॥ साबेकठेनहोया॥ ३०॥ कबीरयाईकोटका॥ प
नीपीवेनकोय॥ जायपरैजहगंगमे॥ सबगंगोदिकहे
या॥ ३१॥ कबीरमनपंथीअया॥ मनमानेतहाजाया॥ जो
जेमीमगतिकरे॥ मोतेसाफलछाया॥ ३२॥ नंग॥ ३३॥
॥ साधी॥ ३४॥ ॥ नृप॥ नृसाधकौनृगा॥ कबीरजेनामी
ठाबोलता॥ तेतासाधनजानि॥ पदलायादटिछापके
नृवदेसीनानि॥ ३५॥ कबीरऊजलदेधितधीजिये॥ कु
गज्जमाकेध्यान॥ थोरैबैठिचपेटिमी॥ पलेबडेअग्रान
३६॥ कबीरमेअतीनका॥ करततिरैअपराधाबाह
रिदीसेसाधगति॥ माहीबडाअसाध॥ ३७॥ कबीरबरा
बीकहेबावरे॥ सरपनमास्याजाया॥ मूरषबबईना
ऊमे॥ सरपजगतकौआया॥ ३८॥ कबीरमोमनहधका
टपकेकीयाबिनांस॥ हधफाटिकाजीअया॥ कवाय
नकानाम॥ ३९॥ कबीररैनिपुरेवासरघुटे॥ बनिन

ह॥ साध्या करे ह कृत स्या॥ नैसां बह्या संनेह
कवीर साधु आवत देखि कै॥ मन मै करै मरोर
सो नौ होय गा दुहरा॥ बसै गांव के दोर॥ ४॥ आ
वत साधन हरि दिया॥ जान न दी पारोय॥ कहै
कवीर नादा सकी॥ मुक्ति कहाँ ते होय॥ ५॥ कवी
र साधु भूषा जावका॥ धन का भूषा नाहि॥ धन का
भूषा ते फिरै॥ ते तो साधु नाहि॥ ६॥ कवीर सा
आया पांऊं ना॥ सागै चारि रतन॥ धनी पां नी
थरा॥ मरधा सेती नून॥ ७॥ कवीर को जनमो
न प्रीत स॥ दी जै साधु लाय॥ नीवत अस होय ज
गत मे॥ अत प्रम पद पाय॥ ८॥ कवीर हूँ साधन
के संगि रहौ॥ अत कहूँ नही जाव॥ जो मोहि
र प्ये प्रीत स॥ साधन सुख होय पाव॥ ९॥ कवीर सा
ह मारी आत्मा॥ हम साधन का जीव॥ साधन मधे प
रहौ॥ ज्ये पै मधे धीव॥ १०॥ कवीर ज्ये पै मधे धीव है॥
नूर निरवा सब ठोर॥ बकता सरो ताव कु मिले
मथि काटै ते औ॥ ११॥ साधन दी जल छे मरम॥ नहा
पुछा लौ नृग॥ कहै कवीर निरमल मया॥ साधजन
के संग॥ १२॥ कवीर सोही दिन मला॥ जादि न साधमि
लाय॥ अंक मरे मरि नेटिया॥ पाप मरी रां जाय॥ १३॥
२॥ कवीर साध मिले लोहर मिले॥ अंतर ही नैरे प
मान साव्या चाक्रमना॥ साध आप नू लेष॥ १४॥ कवीर

। साधनही की देहा लघो
जो चाहै अलख को। जो ईन ही में लखित है। १॥ क
बीर साधन केरी दया है। जय जै बक सखी ने दा। को
टिहि धन पल में टरे। मिटै शक लख छुंटा। २॥ सु
देना छुं मेटना। हरि करन अपराधा। कहै कबीर
देक ब मिले। प्रम सनेही साधा। ३॥ कबीर हरि दर
बारी साधन है। ईन तै सब कब होया। बिगि मिले
राम को। ईन मिले जो कोया। ४॥ कबीर साधन जा
राम का। धर्म जो महा लां मां हि। औरन को धरा ल
जो ईन को प्रदा नां हि। ५॥ कबीर गृही में वै साध
को। साधु सुमरै राम। धर्म धोषा कब नही। सरे
ऊका काम। ६॥ कबीर जा घर साधन से बही। पार
दुख प्रति नां हि। ते घर मरहट सारया। नूतन से त
मा हि। ७॥ कबीर साधन की ऊपरी नली। नां साक
ट को गांवा। चंदन की चुकटी जली। नां बंद लकी
बन रावा। ८॥ कबीर पुर पटन सूख सब से। नान
दगं वैठां वा। राम सनेही बाहरा। ऊजर मेरे नां
९॥ कबीर है गे गे दर सघन घन। छत्र धजा फद
राया। तसुख तै निच्छा नली। जो हरि सुमरत दि
न जाय। १०॥ कबीर है वर गे वर सघन घन। छ
पती की नारि। ता सुपट सर नां बुली। हरि
पनि नां नि। ११॥ कबीर कं नृप नारी नि

ह॥ सांघाक गेह कस स्या॥ नैसां बह्या संनेह॥
कबीर साधु आवत देखि कै॥ मन मै करै मरोर
मानो होय गा॥ ६॥ हर॥ बसै गांव के वोर॥ ७॥ आ
वत साधन हरि धिया॥ जात न दीया रोय॥ कहै
कबीर नादास की॥ मुक्ति कहाँ ते होय॥ ८॥ कबी
र साधु ब्रह्मा आवका॥ धन का भ्रम नाहि॥ धन का
भ्रम ते फिरै॥ ते तो साधु नाहि॥ ९॥ कबीर साधु
आया पांऊं ना॥ सांगै चारि रतन॥ धनी पां नी सा
थरा॥ मरधा से नी नून॥ १०॥ कबीर को जनमो ज
न प्रीत सं॥ दी जै साधु लोय॥ नी वत अस होय ज
गत मे॥ अत प्रमद पाय॥ ११॥ कबीर कूसाधन
के संगि रहौ॥ अत कहन ही जाय॥ जो मोहि न
र प्ये प्रीत सं॥ साधन मु प्र होय पाव॥ १२॥ कबीर साधु
हमारी आत्मा॥ हम साधन का जीव॥ साधन मधे प
रहौ॥ ज्युं प्ये मधे पीव॥ १३॥ कबीर ज्युं प्ये मधे पीव है॥
न्यूर निरह्या सब वोर॥ बकता सरो ताव कु मिले
मथि काटै ते और॥ १४॥ साधन दी जल छे मरस॥ तहो
पुछा लौ न्यग॥ कहैं कबीर निरमल नया॥ साधन
के संग॥ १५॥ कबीर मोही दिन नला॥ जादि न साधमि
लाय॥ अंक भरे न रि मे दिया॥ पाप मरी रां जाय॥ १६॥
॥ कबीर साधमि ले नौ हरि मिले॥ न्यूर रही नैरे प
मान साखा चाक्रमन॥ साधु आप नू लेय॥ १७॥ कबीर

निराकार को न्यारती॥ साधन ही को देहा लख्यो
जो चाहें न्यारती को न्यारती में लखित है॥ १५॥ क
बीर साधन केरी दया है॥ १६॥ जै ब्रह्म न्यारती को
टिठियन यह में दैरा॥ मिष्ट शकल उष उंदा॥ १७॥ सुष
देमा उष में दया॥ हरि करन न्यारती राधा॥ कहैं कबीर
वै कब मिले॥ १८॥ मम सनेही साध॥ १९॥ कबीर हरि दर
बारी साधन॥ ईन तैं सब कब होया॥ बिगि मिले
राम को॥ ईन मिले जो कोया॥ २०॥ कबीर साधनो जा
राम का॥ सै जो महा नामां हि॥ न्यारन को प्रदा ल
न्यारन को प्रदा नां हि॥ २१॥ कबीर गृही सै वै साध
नो॥ साधन मरै राम॥ यामै क्षेप कब नही॥ सरे दे
ऊ का कामा॥ २२॥ कबीर जाधर साधन मेव ही॥ पार
ब्रह्म पति नां हि॥ ते घर मर हट सारया॥ नृत बसेत
माहि॥ २३॥ कबीर साधन की ऊपरी मली॥ नां साक
ट को गांदा॥ चंदन की चुकटी मली॥ नां बं बल की
बन रादा॥ २४॥ कबीर पुर पटन सब सखें मे॥ न्यान
दगं वै ठोवा॥ राम सनेही ब्रह्म दरा॥ ऊज सरे नां द
रा॥ कबीर है गे गे वर सधन धन॥ छत्र धजा फद
राया॥ तसुष तैं निच्छा मली॥ जो हनि सु मर नटि
न जाय॥ २५॥ कबीर है वर गे वर सधन धन॥ छत्र
पती की ना रि॥ ता सु पटन र नां न्यारो॥ दान न्यार
पति नां हि॥ २६॥ कबीर साधन मेव ही॥ पार

अधनीसतिरे॥ मिलिअजियेभावत॥ ४६ कबी
अवेसनकोनही॥ सबवेसनजाति॥ जेताहरि
कंनोभजे॥ तेताताकंहानि॥ ४७ कबीरना
साधकरिदेखिये॥ असाधनंदयियेकोय॥ वाकै
रंदेहरिनही॥ हांनिउसीकंहोय॥ ४८ कबीर
रसवसाधकाकरसनकोजैकांनि॥ अउदिमसं
अमी॥ अलसमैनितहांनि॥ ४९ कबीरदरसनसा
४६॥ साहिबआवेयादि॥ लेखामैसोहीधरी॥ बा
आदिनबादि॥ ५० कबीरदरसनकीजैसाधका
दिनमैकईयकबार॥ आसोजाकामैहज्य॥ ब्रह्म
करेउपकार॥ ५१ कबीरकईबारनहीकरिस
कै॥ दोयबषतकरिलेय॥ कबीरसाधदरसनके
लदगानहीदेय॥ ५२ दोयबषतनहीकरिसके
दिनमैकरियेकैबार॥ कबीरसाधदरसनते॥ जत
रेमवजलपार॥ ५३ एकदिनांनहीकरिसके॥ इ
जैदिनकरिलेह॥ कबीरसाधदरसनते॥ पावैउत
मदह॥ ५४ इजैदिननहीकरिसके॥ चौथैदिन
करिजाय॥ कबीरसाधदरसनते॥ मोक्षमुक्तिफ
लपाय॥ ५५ चौथैदिननहीकरिसके॥ बारबार
करिजाय॥ यामेबिलसनकीजिये॥ कहैकबीर
समजाय॥ ५६ बारबारनहीकरिसके॥ पवि
धिकरिलेये॥ कहेकबीरसंतसो॥ जन्ममुफल
करिलेये॥ ५७ पविपविनहीकरिसके॥ मांसमांस

पाथी पाक बनही ॥ ज्युं कात्युं नरपूर ॥ १॥ म
जंतो कौ है न जन कौ ॥ त जंतो कौ है नान न जन
न जन के मधिमें ॥ सो कबीर मन मान ॥ २॥ ले
ऊं तो महा पिग्रह ॥ देऊं तो फिर भोग वंत ॥ ३॥
न बीन के मधिमें ॥ सो कबीर निज संत ॥ ४॥ क
बीर दवा द्यौं तो दो जग जाऊं ॥ वे दवा भी नाहि
दवा ब दवा किस कूं देऊं ॥ साहिब है सब भाहि
२॥ म फिर हनां मै दान मै ॥ सन मुख सह नांती र
ज मवा श्री रजगदीस कौ ॥ मधिमें बसे कबीर
२॥ गुन नही चैलानही ॥ नही अरि दनही ॥ ३॥
ये दानही ह जानही ॥ न बिल ब्यादास कबीर
२॥ ही ह द्या वै देहारा ॥ असल मान मसीत द्या
स कबीर त हा ध्या वदी ॥ ज दा होत का परती न
२॥ ही ह उर क के बिचमें ॥ मिरानां म कबीर जीव
मु कता व व कार में ॥ अ बगति ध त्या मरी ॥ २॥
कबीर ही उर क के बी च में ॥ सु ब द क कृ नि
र बीन ॥ बंधन का दू मुक्ति करू ॥ म रहता रह
मान ॥ २॥ क ही म द्या लं म कह है ॥ सु स ल मान
पु द्या ॥ कह बबीर सो जावता ॥ दोऊ के संगि
न जाय ॥ २॥ कबीर ही ह क कृ तो मै नही ॥ सु
स ल मान नी नां दि ॥ पा चै स त का पू त ला गो व

लेनां हि ॥ २ ॥ कबीर गेबी आया गेब ते ॥
लगाया नैब ॥ जल टि सं मां गोब मे ॥ तब क
रहेगा नैब ॥ ३ ॥ कबीर गेबी तो गली पा
रे ॥ जग गेबी को ई पैक ॥ अज गेबी कल पै
जाके हिर देव बेक ॥ ४ ॥ कबीर आ गेबी जी प
मुवा ॥ पीछे रह्या मुलाप ॥ मधि मां हि बासा
रे ॥ ताको काल न पाप ॥ ५ ॥ साचे कोई न म
हो ॥ ऊठ क दान ही जाप ॥ सा च ऊठ के मधि
॥ रह्या कबीर समाप ॥ ६ ॥ कबीर अंतिका
लान बो लना ॥ अंतिकी जली न चुप न
नली न बर सना ॥ अंतिकी नली न धुप ॥ ७ ॥
॥ गा ॥ ८ ॥ सा ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

बदलुरतिके अंतरै ॥ अलखपुरस निरवां
न ॥ ८ ॥ कबीर हम तो लख्यो तिहु लोक में ॥ उ
म क्युं कह्यो अलेख ॥ सार सब जान्या न ही ॥ धे
पे पहल्यो मेघ ॥ ९ ॥ कबीर कथन कथन ज
ग था किया ॥ था की सवै बलक ॥ देखत न जर
न आईया ॥ हारिक ह्या अलेख ॥ १० ॥ कबीर
कथन कथन जग था किया ॥ नोई जो गुं नाग
न ॥ देखत न जर न आईया ॥ हारिक ह्या बे च
न ॥ ११ ॥ कबीर बे च नी जग राधिया ॥ साहिब नू
र निनार ॥ आपर के रेखत क ॥ बंदे किम को
करोगे दीदार ॥ १२ ॥ कबीर तीन लोक सब रां
म जपत है ॥ जानि मुक्ति को क्षम ॥ रांम भ्रष्ट
वा सिष्ट गुरु कीया ॥ तिन कहा मुना पोनांम
॥ १३ ॥ कबीर जग में च्या सूर रांम है ॥ तीन रांम
यो हार ॥ चौथ रांम निज सार है ॥ ताका करै
चार ॥ १४ ॥ कबीर ऐकरांम दसरथ घरि
के लै ॥ ऐकरांम दस दस में बो लै ॥ ऐकरांम
काशक लप सार ॥ ऐकरांम त्रिनवन तै
न्या रा ॥ १५ ॥ कबीर कौन रांम दसरथ घरि
लै ॥ कौन रांम दस दस में बो लै ॥ कौन रांम क
सकल पसार ॥ कौन रांम त्रिनवन तै न्या
रा ॥ १६ ॥ कबीर अकार रांम दसरथ घरि लै

निराकार घट घट मैं बोलो ॥ बिंदरं मकास
कल प्रसार लं म सब ही तें नारा ॥ कबीर रं
मकल नूद नार है ॥ दिन की ना ही मांड ॥ जिन
साहिब संसार की प्रा ॥ सो कि न कं न जन म्याह
॥ १२ ॥ कबीर जी की था पी मा है ॥ ता की करि ह
सेव ॥ जो था पा है मा रु का ॥ ते न ही द मा रा दे व
॥ कबीर र दे निरा ला मा रु ते ॥ सकल मा
ड नि हि मा हि ॥ कबीर से वे ता स कौ ॥ इ जा से
वे ना दि ॥ २० ॥ कबीर संपट सा हि स मा ई ॥ सो
सा हि ब न ही हो या ॥ सकल मांड में र मि र द्या
रा सा हि ब सो पा ॥ २१ ॥ कबीर सा हि ब मे रा ये क
ही ॥ इ जा क द्या न जा या ॥ इ जा सा हि ब जो क क
तौ सा हि ब रा रि सा पा ॥ २२ ॥ कबीर जा के
ह मा था न ही ॥ ना ही रूप क रु धा ॥ प्र क प व
स तै पा त ला ॥ २३ ॥ सा त न नू न पा ॥ २४ ॥ कबीर
थारि मु जी के न जन में ॥ नू लि प्र रे स ब स त
बी रा मु म रे ता स कं ॥ जा के मु जा नू न त
कबीर ति ब ल स ब ल जो जा न के ॥ ना म
र्यो ज ग दी स ॥ क ह कबीर न न में म रे
हि ध रू न ही सी सा ॥ २५ ॥ कबीर ज न म म
मूर ह स है ॥ निरा सा हि ब सो पा ॥ ब लि हा
सा ॥ २६ ॥ जित

मैं मेरी जो वांनि के ॥ हूँ जीया पीलो ॥ १० ॥ क
जो कबूकी या सो तुम की या ॥ मैं कबूकी या ना
॥ कहो कहा जो मैं की या ॥ तुम ही थे मुक मा
हि ॥ ११ ॥ कबीर की या कुच नही होत है ॥ धन
की या ही होय ॥ की या कबूही होय ता करत
और न की या ॥ १२ ॥ कबीर जिस नही कोय जि
ह ॥ जिस तू तिस सब कोय ॥ दर में तेरी सांई या
मैं दिन सके कोय ॥ १३ ॥ कबीर ये कब डाली ना
ल है ॥ रो कऊ ना ही बिल लाय ॥ समर थ मैं रा
सांई या ॥ सूना देहि जग या ॥ १४ ॥ कबीर जो गु
नही रा गुन नही ॥ मन का बजा कवौ र ॥ ऐसा
म सूर थ सत गुर ॥ ताहि लगावें वीर ॥ १५ ॥ कबीर
तुम तो समर थ सांई या ॥ दिट करिय करों बा
ह ॥ धुर ही लेयं ऊचाये हो ॥ जिन छा मो मघ
सांहि ॥ १६ ॥ कबीर समर थ क्षीर के धदे ॥ रथ
क देह य ऊचाय ॥ मार ग सांहि न छा जिये पि
ब बिन बिदल जाय ॥ १७ ॥ कबीर ईत क बाउ
त बावरी ॥ ईत उत थाह अथाह ॥ नौ दूक दि
स संफ ना फन करे ॥ समर थ पारि नि बाहें ॥ १८ ॥
कबीर घट समं प्रलधि नाय रे ॥ उधैं जो लह
रि अयार ॥ दिल दरिया समर रथ बिना को

निधे॥ सहजर है समाया॥ बिषे का कै निर
 बिषर है॥ सबदन दुखा जाया॥ ७॥ कबीर सीत
 लता नई॥ उपजौ ब्रह्म गीयान जिहि ब्र
 मंदर जग जलया॥ सो मेरे नुदक समा ना॥ ८॥
 कबीर के सबदन बो लिऐ॥ सजन बिर च
 तीना॥ गंगा जल सीतल नया॥ प्रबत को
 त्यातीना॥ ९॥ कबीर का गा का को धन हरे
 को ये लकड़ा धन देया॥ जि न्या कारन न्या
 पने॥ जग न्या पना करि लेया॥ १०॥ कबीर जि
 न्या मै न्या मृत बसे॥ जो कोई जानै बो लि॥
 बिषे बा सिद्ध का कत रै॥ जि न्या तनै ही ले
 ला॥ ११॥ कबीर जि न्या कर जि न्या दुखा जि
 न्या पारी जागि॥ जि न्या सजन र लि मिले
 जि न्या लागे न्या गि॥ १२॥ कबीर सहज न
 राज न्या निकै॥ सबर स देखा तो ला॥ सबर
 समा ही जी नर सा॥ जो कोई जानै बो लि॥
 १३॥ कबीर बोल तो न्या बोल है॥ जो कोई
 जानै बो लि॥ हिये तराज तो निकै॥ तब
 मुख बाहरि धो लि॥ १४॥ बो
 कै॥ बें बें जग सं नारि॥ कहैं कबीर वा
 की॥ कब कन न्या वै॥ १५॥
 साधी॥ १६॥

बीरकमलजो पूछो असलकी॥ आमा ला
गालोय॥ नां वबिहना जगमुवा॥ कमल
कहोतै होय॥ २५॥ कबीर बारी बारी आप
नी॥ चले पियारे मित॥ तेरी बारी जीवरा
नी रे आवै नित॥ २६॥ कबीर माली आवत
देखि कै॥ कलिया करी पुकार॥ फलै फलै
बुनिलिये॥ कालिह मारी बारा॥ २७॥ कबी
र बाही आवत देखि कै॥ तरवर करी पुका
र॥ मै अंग ससै नही॥ पछी बसते अपार
२८॥ कबीर फागन आवत देखि कै॥ बनस
नां मन मां हि॥ ऊंची मारी पातथा॥ दिन दि
न पीरे थाहि॥ २९॥ कबीर पात जतरवर
संकहै॥ बिलमन मानौ मोर॥ आईरु तिब
सत को॥ जहां जां ऊं तहां तौर॥ ३०॥ कबी
र तरवर पात संकहै॥ सुनौ पात पे क
बात॥ या घर या ही रात है॥ एक आवत पे
क जात॥ ३१॥ कबीर पात करता संकहै॥
नितरवर बनराय॥ अब के बिछरे ना
मलां॥ इरिप रे गे जाय॥ ३२॥ कबीर कहै
पात बाजार सं॥ कहां परी अब नो हि॥ जे
पातर घर हीन जो॥ चलो जान दे मोहि॥ ३३

कबीरपीपलपानऊरतीया॥ हंससाई कं
देरि॥ याहीबसिवाहीपगा॥ अपनीअपनीवे
रा॥ कबीरदोहोधीलाकरी॥ गढीकरेपुव
रा॥ मतिवसिपरौलुहारकै॥ आरैइजीवार
॥ ३५॥ अरथा॥ दोकरमा॥ अकरीकाया॥ लुह
रकाला॥ सांखी॥ कबीरमेराबीरलुहारका
तूमतिजारैमोहि॥ एकदिनजैसाहोपगा॥ मेज
लगीमोहि॥ ३६॥ कबीरजालनहाराभीमुझा
मुपेजलावनहारा॥ हैहैकरतानीमुपे कास
करुपुकारा॥ ३७॥ कबीरजोऊगैसोअथवे
फलेसोऊमलाप॥ जोचिनेसोहहपरै॥ जो
मसोमरिजाप॥ ३८॥ कबीरजोपहस्यासो
फाटिया॥ नावधस्यासोजाप॥ कबीरसोह
ततस्या॥ जोसतगुरदीपावताप॥ ३९॥ क
बीरजोपहस्यासोफाटिया॥ जोषायासोजोय
कबीरप्रांससारभै॥ दीयाहीरहजोय॥ ४०॥
कबीरनिधुदकबैगरांसबिना॥ चेतनके
पुकारा॥ प्रकृतनजलकाबुदबुदा॥ बिनस
तनाहीबा॥ ४१॥ कबीरप्रांतीकेराबुदबुद
ईसीमनषकीजाति॥ देखतहीछिपजा
॥ ४२॥ जूताराप्रजाति॥ ४३॥

हं मां वरुजया जायं जासैमिदिदेतीनो ताप
टे। कंठकदलकरवांनीकाया॥ तामैअनंतद
पछिबभापा॥ नौरंगनौतनआवैजाई॥ अष्ट
कदलमधिवैलैपाई॥ रापांमौमुंघाजिनैनिना
षी॥ जामैमूलगानमधिराषी॥ सुरतिकदल
काबुजिठिकाना॥ छादसपरिहमराअमंथाने
॥ १० ॥ असा मूलगानगौहरांऊं॥ आदिसंतिका
नैदेतषीऊं॥ इंसैप्रसैहिलिमिलिधेलै॥ आपति
वैअौरतकंठेलै॥ ११ ॥ बिकटपंथइवसुनौहंम
रा॥ दोप्रवतकैमधिदैधरा॥ निलप्रवांतिज
हांलगीकिवारी॥ दलकैजांदैसुधंअवारी॥ १२
बिकटपंथबिकटदैगैला॥ दोप्रवतकैमधि
दैसैला॥ मिपरिसुमेरसुनिकैलाशा॥ अंगम
पुरीकासुनिलेरासा॥ १३ ॥ निलप्रवांतिमैदैति
रवैती॥ पलपलपरबोदैसुधचैनीपागजमन
मधिसुरसती॥ जुमलसुमतजहांधेलैकुलती
॥ १४ ॥ बिकटसिंधबिकटअसतांतां॥ बुद्धादिक
सकादिकधांतां॥ सोलासंघजोजनपरिदरि
या॥ जहांरिवैतीनीऊरऊरिया॥ १५ ॥ पादलैम
नतलाईनाई॥ तामरिसुरतिनिसरनीलाई
बुद्धरंइविकटीइवाजा॥ बडेबडेजोधासुचिदै

अग्रदोरिहै मारग बांका ॥ अग्रद्वीज जरे
 ममटांका ॥ जहां मात सरोवर बिहवल न
 सा ॥ बिना चंच माता चुगिहंसा ॥ १९ ॥ हादस
 ऊपरि इव नद मांसे ॥ अग्रददमाद धुबै बजना
 मे ॥ राग अत कलाहल बांती ॥ निरक्षिष्टि
 मुनिपे दिल बांती ॥ २० ॥ हाददी पमुनौ इवेसा ॥
 अजब कलाहल होत हंसेसा ॥ सतरि पदं मजो
 जन बिसतारा ॥ निनिनिनि नैदक कुंजन सारा
 शी जहां चित्र बुजी हंस है भाई ॥ छट सूरजि रि
 बकिर नित पाई ॥ चोवा चंदन अग्र निवासा मधक
 नौरागं प्रिय बासा ॥ खोली लदी पली लंब बांता
 जपत पकनी परिकर बांता ॥ जहां हंस चुगना न
 जांदी ॥ अग्रदुजात न बावरि पांदी ॥ २१ ॥ असी
 पदमजो जन प्रदांता ॥ लीलंब का पीदुत न माने
 हादस सूरि जते जसरी रा ॥ बैचे अचल मुनी रिष
 धी रा ॥ २२ ॥ संघ चक्र मुक नाल मुके सी ॥ घोडि
 पदमजो डे सिर पो सी ॥ नौरागं जार केत जी बास
 पिंन न झां न ही दं मल्लासा ॥ २३ ॥ मुनि पीत बलो
 क धिया रे ॥ घोडि स मुजा हंस पग धारे ॥ कौसल
 मनि मुक नौ परिमाला ॥ असी अदनुत रूप धि
 माला ॥ २४ ॥ तीस मात मुजि पारा नंगा ॥ मधक

कबीर वैसने नया तो क्या ह्व्या ॥ मालाय
रिचारि ॥ कप कलौ लये दिकै ॥ श्री चमरी
नि ॥ कबीर नवनी नया तो क्या नया ॥ सुक
नम तो हि ॥ पारधी या हनो ॥ मित्रा मारधाहि
॥ १२ ॥ कबीर नवनि नवनि बहो लो ॥ नवने
हो नहि मां ॥ येनी नवने नवने ॥ श्री सा चोर
क मां ॥ कबीर के तम नवर नवने ही ॥ जो
तम नि फल फल ॥ को ल क प हरि दै बसे मधु क
र न जे दै फल ॥ कबीर कलौ बने दै बाहि ली
नी त्रियां मं कां ॥ श्री नै छिप के उक रौ ॥ सारी जां
न रां मां ॥ कबीर चित क पटी सब सं मिले मां
ह क पट सब तो ॥ ये क हर ज न ये क न र सी न्या
पी छै श्री ॥ कबीर न्या गे ज प न क जल प ॥
उ वि व म वि कारा ॥ न्या गे पी छै श्री र सी ॥ नं नि प
मु ष चार ॥ १३ ॥ न्या ॥ देया सा सी ॥ १४ ॥ न्या
म दि श्री को न्या ॥ कबीर स म दि श्री स न गुर क
न र म किया सब हरि ॥ नया क जी या र मां
का ॥ ज ग्या नि र म ल सूं ॥ कबीर स म दि श्री
न गुर की या ॥ न र म ग या सब हरि ॥ जा को क
से न हो ॥ रां म र ह्या म पु रि थि ॥ कबीर स म दि
श्री स न गुर किया ॥ दिया न वि चा ल पं न ॥

॥ हां देषूं तहां ये कहै ॥ इजानां हि नाना ॥ ३ ॥ क
 ॥ रसमदिष्टी सतगुर किया ॥ मेव नरम बिका
 ॥ जहां देषूं तहां ये कहै ॥ साहिब का टि टार ॥ ४ ॥
 कबीर रसमदिष्टी सतगुर किया ॥ मन पाया बि
 न राम ॥ जो हस कं दिन घालता ॥ सो गया बुझ के
 संम ॥ ५ ॥ कबीर रसमदिष्टी सतगुर किया ॥ सीत
 ल समता होइ ॥ सबै जीव की आत्मा ॥ लखै ये क
 सी सो पा ॥ ६ ॥ अंग ॥ ८ ॥ साधी ॥ ३ ॥ ७ ॥ अथ
 हित प्रीति को अंग ॥ कबीर अथ कसने हनम बल
 इजाना लप सनेहा ॥ जख ही जल संविष्ट ॥ सो त
 बही त्यागै देह ॥ १ ॥ कबीर हरि संजं जिन देत
 कबि ॥ करि हरि जन संहेत ॥ माल मुल कह
 रि देत है ॥ हरि जन हरि ही देत ॥ २ ॥ कबीर जै
 सी प्रीति कूं मसंति सी हरि संहोइ ॥ सत कबी
 राय कहै ॥ काज न बिगरे कोइ ॥ ३ ॥ कबीर स
 स प्रीति करि ॥ जो निरबा देवोरि बन साबी
 बधन राखिये ॥ देव तलागै धोरि ॥ ४ ॥ कबीर
 न वंते नौर बक्क ॥ प्रीति करै सब कोइ क
 बीर प्रीति सो जानिये ॥ ईन तै न्यासी होइ ॥ ५ ॥
 कबीर प्रीति बहोत संसार मो ॥ नाना बिधि व
 होइ ॥ कनम प्रीति सो जानिये ॥ हरि जन हरि सहै

[illegible]

[illegible]

